

20. 'उल्लास' का विलोम शब्द क्या है?

- (a) हर्ष (b) विषाद
(c) कष्ट (d) नैराश्य

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

'उल्लास' का विलोम 'नैराश्य' होता है। 'हर्ष', 'विषाद' का विलोम है।

21. 'अज्ञ' शब्द का विलोम है -

- (a) विज्ञ (b) मूर्ख
(c) अनुज (d) अल्प

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'अज्ञ' का विलोम शब्द 'विज्ञ' होता है। 'मूर्ख' का विलोम विद्वान, 'अनुज' का विलोम 'अग्रज' तथा 'अल्प' का विलोम 'बहु' होता है।

22. 'ऋजु' शब्द का विलोम होगा -

- (a) सीधा (b) सरल
(c) वक्र (d) ऋज

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'ऋजु' शब्द का विलोम वक्र होता है। 'सरल', 'कठिन' का तथा 'सीधा', 'टेढ़ा' का विलोम है।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा विलोम शब्द है?

- (a) अभिज्ञ (b) भिज्ञ
(c) विज्ञ (d) अनभिज्ञ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

अभिज्ञ, भिज्ञ, विज्ञ तीनों समानार्थी हैं, जबकि अनभिज्ञ इन तीनों का विपरीतार्थक है।

24. 'अभिज्ञ' शब्द का विलोम है-

- (a) भिज्ञ (b) सभिज्ञ
(c) अनभिज्ञ (d) सुभिज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'अनभिज्ञ' शब्द का विलोम है-

- (a) भिज्ञ (b) अज्ञ
(c) अभिज्ञ (d) अतिभिज्ञ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a&c)

'अनभिज्ञ' शब्द का विलोम भिज्ञ तथा अभिज्ञ दोनों है।

निर्देश (प्रश्न सं. 26 से 30 तक)—इन प्रश्नों में प्रत्येक में एक शब्द दिया गया है जिसके नीचे चार शब्द अंकित हैं। इनमें से एक दिए हुए शब्द का विलोमार्थी शब्द है। सही विलोमार्थी शब्द को चुनिए—

26. दिवस

- (a) विभावरी (b) अरविन्द
(c) प्रवाहिणी (d) विचक्षण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

दिवस का वास्तविक विलोम रात्रि होता है। उचित विकल्प के अनुपस्थिति में विभावरी हो सकता है। विभावरी, रात्रि का पर्यायवाची है।

27. निर्मल

- (a) पवित्र (b) शुद्ध
(c) मलिन (d) मृदु

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

निर्मल का विलोम मलिन होता है।

28. उद्यम

- (a) प्रवीण (b) आलस्य
(c) नीरज (d) नृप

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उद्यम का विलोम आलस्य होता है।

29. महान

- (a) मरण (b) चेतन
(c) क्षुद्र (d) मूढ़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

महान का विलोम क्षुद्र होता है। इसका विलोम तुच्छ भी होता है।

30. द्युति

- (a) छवि (b) प्रभा
(c) ज्योति (d) अन्धकार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

द्युति का शुद्ध विलोम तम हो सकता है। उचित विकल्प के अनुपस्थिति में अन्धकार माना जा सकता है। छवि, प्रभा, ज्योति, द्युति के पर्यायवाची शब्द हैं।

31. उपत्यका का विलोम है—

- (a) पर्वत (b) घाटी
(c) अधित्यका (d) विसर्जन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपत्यका का विलोम अधित्यका होता है। विसर्जन, आवाहन का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- उदात्त का विलोम अनुदात्त होता है।
- उत्कर्ष का विलोम अपकर्ष होता है।
- ईद का विलोम मुहर्रम होता है।
- उद्यमी का विलोम निरुद्यम होता है।
- उग्र का विलोम सौम्य होता है।

32. 'अपव्यय' शब्द का विलोम है-

- (a) अधिव्यय (b) व्यय
(c) मितव्यय (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'अपव्यय' का विलोम 'मितव्यय' होता है। 'व्यय' का विलोम 'आय' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अपव्ययी का विलोम मितव्ययी होता है।
- अर्जन का विलोम व्ययन होता है।
- अनेकान्त का विलोम एकान्त होता है।
- अनैक्य का विलोम ऐक्य होता है।
- अवनि का विलोम अम्बर होता है।

33. निम्नलिखित युग्मों में से विलोम की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है -

- (a) उन्मुख - विमुख (b) ऋत - अनृत
(c) गत - अनागत (d) मंद - द्रुत

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

गत का विलोम 'आगत' होता है। शेष युग्म सही हैं।

34. 'आवरण' शब्द का विलोम है-

- (a) अनावरण (b) आचरण
(c) सुवारण (d) अवज्ञा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आवरण' का विलोम 'अनावरण' होता है। इसका विलोम 'निरावरण' भी होता है। 'अवज्ञा' का विलोम 'आज्ञा' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आवर्तक का विलोम अनावर्तक होता है।
- आवर्षण का विलोम अनावर्षण होता है।
- आवृत का विलोम अनावृत होता है।
- आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।
- आर्ष का विलोम अनार्ष होता है।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा विपरीतार्थक युग्म सही सुमेलित है?

- (a) उद्योगी - अनुद्यत (b) औरस - जारज

(c) उन्मत्त - विमुख

(d) उच्छवास - अनुच्छिष्ट

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

औरस-जारज विपरीतार्थक युग्म सही सुमेलित हैं। उद्योगी का विपरीतार्थक अनुद्योगी होता है, जबकि अनुद्यत, उद्यत का विलोम है। उन्मत्त का विलोम अनुन्मत्त तथा विमुख का विलोम उन्मुख होता है। इसी प्रकार उच्छवास का विलोम निःश्वास तथा अनुच्छिष्ट का विलोम उच्छिष्ट होता है।

36. 'महात्मा' शब्द का सही विलोम होगा-

- (a) दुष्ट (b) दुर्जन
(c) दुरात्मा (d) पापी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'महात्मा' का सही विलोम दुरात्मा होता है। दुष्ट तथा दुर्जन दोनों समानार्थी हैं, इसका विलोम सज्जन है।

37. 'प्राचीन' शब्द का विलोम है-

- (a) वर्तमान (b) अर्वाचीन
(c) समीचीन (d) नवीन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद की पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में 'प्राचीन' का विलोम नवीन तथा अर्वाचीन दोनों हैं। डॉ. हरदेव बाहरी भी अपनी पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' में डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद का अनुसरण करते हैं अर्थात् प्राचीन का विलोम नवीन तथा अर्वाचीन दोनों मानते हैं।

38. 'अर्वाचीन' शब्द का विलोम शब्द क्या है?

- (a) नवीन (b) प्राचीन
(c) आदिकालीन (d) पाषण कालीन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'अर्वाचीन' का विलोम प्राचीन है। नवीन, अर्वाचीन का समानार्थी है।

39. 'स्वार्थ' का विलोम होगा-

- (a) परमार्थ (b) निःस्वार्थ
(c) परोपकार (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

डॉ. हरदेव बाहरी की पुस्तक 'हिन्दी : शब्द-अर्थ-प्रयोग' के अनुसार, स्वार्थ का विलोम परमार्थ है। डॉ. वासुदेवनन्दन प्रसाद की पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना' में स्वार्थ का विलोम निःस्वार्थ एवं परमार्थ दोनों ही उद्धृत हैं। स्वार्थ का सटीक विलोम निःस्वार्थ होगा, किन्तु यह कहना ठीक नहीं है कि परमार्थ, स्वार्थ का विलोम नहीं है।

40. निम्नलिखित में कौन शब्द 'राजा' का विलोम नहीं है?

- (a) रानी (b) रंक
(c) सेना (d) प्रजा

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रानी, रंक तथा प्रजा तीनों 'राजा' के विलोम हैं, जबकि सेना इससे भिन्न है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रत का विलोम विरत है।
- रागी का विलोम विरागी है।
- रक्षक का विलोम भक्षक है।
- राजतन्त्र का विलोम जनतन्त्र है।
- रिक्त अथवा अपूर्ण का विलोम पूर्ण है।

41. 'गमन' का विलोम है-

- (a) आना (b) उत्तरना
(c) रुकना (d) आगमन

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'गमन' का विलोम 'आगमन' है। 'आना' का विलोम 'जाना', 'उत्तरना' का विलोम 'चढ़ना' तथा 'रुकना' का विलोम 'चलना' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गत का विलोम आगत होता है।
- गरल का विलोम सुधा होता है।
- गर्म का विलोम ठण्डा होता है।
- गण्य का विलोम अगण्य/नगण्य होता है।
- गगन का विलोम धरा होता है।

42. 'तिमिर' का शुद्ध विलोम शब्द होगा-

- (a) अन्ध (b) निशा
(c) दिवा (d) आलोक

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'तिमिर' का शुद्ध विलोम 'आलोक' होता है। 'दिवा' का विलोम 'रात्रि' होता है, जबकि 'निशा', 'रात्रि' का पर्यायवाची है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- तित्क का विलोम मधुर होता है।
- तीव्र का विलोम मन्द होता है।
- तुच्छ का विलोम महान होता है।
- तृप्त का विलोम अतृप्त होता है।
- तामसिक का विलोम सात्विक होता है।

43. जंगम का विलोम शब्द है-

- (a) पुष्ट (b) स्थावर
(c) स्थिर (d) पूर्ण

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जंगम तथा स्थावर परस्पर विलोम हैं। पुष्ट का विलोम क्षीण अथवा अपुष्ट तथा स्थिर का विलोम चंचल अथवा अस्थिर होता है। पूर्ण का विलोम अपूर्ण अथवा रिक्त होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जटिल का विलोम सरल होता है।
- जड़ का विलोम चेतन होता है।
- जन्म का विलोम मृत्यु होता है।
- जल का विलोम थल होता है।
- जारज का विलोम औरस होता है।
- जालिम का विलोम रहमदिल होता है।

44. 'स्थावर' का विलोम शब्द है-

- (a) चेतन (b) जंगम
(c) जड़ (d) सचल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. निम्नलिखित में से विलोम शब्दों का कौन-सा एक युग्म गलत है?

- (a) निषिद्ध - विहित
(b) वक्र - ऋजु
(c) कटु - तित्क
(d) पाश्चात्य - प्राच्य

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c & d)

'कटु' का विलोम 'मधुर' होता है, जबकि 'तित्क', 'कटु' का समानार्थी है। पाश्चात्य का विलोम पौरात्य तथा प्राच्य दोनों होता है। अतः विकल्प (c) तथा (d) दोनों सही हैं।

46. पाश्चात्य का विलोमार्थक शब्द है-

- (a) पौरात्य (b) पूर्वी
(c) पूर्वीय (d) नवीन

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

'पाश्चात्य' का विलोम 'पूर्वीय' अथवा 'पौरस्त्य' होता है। पूर्वी का विलोम पश्चिमी तथा प्राचीन का विलोम नवीन होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- पात्र का विलोम अपात्र होता है।
- पारदर्शी का विलोम अपारदर्शी होता है।
- पार्थिव का विलोम अपार्थिव होता है।
- पास का विलोम दूर होता है।
- पाप का विलोम पुण्य होता है।

47. 'प्रत्यक्ष' का विलोम है-

- (a) समक्ष (b) विपक्ष
(c) परोक्ष (d) अदृश्य

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'प्रत्यक्ष' का विलोम 'परोक्ष' होता है। 'विपक्ष' पक्ष का तथा 'अदृश्य' दृश्य का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- प्रमुख का विलोम सामान्य अथवा गौण होता है।
- प्रलय का विलोम सृष्टि होता है।
- प्रशंसा का विलोम निन्दा होता है।
- प्रवृत्ति का विलोम निवृत्ति होता है।
- प्रधान का विलोम गौण होता है।

48. 'आमिष' का विलोम शब्द होगा-

- (a) सामिष (b) निरामिष
(c) मांसाहारी (d) शाकाहारी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'आमिष' का विलोम 'निरामिष' होता है। सामिष, आमिष का समानार्थी है। शाकाहारी का विलोम मांसाहारी होता है।

49. 'सामिष' का विलोमार्थक शब्द है:

- (a) आमिष (b) अनमिष
(c) निरामिष (d) निरमिष

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. 'कृतज्ञ' का विलोम क्या है?

- (a) कठिन (b) कृपण
(c) कृतघ्न (d) करुण

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'कृतज्ञ' का विलोम 'कृतघ्न' होता है। कठिन, सरल का तथा कृपण, दाता का विलोम है। करुण का विलोम निष्ठुर है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कुरूप का विलोम सुरूप होता है।
- क्रय का विलोम विक्रय होता है।
- कायर का विलोम निडर होता है।
- कटु का विलोम मधु होता है।
- क्रोध का विलोम क्षमा होता है।

51. 'आचार' का विलोम शब्द है-

- (a) अनाचार (b) आनाचार
(c) अत्याचार (d) विचार

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(a)

आचार का विलोम अनाचार होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आगामी का विलोम विगत होता है।
- आविर्भाव का विलोम तिरोभाव होता है।
- आकाश का विलोम पाताल होता है।
- आधुनिक का विलोम प्राचीन होता है।
- आकर्षण का विलोम विकर्षण होता है।

52. निम्नलिखित में कौन 'अथ' शब्द का विलोम है?

- (a) इति (b) आदि
(c) अन्त (d) प्रारम्भ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'अथ' का विलोम 'इति' होता है, जबकि आदि, अन्त का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अधम का विलोम उत्तम होता है।
- आय का विलोम व्यय होता है।
- अस्त का विलोम उदय होता है।
- आयात का विलोम निर्यात होता है।
- आद्य का विलोम अन्त्य होता है।

53. 'अंतरंग' का सही विलोम है-

- (a) बहुरंग (b) बहिरंग
(c) सबरंग (d) कुरंग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'अंतरंग' का विलोम 'बहिरंग' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आजादी का विलोम गुलामी होता है।
- आभ्यन्तर का विलोम बाह्य होता है।
- अति का विलोम अत्य होता है।
- अवनि का विलोम अम्बर होता है।
- अनुग्रह का विलोम विग्रह होता है।

54. 'मूक' का विलोम शब्द है-

- (a) अमूक (b) शूक
(c) वाचाल (d) हूक

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'मूक' का विलोम 'वाचाल' अथवा 'मुखर' होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मृदुल का विलोम कठोर होता है।
- मिलन का विलोम विरह होता है।
- मुख का विलोम पृष्ठ अथवा प्रतिमुख होता है।
- मुनाफा का विलोम नुकसान होता है।

55. निम्नलिखित में कौन 'शाश्वत' शब्द का विलोम है?

- (a) मृत्यु (b) मर्त्य
(c) नश्वर (d) क्षणिक

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'शाश्वत' का विलोम क्षणिक होता है। 'मृत्यु' जन्म का विलोम है, जबकि नश्वर का विलोम शाश्वत अथवा अनश्वर होता है। मर्त्य, अमर का विलोम है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- शकुन का विलोम अपशकुन होता है।
- शीत का विलोम उष्ण होता है।
- शुक्ल का विलोम कृष्ण होता है।
- शासक का विलोम शासित होता है।
- शुष्क का विलोम सिक्त होता है।

□ श्रुति समभिन्नार्थक शब्द

1. 'आकृति' शब्द का समभिन्नार्थक क्या है?

- (a) बनवट (b) वस्त्र
(c) चित्र (d) समरूप

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'आकृति' शब्द का समभिन्नार्थक, शक्ल, आकार तथा बनावट है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को गलत बताते हुए मूल्यांकन से बाहर कर दिया।

2. शब्द युग्म 'पर्यन्त-पर्यंक' के सही अर्थ भेद का चयन कीजिए-

- (a) तक - कीचड़ (b) तक - पलंग
(c) पर्याप्त - पलंग (d) समग्र-पीड़क

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

पर्यन्त का अर्थ 'तक' होता है तथा पर्यंक का अर्थ 'पलंग' होता है। अतः विकल्प (b) सही उत्तर है।

□ अनेकार्थक शब्द

1. इनमें एक शब्द अनेकार्थी नहीं है -

- (a) कर (b) वर्ण
(c) लज्जा (d) अर्क

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

कर, वर्ण तथा अर्क अनेकार्थी शब्द हैं। कर का अनेकार्थी किरण, हाथ, टैक्स, सँड़ इत्यादि, वर्ण का अनेकार्थी अक्षर, रंग, शब्द, रूप, चातुर्वर्ण्य (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र), अर्क का अनेकार्थी सूर्य, इन्द्र, तौबा, विष्णु, काढ़ा, स्फटिक इत्यादि होता है, जबकि लज्जा अनेकार्थी शब्द नहीं है।

2. इनमें से शब्द और उसके सही अर्थ का एक युग्म गलत है, वह है-

- (a) युयुत्सु - युद्ध करने का इच्छुक
(b) मुमुक्षु - मोक्ष प्राप्ति का अभिलाषी
(c) जिज्ञासु - जानने की इच्छा वाला
(d) तितीर्षु - तप करने में संलग्न

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

तैरने की इच्छा रखने वाले को 'तितीर्षु' कहते हैं। शेष युग्म सही हैं।

निर्देश (प्रश्न 3-7 के लिये)-इन प्रश्नों में प्रत्येक में चार शब्द दिये गये हैं। जिनमें से तीन अनेकार्थक शब्द की श्रेणी में आते हैं जो शब्द इस श्रेणी में नहीं आता है, वही आपका उत्तर है।

3. (a) अम्बर (b) वस्त्र
(c) आकाश (d) किरण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

अम्बर, वस्त्र तथा आकाश अनेकार्थक शब्द की श्रेणी में आते हैं। किरण इससे भिन्न है।

4. (a) मधु (b) दूध
(c) शहद (d) शराब

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

मधु, शहद तथा शराब अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। दूध इससे भिन्न है।

5. (a) इन्द्र (b) सिंह
(c) ब्राह्मण (d) सूर्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इन्द्र, सिंह, सूर्य अनेकार्थक शब्द हैं, जबकि ब्राह्मण इससे भिन्न है।

6. (a) सजा (b) बल
(c) शक्ति (d) सेना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

बल, शक्ति तथा सेना तीनों अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। सजा इससे भिन्न है।

7. (a) तात (b) पूज्य
(c) पिता (d) मोती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

तात, पूज्य तथा पिता अनेकार्थक शब्द के अन्तर्गत आते हैं। मोती इससे भिन्न है।

8. अनेकार्थी शब्द 'नाग' का निम्नलिखित में से एक अर्थ है -

- (a) हाथी (b) मोक्ष
(c) रथ (d) पारा

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'नाग' का अनेकार्थी शब्द साँप, हाथी, पर्वत, बादल, दुष्ट इत्यादि होता है।

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'तिरछी नजर' तथा 'आक्षेप' है—

- (a) कटुक्ति (b) व्यंग्य
(c) ताना (d) कटाक्ष

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'तिरछी नजर' तथा 'आक्षेप' का एक अर्थ 'कटाक्ष' है।

10. निम्नलिखित शब्दों में से एक का अर्थ 'धन', 'मतलब', 'कारण' और 'लिए' है -

- (a) आशय (b) तात्पर्य
(c) अर्थ (d) अभिप्राय

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

अर्थ का अनेकार्थक 'धन', मतलब, 'आशय' इत्यादि होता है।

□ वाक्यांश के लिए एक शब्द

1. 'जल में रहने वाला प्राणी' के लिए एक शब्द है -

- (a) जलज (b) जलनिधि
(c) जलचर (d) जलधर

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

'जल में रहने वाला प्राणी' के लिए एक शब्द 'जलचर' है, जबकि 'जल में जन्म लेने वाला' 'जलज' कहलाता है। 'जल को धारण करने वाले' के लिए एक शब्द 'जलधर' तथा समुद्र को 'जलनिधि' कहते हैं।

2. 'जिसके पास कुछ न हो' के लिए एक शब्द है -

- (a) अक्षम (b) अकिंचन
(c) अज्ञ (d) असमर्थ

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'जिसके पास कुछ न हो' के लिए एक शब्द 'अकिंचन' है। 'जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो' के लिए 'अक्षम' तथा 'जो कुछ नहीं जानता हो' के लिए एक शब्द 'अज्ञ' होता है। 'जिसमें सामर्थ्य न हो' के लिए शब्द 'असमर्थ' होगा।

3. 'जिसका निवारण न हो सके' के लिए एक शब्द है -

- (a) अविकल (b) अनिर्धार्य
(c) अनिर्णीत (d) अनिवार्य

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'जिसका निवारण न हो सके' के लिए एक शब्द 'अनिवार्य' है। 'जिसका निर्णय न हो सके' उसके लिए एक शब्द 'अनिर्णीत' है। 'ज्यों का त्यों' के लिए एक शब्द 'अविकल' है।

4. समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला कहलाता है-

- (a) सार्वभौमिक (b) सार्वकालिक
(c) सार्वदेशिक (d) सर्वज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

‘समस्त पृथ्वी से सम्बन्ध रखने वाला’ अर्थात् ‘समस्त भूमि या समस्त देशों से सम्बन्ध रखने वाला’ सार्वभौमिक कहलाता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी विकल्प (a) सही माना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘जिसे सारी बातों का ज्ञान हो’ वह ‘सर्वज्ञ’ कहलाता है।
- ⊕ ‘सर्वसाधारण से सम्बन्धित’ ‘सार्वजनिक’ कहलाता है।
- ⊕ ‘सब भूमि या सभी देशों में होने वाला’ ‘सार्वभौम’ कहलाता है।

5. ‘अतीन्द्रिय’ शब्द का आशय है?

- (a) इन्द्रियों की पहुँच से बाहर
- (b) इन्द्रियों की रखवाली करने वाला
- (c) इन्द्रियों का स्वामी
- (d) इन्द्रियों के वश में रहने वाला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

‘अतीन्द्रिय’ का आशय ‘जिसका अनुभव इन्द्रियों द्वारा न किया जा सकता हो’ अर्थात् इन्द्रियों की पहुँच से बाहर हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘वर्षा की अधिकता’ ‘अतिवृष्टि’ कहलाती है।
- ⊕ ‘कोई बात जो बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी हो’ उसे ‘अतिशयोक्ति’ कहते हैं।
- ⊕ ‘जिसके आने की तिथि (ज्ञात) न हो’ उसे ‘अतिथि’ कहते हैं।

6. ‘न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा’ कहलाता है—

- (a) समशीत
- (b) समउष्ण
- (c) उष्णकटिबन्ध
- (d) समशीतोष्ण

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा’ ‘समशीतोष्ण’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘जो सबको समान भाव से समझता, देखता हो’ ‘समदर्शी’ कहलाता है।
- ⊕ ‘उसी समय में होने या रहने वाला’ ‘समसामयिक’ कहलाता है।
- ⊕ ‘वर्तमान समय या ठीक समय पर होने वाला’ ‘सामयिक’ कहलाता है।

7. ‘जो अधिक बोलता है’ उसे कहते हैं—

- (a) मितभाषी
- (b) मृदुभाषी
- (c) वक्ता
- (d) वाचाल

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘जो अधिक बोलता है’ उसे ‘वाचाल’ कहते हैं। ‘जो अपेक्षाकृत कम बोलता’ है उसे ‘मितभाषी’ कहते हैं। इसी प्रकार ‘मृदु (मीठा) बोलने वाला’ ‘मृदुभाषी’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘कम या नपा-तुला खर्च करने वाला’ ‘मितव्ययी’ कहलाता है।
- ⊕ ‘थोड़ा और नपा-तुला भोजन करने वाला’ ‘मिताहारी’ कहलाता है।
- ⊕ ‘मतिमंद होने की अवस्था’ मतिमंघ कहलाती है।
- ⊕ ‘जो मद्यपान करने का आदी हो’ ‘मद्यप’ कहलाता है।

8. ‘कम बोलने वाले’ के लिए एक शब्द क्या होगा?

- (a) मितभाषी
- (b) वाचाल
- (c) चपल
- (d) मूर्ख

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. ‘जो शीघ्र ही किसी बात या युक्ति को सोच ले’ उसे कहेंगे—

- (a) सहमति
- (b) व्युत्पन्नमति
- (c) प्रत्युत्पन्नमति
- (d) सम्मति

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘जो शीघ्र ही किसी बात या युक्ति को सोच ले’ उसे ‘प्रत्युत्पन्नमति’ कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘किसी के उत्तर में जो ठीक समय पर उत्पन्न हो’ उसे ‘प्रत्युत्पन्न’ कहते हैं।
- ⊕ ‘उत्तर द्वारा खण्डन करके कहा हुआ’ ‘प्रत्युक्त’ कहलाता है।
- ⊕ ‘जो कहीं जाकर लौट आया हो’ उसे ‘प्रत्यागत’ कहते हैं।
- ⊕ ‘जिसकी प्रतारणा (ठगी) की गयी हो’ उसे ‘प्रतारित’ कहते हैं।

10. ‘जो मापा न जा सके’ इसका सही अर्थ है—

- (a) अमानक
- (b) अपरिग्रह
- (c) अपरिमेय
- (d) अतुल्य

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘जो मापा न जा सके’ उसे ‘अपरिमेय’ कहते हैं। इसके लिए एक शब्द ‘अपरिमित’ भी होता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ⊕ ‘जो प्रमेय (प्रमाण से सिद्ध) न हो’ उसे ‘अप्रमेय’ कहते हैं।
- ⊕ ‘आवश्यकता से अधिक धन का ग्रहण न करना’ के लिए एक शब्द ‘अपरिग्रह’ है।
- ⊕ ‘जिसका परिहार/त्याग न हो सके’ उसे ‘अपरिहार्य’ कहते हैं।

11. ‘जिसने मृत्यु को जीत लिया है’ कहलाता है—

- (a) अमरत्व
- (b) मृत्युञ्जय
- (c) अभयदान
- (d) अभयमुद्रा

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘जिसने मृत्यु को जीत लिया है’ वह ‘मृत्युञ्जय’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☞ ‘जो मरण की ओर उन्मुख हो’ वह ‘मरणोन्मुख’ कहलाता है।
- ☞ ‘जिसे मोक्ष की कामना या इच्छा हो’ उसे ‘मुमुक्षु’ कहते हैं।
- ☞ ‘मर जाने की कामना’ ‘मुमूर्षा’ कहलाती है।
- ☞ ‘जिसे मर जाने की कामना हो’ उसे ‘मुमूर्षु’ कहते हैं।
- ☞ ‘मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा’ ‘मुमुक्षा’ कहलाती है।
- ☞ ‘मन को हर लेने वाला’ को ‘मनोहर’ कहते हैं।
- ☞ ‘किसी बात के मर्म (गूढ़ रहस्य) को जानने वाला’ ‘मर्मज्ञ’ कहलाता है।
- ☞ ‘जिसके हृदय को चोट पहुँची हो उसे’ ‘मर्माहत’ कहते हैं।
- ☞ ‘वह स्थिति जब मुद्रा का चलन अधिक हो’ ‘मुद्रास्फीति’ कहलाती है।

12. ‘मोक्ष की इच्छा रखने वाला’ के लिए प्रयुक्त एक शब्द है-

- (a) निर्वाण
- (b) मुमूर्षु
- (c) मुमुक्षु
- (d) जिज्ञासु

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. अन्यमनस्क शब्द का आशय है-

- (a) जिसका मन अपनी ओर हो
- (b) जिसका मन किसी दूसरी ओर हो
- (c) जिसका मन निर्मल हो
- (d) जिसका मन केन्द्रित हो

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘अन्यमनस्क’ का आशय है-जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☞ ‘किसी और स्थान पर’ के लिए एक शब्द ‘अन्यत्र’ है।
- ☞ ‘जिसका अपकार किया गया हो’ के लिए एक शब्द ‘अपकृत’ है।
- ☞ ‘जिसके अंग दुरुस्त न हों’ उसे ‘अपंग’ कहते हैं।
- ☞ ‘जिसे मारना उचित न हो’ उसे ‘अवध्य’ कहते हैं।
- ☞ ‘जिसका वर्णन न हो सकता हो’ उसे ‘अवर्ण्य’ कहते हैं।

14. ‘हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले आसन’ के लिए एक शब्द है -

- (a) जीन
- (b) काठी
- (c) हौदा
- (d) बख्तर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘हाथी की पीठ पर रखे जाने वाले ‘आसन’ के लिए एक शब्द ‘हौदा’ है। ‘घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी’ को ‘जीन’ कहते हैं। ‘घोड़े आदि की पीठ पर कसने की जीन’ को ‘काठी’ तथा लोहे के जाल का बना कवच, जिसे युद्ध के समय पहना जाता है, उसे ‘बक्तर’ या ‘बख्तर’ कहते हैं।

15. ‘हमेशा रहने वाला’ एक शब्द बतायें—

- (a) शाश्वत
- (b) समसामयिक
- (c) प्राणदा
- (d) पार्थिव

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘हमेशा रहने वाला’ के लिए एक शब्द शाश्वत है। ‘एक ही समय में वर्तमान’ को ‘समसामयिक’ कहते हैं। ‘प्राण देने वाली’ को प्राणदा तथा ‘पृथ्वी से सम्बन्धित’ पार्थिव कहलाता है।

16. ‘छाती के बल चलने वाला’ के लिए एक शब्द क्या होगा?

- (a) उरग
- (b) भुजंग
- (c) कुरंग
- (d) तुरंग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

‘छाती के बल चलने वाला’ उरग कहलाता है। ‘भुजा के बल चलने वाले’ को भुजंग कहते हैं।

17. ‘निष्फल न होने वाला’ कहलाता है-

- (a) निश्चित
- (b) सही
- (c) सटीक
- (d) अमोघ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

‘निष्फल न होने वाला’ के लिए एक शब्द ‘अमोघ’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☞ ‘बिना हल जोते उगने वाली फसल’ ‘अकृष्टपच्या’ कहलाती है।
- ☞ ‘वह भूमि जो पहले न जोती गयी हो’ ‘अकृष्टपूर्वा’ कहलाती है।
- ☞ ‘जो तर्क से सिद्ध न हों’ ‘अतर्क्य’ कहलाता है।
- ☞ ‘पश्चिम दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है’ उसे ‘अथमना’ कहते हैं।
- ☞ ‘वह जिसने किसी से ऋण लिया हो’, ‘अधमर्ण’ कहलाता है।
- ☞ ‘वह वस्तु जिस पर अधिकार जताया जाय’, ‘अध्यर्थ’ कहलाता है।
- ☞ ‘जिसकी कीमत कम हो’ उसे ‘अनर्ध्य’ कहते हैं।

18. ‘दीन दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था’ वाक्यांश के लिए एक शब्द है-

- (a) भंडारा
- (b) दातव्य
- (c) सदावर्त
- (d) धर्मार्थ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(c)

‘दीन दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था’ को सदावर्त कहते हैं। ‘एक साथ कई लोगों के लिए भोजन देने की व्यवस्था’ भंडारा कहलाता है। ‘धर्म के प्रति किया गया कार्य’ धर्मार्थ कहलाता है।

19. 'जिसने ऋण चुका दिया हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द है—

- (a) मृण्मय (b) उत्रण
(c) उत्तीर्ण (d) भारहीन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

'जिसने ऋण चुका दिया हो' उसे 'उत्रण' कहते हैं। 'मिट्टी से बनी वस्तु' को 'मृण्मय' तथा 'जिसने परीक्षा पास कर ली हो', उसे 'उत्तीर्ण' कहते हैं। 'जिस वस्तु में भार न हो' उसे 'भारहीन' कहते हैं।

20. 'जिसका जन्म पहले हुआ हो' वाक्य के लिए एक उपयुक्त शब्द का

विकल्प चुनिये—

- (a) अग्रज (b) ज्येष्ठ
(c) वरिष्ठ (d) श्रेष्ठ

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'जिसका जन्म पहले हुआ हो' उसके लिए उपयुक्त शब्द 'अग्रज' है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जो आगे रहता हो' अग्रणी' कहलाता है।
- ☛ 'किसी कार्य को करने से पहले सोचने वाला' 'अग्रसोची' कहलाता है।
- ☛ जहाँ जाया न जा सके' उसे 'अगम्य' कहते हैं।
- ☛ 'किसी के गुण को भी अवगुण समझना' 'असूया' कहलाता है।
- ☛ 'जो वश में न हुआ हो' 'अनायत' कहलाता है।

21. 'जीतने की इच्छा' हेतु एक शब्द लिखिये—

- (a) जिजीविषा (b) जिगीषा
(c) विजयेच्छा (d) जयेच्छु

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'जीतने की इच्छा' को 'जिगीषा' कहते हैं। 'अधिक समय तक जीने की इच्छा' को 'जिजीविषा' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जान से मारने की इच्छा' 'जिघांसा' कहलाती है।
- ☛ 'अधिक समय तक जीते रहने का इच्छुक' 'जिजीविषु' कहलाता है।
- ☛ 'जो जन्म से ही अन्धा हो' उसे 'जन्मांध' कहते हैं।

22. अन्न को पचाने वाली अग्नि है—

- (a) जठराग्नि (b) बड़वाग्नि
(c) दावाग्नि (d) दावानल

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

अन्न को पचाने वाली (पेट की) अग्नि को 'जठराग्नि' या 'जठरानल'

कहते हैं। 'बड़वाग्नि', 'सागर में लगी आग' को कहते हैं। 'दावाग्नि' या 'दावानल' 'जंगल में लगी आग' कहलाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'धीमी गति से लगने वाली आग' 'मंदवाग्नि' कहलाती है।
- ☛ 'विरह की आग' 'विरहाग्नि' कहलाती है।

23. 'जंगल में लगने वाली आग' वाक्यांश का एक शब्द बतलाएँ?

- (a) जठरानल (b) बड़वानल
(c) कामानल (d) दावानल

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. 'जो पहले कभी न हुआ हो' वाक्यांश के लिए प्रयुक्त शुद्ध एक शब्द है—

- (a) अपूर्व (b) अभूतपूर्व
(c) अद्वितीय (d) इनमें से कोई भी नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

'जो पहले कभी न हुआ हो' वाक्यांश के लिए एक शब्द 'अभूतपूर्व' है। 'जो पहले न हो रहा हो या न हुआ हो' उसे 'अपूर्व' कहते हैं। 'जिसके समान कोई दूसरा न हो' उसे 'अद्वितीय' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जिस पर अभियोग लगाया गया हो' उसे 'अभियुक्त' कहते हैं।
- ☛ 'जो किसी पर अभियोग लगाये' उसे 'अभियोगी' कहते हैं।
- ☛ 'जो घबराने वाला न हो' 'अकातर' कहलाता है।
- ☛ 'अत्यंत सूक्ष्म होने की शक्ति प्राप्त होना' 'अणिमा' कहलाता है।

25. जो पहले कभी न हुआ हो—

- (a) अद्भूत (b) अभूतपूर्व
(c) अपूर्व (d) अनुपम

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

निर्देश (प्रश्न 26-28) : निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए विकल्पों में से उपयुक्त शब्द चुनिये—

26. जिसके समान दूसरा न हो

- (a) अद्वितीय (b) अनोखा
(c) अकेला (d) असमान

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'जिसके समान दूसरा न हो' उसके लिए एक शब्द 'अद्वितीय' है।

27. जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हो -

- (a) असफल (b) अनुत्तीर्ण
(c) अयोग्य (d) अवन्ति

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हो’ उसे ‘अनुत्तीर्ण’ कहते हैं। ‘जो किसी कार्य में सफल न हो’ वह असफल कहलाता है। ‘जो योग्य न हो’ उसे अयोग्य कहते हैं।

28. जो उपकार को न मानता हो -

- (a) कृतघ्न (b) उपकारी
(c) कृतज्ञ (d) अनुपकारी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘जो उपकार को न मानता हो’ उसे ‘कृतघ्न’ कहते हैं। ‘जो उपकार करता हो’ उसे ‘उपकारी’ कहते हैं। ‘जो उपकार को मानता हो’ उसे कृतज्ञ कहते हैं। ‘जो उपकार न करता हो’ उसे अनुपकारी कहते हैं।

29. ‘जो पूजा के योग्य हो’ उसे कहा जायेगा-

- (a) पूज्यनीय (b) पूज्य
(c) पुज्यनीय (d) पूजनीय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

‘जो पूजा के योग्य हो’ उसे ‘पूजनीय’ अथवा ‘पूज्य’ कहा जाएगा। व्याकरणिक दृष्टि से ‘पूज्यनीय’ शब्द अशुद्ध है। इसी प्रकार अन्य विकल्पों में भी त्रुटियाँ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘जिसकी कामना पूरी हो गयी हो’ उसे ‘पूर्णकाम’ कहते हैं।
- ☛ ‘एक बार कही बात को दुहराते रहना’ ‘पिष्टपेषण’ कहा जाता है।
- ☛ ‘पशुओं की तरह आचरण करने वाला’ ‘पाशविक’ कहलाता है।
- ☛ पृथ्वी से सम्बन्धित या मिट्टी का बना हुआ ‘पार्थिव’ कहलाता है।

30. ‘अन्त्यज’ शब्द का सही अर्थ है-

- (a) जो जन्म से अपंग हो
(b) जो जन्म के उपरान्त त्याग दिया गया हो
(c) जिसका जन्म निम्न (अछूत) वर्ग में हुआ हो
(d) जो जन्म से कुरूप हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘अन्त्यज’ शब्द का सही अर्थ ‘जिसका जन्म निम्न (अछूत) वर्ग में हुआ हो’ अर्थात् ‘जो अन्तिम वर्ण (शूद्र) में जन्मा हो’ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘मन में होने वाला या स्वाभाविक ज्ञान’ को ‘अन्तर्ज्ञान’ कहते हैं।
- ☛ ‘किसी देश के अन्दर होने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला’ के लिए एक शब्द ‘अन्तर्देशीय’ है।
- ☛ ‘जो किसी वस्तु के अन्दर दृढ़तापूर्वक विद्यमान या स्थित है’ उसे ‘अन्तर्निविष्ट’ कहते हैं।
- ☛ ‘गुरु के समीप रहने वाला छात्र’ ‘अन्तेवासी’ कहलाता है।

31. देवताओं का उपवन-

- (a) नन्दन कानन (b) अशोक वाटिका
(c) स्वर्ग (d) कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

‘स्वर्ग में इन्द्र का उपवन’ ‘नन्दन’ कहलाता है। अतः इन्द्र भी एक देवता है। इसलिए ‘देवताओं का उपवन’ ‘नन्दन कानन’ कहलायेगा।

32. ‘बहुज्ञ’ शब्द का सही अर्थ है-

- (a) जो बहुत जानकार हो (b) जानने की इच्छा रखने वाला
(c) जो अध्ययनशील हो (d) जो कम जानता हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

‘जो बहुत जानकार हो’ अर्थात् ‘बहुत से विषयों का जानकार हो’ उसे ‘बहुज्ञ’ कहते हैं। ‘जानने की इच्छा रखने वाला’ ‘जिज्ञासु’ कहलाता है। ‘जो कम जानता हो’ वह ‘अल्पज्ञ’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘जिसे समाज या जाति से बाहर निकाल दिया गया हो’ उसे ‘बहिष्कृत’ कहते हैं।
- ☛ ‘बहुत सी भाषाएँ जानने वाला’ ‘बहुभाषाविद्’ कहलाता है।
- ☛ ‘जिसने अनेक विषयों का ज्ञान सुना और स्मरण कर लिया हो’ उसे ‘बहुश्रुत’ कहते हैं।
- ☛ ‘जिसको किसी बात की खबर न हो’ ‘बेखबर’ कहलाता है।
- ☛ ‘सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का पवित्र समय’ ‘ब्रह्ममुहूर्त’ कहलाता है।

33. ‘जिसमें जानने की इच्छा हो’ के लिए एक शब्द है-

- (a) जितेन्द्रिय (b) अजेय
(c) जलचर (d) जिज्ञासु

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

‘जिसमें जानने की इच्छा हो’ के लिए एक शब्द ‘जिज्ञासु’ है। ‘जिसने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली हो’ उसे ‘जितेन्द्रिय’ कहते हैं। इसी प्रकार ‘जिसे जीता न जा सके’ उसे ‘अजेय’ तथा जो ‘जल में विचरण करता हो’ उसे ‘जलचर’ कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जन्म से सौ वर्ष का समय' 'जन्मशती' कहलाता है।
- ☛ 'जो वृद्ध होने के कारण जर्जर हो गया हो' उसे 'जराजीर्ण' कहते हैं।
- ☛ 'जल में पैदा होने वाला' 'जलज' कहलाता है।
- ☛ 'सारे जीवन में किसी के कार्यों आदि का विवरण' 'जीवन-चरित्र' कहलाता है।

- ☛ 'जहाजों को रात्रि में मार्ग दिखाने वाला प्रकाश स्तम्भ' 'आकाशदीप' कहलाता है।
- ☛ 'अपने ऊपर निर्भर रहने वाला' 'आत्मनिर्भर' कहलाता है।
- ☛ 'बालक से वृद्ध तक सभी' के लिए एक शब्द 'आबालवृद्ध' है।
- ☛ 'ऋषि का कहा हुआ वचन' 'आर्षवचन' कहलाता है।
- ☛ 'पाद (पैर) से मस्तक तक' 'आपादमस्तक' कहलाता है।

34. जो कुछ जानने की इच्छा रखता हो—

- (a) जिज्ञासु (b) जननी
(c) जानकी (d) नीतिज्ञ

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

35. 'जिसकी आशा न की गयी हो'—उसे कहा जाता है—

- (a) निराशा (b) अप्रत्याशित
(c) उपेक्षा (d) असम्भव

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'जिसकी आशा न की गयी हो' उसे 'अप्रत्याशित' कहा जाता है। जो सम्भव न हो' उसे 'असम्भव' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'सामान्य या व्यापक नियम के विरुद्ध बात' 'अपवाद' कहलाती है।
- ☛ 'जिसके लिए कोई बाधा या रोक-टोक न हो' उसे 'अबाध' कहते हैं।
- ☛ 'कोई काम स्वभाववश करते रहने की क्रिया' 'अभ्यास' कहलाती है।
- ☛ 'जो कभी प्रकाश में न आया हो' या 'जिसका प्रकाशन न हुआ हो' उसे अप्रकाशित कहते हैं।

36. जिसका कोई शत्रु पैदा ही नहीं हुआ हो, उसे कहते हैं—

- (a) आजानुबाहु (b) अजातशत्रु
(c) अज्ञातशत्रु (d) अजातपूर्व

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'जिसका कोई शत्रु पैदा ही नहीं हुआ हो' उसे 'अजातशत्रु' कहते हैं। 'जिसकी भुजाएँ जानु (घुटने) तक लम्बी हो' उसे 'आजानुबाहु' तथा 'जिस शत्रु की जानकारी न हो' उसे 'अज्ञातशत्रु' कहते हैं। 'जो इससे पूर्व पैदा ही न हुआ हो' उसे 'अजातपूर्व' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जिसके कुल का पता न हो' उसे 'अज्ञातकुल' कहते हैं।
- ☛ 'कई व्यक्तियों में एक' के लिए एक शब्द 'अन्यतम' है।
- ☛ 'ज्यों का त्यों' के लिए एक शब्द 'अविकल' है।
- ☛ 'जिस कल्पित पर्वत के पीछे सूर्य अस्त होता है' उसे 'अस्ताचल' कहते हैं।

37. 'जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों' के लिये एक शब्द क्या होगा?

- (a) आजानुबाहु (b) अनजान बाहु
(c) सम्बाहु (d) अग्रबाहु

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. 'आजानुबाहु' शब्द निम्नलिखित में से किस वाक्यांश के लिए सही है?

- (a) जिसकी भुजाएँ छोटी हों
(b) जिसकी भुजाएँ लम्बी हों
(c) जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो' के लिए एक शब्द है—

- (a) आगतपतिका (b) प्रवत्यपतिका
(c) प्रोषितपतिका (d) आगमिष्यतपतिका

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो' उसे 'आगमिष्यतपतिका' कहते हैं। 'वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो' उसे 'आगतपतिका' कहते हैं। 'वह स्त्री जिसका पति विदेश गया हो' उसे 'प्रोषितपतिका' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'वह स्त्री जिसका पति विदेश जाने को हो' उसे 'प्रवत्यपतिका' कहते हैं।
- ☛ 'वह स्त्री जिसे उसके पति ने छोड़ दिया हो' उसे 'पस्त्रित्ता' कहते हैं।
- ☛ वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले उसे 'अध्युदा' कहते हैं।
- ☛ 'दुराचारीणी स्त्री' को 'कुलटा' कहते हैं।

40. 'वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले'—इस वाक्यांश के लिए एक शब्द है—

- (a) अध्युदा (b) परित्यक्ता
(c) अनूदा (d) खण्डिता

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

41. वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो, कहलाता है-

- (a) अन्योदर (b) दूरस्थ
(c) औरस (d) सहोदर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

‘वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो’, ‘अन्योदर’ कहलाता है।
‘जो विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो’ उसे ‘औरस’ कहते हैं। ‘एक ही माता से जन्म लेने वाला’ ‘सहोदर’ कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘जिसका जन्म अण्डे से हुआ हो’ उसे ‘अण्डज’ कहते हैं।
- ☛ ‘जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो’ उसे ‘अनवगत’ कहते हैं।
- ☛ प्रासाद (महल) के अन्दर का भाग ‘अन्तःपुर’ कहलाता है।

42. रजोगुण वाला-

- (a) तामसिक (b) राजसिक
(c) वाचिक (d) सात्विक

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘रजोगुण वाला’ ‘राजसिक’ कहलाता है। ‘सत्वगुण वाला’, ‘सात्विक’ कहलाता है। इसी प्रकार ‘तमोगुण वाला’, तामसिक कहलाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ सात्विक व्यक्ति में सुख, सन्तोष एवं ज्ञान निहित होता है।
- ☛ राजसिक व्यक्ति में दुःख तथा आसक्ति का निवास होता है।
- ☛ तामसिक व्यक्ति में अज्ञान एवं उदासीनता विद्यमान रहती है।

43. ‘सद्यःस्नाता’ शब्द निम्नलिखित में से किस वाक्यांश पर लागू होता है?

- (a) जो सदा स्नान करती हो
(b) जो सदा नत बनी रहती हो
(c) जिसने अभी-अभी स्नान किया हो
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

‘जिसने अभी-अभी स्नान किया हो’ उसे ‘सद्यःस्नाता’ कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘जिसने अभी हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो’ उसे ‘सद्यःप्रसूता’ कहते हैं।
- ☛ ‘जिसमें स्नान किया जा सके’ उसे ‘स्नानीय’ कहते हैं।
- ☛ ‘सुजन (अच्छा मनुष्य) होने की अवस्था गुण या भाव’ ‘सौजन्य’ कहलाता है।
- ☛ ‘किसी सत्ता के विरुद्ध अपना सत्य मनवाने के लिए किया गया आन्दोलनात्मक आग्रह’ ‘सत्याग्रह’ कहलाता है।

44. सबके समानाधिकार पर विश्वास-

- (a) अधिकारी (b) समाजवाद
(c) प्रगतिवादी (d) अधिकारवाद

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘सबके समानाधिकार पर विश्वास’ ‘समाजवाद’ कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, समाज की आर्थिक विषमता को दूर करके समता स्थापित करने की कोशिश की जाती है। ‘वह जिसे कोई स्वत्व प्राप्त हो’ ‘अधिकारी’ कहलाता है।

45. जो बात लोगों से सुनी गयी हो-

- (a) अश्रुति (b) सर्वप्रिय
(c) लोकोक्ति (d) किंवदन्ती

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘जो बात लोगों से सुनी गयी हो’ उसे ‘किंवदन्ती’ कहते हैं। ‘जो न सुनी गयी हो’ उसे अश्रुति कहते हैं। जो सबको प्रिय हो ‘सर्वप्रिय’ कहलाता है। ‘लोक (लोगों) द्वारा कही गयी उक्ति या वाक्य’ ‘लोकोक्ति’ कहलाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘जिसकी अब कीर्ति शेष रह गयी हो’ ‘कीर्तिशेष’ कहलाता है।
- ☛ ‘जिस लड़की का विवाह न हुआ हो’ उसे ‘कुमारी’ कहते हैं।
- ☛ ‘अपने ही कुल का नाश करने वाला व्यक्ति’ ‘कुलांगर’ कहलाता है।
- ☛ ‘जो अच्छे या ऊँचे कुल में उत्पन्न हुआ हो’ उसे ‘कुलीन’ कहते हैं।

46. ‘कृतघ्न’ शब्द का सही अर्थ है-

- (a) जो उपकार नहीं करता
(b) जो किए हुए उपकार को नहीं मानता
(c) जो शत्रु को जीत लेता है
(d) जो मित्रता को नहीं मानता

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘जो किए हुए उपकार को नहीं मानता’ अर्थात् ‘किए हुए उपकार को भूल जाता है’ उसे ‘कृतघ्न’ कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘किए हुए उपकार को मानने वाला’ ‘कृतज्ञ’ कहलाता है।
- ☛ ‘जो अपना उद्देश्य सिद्ध होने पर सन्तुष्ट हो’ उसे ‘कृतार्थ’ कहते हैं।
- ☛ ‘जिसकी उत्पत्ति स्वभावगत न हो’ उसे ‘कृत्रिम’ कहते हैं।
- ☛ ‘जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो’ उसे ‘कूपमंडूक’ कहते हैं।

47. 'जिस पर अनुग्रह किया गया हो' वाक्यांश के लिए प्रयुक्त शुद्ध एक शब्द है-

- (a) अनुग्रहीत (b) अनुगृहीत
(c) अनुग्रही (d) अनुग्रहित

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'जिस पर अनुग्रह किया गया हो' उसे 'अनुगृहीत' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'पर्वत के ऊपर की समतल भूमि' 'अधित्यका' कहलाती है।
- ☛ 'जिसकी उपमा न की जा सके' उसे 'अनुपम' कहते हैं।
- ☛ 'जो किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति आसक्त हो' उसे 'अनुरक्त' कहते हैं।
- ☛ 'कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली' 'अनामिका' कहलाती है।
- ☛ 'किसी के पीछे-पीछे चलने वाला' 'अनुगामी/अनुयायी' कहलाता है।

48. 'किंकर्तव्यविमूढ़' शब्द का सही अर्थ है-

- (a) जिसे अपने कर्तव्य का बोध न हो
(b) जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए
(c) जो कर्तव्य के प्रति सचेत हो
(d) जो कर्तव्य से विमुक्त हो

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'जिसे अपने कर्तव्य का बोध न हो' उसे 'किंकर्तव्यविमूढ़' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'जिसकी बुद्धि कुश के अग्र भाग के समान हो' उसे 'कुशाग्रबुद्धि' कहते हैं।
- ☛ 'इच्छानुसार रूप धारण करने वाला' 'कामरूप' कहलाता है।
- ☛ 'जो कर्तव्य से च्युत हो गया हो' उसे 'कर्तव्यच्युत' कहते हैं।

49. 'जिसमें धैर्य न हो' के लिए एक शब्द है-

- (a) अधार (b) धरातल
(c) अधीर (d) धीरता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'जिसमें धैर्य न हो' उसे 'अधीर' कहते हैं। 'अनिश्चय की दशा में पड़ा रहना' 'अधर' कहलाता है।

50. जिसे किसी से लगाव न हो-

- (a) नश्वर (b) लिप्सु
(c) निर्लिप्त (d) अलगाववादी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'जिसे किसी से लगाव न हो' अर्थात् 'जो किसी विषय में लिप्त या आसक्त न हो' उसे 'निर्लिप्त' कहते हैं। 'नष्ट हो जाने वाला' 'नश्वर' कहलाता है।

51. 'गतानुगतिक' शब्द का सही अर्थ है-

- (a) प्राचीन आदर्श के अनुसार चलने वाला
(b) पीछे चलने वाला
(c) अनुसरण करने वाला
(d) गति को नहीं मानने वाला

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'प्राचीन आदर्श के अनुसार चलने वाला' 'गतानुगतिक' कहलाता है।

52. 'दीर्घसूत्री' का अर्थ है -

- (a) लम्बी कद काठी वाला
(b) बहुत देर से प्रतीक्षारत
(c) दीर्घ प्रवचन करने वाला
(d) धीमी गति से कार्य करने वाला

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

विलम्ब अथवा धीमी गति से कार्य करने वाला 'दीर्घसूत्री' कहलाता है।

53. 'निशीथ' का उपयुक्त अर्थ है-

- (a) अर्धरात्रि का समय
(b) संध्या का समय
(c) प्रातः का समय
(d) इनमें से सभी

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'निशीथ' का उपयुक्त अर्थ 'अर्धरात्रि का समय' होता है।

❑ लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे

1. 'गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास' - लोकोक्ति का सही अर्थ है -

- (a) न्यायप्रिय (b) सिद्धान्तहीन
(c) आदर्शवादी (d) चरित्रहीन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

'गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमुनादास' लोकोक्ति का सही अर्थ 'सिद्धान्तहीन' होता है।

2. 'छछून्दर के सिर में चमेली का तेल' का अर्थ है -

- (a) दान के लिए सुपात्र न होना
- (b) गंजे व्यक्ति के सिर पर सुगन्धित तेल लगाना
- (c) बिल्कुल अनपढ़ व्यक्ति को धन मिलना
- (d) अयोग्य व्यक्ति का अच्छा पद मिलना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'छछून्दर के सिर पर चमेली का तेल' लोकोक्ति है। इसका अर्थ है- अयोग्य व्यक्ति को अच्छा पद मिलना।

3. 'ओछे की प्रीति बालू की भीति' का भाव है-

- (a) बालू की दीवार कमजोर होती है
- (b) ओछे लोग बालू की दीवार बनाकर रहते हैं
- (c) बालू की दीवार की भीति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है
- (d) बालू ओछा पदार्थ होता है

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'ओछे की प्रीति बालू की भीति' का भाव है-बालू की दीवार की भीति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है।

4. 'सबै दिन होत न एक समाना' लोकोक्ति का अर्थ है -

- (a) समय परिवर्तनशील है
- (b) समय अपरिवर्तनशील है
- (c) समय बेकार है
- (d) समय पर न पहुंचना श्रेयष्कर है

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'सबै दिन होत न एक समाना' लोकोक्ति का अर्थ है- समय परिवर्तनशील है। अन्य विकल्प असंगत हैं।

5. 'जिस पत्तल में खाना, उसी पत्तल में छेद करना' कहावत का अर्थ है-

- (a) अपने हाथों अपना ही नुकसान करना
- (b) कृतघ्न होना
- (c) परोसे गये भोजन का निरादर करना
- (d) मूर्खतापूर्ण कार्य करना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

जिस पत्तल में खाना, उसी पत्तल में छेद करना कहावत का अर्थ है- उपकारी का ही अपकार करना अर्थात् 'कृतघ्न होना'। अन्य विकल्प असंगत हैं।

6. 'तुच्छ मनुष्य की मित्रता शीघ्र ही समाप्त हो सकती है'-भाव को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है-

- (a) अधजल गगरी छलकत जाय
- (b) थोथा चना बाजे घना
- (c) कबहुँ निरामिष होय न कागा
- (d) ओछे की प्रीति बालू की भीति

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'तुच्छ मनुष्य की मित्रता शीघ्र ही समाप्त हो सकती है'-भाव को व्यक्त करने वाली लोकोक्ति है-ओछे की प्रीति बालू की भीति।

7. 'कड़ाही से गिरा चूल्हे में आ पड़ा' का भाव है-

- (a) एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में आ पड़ना
- (b) कड़ाही और चूल्हा पास-पास होता है
- (c) एक बार भूल होती है तो बार-बार होती है
- (d) कड़ाही चूल्हे में गिर गई

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'कड़ाही से गिरा चूल्हे में आ पड़ा' का भाव है-एक विपत्ति से छूटकर दूसरी में आ पड़ना।

8. 'नई जमीन तोड़ना' के चार अर्थ दिये गये हैं, सही का चयन कीजिए-

- (a) पुराने को मिटाना
- (b) लिखे हुए को काटना
- (c) अनूठा प्रयोग
- (d) बड़ी लकीर खींचना

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'नई जमीन तोड़ना' मुहावरे का अर्थ है- किसी नये क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करना अर्थात् अनूठा प्रयोग।

9. 'गूलर का फूल होना' मुहावरे का अर्थ है -

- (a) लाल पीला होना
- (b) अत्यधिक सुन्दर होना
- (c) विवर्ण होना
- (d) दुर्लभ होना

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'गूलर का फूल होना' मुहावरे का अर्थ होता है - दुर्लभ होना।

10. 'असंभव काम करना' का अर्थक मुहावरा है-

- (a) आसमान के तारे तोड़ना
- (b) आसमान सिर पर उठाना
- (c) आसमान पर दिमाग होना
- (d) आसमान पर चढ़ा देना

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

'आसमान के तारे तोड़ना' मुहावरा का अर्थ 'असंभव काम करना' होता है।

11. 'बरस पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है?

- (a) अत्यधिक क्रोधित होना (b) वर्षा का होना
(c) प्रेम करना (d) सम्मान देना

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'बरस पड़ना' मुहावरे का सही अर्थ 'अत्यधिक क्रोधित होना' होता है।

12. 'छठी का दूध याद आना' का सही अर्थ क्या है?

- (a) बुरा हाल होना (b) पराजित होना
(c) बचपन को याद करना (d) भूख लगना

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'छठी का दूध याद आना' मुहावरे का सही अर्थ 'भारी संकट में पड़ना' या 'अत्यधिक कठिन या कष्टप्रद होना' होता है। डॉ. हरदेव बाहरी अपनी पुस्तक 'हिन्दी : 'शब्द-अर्थ-प्रयोग' में इसका अर्थ 'संकट में पिछले सुख की याद आना' मानते हैं। उचित विकल्प न होने के कारण विकल्प (a) को उत्तर माना जा सकता है।

13. 'ऊँट के मुँह में जीरा' का सही अर्थ है—

- (a) बहुत थोड़ा
(b) ऊँट के मुँह में पीड़ा होना
(c) ऊँट को जीरा खिलाना
(d) पेट भरने के लिये कुछ भी खाना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'ऊँट के मुँह में जीरा' मुहावरे का अर्थ है—बहुत थोड़ा या जरूरत से कम मात्रा।

14. 'सिर पर पाँव रखकर भागना' मुहावरे का सही अर्थ है—

- (a) सर्कस दिखाना (b) तुरंत भाग जाना
(c) करतूत दिखाना (d) चोट पहुँचाना

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

“सिर पर पाँव रखकर भागना” मुहावरे का अर्थ 'तुरंत भाग जाना' होता है।

निर्देश (प्रश्न 15 से 19 के लिए) : उद्धृत किये गये मुहावरों का सही अर्थ बताइए।

15. कान पकड़ना

- (a) प्रतिज्ञा करना
(b) कान पक जाना

(c) गलती करने पर दूसरे के कान पकड़ना

(d) यह मुहावरा नहीं है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'कान पकड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है - गलती स्वीकार करना। वैसे इस मुहावरे का एकदम सही विकल्प नहीं दिया गया है, किन्तु कुछ हद तक विकल्प (a) सही है।

16. नाक रगड़ना

- (a) खुजली करना (b) माफ़ी माँगना
(c) नाक में फुंसी होने पर रगड़ना (d) अर्थ ज्ञात नहीं

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'नाक रगड़ना' मुहावरे का सही अर्थ है - माफ़ी माँगना।

17. सिर मढ़ना

- (a) ज़बरदस्ती आरोप लगाना (b) सिर को सजाना
(c) सिर में कुछ गूँथना (d) सिर में दर्द होना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'सिर मढ़ना' मुहावरे का अर्थ है- जबरदस्ती आरोप लगाना।

18. बात बनाना

- (a) कहानी कहना (b) सोचना
(c) बातें करना (d) बहाना करना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'बात बनाना' मुहावरे का सही अर्थ है- बहाना करना।

19. आँखें भर आना

- (a) आँसू आ जाना (b) भाव-विभोर होना
(c) नींद आना (d) आँख दुखना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

'आँखें भर आना' मुहावरे का सही अर्थ है - भाव-विभोर होना।

निर्देश (प्रश्न 20-22) : दिए गए मुहावरे-लोकोक्तियों का सही अर्थ छँटिये -

20. रंग उड़ना

- (a) घबरा जाना (b) रंग फीका होना

(c) गुलाल बिखेरना

(d) रंग में डूबना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘रंग उड़ना’ मुहावरे का सही अर्थ ‘घबरा जाना’ होता है।

21. विपत्ति मोल लेना

- (a) बिना पते की सब्जी लेना (b) जान-बूझ कर संकट में पड़ना
(c) एक दवाई खरीदना (d) मुसीबत खरीदना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘विपत्ति मोल लेना’ मुहावरे का सही अर्थ है जान-बूझकर संकट में पड़ना।

22. आगे कुआँ, पीछे खाई

- (a) दोनों ओर विपत्ति होना
(b) दोनों ओर गड़ढे होना
(c) पहले कुआँ खोदना, फिर खाई
(d) सामने कुआँ, पीठ पीछे खाई होना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘आगे कुआँ, पीछे खाई’ लोकोक्ति का सही अर्थ है ‘दोनों ओर विपत्ति होना’।

23. ‘अंडे का शहजादा’ मुहावरे का अर्थ है -

- (a) कमजोर व्यक्ति (b) चालाक व्यक्ति
(c) अनुभवी व्यक्ति (d) अनुभवहीन व्यक्ति

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

‘अंडे का शहजादा’ मुहावरे का अर्थ है- अनुभवहीन व्यक्ति।

24. ‘चेहरे पर हवाई उड़ना’ का अर्थ है -

- (a) तेजी से चलना (b) घबरा जाना
(c) जवाब न देना (d) क्रोधित होना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

‘चेहरे पर हवाई उड़ना’ का अर्थ होता है - ‘घबरा जाना’।

25. ‘खेत रहना’ मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है-

- (a) सम्पत्ति का बचा रह जाना (b) इज्जत बच जाना
(c) वीरगति को प्राप्त हो जाना (d) शत्रु से मुकाबला होना

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

‘खेत रहना’ या ‘खेत आना’ मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है- ‘वीरगति को प्राप्त हो जाना’ या ‘युद्ध में शहीद होना’।

26. ‘खेत रहना’ मुहावरे का अर्थ है-

- (a) युद्ध में शहीद होना
(b) कानूनी विवाद से जमीन का बच जाना
(c) जमीन बिक जाना
(d) जमीन खरीदना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

27. ‘फूँक-फूँक कर कदम रखना’ मुहावरे का अर्थ है -

- (a) धीरे-धीरे चलना (b) डर कर कदम रखना
(c) फूँक मारते हुए पैर रखना (d) सोच-विचार कर काम करना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘फूँक-फूँक कर कदम रखना’ मुहावरे का अर्थ ‘सोच-विचार कर काम करना’ होता है।

28. ‘एकमात्र सहारा’ मुहावरे का सही अर्थ है-

- (a) आँखों का तारा
(b) नाक का बाल होना
(c) अन्धे की लाठी होना
(d) आँखें बिछाना

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

‘अन्धे की लाठी होना’ मुहावरे का सही अर्थ ‘एकमात्र सहारा’ होता है।

29. ‘मुंह की खाना’ मुहावरे का अर्थ है-

- (a) भोजन करना (b) चोट खाना
(c) बुरी तरह हारना (d) गिर पड़ना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

‘मुँह की खाना’ मुहावरे का अर्थ है- बुरी तरह हारना। अन्य विकल्प असंगत हैं।

30. ‘मेंढकी को जुकाम होना’ का अर्थ है-

- (a) बिना जान-पहचान के लेनदेन
(b) बिना योग्यता के योग्य होने का नखरा
(c) भयंकर बरसात होना
(d) भयंकर सर्दी होना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘मेंढकी को जुकाम होना’ का अर्थ है - बिना योग्यता के योग्य होने का नखरा। अन्य विकल्प असंगत हैं।

31. 'आकाश-पाताल एक करना' मुहावरा किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

- (a) घनघोर वर्षा होना
(b) बहुत अधिक उपद्रव करना
(c) बहुत भारी प्रयास करना
(d) नीचे स्थान से ऊँचे स्थान पर पहुँचना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'आकाश पाताल एक करना' मुहावरे का अर्थ है- बहुत भारी प्रयास करना। अन्य विकल्प असंगत हैं।

32. 'अन्धे की लकड़ी' से तात्पर्य है-

- (a) बैसाखी का सहारा (b) अन्धे की विशेष छड़ी
(c) कुमार्ग पर चलना (d) एक ही सहारा

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'अन्धे की लकड़ी' से तात्पर्य है- एक ही सहारा या एकमात्र सहारा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➔ अन्धे से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं-

मुहावरा	अर्थ
अन्धा बनाना	मूर्ख बनाकर धोखा देना
अन्धे के हाथ बटेर लगना बिना प्रयास के अप्राप्य वस्तु को पा लेना	
अन्धों में काना राजा	अयोग्य व्यक्तियों के बीच कम योग्य भी बहुत योग्य होता है।

33. 'कागजी घोड़े दौड़ाना' मुहावरे का अर्थ होगा-

- (a) नकली घोड़े दौड़ाना (b) बहुत परिश्रम करना
(c) व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना (d) जाँच पड़ताल करना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कागजी घोड़े दौड़ाना' मुहावरे का अर्थ 'व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना' है।

34. 'आँख का काजल चुराना' मुहावरे का अर्थ है -

- (a) सामने या पास की वस्तु चुरा लेना।
(b) आँख में लगाने वाले काजल की चोरी करना।
(c) मामूली वस्तु की चोरी करना।
(d) असम्भव प्रकार की चोरी का प्रयत्न करना।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आँख का काजल चुराना' मुहावरे का अर्थ 'सामने या पास की वस्तु चुरा लेना' अथवा 'सफाई से चोरी करना' होता है।

35. 'आँख फेरना' मुहावरे का अर्थ है -

- (a) प्रेमपूर्ण दृष्टि डालना
(b) पहले जैसा प्रेम न रखना

(c) किसी वस्तु को ऊपर से नीचे तक देखना

(d) किसी वस्तु पर उड़ती नज़र डालना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'आँख फेरना' मुहावरे का अर्थ 'पहले जैसा प्रेम न रखना' है।

36. 'पौ बारह होना' का अर्थ है -

- (a) विरोध होना (b) समर्थन करना
(c) कष्ट झेलना (d) मजे में रहना

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'पौ बारह होना' मुहावरे का अर्थ 'मजे में रहना' अथवा अत्यधिक लाभ कमाना होता है।

37. 'घड़ों पानी पड़ना' मुहावरे का अर्थ होगा-

- (a) नहाना (b) काँपना
(c) लज्जित होना (d) सर्दी लगना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

'घड़ों पानी पड़ना' मुहावरे का अर्थ लज्जित होना अथवा बहुत शर्मिंदा होना होता है।

38. 'जूतियों में दाल बाँटना' मुहावरे का सही अर्थ है-

- (a) दुःखी होना (b) अपमान करना
(c) चापलूसी करना (d) लड़ाई-झगड़ा हो जाना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'जूतियों में दाल बाँटना' मुहावरे का सही अर्थ है-लड़ाई-झगड़ा हो जाना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➔ जूतियाँ/जूते चाटना मुहावरा का अर्थ 'चापलूसी करना' होता है।

39. 'कान भरना' मुहावरे का अर्थ है-

- (a) धोखा देना (b) चाणक होना
(c) चुगली करना (d) असर न हो

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कान भरना' मुहावरे का अर्थ चुगली करना होता है।

40. 'कीचड़ उछालना' मुहावरा का सही अर्थ है-

- (a) मल फेंकना (b) दूसरे के कपड़े गन्दे करना
(c) बदनाम करना (d) दलदल में फँसना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'कीचड़ उछालना' मुहावरा का सही अर्थ है-बदनाम करना अथवा निन्दा करना।

41. 'आग में घी डालना' मुहावरा का सही अर्थ है-

- (a) हवन करना
- (b) देवता को प्रसन्न करना
- (c) क्रोधी को और अधिक उत्तेजित करना
- (d) क्रोध से आग बबूला होना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'आग में घी डालना' मुहावरा का सही अर्थ क्रोधी को और अधिक उत्तेजित करना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

☞ 'आग से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं-

मुहावरा	अर्थ
आग पर तेल छिड़कना	और भड़काना
आग पर पानी डालना	झगड़ा मिटाना
आग और फूल का बैर होना	स्वाभाविक शत्रुता होना
आग बबूला होना	बहुत गुस्सा होना
आग में कूदना	जान जोखिम में डालना
आग लगने पर कुआँ खोदना	पहले से कोई उपाय न कर रखना
आग लगाकर तमाशा देखना	झगड़ा पैदा करके खुश होना

42. 'घड़ी में तोला घड़ी में माशा' का अर्थ है-

- (a) बहुत ही नाजुक मिजाज
- (b) डण्डी मारने में कुशल व्यापारी
- (c) ऐसा व्यापार जिसमें एक पल मुनाफा हो, तो दूसरे पल कहीं नुकसान
- (d) जरा सी बात पर खुश और नाराज होना

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

घड़ी में तोला घड़ी में माशा का अर्थ है-जरा सी बात पर खुश और नाराज होना।

43. 'सिर उठाना' मुहावरे का सही अर्थ है-

- (a) रंग उतर जाना
- (b) भेद प्रकट करना
- (c) बहुत पछताना
- (d) विद्रोह करना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'सिर उठाना' मुहावरे का सही अर्थ है- विद्रोह करना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

☞ सिर से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे इस प्रकार हैं-

मुहावरा	अर्थ
सिर गंजा करना	बुरी तरह पीटना
सिर पर कफन बाँधना	बलिदान देने के लिए तैयार होना
सिर पर खून सवार होना	मरने-मारने पर उतारू होना
सिर पर पाँव रखकर भागना	तुरन्त भाग जाना
सिर पर भूत सवार होना	धुन लग जाना
सिर पर सवार रहना	पीछे पड़ना
सिर मुँड़ाते ओले पड़ना	कार्य शुरू होते ही बाधा आना

44. 'गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा' मुहावरा का सही अर्थ है?

- (a) छोटे शिशु को तलाशना
- (b) अत्यधिक शरारती बालक
- (c) पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना
- (d) छोटे बालक की प्रशंसा करना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा' मुहावरा का सही अर्थ 'पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना' है।

45. 'सोने में सुगन्ध' मुहावरा का सही अर्थ है-

- (a) सुन्दर वस्तु में और गुण होना
- (b) सुगन्ध से युक्त आभूषण
- (c) सुन्दर आभूषण होना
- (d) सुगन्धित सोना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'सोने में सुगन्ध' मुहावरा का सही अर्थ 'सुन्दर वस्तु में और गुण होना' है।

46. 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ है-

- (a) गणित में निष्णात होना
- (b) अधिक हो जाना
- (c) भाग जाना
- (d) साथ-साथ रहना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ है-भाग जाना।

47. 'चैन की बंशी बजाना' का अर्थ है-

- (a) साइकिल की चैन की बाँसुरी बनाकर बजाना
- (b) मौज करना

- (c) फुर्सत में बंशी बजाना
(d) बेरोजगार होना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘चैन की बंशी बजाना’ का अर्थ आनन्द या मौज करना अथवा शान्त और सुखमय जीवन बिताना है।

48. ‘घी के दिये जलाना’ मुहावरा का सही अर्थ है-

- (a) दीपावली मनाना
(b) खुशी मनाना
(c) रईसी प्रकट करना
(d) अपने को विशिष्ट समझना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

‘घी के दिये जलाना’ मुहावरा का सही अर्थ खुशी मनाना है।

49. ‘अदृश्य शत्रु’ अर्थ के अनुरूप उपयुक्त मुहावरा है-

- (a) मीठी छुरी
(b) मुँह में राम बगल में छुरी
(c) पेट में दाढ़ी
(d) आस्तीन का साँप

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘अदृश्य शत्रु’ या ‘कपटी मित्र’ अर्थ के अनुरूप उपयुक्त मुहावरा ‘आस्तीन का साँप’ है।

50. ‘कपटी मित्र’ किस मुहावरे का सही अर्थ है?

- (a) काठ का उल्लू होना
(b) अक्ल का दुश्मन
(c) आस्तीन का साँप
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. निम्नलिखित में से किस मुहावरे का अर्थ ‘असम्भव होना’ नहीं होगा?

- (a) चाँद पर थूकना
(b) खरगोश के सींग निकलना
(c) पानी से घी निकालना
(d) बालू से तेल निकालना

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चाँद पर थूकना मुहावरे का अर्थ ‘व्यर्थ निन्दा या सम्मानीय का अनादर करना’ होता है। अन्य मुहावरे का अर्थ ‘असम्भव होना’ होता है।

52. ‘अपने मुँह मियां मिट्टू बनना’ मुहावरा है-

- (a) अपनी बातें छिपाना
(b) अपनी निन्दा स्वयं करना
(c) अपनी प्रशंसा स्वयं करना
(d) अपनी चर्चा करना

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘अपने मुँह मियां मिट्टू बनना’ मुहावरा का अर्थ अपनी प्रशंसा स्वयं करना है।

53. ‘कलई खुलना’ मुहावरे का सही अर्थ है-

- (a) रंग उतर जाना
(b) सच्चाई का पता लगना
(c) भेद प्रकट होना
(d) चमक का गायब होना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

‘कलई खुलना’ मुहावरे का सही अर्थ है-भेद प्रकट होना।

54. ‘न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी’ इसका अर्थ है-

- (a) काम से जी चुराना
(b) मन लगाकर काम करना
(c) बुरा सोचना
(d) असम्भव कार्य

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी’ इसका अर्थ न पूरी होने वाली शर्त अथवा असम्भव कार्य होता है।

55. निम्नलिखित में से लोकोक्ति को चुनिए-

- (a) अन्धे की लकड़ी
(b) नौ दो ग्यारह होना
(c) गले पड़ना
(d) अधजल गगरी छलकत जाय

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

प्रस्तुत विकल्प (d) में अधजल गगरी छलकत जाय, लोकोक्ति है, शेष मुहावरे हैं।

56. पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल-

- (a) शिक्षित होकर बेकार रहना
(b) योग्यता होते हुए भी विवशता के कारण निम्न स्तर का कार्य करना
(c) विद्या का अपमान करना
(d) फारसी पढ़े लोगों को प्रायः तेल बेचना पड़ता है

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

‘पढ़े फारसी बेचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल’ लोकोक्ति का अर्थ है- योग्यता होते हुए भी विवशता के कारण निम्न स्तर का कार्य करना अथवा गुणवान होने पर भी दुर्भाग्य से छोटा काम मिलना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ ‘पढ़े तो हैं गुने नहीं’ लोकोक्ति का अर्थ है-पढ़-लिखकर भी अनुभवहीन।
☛ ‘पकाई खीर पर हो गया दलिया’ का अर्थ है- दुर्भाग्य।
☛ ‘पगड़ी रख, घी चख’ लोकोक्ति का अर्थ है-मान-सम्मान से ही जीवन का आनन्द है।

- 'पहले घर में फिर मस्जिद में' लोकोक्ति का अर्थ है-पहले अपने-आप को फिर दूसरों को देखा जाता है।
- 'पहले तोलो, पीछे बोलो' लोकोक्ति का अर्थ है-बात सोच-समझकर करनी चाहिए।

57. जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि-

- (a) कवि बहुत तर्कशील होते हैं
(b) कवि बहुत भाव प्रवण होते हैं
(c) कवि बहुत विचारशील होते हैं
(d) कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि' लोकोक्ति का अर्थ है-कवि बहुत कल्पनाशील होते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ कुछ महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ तथा उनके अर्थ इस प्रकार हैं-

लोकोक्ति	अर्थ
जहाँ गुड़ होगा, वहीं मक्खियाँ होंगी	जहाँ कोई आकर्षण होगा वहाँ लोग जमा होंगे ही।
जहाँ चार बासन होंगे, वहाँ खटकेंगे भी	जहाँ कुछ व्यक्ति होते हैं वहाँ कभी-कभी झगड़ा हो ही जाता है।
जहाँ चाह वहाँ राह	इच्छा हो तो काम करने का रास्ता निकल ही आता है।
जहाँ देखे तवा परात, वहाँ गुजारे सारी रात	जहाँ कुछ प्राप्ति होती हो, वहाँ लालची आदमी जम जाता है।
जहाँ फूल वहाँ काँटा	अच्छाई के साथ बुराई लगी रहती है।
जहाँ मुर्गा नहीं होता, क्या वहाँ सबेरा नहीं होता	किसी के बिना काम नहीं रुकता है।

58. 'उपाय वही सही होता है जिसका लोहा विरोधी भी माने'-इसके लिए सही लोकोक्ति है-

- (a) आधा तीतर, आधा बटेर (b) चमत्कार को नमस्कार
(c) जादू वही जो सिर चढ़कर बोले (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'उपाय वही सही होता है जिसका लोहा विरोधी भी माने' इसके लिए सही लोकोक्ति है-जादू वही जो सिर चढ़कर बोले।

59. निम्नलिखित में से लोकोक्ति चुनिए-

- (a) अंक भरना (b) आस्तीन का साँप

- (c) कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगू तेली (d) तूती बोलना

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत 'कहाँ राजा भोज, कहाँ गँगू तेली' लोकोक्ति है। शेष मुहावरे हैं।

60. 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' से तात्पर्य है-

- (a) नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना
(b) धीरे-धीरे चलना
(c) चलने की कोशिश करना
(d) अधिक परिश्रम का थोड़ा फल मिलना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' से तात्पर्य है-अधिक परिश्रम का थोड़ा फल मिलना।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ नौ अंक से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं-

लोकोक्ति/कहावतें	अर्थ
नौ नकद, न तेरह उधार	नकद का काम उधार के काम से अच्छा है।
नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली	जीवन भर कुकर्म करते रहे, अन्त में भले बन बैठे।

61. 'आडम्बर बहुत किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं' के लिए सही लोकोक्ति है-

- (a) आँख का अन्धा, नाम नयनसुख
(b) ऊँची दुकान, फीका पकवान
(c) ऊँट के मुँह में जीरा
(d) खोदा पहाड़, निकली चुहिया

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'आडम्बर बहुत किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं' के लिए सही लोकोक्ति है-ऊँची दुकान, फीका पकवान।

62. 'भई गति साँप छछून्दर केरी' लोकोक्ति का अर्थ है?

- (a) साँप और छछून्दर जैसा होना
(b) साँप का छछून्दर जैसा होना
(c) दुविधा में पड़ जाना
(d) छछून्दर का साँप हो जाना

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

'भई गति साँप छछून्दर केरी' लोकोक्ति का अर्थ 'असमंजस या दुविधा में पड़ जाना' होता है।

63. 'तन पर नहीं लता, पान खाये अलबत्ता' का सही अर्थ होगा—

- (a) बुरी आदत का शिकार होना (b) झूठा दिखावा करना
(c) बहुत गरीब होना (d) रोब डालना

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'तन पर नहीं लता, पान खाये अलबत्ता' का सही अर्थ 'झूठी रईसी दिखाना' या 'झूठा दिखावा' करना होता है।

64. 'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' का अर्थ है-

- (a) खतरा उठाना
(b) आगे-आगे दौड़ना
(c) पेड़ पर चढ़कर खेलना
(d) चालाकी का जवाब चालाकी से देना

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' का अर्थ 'चालाकी का जवाब चालाकी से देना' है।

65. 'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' लोकोक्ति का सही अर्थ है-

- (a) अन्धा परन्तु विवेकशील होना (b) मूर्ख धनी
(c) अन्धे के पास धन होना (d) आँखों का रोग

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' लोकोक्ति का सही अर्थ 'मूर्ख धनी' होता है।

66. 'आँख का अन्धा गाँठ का पूरा' - इस लोकोक्ति का उपयुक्त अर्थ है-

- (a) एकदम मूर्ख
(b) जो अपना हित-अहित न समझे
(c) मूर्ख किंतु धनी
(d) बिना बिचारे धन खर्च करने वाला

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

67. 'अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता' का अर्थ होगा-

- (a) स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है
(b) विपत्ति में पड़े बिना अच्छा फल नहीं मिलता
(c) प्रयत्न किये बिना वास्तविकता सामने नहीं आती
(d) स्वयं ही सब कार्य करना पड़ता है

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता' लोकोक्ति का अर्थ है-स्वयं प्रयत्न करने पर ही काम बनता है।

निर्देश (प्रश्न 68-77 के लिये) इन प्रश्नों में एक वाक्य दिया गया है, जिसका एक भाग रेखांकित है। उस भाग का सही अर्थ नीचे दिये गये चार विकल्पों में से चुनिये।

68. दुर्घटना का दृश्य देखकर नीलिमा का कलेजा पसीज गया।

- (a) दिल बैठ जाना (b) हालत खराब होना
(c) गर्मी लगना (d) दया उत्पन्न होना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'दया उत्पन्न होना' होता है।

69. मन्त्री के आने पर जनता ने उन्हें आँख उठाकर भी नहीं देखा।

- (a) चुप रहना (b) जी चुराना
(c) ध्यान तक न देना (d) अनसुनी करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'ध्यान तक न देना' अथवा 'तिरस्कार करना' होता है।

70. महाराज दशरथ यथा नाम तथा गुण थे।

- (a) नाम मात्र की उपयोगिता (b) जैसा नाम वैसे ही गुण
(c) उपयोगिता विहीन (d) गुणवान

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रेखांकित लोकोक्ति का अर्थ 'जैसा नाम वैसे ही गुण' है।

71. बार-बार नाक रगड़ने पर भी पुलिस ने अशोक को नहीं छोड़ा।

- (a) विनती करना (b) खुशामद करना
(c) अधीन होना (d) बीमार पड़ना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'विनती करना' अथवा 'गिड़गिड़ाना' है।

72. कोई काम न करके श्रीमती सन्ध्या दिन भर मक्खी मारा करती हैं।

- (a) जीव हत्या करना (b) कीड़े-मकोड़े मारना
(c) धिनौने काम करना (d) खाली बैठना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'खाली बैठना' अथवा 'बेकार रहना' होता है।

73. सब्ज बाग दिखा कर निशीथ ने कपिल से एक हजार रुपये ठग लिये।

- (a) घुमाने ले जाना (b) बाग की हरियाली दिखाना
(c) प्रकृति निरीक्षण करना (d) झूठा आश्वासन देना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'झूठा आश्वासन देना' अथवा 'अच्छी बातें कहकर बहकाना' होता है।

74. एकाएक प्रधानाचार्य को आया देखकर आपस में लड़ रहे विद्यार्थी हक्का-बक्का हो गये।

- (a) अचरज में पड़ना (b) भयभीत होना
(c) भाग जाना (d) छुप जाना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'अचरज में पड़ना' होता है।

75. मेरा इतना नुकसान हो गया और तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।

- (a) दिल्लगी करना (b) मजे में रहना
(c) खेल खेलना (d) हँसना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'हँसी-दिल्लगी करना' होता है।

76. किसी अजनबी को देखकर कुत्ते आपे में नहीं रहते, भौं-भौं करने लग जाते हैं।

- (a) होश में न रहना (b) मिथ्या बकवास करना
(c) क्रोध में भड़क उठना (d) अपनी सुध खो देना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'क्रोध में भड़क उठना' होता है।

77. विपिन को समझाना बेकार है, वह तो औंधी खोपड़ी है।

- (a) बेवकूफ आदमी (b) निपट मूर्ख
(c) खोपड़ी उल्टी होना (d) सोते रहना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रेखांकित मुहावरे का अर्थ 'निपट मूर्ख' अथवा 'मूर्खता' होता है।

निर्देश (प्रश्न 78-82 के लिये)—इन प्रश्नों में लोकोक्तियों/मुहावरे को सही विकल्प चुनकर पूर्ण कीजिए।

78. घर आया—भी नहीं निकाला जाता।

- (a) मेहमान (b) कुत्ता
(c) रिश्तेदार (d) ब्राह्मण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

'घर आया कुत्ता भी नहीं निकाला जाता' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'कुत्ता' होगा।

79. धोये जो सौ बार तो—होये ना सेता

- (a) कपड़ा (b) आदमी
(c) काजर (d) गन्दा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रिक्त स्थान पर 'काजर' होगा, क्योंकि 'धोये जो सौ बार तो काजर होये ना सेत' लोकोक्ति है।

80. ज्यों ज्यों भीजे—त्यों त्यों भारी होय।

- (a) कामरी (b) कमली
(c) उधारी (d) कर्जा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों-त्यों भारी होय' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'कामरी' होगा।

81. —के मुँह में हाथ डालना

- (a) कुत्ते (b) बकरी
(c) शेर (d) गीदड़

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

रिक्त स्थान पर 'शेर' होगा, क्योंकि 'शेर के मुँह में हाथ डालना' मुहावरा है जिसका अर्थ वीरता का कार्य करना है।

82. दान की बछिया के—नहीं देखे जाते।

- (a) कान (b) मुँह
(c) आँख (d) दाँत

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते' लोकोक्ति है। अतः रिक्त स्थान पर 'दाँत' होगा।

निर्देश (प्रश्न 83 से 87 के लिये)—इन प्रश्नों में एक मुहावरा/लोकोक्ति दिया गया है, जिसके नीचे चार विकल्पों में उसके अर्थ दिए गए हैं। एक अर्थ सही है और यही सही विकल्प है। सही विकल्प चुनिए।

83. आँख के अन्धे गाँठ के पूरे—

- (a) धनी परन्तु मूर्ख (b) गरीब किन्तु अवलमन्द
(c) धनी परन्तु अवलमन्द (d) गरीब परन्तु मूर्ख

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

'आँख के अन्धे, गाँठ के पूरे' मुहावरा का अर्थ 'धनी परन्तु मूर्ख' है।

84. गागर में सागर भरना-

- (a) संक्षिप्त बात को विस्तृत रूप में कहना
- (b) संक्षिप्त बात को संक्षेप में कहना
- (c) विस्तृत बात को संक्षेप में कहना
- (d) विस्तृत बात को विस्तृत रूप में कहना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘गागर में सागर भरना’ मुहावरे का अर्थ ‘विस्तृत बात को संक्षेप में कहना’ है।

85. चोर के पैर नहीं होते-

- (a) पापी का मन स्थिर होता है
- (b) पापी का मन अस्थिर होता है
- (c) पवित्र व्यक्ति का मन अस्थिर होता है
- (d) गरीब का मन अस्थिर होता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘चोर के पैर नहीं होते’ मुहावरे का अर्थ है- ‘पापी का मन अस्थिर होता है।’

86. पेट भरे मन-मोदक से कब

- (a) पुरुषार्थ से किसी काम में सफलता न मिलना
- (b) सच्चाई व ईमानदारी से किसी काम में सफलता मिलना
- (c) केवल भगवान के नाम लेने से किसी काम में सफलता न मिलना
- (d) केवल सोचते रहने से किसी काम में सफलता न मिलना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘पेट भरे मन-मोदक से कब’ मुहावरे का अर्थ ‘केवल सोचते रहने से किसी काम में सफलता न मिलना’ है।

87. अरहर की टट्टी गुजराती ताला-

- (a) बड़ी वस्तु के लिये अधिक व्यय करना
- (b) बड़ी वस्तु के लिये कम व्यय करना
- (c) छोटी वस्तु के लिये अधिक व्यय करना
- (d) छोटी वस्तु के लिये कम व्यय करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

‘अरहर की टट्टी गुजराती ताला’ मुहावरे का अर्थ ‘छोटी वस्तु के लिए अधिक व्यय करना’ है।

88. ‘कान काटना’ मुहावरे का अर्थ है-

- (a) कटखाना होना
- (b) चतुर होना

(c) मूर्ख होना

(d) विनम्र होना

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

‘कान काटना’ मुहावरे का अर्थ ‘चतुर होना’ होता है।

89. ‘बहती गंगा में हाथ धोना’ का सही अर्थ है-

- (a) चातुर्यवृत्ति से काम निकालना
- (b) अपना काम निकालना
- (c) पुण्य का कार्य कराना
- (d) अवसर का लाभ उठाना

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘बहती गंगा में हाथ धोना’ का सही अर्थ ‘अवसर का लाभ उठाना’ है।

90. ‘अवांछित संवाद’ अर्थ के लिए उपयुक्त मुहावरा है-

- (a) सिर खपाना
- (b) सिर खाना
- (c) सिर नीचा होना
- (d) सिर पड़ना

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘सिर खाना’ मुहावरा का अर्थ ‘कोई बात बार-बार कहकर किसी को परेशान करना’ अर्थात् ‘अवांछित संवाद’ होता है। ‘सिर खपाना’ मुहावरा का अर्थ ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लाभ न हो और व्यर्थ मस्तिष्क थक जाय। ‘सिर नीचा होना’ मुहावरा का अर्थ ‘अपमानित होना’ होता है। ‘सिर पड़ना’ मुहावरा का अर्थ उत्तरदायित्व या भार आकर पड़ना होता है।

91. निम्नलिखित में कौन गलत सुमेलित हैं?

- (a) अँगूठे पर मारना - परवाह न करना
- (b) कान काटना - मात देना
- (c) नजर करना - भेंट करना
- (d) नजर पर चढ़ना - आँख बचाना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

‘नजर पर चढ़ना’ मुहावरे का अर्थ ‘सन्देह होना’ या ‘पसन्द आना’ होता है। शेष विकल्प सुमेलित हैं।

92. ‘शैतान की आँत’ का अर्थ है-

- (a) अत्यन्त धूर्त व्यक्ति
- (b) नगण्य वस्तु
- (c) बहुत लम्बी वस्तु
- (d) अत्यन्त लाभदायक वस्तु

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘शैतान की आँत’ का अर्थ ‘बहुत लम्बी-चौड़ी वस्तु या बात’ है।

93. 'आँख की किरकिरी होने' का अर्थ है-

- (a) अप्रिय लगना (b) धोखा देना
(c) कष्टदायक होना (d) बहुत प्रिय होना

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'आँख की किरकिरी होना' का अर्थ जिसे देखकर कष्ट हो अर्थात् 'अप्रिय लगना' होता है।

शब्द रूप

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के कितने भेद हैं?

- (a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) सात

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द - भेद चार प्रकार के हैं - (i) तत्सम, (ii) तद्भव, (iii) देशज एवं (iv) विदेशी। वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहे जाते हैं। वे शब्द जो संस्कृत से विकृत कर हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, तद्भव कहलाते हैं। वे शब्द जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता और आवश्यकतानुसार भाषा में प्रयुक्त होते हैं, देशज शब्द कहलाते हैं। वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से ग्रहण करके हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, विदेशी शब्द कहलाते हैं।

2. व्यवहार के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

- (a) पाँच (b) चार
(c) तीन (d) दो

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

शब्दों के भेद निम्नलिखित आधारों पर होते हैं-

- वाक्य में प्रयोग के आधार पर - सार्थक शब्द तथा निरर्थक शब्द।
- रचना या बनावट के आधार पर रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द तथा योगरूढ़ शब्द।
- उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर तत्सम तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द।
- व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर -विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द।
- अर्थ की दृष्टि से-पर्यायवाची, विलोम शब्द, अनेकार्थी शब्द, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, एकार्थी शब्द तथा समानाभासी शब्द युग्म। इनके अतिरिक्त व्यवहार में दो तरह के शब्दों का भी प्रयोग होता है- सामान्य शब्द तथा तकनीकी शब्द। जो शब्द सामान्य रूप में दैनिक जीवन में बोल-चाल के रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे सामान्य शब्द होते हैं, जबकि वे शब्द जो किसी विशेष विषय, यथा विज्ञान, व्यवसाय इत्यादि में प्रयुक्त होते हैं और उनके विशेष अर्थ भी निकलते हैं, तकनीकी शब्द कहलाते हैं।

3. मुस्लिम शासकों के समय भारत में न्यायालयों की भाषा कौन-सी थी?

- (a) उर्दू (b) संस्कृत
(c) हिन्दी (d) अरबी-फारसी

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

मुगल काल में अरबी-फारसी को राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त था। यह शिक्षा का माध्यम होने के साथ राजकीय कार्यों न्यायालयों एवं सरकारी कामकाज की भाषा थी।

4. 'कैची' किस भाषा का शब्द है?

- (a) हिन्दी (b) अंग्रेजी
(c) पुर्तगाली (d) तुर्की

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'कैची', आका, कुली, तोप, बहादुर, मुगल, चेचक, सौगात, सुराग, लाश, चमचा, चुगुल, लफंगा, तलाश, तमगा, जाजिम, उर्दू, कालीन इत्यादि तुर्की भाषा के शब्द हैं।

5. 'अचार' शब्द किस भाषा से आकर हिन्दी में प्रयुक्त हुआ है?

- (a) पुर्तगाली भाषा से (b) अरबी से
(c) फारसी से (d) फ्रेंच से

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'अचार' पुर्तगाली भाषा का शब्द है, जो हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होता है। पुर्तगाली भाषा के अन्य शब्द हैं- काफी, काजू, पपीता, आलपीन, आलमारी, गमला, पिस्तौल, इस्पात, कमीज, कमरा, बम्बा, बाल्टी, तम्बाकू, तौलिया, नीलाम, पादरी, सन्तरा इत्यादि।

6. निम्नलिखित में से एक युग्म अशुद्ध है, वह है -

- (a) सौदागर - फारसी शब्द (b) समन - अंग्रेजी शब्द
(c) आलमारी - तुर्की शब्द (d) किताब - अरबी शब्द

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

आलमारी, गोभी, अनन्नास, इस्त्री, इस्पात, कप्तान, कमरा, काज, काफी, काजू, गमला, गोदाम, पिस्तौल, आलपीन इत्यादि पुर्तगाली शब्द हैं। समन, मजिस्ट्रेट, वारंट, पेंशन, कौंसल, फीस, डिब्री, शेयर, अपील, पॉलिसी, वारंटी, रेल, जूरी, टैरिफ, रजिस्ट्रार, बैंक, चेक, ड्राफ्ट इत्यादि अंग्रेजी शब्द हैं। सौदागर, कारीगर, जादूगर, कलईगर इत्यादि फारसी शब्द हैं। किताब, हाकिम, हिरासत, फैसला, मुंशिफ इत्यादि अरबी शब्द हैं।

7. 'आलपीन' और 'गमला' किस विदेशी भाषा के शब्द हैं?

- (a) फ्रेंच (b) पुर्तगाली

(c) अंग्रेजी

(d) जापानी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'वकील' किस भाषा का शब्द है?

(a) फारसी का

(b) अरबी का

(c) तुर्की का

(d) पुर्तगाली का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'वकील' अरबी भाषा का शब्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ अजब, अदा, अमीर, अजीब, अजायब, अदावत, अक्ल, असर, अहमक, अल्ला, आसार, आखिर, आदमी, आदत, इनाम, इजलास, इज्जत, इमारत, इस्तीफा, इलाज, ईमान, उम्र, एहसान, औसत, औलाद, कसूर, कदम, कब्र, कसर, कमाल, कर्ज, किस्त, किस्मत, किस्सा, कसम, कीमत, कसरत, कुर्सी, किताब, कायदा, कालिल, खबर, खत्म, खत, खिदमत, खराब, खयाल, गरीब, गैर, जाहिल, जिस्म, जलसा, जनाब, जवाब, जहाज, जालिम, जिक्र, जिह्म इत्यादि अरबी शब्द हैं।

➤ तमाम, तकाजा, तकदीर, तारीख, तकिया, तमाशा, तरफ, तै, तादाद, तरक्की, तजुरबा, दाखिल, दिमाग, दवा, दावा, दावत, दफ्तर, दगा, दुआ, दफा, दल्लाल, दुकान, दिक्, दुनिया, दौलत, दान, दीन, नतीजा, नशा, नाल, नकद, नकल, नहर, फकीर, फायदा, फैसला, बाज, बहरु, बाकी, मुहावरा, मदद, मुद्दई, मरजी, माल, मिसाल, मजबूर, मुंसिफ, मालूम, मामूली, मुकदमा, मुल्क, मल्लाह, मवाद, मौसम, मौका, मौलवी, मुसाफिर, मशहूर, मजमून, मतलब, मानी, मात, यतीम, राय, तिहाज, लफज, लहजा, लिफाफा, लियाकत, वारिस, वहम, शराब, हिम्मत, हैजा, हरामी, हद, हज्जाम, हक, हुक्म, हाजिर, हाल, हाशिया, हाकिम, हमला, हवालात, हौसला इत्यादि भी अरबी शब्द हैं।

9. निम्नलिखित शब्दों में से एक फारसी भाषा का है -

(a) कबूतर

(b) कठफोड़वा

(c) मोर

(d) कौवा

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

कबूतर, अफसोस, अदा, आराम, आवारा, चपरासी, अदालत, सिपाही, तहसीलदार, चौकीदार, कमीज, कुर्ता, पायजामा, मोजा, सलवार, चादर, रजाई, रुमाल, चूड़ी, बरफी, जलेबी, हलवा, बादाम, अनार, अंगूर, अंजीर, अन्दाज, आजाद, शिकायत, सिफारिश, जिन्दगी, चश्मा, जमीन, हजार, नापसन्द, नौका, बस्ता, हुनर, मजा, सब्जी, रेशम, सर्दी, खरगोश, कारखाना, परगना, तहसील, जिला, शहर, देहात, कस्बा, साबुन, आईना, कुर्सी, तख्त, मेज, बुखार, नमाज, इत्यादि फारसी शब्द हैं।

10. फलों के निम्नलिखित नामों में से कौन-सा फारसी भाषा का है?

(a) आम

(b) जामुन

(c) केला

(d) अंगूर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. निम्नलिखित शब्दों में फारसी भाषा का शब्द नहीं है -

(a) अदालत

(b) सिफारिश

(c) चश्मा

(d) तारीख

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. उद्गम की दृष्टि से 'अमीर' है-

(a) देशज शब्द

(b) विदेशज शब्द

(c) तत्सम शब्द

(d) तद्भव शब्द

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उद्गम की दृष्टि से 'अमीर' विदेशज शब्द है। यह अरबी शब्द है।

13. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विदेशी स्रोत का है?

(a) रोशनदान

(b) आलस

(c) उलूक

(d) आज

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

'रोशनदान' फारसी शब्द है। अन्य फारसी शब्द हैं- शादी, शिकार, बाजार, बर्फ, जादू, चपरासी, कसूर, कारनामा, नमक, फैसला आदि। आलस तथा आज तद्भव शब्द एवं उलूक तत्सम शब्द है।

14. निम्नलिखित शब्दों में से एक अंग्रेजी भाषा का नहीं है -

(a) लालटेन

(b) रेल

(c) इंच

(d) कूपन

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

लालटेन, रेल, इंच अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं, जबकि कूपन, कारतूस तथा अंग्रेज, फ्रांसीसी (फ्रेंच) भाषा के शब्द हैं।

15. 'कारतूस' किस भाषा का शब्द है?

(a) अरबी

(b) फारसी

(c) फ्रेंच

(d) तुर्की

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित शब्दों में से एक विदेशी भाषा का नहीं है -

- (a) औरत (b) कमीज
(c) गमला (d) बूँद

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

बूँद तद्भव शब्द है, इसका तत्सम बिन्दु है। गमला तथा कमीज पुर्तगाली शब्द हैं। औरत, अरबी शब्द है।

17. हिन्दी में प्रयुक्त शब्द 'बाल्टी' शब्द भण्डार की दृष्टि से किस तरह का शब्द है?

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशज

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

हिन्दी में प्रयुक्त शब्द 'बाल्टी' विदेशज (पुर्तगाली) शब्द है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- संतरा, साबुन, तौलिया आदि पुर्तगाली शब्द हैं।
- बजट, स्वेटर, फीस, टाई, कपूर्य आदि विदेशी शब्द हैं।
- दो भाषाओं के योग से बनने वाले शब्दों को संकर शब्द कहते हैं।
- टिकटघर (अंग्रेजी-हिन्दी), रेलगाड़ी (अंग्रेजी-हिन्दी), अजायबघर (अरबी-हिन्दी), अणुबम (संस्कृत-अंग्रेजी), सिनेमाघर (अंग्रेजी-हिन्दी), मालगोदाम, कपड़ा-मिल इत्यादि संकर शब्द हैं।
- फिजूलखर्च (अरबी-फारसी), बीमा-पॉलिसी (फारसी-अंग्रेजी), पार्टीबाजी (अंग्रेजी-फारसी), जेलखाना (अंग्रेजी-फारसी) डाकखाना (अंग्रेजी-फारसी) संकर शब्द हैं।

18. 'बाल्टी' कैसा शब्द है?

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशज

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. 'अजायबघर' है-

- (a) देशी शब्द (b) विदेशी शब्द
(c) तद्भव शब्द (d) संकर शब्द

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'संकर' शब्द का अर्थ है-

- (a) तत्सम शब्द
(b) तद्भव

(c) विदेशी शब्द

(d) दो भाषाओं के शब्दों से मिलकर बना शब्द

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'रेलगाड़ी' शब्द है-

- (a) तद्भव (b) विदेशी
(c) देशज (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. 'जमादार' शब्द स्रोत के आधार पर किस वर्ग का शब्द है?

- (a) फारसी (b) अरबी
(c) तुर्की (d) संकर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'जमादार' संकर शब्द है। यह जमा (अरबी) + दार (फारसी) शब्दों से मिलकर बना है।

23. 'रिपोर्टाज' किस भाषा का शब्द है?

- (a) फ्रांसीसी (b) अंग्रेजी
(c) पुर्तगाली (d) जापानी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'रिपोर्टाज' फ्रांसीसी (फ्रेंच) भाषा का शब्द है।

24. 'रिपोर्टाज' शब्द किस भाषा का है?

- (a) अंग्रेजी (b) हिन्दी
(c) फ्रेंच (d) जर्मनी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'रिक्शा' शब्द किस भाषा का है?

- (a) अंग्रेजी (b) उर्दू
(c) तुर्की (d) जापानी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'रिक्शा' जापानी शब्द है।

26. 'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके।' उन्हें कहते हैं -

- (a) रूढ़ (मूल) (b) योगरूढ़
(c) यौगिक (d) प्रयुक्त

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड न हो सके' उन्हें रूढ़ या मूल शब्द कहते हैं। जैसे- हाथ, कलम, राम इत्यादि।

27. निम्नलिखित में यौगिक शब्द छाँटिए-

- (a) दशानन (b) परोपकार
(c) चतुर्मुख (d) गोपाल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

गोपाल यौगिक शब्द है। यह दो सार्थक शब्दों गो+पाल से मिलकर बना है। दशानन, परोपकार तथा चतुर्मुख योगरूढ़ शब्द हैं।

28. योगरूढ़ शब्द कौन है?

- (a) योद्धा (b) दशानन
(c) राक्षस (d) सुर

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों से मिलकर बने हों, किन्तु जिनका प्रयोग सामान्य अर्थ के लिए न होकर किसी विशेष अर्थ के लिए होता है, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे-दशानन, पीताम्बर, वीणावादिनी आदि।

29. 'दशानन' निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द है?

- (a) रूढ़ (b) योगरूढ़
(c) यौगिक (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'पंकज' शब्द निम्न में से किससे सम्बन्धित है?

- (a) रूढ़ शब्द (b) यौगिक शब्द
(c) योगरूढ़ शब्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

ऐसे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, पर अर्थ के विचार से अपने सामान्य अर्थ को छोड़ किसी परम्परा से विशेष अर्थ के परिचायक हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। जैसे-लम्बोदर, पंकज, चक्रपाणि, जलज इत्यादि। 'पंक+ज' का अर्थ है कीचड़ से (में) उत्पन्न; पर इससे केवल 'कमल' का अर्थ लिया जायेगा, अतः 'पंकज' योगरूढ़ शब्द है।

31. निम्नांकित में योगरूढ़ शब्द है-

- (a) विशालकाय (b) पुष्प
(c) कुमुदिनी (d) पंकज

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित शब्दों में योगरूढ़ शब्द कौन-सा है?

- (a) चक्रपाणि (b) पाठशाला
(c) उपचार (d) अभिव्यक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

33. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द देशज है?

- (a) धरती (b) पेड़
(c) पुस्तक (d) आग

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

पेड़, खादी, कबड्डी, गड़बड़, घपला, घूँट, चंपत, चूहा, झंझट, टट्टू, टीस, ठेठ, ठेस, तेंदुआ, थोथा, धब्बा, पेठा, भर्ता इत्यादि देशज शब्द हैं। धरती, पुस्तक तथा आग तद्भव शब्द हैं।

34. निम्नलिखित शब्दों में कौन देशज है?

- (a) सुन्दर (b) अँगूठा
(c) फटाफट (d) सायकिल

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

फटाफट देशज शब्द है। अँगूठा तद्भव तथा सायकिल विदेशी (अंग्रेजी) शब्द है।

35. 'गड़बड़ घोटाला' कौन-सा शब्द है?

- (a) तद्भव (b) देशज
(c) तत्सम (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'गड़बड़ घोटाला' देशज शब्द है। जिन शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में पता नहीं चलता एवं बोलचाल की भाषा में स्वतः निर्मित होते हैं, उन्हें देशज या देशी शब्द कहते हैं। अन्य देशज शब्द इस प्रकार हैं—आस-पास, झिलमिल, झुगगी, झाड़, काका, बाबा, लाला, पों-पों, खुसुर-फुसुर, तोंद, डकार, डिबिया, खर्ता, धक्का, खटपट, जगमग, टक्कर, ठकठक, सरसर, ऊंटपटांग, चपटा, अटकल, हल्ला, खचाखच, थप्पड़, भोंदू, झनकार, टोंटी, भड़ास, हिचकी आदि।

36. निम्नलिखित में से 'तद्भव-तत्सम' का कौन-सा एक युग्म गलत है?

- (a) हल्दी - हरिद्रा (b) अफीम - अहिफेन
(c) अदरक - आर्द्रक (d) सेठ - श्रेष्ठ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का तद्भव-तत्सम युग्म गलत है। इसका शुद्ध युग्म सेठ-श्रेष्ठी है। शेष विकल्पों के युग्म सही हैं।

37. जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें कहा जाता है-

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

जिन शब्दों की व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता, उन्हें देशज कहा जाता है। ये अपने ही देश में बोलचाल से बने हैं, इसलिए उन्हें देशज कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- हेमचन्द्र ने उन शब्दों को 'देशी' कहा है, जिनकी व्युत्पत्ति किसी संस्कृत धातु या व्याकरण के नियमों से नहीं हुई। लोकभाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता है।
- विदेशी विद्वान जॉन बीम्स ने देशज शब्दों को मुख्य रूप से अनार्यस्रोत से सम्बद्ध माना है।
- तेंदुआ, चिड़िया, कटरा, अण्टा, ठेठ, कटोरा, खिड़की, दुमरी, खखरा, चमक, जूता, कलाई, फुनगी, खिचड़ी, पगड़ी, बियाना, लोटा, डिबिया, डोंगा, डाब इत्यादि देशज शब्द हैं।

38. निम्नलिखित में से तत्सम-तद्भव के मेल की दृष्टि से शुद्ध युग्म है-

- (a) हरिद्रा - हरिद्वार (b) पृष्ठ - पन्ना
(c) पर्यक - परख (d) चुल्हीक - चूल्हा

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत शब्द क्रमशः तत्सम - तद्भव की दृष्टि से शुद्ध है। अन्य विकल्पों के तत्सम - तद्भव सही शब्द क्रमशः इस प्रकार हैं - हरिद्रा - हल्दी, पृष्ठ - पीठ तथा पर्यक - पलंग।

39. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

- (a) ओझा - उपाध्याय (b) कपास - कर्पट
(c) केला - कदली (d) पसीना - प्रस्विन्न

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत युग्म सही सुमेलित नहीं है। कपास तद्भव शब्द है, इसका तत्सम कर्पास होता है। कर्पट तत्सम शब्द है, इसका तद्भव कपड़ा होता है।

40. निम्नलिखित शब्द-युग्मों में कौन-सा असंगत है?

- (a) अफसोस - फारसी
(b) कैची - तुर्की
(c) गमला - पुर्तगाली
(d) कारतूस - अंग्रेजी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

कारतूस, फ्रांसीसी शब्द है। शेष विकल्प सुमेलित हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- फारसी शब्द-चश्मा, दरबार, ज़मीन, ज़मीनदार, शादी, पजामा, मगर, बाज़ार, गिलावा, चालाक, रूमाल आदि।
- तुर्की शब्द-कुली, बावर्ची, गलीचा, चाकू, चम्मच, लाश आदि।
- पुर्तगाली शब्द-नीलाम, प्याला, बाल्टी, आलू, जंगला, बोटल आदि।
- अंग्रेजी शब्द-स्टेशन, टिकट, लालटेन, बस, रेल, पेट्रोल, मशीन, बटन, बिस्कुट, कॉलर, जेल, बल्ब, ब्लेड, स्कूल आदि।
- अरबी शब्द- अदालत, ताज्जुब, एतराज, फकीर, अहसान, कत्ल, खत, खजाना, किताब, तहसील आदि।
- फ्रांसीसी शब्द-अंग्रेज, कूपन, लाभ आदि।
- ग्रीक शब्द-रास, सुरंग आदि।
- चीनी शब्द-लीची, चाय आदि।

41. 'चाय' किस भाषा का शब्द है?

- (a) चीनी (b) जापानी
(c) फ्रेंच (d) अंग्रेजी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. सूची-I को सूची-II के साथ सही सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

सूची-I		सूची-II	
(A) संकल्प		1. तद्भव	
(B) सूरज		2. देशी	
(C) काका		3. तत्सम	
(D) मोटर		4. विदेशी	
A	B	C	D
(a) 1	2	3	4
(b) 2	1	4	3
(c) 3	1	2	4
(d) 4	1	2	3

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
संकल्प	तत्सम
सूरज	तद्भव
काका	देशी
मीटर	विदेशी

43. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिए और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
(A) खचाखच	(i) योगरूढ़ शब्द
(B) मुरलीधर	(ii) तद्भव शब्द
(C) टिकटघर	(iii) देशज शब्द
(D) साँप	(iv) संकर शब्द
A B C D	
(a) (ii) (iii) (i) (iv)	
(b) (iii) (i) (iv) (ii)	
(c) (iii) (i) (ii) (iv)	
(d) (iii) (ii) (iv) (i)	

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
खचाखच	देशज शब्द
मुरलीधर	योगरूढ़ शब्द
टिकटघर	संकर शब्द
साँप	तद्भव शब्द

44. निम्नलिखित शब्द युग्मों में असंगत युग्म है-

- (a) गोबर - तद्भव (b) नाक - रूढ़
(c) कमलनयन - यौगिक (d) मधुमास - योगरूढ़

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(c)

कमलनयन योगरूढ़ शब्द है। इसका विच्छेद कमल+नयन है, जो सामान्य अर्थ को प्रकट न करके विशेष अर्थ प्रकट करता है, जिसका अर्थ विष्णु होता है। शेष युग्म सही हैं।

45. संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, वे कहे जाते हैं -

- (a) तद्भव (b) तत्सम
(c) संकर (d) देशज

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(b)

संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, वे तत्सम शब्द कहे जाते हैं।

46. निम्नलिखित में कौन 'देशज' शब्द है?

- (a) जूता (b) कीमत
(c) हैजा (d) देहात

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर-(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. विसर्ग का प्रयोग किन शब्दों में नहीं होता है?

- (a) तद्भव (b) तत्सम
(c) संकर (d) इनमें से सभी

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर-(a)

हिन्दी के अपने तद्भव शब्द-भण्डार की वर्तनी में विसर्ग नहीं होता, जबकि संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे तत्सम रूप में प्रयुक्त हों, तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाता है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?

- (a) भ्रमर (b) व्याघ्र
(c) क्षीर (d) कोयल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(d)

'कोयल' तद्भव शब्द है। इसका तत्सम 'कोकिल' होता है। भ्रमर, व्याघ्र तथा क्षीर तत्सम शब्द हैं। इसका तद्भव क्रमशः भौंरा, बाघ तथा खीर है।

49. 'पतलून' किस भाषा का शब्द है?

- (a) चीनी (b) जापानी
(c) हिन्दी (d) अंग्रेजी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर-(d)

'पतलून' शब्द अंग्रेजी भाषा के पैटलून से बना है।

50. 'ऑसू' शब्द है-

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर-(b)

'ऑसू' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम अश्रु है।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तत्सम रूप है?

- (a) अन्धकार (b) अंधियारा
(c) अन्धेरा (d) रात

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर-(a)

'अन्धकार' तत्सम शब्द है। इसका तद्भव अन्धेरा होता है।

52. नीचे दिये गये विकल्पों में से तद्भव शब्द का चयन कीजिए-

- (a) बैक (b) मुँह
(c) मर्म (d) प्रलाप

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

‘मुँह’ तद्भव शब्द है, इसका तत्सम ‘मुख’ होता है। बैक विदेशी (अंग्रेजी) शब्द है।

53. ‘गोधूम’ का तद्भव है-

- (a) गेहूँ (b) गोबर
(c) गाय (d) गोधन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

गोधूम तत्सम शब्द है, इसका तद्भव गेहूँ है। गाय तद्भव शब्द है, इसका तत्सम गो है।

54. ‘स्फूर्ति’ शब्द का तद्भव शब्द है-

- (a) सुग्गा (b) सौत
(c) फुर्ती (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

‘स्फूर्ति’ शब्द का तद्भव फुर्ती या फुरती है।

55. ‘घोटक’ का तद्भव रूप क्या है?

- (a) हय (b) अश्व
(c) घोड़ा (d) तुरंग

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘घोटक’ का तद्भव घोड़ा है। हय, अश्व तथा तुरंग, घोड़ा के पर्यायवाची हैं।

56. ‘खेती’ किस शब्द का तद्भव रूपान्तरण है?

- (a) धरती (b) कृषि
(c) मैत्री (d) अक्षि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

‘खेती’ शब्द का तद्भव रूपान्तरण ‘क्षेत्रित’ है। धरती तद्भव शब्द है, इसका तत्सम धरित्री होता है। मैत्री तत्सम शब्द है, इसका तद्भव मित्रता होता है। अक्षि तत्सम शब्द है, इसका तद्भव आँख है। कृषि तत्सम शब्द है, जो खेती का पर्यायवाची है। उपर्युक्त विकल्पों में कोई भी उत्तर ग्राह्य नहीं है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना है।

57. ‘डण्डा’ शब्द है?

- (a) तत्सम (b) तद्भव
(c) देशज (d) विदेशज

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

डण्डा तद्भव शब्द है। इसका तत्सम दण्ड होता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) सही माना है।

58. इनमें से कौन-सा शब्द तद्भव है?

- (a) औरस (b) पावस
(c) दिगंत (d) पाश

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘पावस’ तद्भव शब्द है, इसका तत्सम प्रावृष है, जो वर्षा ऋतु से सम्बन्धित है। शेष तत्सम शब्द हैं।

59. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द तद्भव है?

- (a) ताम्बूलिका (b) घट
(c) कपाट (d) मंजीठ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

मंजीठ तद्भव शब्द है। इसका तत्सम मञ्जिष्ठ है। ताम्बूलिका, घट, कपाट तत्सम शब्द हैं। इनका तद्भव क्रमशः तमोली, घड़ा, किवाड़ है।

60. निम्नलिखित शब्दों में से ‘नया’ का तत्सम रूप है—

- (a) नव्य (b) नूतन
(c) नवल (d) नवीन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘नया’ का तत्सम रूप ‘नव्य’ होता है। नूतन, नवीन, नवल, ‘नया’ का पर्यायवाची है।

61. निम्नलिखित शब्दों में से कौन तत्सम है?

- (a) कुक्कुर (b) कुत्ता
(c) पिल्ला (d) कूकुर

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

कुक्कुर तत्सम शब्द है, इसका तद्भव कुत्ता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (b) सही माना है।

62. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम कौन-सा है?

- (a) सिंगार (b) शृंगार
(c) शृंगार (d) पटार

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

शृंगार तत्सम शब्द है, इसका तद्भव सिंगार है। शृंगार वर्तनी की दृष्टि से अशुद्ध है।

63. 'मुकुट' शब्द निम्नलिखित में से किस कोटि का है?

- (a) तत्सम (b) देशज
(c) तद्भव (d) संकर

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'मुकुट' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव 'मौर' होता है।

64. निम्नलिखित में तत्सम शब्द है-

- (a) मेघ (b) ठेस
(c) भौरा (d) जेठ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'मेघ' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव 'मेह' होता है। भौरा तथा जेठ तद्भव शब्द हैं, इसका तत्सम क्रमशः भ्रमर तथा ज्येष्ठ होता है।

65. कौन-सा शब्द देशज नहीं है?

- (a) कंचन (b) कचोट
(c) कंजर (d) कर्वट

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

कंचन तत्सम शब्द है, शेष देशज शब्द हैं।

66. नीचे दिये गये विकल्पों में से तत्सम शब्द का चयन कीजिए-

- (a) पड़ोसी (b) गोधूम
(c) बहू (d) शहीद

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'गोधूम' तत्सम शब्द है, इसका तद्भव गेहूँ है। पड़ोसी तथा बहू तद्भव शब्द हैं, इसका तत्सम क्रमशः प्रतिवेशी तथा वधू है।

67. निम्नलिखित शब्दों में से कौन तत्सम है?

- (a) भौजी (b) भौजाई
(c) भ्रातृजाया (d) जोरु

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

भ्रातृजाया तत्सम शब्द है, इसका तद्भव भतीजी है। भौजी अथवा भौजाई तद्भव शब्द है इसका तत्सम भ्रातृभार्या है।

68. 'कन्धा' का तत्सम है-

- (a) इस्कन्ध (b) स्कन्ध
(c) कक्षु (d) कन्धु

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'कन्धा' तद्भव शब्द है, इसका तत्सम 'स्कन्ध' है।

69. 'उबटन' शब्द का तत्सम रूप है-

- (a) उर्द्धतन (b) उपलेपन
(c) उपः लेपन (d) उद्धर्तन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

'उबटन' शब्द का तत्सम रूप उद्धर्तन है।

70. इनमें से कौन-सा शब्द तत्सम नहीं है?

- (a) क्षीर (b) मयूर
(c) सफेद (d) शीर्ष

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

सफेद तद्भव शब्द है, इसका तत्सम श्वेत है। क्षीर, मयूर तथा शीर्ष तत्सम शब्द हैं, इनका तद्भव क्रमशः खीर, मोर तथा सीस है।

71. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा तत्सम है?

- (a) छत्री (b) ठाकुर
(c) क्षत्री (d) क्षत्रिय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

क्षत्रिय तत्सम शब्द है, इसका तद्भव खत्री है। ठाकुर, क्षत्रिय का समानार्थी है।

□ वाक्य शुद्धि

1. इनमें से एक वाक्य अशुद्ध है, वह है—

- (a) मैं दर्शन करने आया हूँ।
(b) मैं अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हूँ।
(c) लड़का मिठाई लेकर दौड़ता हुआ घर आया।
(d) वहाँ भीड़ लगी थी।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

विकल्प (b) का वाक्य अशुद्ध है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा— मैं अपनी बात के स्पष्टीकरण के लिए तैयार हूँ।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है-

- (a) मैं अपना कार्य स्वयं कर देता हूँ।
- (b) परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होना चाहिए।
- (c) शायद वह अवश्य आएगा।
- (d) भारत में अनेक जाति के लोग रहते हैं।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का वाक्य शुद्ध है। विकल्प (a) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है - मैं अपना कार्य स्वयं कर लेता हूँ। विकल्प (b) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है - परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं होनी चाहिए। विकल्प (c) का शुद्ध वाक्य इस प्रकार है - शायद वह आएगा अथवा वह अवश्य आएगा।

3. इनमें से अशुद्ध वाक्य है-

- (a) कल, आज और कल अवकाश रहेगा।
- (b) आज मौसम अच्छा है।
- (c) अब परीक्षा होने वाली है।
- (d) मैंने पत्र भेज दिया।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

विकल्प (a) अशुद्ध वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य है - आज और कल अवकाश रहेगा।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) मैंने पार्टी में आठ-दस रसगुल्ले खाया।
- (b) प्रेम का मूल्य आँका नहीं जा सकता।
- (c) इतने में हल्की-सी हवा का एक झोंका आया।
- (d) प्रत्येक श्रमिकों को दो-दो रुपये मिले।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य शुद्ध वाक्य है। शेष सभी अशुद्ध वाक्य हैं। इनका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- (a) मैंने पार्टी में आठ-दस रसगुल्ले खाये। (c) इतने में हवा का एक झोंका आया। (d) प्रत्येक श्रमिक को दो-दो रुपये मिले।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) मैं गाने की कसरत करता हूँ।
- (b) मैं गाने का शौक कर रहा हूँ।
- (c) मैं गाने का अभ्यास कर रहा हूँ।
- (d) मैं गाने का व्यायाम कर रहा हूँ।

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

‘गाने’ का अभ्यास किया जाता है। अतः विकल्प (c) शुद्ध वाक्य है। अन्य विकल्पों के वाक्य अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 6 से 9 के लिए) : निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त

अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य छांटिए -

- 6. (a) यह प्रसंग ‘सुख’ नामक शीर्षक के अन्तर्गत मिलेगा।
- (b) पिताजी गद्गद हो गए।
- (c) बकरी घास चर रही है।
- (d) आसमान में तारे चमक रहे हैं।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- यह प्रसंग ‘सुख’ नामक शीर्षक से उद्धृत किया गया है।

- 7. (a) हमें यह काम नहीं करना चाहिए।
- (b) इस समस्या का हल मेरे पास है।
- (c) लताजी ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गाईं।
- (d) मेले में यात्रियों का ताँता लगा रहा।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

विकल्प (c) अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा - लताजी ने गीत की दो-चार कड़ियाँ गाईं।

- 8. (a) यह संस्था का आठवाँ वार्षिक अधिवेशन है।
- (b) सुषमा जल से पौधों को सींच रही थी।
- (c) मकान ढह जाने का डर है।
- (d) हम सब मेला देखने जाएँगे।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा- सुषमा पौधों को सींच रही थी। यहाँ पर यह ध्यान देने की जरूरत है कि ‘जल’ का प्रयोग उचित नहीं है, क्योंकि पौधों को ‘जल’ से ही सींचा जाता है।

- 9. (a) मैं शनिवार को गाँव जाऊँगा।
- (b) इस यन्त्र का आविष्कार अमरीका में हुआ था।
- (c) गोलियों की बौछार हो रही है।
- (d) पुस्तक छापने की व्यवस्था का प्रबन्ध करें।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में अनावश्यक अथवा अनुपयुक्त शब्द वाला वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य होगा - पुस्तक छापने का प्रबन्ध करें।

10. 'अपने हाथ से स्वयं काम करो' वाक्य का शुद्ध रूप क्या होगा?

- (a) अपना काम स्वयं करो।
- (b) अपने से अपना काम करो।
- (c) स्वयं से काम करो।
- (d) हाथ से अपना काम करो।

T.G.T. परीक्षा, 2011

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त वाक्य का शुद्ध रूप है— अपना काम स्वयं करो।

11. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है -

- (a) स्नेहा ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गाहीं।
- (b) परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए।
- (c) मुझे बड़ी भूख लगी है।
- (d) केरल अहिन्दी भाषी प्रान्त है।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रयुक्त वाक्य शुद्ध है। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं। इन विकल्पों के शुद्ध वाक्य इस प्रकार होंगे - (a) स्नेहा ने गीत की दो-चार लड़ियाँ गाहीं। (b) परीक्षा - प्रणाली बदलनी चाहिए। (c) मुझे बहुत भूख लगी है।

12. कौन-सा वाक्य सही है?

- (a) बैल और बकरी घास चरती हैं
- (b) बैल और बकरी घास चरते हैं
- (c) बैल और बकरी घास चरता है
- (d) बैल और बकरी घास चरती है

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य शुद्ध है, क्योंकि इस वाक्य में दो कर्ता का प्रयोग हुआ है। अतः क्रिया भी बहुवचन होगी। अन्य विकल्पों में वाक्य अशुद्ध हैं। यदि वाक्य में दो भिन्न-भिन्न विभक्तिरहित एकवचन कर्ता हों और दोनों के बीच 'और' संयोजक आवे, तो उनकी क्रिया पुल्लिङ्ग और बहुवचन में होगी।

13. इनमें कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) सीता ने यह कहा
- (b) सीता ने यह कही
- (c) सीता यह कही
- (d) सीता यह कहा

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'सीता ने यह कहा' वाक्य शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

14. इनमें से शुद्ध वाक्य कौन-सा है?

- (a) मेरे प्राण निकल गये
- (b) मेरा प्राण निकल गया
- (c) मेरा प्राण निकल गये
- (d) मेरी प्राण निकल गई

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

'प्राण' सदैव बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होता है। अतः विकल्प (a) में प्रस्तुत वाक्य 'मेरे प्राण निकल गये' शुद्ध वाक्य है।

15. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य को चुनिये-

- (a) राम रोटी खाया है
- (b) राम ने रोटी खाया है
- (c) राम ने रोटी खायी है
- (d) राम रोटी खा लिया है

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'रोटी' स्त्रीलिङ्ग शब्द है। अतः 'राम ने रोटी खायी है' वाक्य शुद्ध है।

16. शुद्ध वाक्य चुनिये-

- (a) मुरझाया हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा।
- (b) मुरझाई हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा।
- (c) मुरझाया हुई फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठी।
- (d) मुरझाया हुआ फूल वर्षा के फुहार द्वारा अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठे।

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'फूल' पुल्लिङ्ग शब्द है और सभी विकल्पों में एकवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है। अतः विकल्प (a) 'मुरझाया हुआ फूल वर्षा की फुहार से अभिसिंचित होकर पुनः खिल उठा' वाक्य शुद्ध है।

17. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा वाक्य अशुद्ध है?

- (a) शास्त्री जी की मृत्यु से हमें बड़ा दुःख हुआ है।
- (b) मुझसे यह काम संभव नहीं
- (c) प्रायः ऐसे अवसर आते हैं, जिसमें लोगों को अपना मत बदलना पड़ता है
- (d) किसी आदमी को कानपुर भेज दो

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

विकल्प (a) का वाक्य अशुद्ध है। इसका शुद्ध वाक्य इस प्रकार होगा—
शास्त्री जी की मृत्यु से हमें बहुत दुःख हुआ है। शेष विकल्पों के वाक्य शुद्ध हैं।

18. निम्न में अशुद्ध वाक्य बताइये-

- (a) पुस्तक मेज पर रखी है
- (b) कच्चे तेल की कीमत घट गया है
- (c) यह मेरे सपनों का घर है
- (d) कानपुर भारत की औद्योगिकी राजधानी है

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

‘कीमत’ स्त्रीलिंग शब्द है। अतः विकल्प (b) अशुद्ध वाक्य है। इसका शुद्ध वाक्य है— ‘कच्चे तेल की कीमत घट गयी है।’ शेष विकल्प में शुद्ध वाक्य हैं।

19. निम्नलिखित में से सही वाक्य चुनिये-

- (a) श्रीकृष्ण के अनेकों नाम हैं
- (b) आपका पत्र सधन्यवाद मिला
- (c) श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं
- (d) बन्दूक एक बहुत ही उपयोगी शस्त्र है

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

‘अनेक’ बहुवचन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, इसलिए विकल्प (a) में ‘अनेकों’ के स्थान पर ‘अनेक’ होगा। अतः विकल्प (a) अशुद्ध वाक्य है। विकल्प (b) भी अशुद्ध वाक्य है, क्योंकि पत्र के साथ सधन्यवाद का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ ‘पत्र भी मिला और धन्यवाद भी’ है। इसका शुद्ध वाक्य होगा—‘आपका पत्र मिला, धन्यवाद।’ विकल्प (d) भी अशुद्ध वाक्य है, क्योंकि बन्दूक के लिए ‘शस्त्र’ का प्रयोग हुआ है, जबकि हाथ से चलाये जाने वाले हथियार के लिए ‘अस्त्र’ का प्रयोग किया जाता है। अतः विकल्प (c) शुद्ध वाक्य है।

20. निम्न में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) मैं आपकी सौजन्यता पर मुग्ध हूँ
- (b) मैं आपके सौजन्य पर मुग्ध हूँ
- (c) मैं आपकी सुजन्य पर मुग्ध हूँ
- (d) इनमें से तीनों वाक्य अशुद्ध हैं।

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘सौजन्य’ शब्द शुद्ध है। अतः विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य शुद्ध है, शेष वर्तनी अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 21-26 के लिए)—इन प्रश्नों में एक वाक्य दिया है जिसमें त्रुटि है। इसके नीचे चार विकल्प दिये गये हैं, जिसमें एक सही है। सही विकल्प चुनिये।

21. जो मिठाइयाँ पसन्द हों आप खा लो।

- (a) जो मिठाई पसन्द हों आप खा लो
- (b) जो मिठाई पसन्द हों तुम खा लो
- (c) जो मिठाइयाँ पसन्द हों तुम खा लो
- (d) जो मिठाइयाँ पसन्द हों उन्हें आप खाइये

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत वाक्य ‘जो मिठाइयाँ पसन्द हों, उन्हें आप खाइये’ शुद्ध है। शेष विकल्पों में अशुद्ध वाक्य हैं।

22. हम बचपन में वहाँ जाता रहा।

- (a) हम बचपन में वहाँ जायेंगे
- (b) हम बचपन में वहाँ जाते रहे है
- (c) मैं बचपन में वहाँ जाता रहा
- (d) मैं बचपन में वहाँ जाऊँगा

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य ‘मैं बचपन में वहाँ जाता रहा’ शुद्ध है। शेष अशुद्ध हैं।

23. प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकते।

- (a) प्रत्येक व्यक्ति कविता कर सकते हैं।
- (b) प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकते हैं
- (c) प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकता
- (d) हर व्यक्ति कविता कर सकते हैं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य ‘प्रत्येक व्यक्ति कविता नहीं कर सकता’ शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

24. हेम नरेश को पुस्तक दिया

- (a) हेम नरेश की पुस्तक दी
- (b) हेम ने नरेश को पुस्तक दी
- (c) हेम नरेश का पुस्तक देगा
- (d) हेम ने नरेश का पुस्तक दिया

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य 'हेम ने नरेश को पुस्तक दी' शुद्ध है, शेष अशुद्ध हैं।

25. मन्त्री झाड़वर को कार चलवाता है।

- (a) मन्त्री झाड़वर से कार चलवाता है
- (b) मन्त्री झाड़वर की कार चलवाता है
- (c) मन्त्री झाड़वर के लिये कार चलवाता है
- (d) मन्त्री झाड़वर पर कार चलवाता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में प्रस्तुत 'मन्त्री झाड़वर से कार चलवाता है' शुद्ध वाक्य है, शेष अशुद्ध हैं।

26. निम्न में से कौन-सा वाक्य शुद्ध है?

- (a) राम ने पेट भर मिठाई खाई
- (b) राम ने पेट भर के मिठाई खाई
- (c) राम ने भरपेट मिठाई खाई
- (d) इनमें से सभी शुद्ध हैं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में प्रस्तुत वाक्य 'राम ने भरपेट मिठाई खाई।' वाक्य शुद्ध है, शेष वाक्य अशुद्ध हैं।

निर्देश (प्रश्न 27-31 के लिए)—प्रत्येक प्रश्न में एक वाक्य दिया गया है, जो चार भागों में विभाजित है। प्रत्येक वाक्य को पढ़ कर यह पता लगाने का प्रयास करें कि इसके किसी भाग में भाषा, व्याकरण, वाक्य रचना या शब्दों के गलत प्रयोग का कोई दोष है या नहीं। यदि है तो वह वाक्य के किसी एक भाग में होगा। उस भाग का आपका उत्तर केवल नीचे लिखे a, b, c, d से ही होगा।

27. वीर सैनिक कहते हैं/कि हम विद्रोही शत्रु/का नाश करेंगे/

- (a)
- (b)
- (c)

कोई त्रुटि नहीं

(d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत 'विद्रोही' और 'शत्रु' दोनों का एक साथ प्रयोग किया गया है, जो त्रुटिपूर्ण है, दोनों में से किसी एक का प्रयोग होना चाहिए।

28. सच्चा मित्र है/जो आपत्ति के समय/सहायता करें/कोई त्रुटि नहीं

- (a)
- (b)
- (c)
- (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में 'करें' का प्रयोग किया गया है, जो त्रुटिपूर्ण है। इसके स्थान पर 'करे' होना चाहिए।

29. तुम अपना कर्तव्य/अच्छी तरह निभाएँ/अन्यथा आपके

- (a)
- (b)
- (c)

मित्रों को हार्दिक दुख होगा/कोई त्रुटि नहीं

(d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

विकल्प (a) में त्रुटि है। इस वाक्य में 'तुम' के स्थान पर 'आप' होना चाहिए।

30. हेम और नरेश/बालकों को भली भाँति/पढ़ाते हैं/कोई त्रुटि नहीं

- (a)
- (b)
- (c)
- (d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में प्रस्तुत वाक्य त्रुटिपूर्ण है। इस वाक्य में भली भाँति में योजक चिह्न (-) का प्रयोग नहीं किया गया है। अतः इसका शुद्ध रूप 'भली-भाँति' होगा।

31. प्रातः उठना लाभदायक है/और जल्दी सो जाना भी/अच्छी आदत है/

- (a)
- (b)
- (c)

कोई त्रुटि नहीं

(d)

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में 'सो जाना भी' का प्रयोग किया गया है। यहाँ 'भी' का निरर्थक प्रयोग है। अतः विकल्प (b) त्रुटिपूर्ण है।

□ वाक्य रचना

1. 'उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा'-किस तरह का वाक्य है?

- (a) सरल वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्र वाक्य (d) प्रश्नवाचक वाक्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

वह वाक्य जिसमें एक उपवाक्य स्वतन्त्र होता है और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, मिश्र वाक्य कहलाता है। प्रस्तुत वाक्य में इसी तरह का वाक्य है। गौण वाक्य अपने पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित रहता है। इसमें सामान्यतः 'कि', 'जैसा-वैसा', 'जो-वह', 'जब-तब', 'क्योंकि', 'यदि तो' आदि योजकों का प्रयोग किया जाता है।

2. वाक्य-विचार के अन्तर्गत क्या अध्ययन किया जाता है?

- (a) शब्दकोश का
(b) वर्णों का
(c) वाक्यों का
(d) ए और बी दोनों का

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

व्याकरण के तीन अंग हैं—वर्ण विचार, शब्द विचार तथा वाक्य विचार। वर्ण विचार में भाषिक ध्वनियों, शब्द विचार में शब्दों या पदों तथा वाक्य विचार में वाक्यों से सम्बन्धित नियमों का निर्देश किया जाता है।

3. रचना के आधार पर वाक्य के भेद हैं—

- (a) 6 (b) 3
(c) 8 (d) 4

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रचना के आधार पर वाक्य के 3 भेद हैं—1. सरल या साधारण वाक्य, 2. मिश्र वाक्य और 3. संयुक्त वाक्य। जिस वाक्य में एक क्रिया होती है और एक कर्ता होता है, उसे 'साधारण या सरल वाक्य' कहते हैं। जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य के अतिरिक्त उसके अधीन कोई दूसरा अंग वाक्य हो, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं। जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

→ अर्थ के अनुसार वाक्य के 8 भेद हैं—

1. विधिवाचक वाक्य (जिसमें किसी बात के होने का बोध हो),
2. निषेधवाचक वाक्य (जिसमें किसी बात के न होने का बोध हो),
3. आज्ञावाचक वाक्य (जिससे किसी तरह की आज्ञा का बोध हो),
4. प्रश्नवाचक वाक्य (जिससे किसी प्रकार के प्रश्न किए जाने का बोध हो),
5. किम्यवाचक वाक्य (जिससे आश्चर्य, दुःख या सुख का बोध हो),
6. सन्देहवाचक वाक्य (जिससे किसी बात का सन्देह प्रकट हो),
7. इच्छावाचक वाक्य (जिससे किसी प्रकार की इच्छा या शुभकामना का बोध हो) तथा
8. संकेतवाचक वाक्य (जहाँ एक वाक्य दूसरे की सम्भावना पर निर्भर हो)।

4. निम्न में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिये—

- (a) जो परिश्रम करता है, वहीं आगे बढ़ता है।
(b) मैं पढ़ता हूँ और वह गाता है।
(c) क्या मेरे बिना वह पढ़ नहीं सकता है।
(d) परिश्रमी व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विकल्प (b) में संयुक्त वाक्य है। जिस वाक्य में साधारण अथवा मिश्र वाक्यों का मेल संयोजक अवयवों द्वारा होता है, उसे 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं।

5. "वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र है।"

उपर्युक्त वाक्य का बिना अर्थ बदले निम्नलिखित में कौन-सा नकारात्मक वाक्य उपयुक्त होगा?

- (a) वह अपनी कक्षा का सर्वाधिक प्रतिभाशाली छात्र नहीं है।
(b) उसके समान अपनी कक्षा में कोई प्रतिभाशाली छात्र नहीं है।
(c) प्रतिभा में वह अपनी कक्षा के किसी छात्र से कम नहीं है।
(d) अपनी कक्षा के प्रतिभाशाली छात्रों में उसकी गिनती नहीं होती।

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

विकल्प (b) का वाक्य बिना अर्थ बदले नकारात्मक वाक्य है।

6. 'सीढ़ी के सहारे मैं जहाज पर जा पहुँचा' वाक्य में 'सीढ़ी के सहारे' क्या है?

- (a) साधारण उद्देश्य (b) विधेय विस्तारक
(c) उद्देश्य वर्द्धक (d) कोई नहीं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त वाक्य में 'सीढ़ी' के सहारे' उद्देश्य का विस्तार है। अतः विकल्प (d) सही उत्तर होगा।

7. निम्नलिखित वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए नीचे दिये गये विकल्पों में से एक उचित विकल्प चुनिये-

वाक्य : युवा-असंतोष का कारण निरंतर.....वृद्धि है

विकल्प-

- (a) अशिष्टता (b) भ्रष्टाचार
(c) दुराचार (d) राजनीति

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

वाक्य पूर्ति हेतु रिक्त स्थान पर उचित विकल्प 'भ्रष्टाचार' होगा। पूर्ण वाक्य इस प्रकार होगा—युवा-असंतोष का कारण निरन्तर भ्रष्टाचार वृद्धि है।

□ वचन

1. निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन है -

- (a) प्राण (b) दर्शन
(c) ओठ (d) तेल

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'तेल' शब्द एकवचन है, जबकि दर्शन, प्राण, लोग, दाम, ओठ, आँसू, अक्षत इत्यादि सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।

2. इनमें से कौन-सा शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होता है?

- (a) प्राण (b) भक्ति
(c) शिशु (d) पुस्तक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'साधु आ रहे हैं' वाक्य में 'साधु का वचन निर्धारित कीजिये।

- (a) एकवचन
(b) बहुवचन
(c) द्विवचन
(d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

हिन्दी में वचन दो होते हैं—एकवचन तथा बहुवचन। शब्द के जिस रूप से एक से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। प्रस्तुत वाक्य में क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त हो रही है, अतः यहाँ 'साधु' बहुवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

4. 'चिड़िया' शब्द का प्रयोग बहुवचन में क्या होता है?

- (a) चिड़ियाँ
(b) चिड़ियों
(c) चिड़िओ
(d) चिड़िये

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'चिड़िया' शब्द का प्रयोग बहुवचन में 'चिड़ियाँ' होता है।

5. निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें बहुवचन का प्रयोग हुआ है?

- (a) लड़का कहता है।
(b) लड़के ने कहा।
(c) लड़के लड़के से कहते हैं।
(d) लड़के ने लड़के से कहा।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

विकल्प (c) में बहुवचन का प्रयोग हुआ है, शेष में एकवचन प्रयुक्त है।

6. निम्न में कौन कथन सत्य नहीं है?

- (a) संस्कृत में तीन वचन होते हैं
(b) हिन्दी में दो वचन होते हैं
(c) हिन्दी में दो लिंग होते हैं
(d) संस्कृत में हिन्दी की तरह दो लिंग होते हैं

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

सारी सृष्टि की तीन मुख्य जातियाँ हैं—पुरुष, स्त्री तथा जड़। अनेक भाषाओं में इन्हीं तीन जातियों के आधार पर लिंग के तीन भेद किये गये हैं—1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग तथा 3. नपुंसकलिंग। अंग्रेजी व्याकरण में लिंग का निर्णय इसी व्यवस्था के अनुसार होता है। मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि आधुनिक आर्यभाषाओं में भी यह व्यवस्था ज्यों की त्यों लागू है। इसके विपरीत हिन्दी में दो ही लिंग-पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हैं। संस्कृत में तीन वचन-एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन होता है, जबकि हिन्दी में दो वचन एकवचन तथा बहुवचन होता है।

7. हिन्दी भाषा में 'वचन' कितने प्रकार के हैं?

- (a) 3 (b) 2
(c) 4 (d) 5

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

पत्र-पत्रिकाएँ

1. इनमें से कौन-सी पत्रिका 'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' द्वारा प्रकाशित है?

- (a) तद्भव (b) पहल
(c) वसुधा (d) बहुवचन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा' द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बहुवचन' है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1999 से (सम्पादक-अशोक वाजपेयी) किया जा रहा है। 'तद्भव' पत्रिका के सम्पादक अखिलेश हैं। इस त्रैमासिक पत्रिका का भी प्रकाशन वर्ष 1999 से लखनऊ से प्रारम्भ हुआ। 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन भोपाल से होता है, जिसके स्थायी सम्पादक श्री हरिशंकर परसाई तथा सम्पादक स्वयं प्रकाश हैं। 'पहल' त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन वर्ष 1960 से जयपुर से किया जा रहा है। इसके सम्पादक ज्ञानरंजन हैं।

2. साप्ताहिक-पत्र 'प्रताप' के सम्पादक थे-

- (a) मदनमोहन मालवीय (b) सुंदरलाल
(c) गणेश शंकर विद्यार्थी (d) अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

वर्ष 1910 में गणेश शंकर विद्यार्थी ने साप्ताहिक पत्रिका 'प्रताप' का प्रकाशन किया। यह पत्र उग्र एवं क्रान्तिकारी विचारधारा का पोषक था। उग्र नीतियों के समर्थक इस पत्र ने उत्साह एवं क्रांति के पोषण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन समाचार पत्रों का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना एवं भाषा नीति का प्रसार करना था।

3. निम्नलिखित में से किसने प्रसिद्ध पत्रिका 'आलोचना' का सम्पादन नहीं किया?

- (a) डॉ. नामवर सिंह
(b) डॉ. धर्मवीर भारती
(c) श्री शिवदान सिंह चौहान
(d) उपर्युक्त सभी ने 'आलोचना' पत्रिका का सम्पादन किया।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

वर्ष 1951 में राजकमल प्रकाशन के तत्कालीन निदेशक ओमप्रकाश ने 'आलोचना पत्रिका' के प्रकाशन का निर्णय लेते हुए इसके सम्पादन का दायित्व उस समय के प्रखर आलोचक डॉ. शिवदान सिंह चौहान को सौंपा। अक्टूबर, 1951 में इसका पहला अंक प्रकाशित हुआ। यह एक

त्रैमासिक पत्रिका थी। शिवदान जी ने अपने कुशल सम्पादन में आलोचना के छः अंक निकाले। बाद में इलाहाबाद के चार लेखकों डॉ. धर्मवीर भारती, रघुवंश, विजय देव नारायण साही और ब्रजेश्वर वर्मा को इसके सम्पादन का भार सौंपा गया। इन लोगों ने अप्रैल, 1953 से अप्रैल, 1956 तक (अंक 7 से 17 तक) इसका सम्पादन किया। जुलाई, 1957 से अप्रैल, 1959 (अंक 18 से 26 तक) आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी इसके सम्पादक रहे। बाद के वर्षों में काफी समय तक इसके सम्पादक डॉ. नामवर सिंह रहे। अतः उपर्युक्त सभी लेखकों ने 'आलोचना' पत्रिका का सम्पादन किया।

4. निम्न में किस पत्रिका से सम्बन्धित साहित्यकार नहीं हैं?

- (a) नया ज्ञानोदय-रवीन्द्र कलिया
(b) पहल-ज्ञानरंजन
(c) तद्भव-अखिलेश
(d) दस्तावेज-रामचन्द्र तिवारी

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'दस्तावेज' पत्रिका का सम्बन्ध रामचन्द्र तिवारी से नहीं, बल्कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से है। इस त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1978 से गोरखपुर से नियमित हो रहा है। यह रचना और आलोचना की पत्रिका है, शेष युग्म सही हैं। साहित्यकार रामचन्द्र तिवारी अमर सूक्ति कोश से सम्बन्धित हैं।

5. 'वागर्थ' पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

- (a) मुम्बई (b) वाराणसी
(c) नई दिल्ली (d) कोलकाता

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'वागर्थ' पत्रिका का प्रकाशन भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) द्वारा वर्ष 1995 से शुरू हुआ। यह एक मासिक पत्रिका है। प्रारम्भ में इसके सम्पादक रविन्द्र कलिया, ममता कलिया, प्रभाकर श्रोत्रिय थे। वर्तमान में इस पत्रिका के सम्पादक शंभुनाथ और प्रबन्ध सम्पादक डॉ. कुसुम खेमानी हैं। वस्तुतः यह साहित्य-संस्कृति की मासिक पत्रिका है।

6. हिन्दी भाषा की मासिक प्रमुख पत्रिका 'वागर्थ' कहाँ से प्रकाशित होती है?

- (a) कलकत्ता (b) नई दिल्ली
(c) मुम्बई (d) चण्डीगढ़

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित पत्रिका है-

- (a) वसुमती (b) बहुवचन
(c) अकार (d) वागर्थ

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'भारतीय भाषा-परिषद्' कोलकाता से प्रकाशित पत्रिका है—

- (a) वसुधा (b) वागर्थ
(c) माध्यम (d) अक्षत

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता द्वारा प्रकाशित पत्रिका है-

- (a) वसुधा (b) आलोचना
(c) साहित्य (d) वागर्थ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. कवहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र किस पत्र को कहा जाता है?

- (a) कविवचन सुधा (b) समाचार सुधा वर्षण
(c) हिन्दी प्रदीप (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

भारत मित्र अपने समय का सबसे प्रभावशाली मुखपत्र था। यह पत्र सर्वप्रथम पाक्षिक रूप में, कलकत्ता से 17 अगस्त, 1878 से निकलना शुरू हुआ। इस पत्र को बालमुकुन्द गुप्त, लक्ष्मीनारायण गर्द तथा अम्बिका प्रसाद वाजपेयी जैसे सिद्धहस्त सम्पादकों का संरक्षण प्राप्त हुआ। कवहरियों में हिन्दी प्रवेश आन्दोलन का मुखपत्र भारत मित्र है। कलकत्ता में चलने वाले जुए के अड़े बन्द कराने के लिए इसने सफल आन्दोलन चलाया। इस पत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के भी विचारोत्तेजक लेख छपते थे।

11. निम्नलिखित में से एक कथन असत्य है-

- (a) धर्मवीर भारती 'धर्मयुग' के सम्पादक थे।
(b) कमलेश्वर 'सारिका' के सम्पादक थे।
(c) राजेन्द्र यादव 'हंस' के सम्पादक थे।
(d) मोहन राकेश 'कादम्बिनी' के सम्पादक थे।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

कादम्बिनी पत्रिका के सम्पादक विष्णु नागर तथा राजेन्द्र अवरथी थे। मोहन राकेश इससे सम्बन्धित नहीं थे।

12. पत्रिका और सम्पादक की दृष्टि से एक युग्म अशुद्ध है-

- (a) धर्मयुग-धर्मवीर भारती (b) हंस-राजेन्द्र यादव
(c) तद्भाव-अखिलेश (d) नया प्रतीक-अमृतलाल सागर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'नया प्रतीक' पत्रिका का सम्पादन 'अज्ञेय' द्वारा किया गया। अन्य विकल्पों के युग्म सही हैं।

13. निम्नलिखित पत्रिकाओं में से एक का प्रकाशन स्थल असत्य है-

- (a) कथाक्रम-लखनऊ (b) हंस-नई दिल्ली
(c) वागर्थ-कोलकाता (d) नया ज्ञानोदय-मुंबई

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'नया ज्ञानोदय' पत्रिका का प्रकाशन नई दिल्ली से होती है। इस पत्रिका का आरंभ जनवरी, 1949 से फरवरी, 1970 तक 'ज्ञानोदय' नाम से प्रकाशन होता था। वर्ष 2003 से इसका पुनः नामकरण 'नया ज्ञानोदय' नाम से शुरू हुआ।

14. निम्नलिखित में से एक पत्रिका में सम्प्रति कहानी प्रकाशित नहीं होती—

- (a) इंडिया टुडे (हिन्दी) (b) तद्भाव
(c) नया ज्ञानोदय (d) वागर्थ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'इंडिया टुडे' का हिन्दी में प्रकाशन 5 नवम्बर, 1986 को हुआ। यह मासिक पत्रिका है, जो दिल्ली से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका में देश-विदेश की घटनाएँ तथा ज्वलंत मुद्दे के प्रश्न प्रकाशित होते हैं। इस पत्रिका में सम्प्रति कहानी प्रकाशित नहीं होते हैं।

15. 'प्रजा हितैषी' नामक पत्र के सम्पादक थे—

- (a) राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (b) राजा लक्ष्मण सिंह
(c) मुंशी सदासुखलाल (d) लल्लू लाल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

राजा लक्ष्मण सिंह ने 1860 ई. में आगरा से 'प्रजा हितैषी' तथा 1863 ई. में 'लोकमित्र' नामक पत्र निकाला।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 1845 ई. में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने काशी से 'बनारस अखबार' निकाला। इसकी लिपि देवनागरी थी, लेकिन भाषा उर्दू की ओर झुकी हुई। बनारस से ही 1850 ई. में 'सुधाकर' निकाला।
➤ 1867 ई. में नवीन चन्द्र ने 'ज्ञान प्रदायिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया।

16. 'बनारस अखबार' का प्रकाशन कब शुरू हुआ?

- (a) 1840 ई. (b) 1841 ई.

(c) 1844 ई.

(d) 1845 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा सम्पादित पत्र है—

- (a) प्रजा हितैषी (b) हिन्दी प्रदीप
(c) उदंत मार्तण्ड (d) विश्वामित्र

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. हिन्दी समाचार-पत्र 'बंगदूत' प्रकाशित हुआ था—

- (a) 1826 में (b) 1829 में
(c) 1834 में (d) 1844 में

P.G.T. परीक्षा, 2004

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

हिन्दी समाचार-पत्र 'बंगदूत' 1829 ई. में आर. एम. मार्टिन और राजा राममोहन राय द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित किया गया। कहा जाता है कि यह बंगला, हिन्दी और फारसी में छपता था, पर कलकत्ता रीव्यू के अनुसार, यह बंगला और फारसी में छपता था। 1829 ई. में यह सरकारी आदेश से बन्द हो गया फिर यह दो रूपों में प्रकाशित हुआ। हिन्दू हेराल्ड (अंग्रेजी) और बंगदूत (बंगला और हिन्दुस्तानी यानी उर्दू) में सेठों के लाभार्थ बाजार भाव बंगला और नागरी दोनों में छपते थे।

19. 'बंगदूत' नामक पत्र हिन्दी में किसके द्वारा निकाला गया?

- (a) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) राजा राममोहन राय
(c) ईश्वर चन्द विद्यासागर (d) पण्डित जुगुल किशोर

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'बंगदूत' का प्रकाशन वर्ष है :

- (a) 1826 ई. (b) 1827 ई.
(c) 1828 ई. (d) 1829 ई.

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

21. 'राष्ट्रभाषा संदेश' पाक्षिक पत्र कहाँ से प्रकाशित होता है?

- (a) इलाहाबाद से (b) वाराणसी से

(c) वर्धा से

(d) उज्जैन से

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'राष्ट्रभाषा संदेश' पाक्षिक पत्र का प्रकाशन इलाहाबाद से होता है। जिसके प्रथम प्रधान सम्पादक राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन थे। इन्होंने 'अभ्युदय' पत्र का भी सम्पादन किया है। वर्तमान में इस पत्र के सम्पादक श्री विभूति मिश्र हैं।

22. 'समाचार सुधावर्षण' किस प्रकार का पत्र था?

- (a) साप्ताहिक (b) दैनिक
(c) पाक्षिक (d) मासिक

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(b)

1854 ई. में कलकत्ता, से प्रकाशित 'समाचार सुधावर्षण' हिन्दी का पहला दैनिक पत्र था। इसके सम्पादक श्याम सुन्दर सेन थे। यह द्विभाषी पत्र था। प्रारंभ में दो पृष्ठ हिन्दी के थे और शेष दो बंगला के।

23. 'आज' पत्र के प्रथम सम्पादक थे—

- (a) बाबू शिवप्रसाद गुप्त (b) रामकृष्ण रघुनाथ खडिलकर
(c) बाबू श्रीप्रकाश जी (d) बाबूराव विष्णु पराङकर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'आज' पत्र का प्रकाशन 5 सितम्बर, 1920 को वाराणसी से हुआ था। जिसके संस्थापक शिवप्रसाद गुप्त थे। प्रथम सम्पादक श्रीप्रकाश एवं प्रधान सम्पादक पं. बाबूराव विष्णु पराङकर थे।

24. 'आज' समाचार-पत्र का प्रकाशन कब आरम्भ हुआ था?

- (a) 15 जनवरी, 1920 (b) 22 अप्रैल, 1920
(c) 2 जुलाई, 1920 (d) 5 सितम्बर, 1920

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'आज' समाचार-पत्र के संस्थापक कौन थे?

- (a) श्यामसुन्दर दास (b) बाबूराव विष्णु पराङकर
(c) शिवप्रसाद गुप्त (d) रामचन्द्र शुक्ल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

26. निराला किस पत्रिका से सम्बन्धित नहीं थे?

- (a) सुधा (b) इन्दु
(c) समन्वय (d) मतवाला

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' इन्दु पत्रिका से सम्बन्धित नहीं थे। 'निराला' जी सुधा, मतवाला, समन्वय जैसी पत्रिकाओं से सम्बन्धित थे। जयशंकर प्रसाद जी 'इन्दु' पत्रिका से सम्बन्धित थे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ छायावाद पर आक्रमण करने वाली पत्रिकाओं में सुधा ने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन, अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा तथा हिन्दी साहित्य की चतुर्दिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।
- ☛ 'समन्वय' का प्रकाशन वर्ष 1922 में रामकृष्ण मिशन के स्वामी माधवानन्द के सम्पादन में आरम्भ हुआ। बाद में 'निराला' जी की नियुक्ति इसके सम्पादन-विभाग में हुई। इसमें धार्मिक आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों की प्रधानता होने पर भी उच्च कोटि की साहित्यिक सामग्री प्रकाशित हुआ करती थी।
- ☛ 'मतवाला' वर्ष 1923 में कलकत्ता से प्रकाशित हुई। उसके घोषित सम्पादक तो महादेव प्रसाद सेठ थे, पर इसके सम्पादन विभाग में शिवपूजन सहाय, नवजादिकलाल श्रीवास्तव और निराला भी थे। यह हिन्दी की पहली हास्य-व्यंग्य प्रधान साप्ताहिक पत्रिका थी।

27. 'मतवाला' पत्रिका के स्थायी स्तम्भ 'चाबुक' में निराला जी अपनी रचना किस नाम से लिखते थे?

- (a) गरगज सिंह वर्मा (b) सूर्यकान्त
(c) निराला (d) रमता जोगी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

'मतवाला' पत्रिका के स्थायी स्तम्भ 'चाबुक' में निराला जी अपनी रचना गरगज सिंह वर्मा नाम से लिखते थे। मतवाला में 'मतवाले की बहक', 'चलती चक्की', 'मतवाले का चाबुक' पत्र के स्थायी स्तम्भ थे। हिन्दी में उच्च कोटि के व्यंग्य-विनोद के साथ प्रखर राष्ट्र-भक्ति को प्रदीप्त करने वाला 'मतवाला' कलकत्ता से वर्ष 1923 में निकला। जिसके संस्थापक श्री महादेव प्रसाद सेठ, आचार्य शिवपूजन सहाय, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', मुंशी नवजादिक लाल तथा ईश्वरी प्रसाद शर्मा थे।

28. जयशंकर प्रसाद द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम था—

- (a) कहानी (b) इन्दु
(c) सरस्वती (d) ब्राह्मण

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद ने वर्ष 1909 में इन्दु नामक पत्रिका निकाली, विद्वानों का मत है कि इसी पत्रिका से छायावाद का जन्म हुआ। लगभग आठ वर्षों तक रसिक हृदय को तृप्त करने के बाद अगले दस वर्षों तक इसका प्रकाशन बन्द रहा। जनवरी, 1927 में इसे फिर से प्रकाशित किया गया।

29. अज्ञेय किस पत्र के सम्पादक रहे?

- (a) विशाल भारत (b) दैनिक
(c) दिनमान (d) ये सभी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

अज्ञेय आरम्भ से ही पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने अनेक पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया। आगरा से निकलने वाले 'सैनिक' के सम्पादन-मण्डल में वे वर्ष 1936 में आये। वर्ष 1937 में वे कलकत्ता से निकलने वाला 'विशाल भारत' के सम्पादक-मण्डल में शामिल हुए। इलाहाबाद से निकलने वाले 'प्रतीक' का सम्पादन उन्होंने वर्ष 1946 से आरम्भ किया जो वर्ष 1952 तक चला 'थॉट और वॉक' (अंग्रेजी पत्रिका, दिल्ली) के सम्पादन से उनका सम्बन्ध वर्ष 1958 तक रहा। वर्ष 1965 की फरवरी से उन्होंने 'दिनमान' (साप्ताहिक, दिल्ली) का सम्पादन-भार सँभाला। वर्ष 1973 से 'प्रतीक' का पुनः प्रकाशन आरम्भ हुआ। वर्ष 1977 में उन्होंने 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादन का कार्यभार सँभाला। अतः स्पष्ट है कि विकल्प (c) सही उत्तर है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है, क्योंकि प्रश्न ही गलत है। प्रश्न में पूछा गया है अजय किस पत्र के सम्पादक रहे? किन्तु विकल्प में कोई भी ऐसा पत्र नहीं है जिसके सम्पादक 'अजय' हों, वास्तव में 'अजय' के स्थान पर 'अज्ञेय' होना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ 'दिनमान' के सम्पादन की प्रशंसा करते हुए विद्यानिवास मिश्र ने लिखा है— "अज्ञेय ने अपनी संगठन-शक्ति, कल्पना और मनोयोग के बल पर दिनमान को छः महीने के भीतर ही केवल हिन्दी का नहीं, भारत का अन्यतम साप्ताहिक समाचार-पत्र बना दिया। जहाँ उन्होंने इसके माध्यम से फैलते हुए विश्व की जानकारी सुलभ की, संस्कृति के परिमार्जन को व्यापक प्रसार दिया, वहाँ उन्होंने भारत की राष्ट्रीय विचारधारा को एक स्वयं पूर्ण मूर्त आकार प्रदान किया।"

30. 'प्रतीक' पत्रिका के सम्पादक थे—

- (a) अमृतराय (b) भैरव प्रसाद गुप्त
(c) अज्ञेय (d) इलाचन्द्र जोशी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

31. 'दिनमान' और 'प्रतीक' के सम्पादक के रूप में जिन्हें ख्याति प्राप्त हुई, वे हैं—

- (a) बनारसी दास चतुर्वेदी (b) अज्ञेय
(c) अमृत राय (d) धर्मवीर भारती

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

32. निम्नलिखित में से एक तथ्य गलत है, वह है—

- (a) 'कर्मवीर' पत्र के सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी थे।
- (b) 'आजकल' दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका है।
- (c) 'दिनमान' के प्रथम सम्पादक रघुवीर सहाय थे।
- (d) 'पहल' पत्रिका जबलपुर से प्रकाशित होती है।

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

अज्ञेय जी ने 'दिनमान' के प्रथम सम्पादक का कार्य किया। उनकी टीम में समाजवादी सोच के साहित्यकार, पत्रकार थे जिनमें मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रमुख थे। 'दिनमान' के लोगों पर डॉ. राममनोहर लोहिया के विचारों का जबरदस्त प्रभाव था। 'अज्ञेय' जी ने जब 'दिनमान' को विदा कहा, तो रघुवीर सहाय 'दिनमान' के सम्पादक बने। रघुवीर सहाय ने 'दिनमान' को शिखर पर भी पहुँचाया और उसे श्रीहीन भी किया। जवाहरलाल कौल, महेश्वर दयालु गंगवार, प्रयाग शुक्ल, जितेन्द्र गुप्त, बनवारी, 'तेजसिंह रावत विनोद भारद्वाज व नरेश कौशिक 'दिनमान' की इस टीम के प्रमुख सितारे थे।

33. 'विशाल भारत' पत्र के प्रथम सम्पादक थे—

- (a) मोहन सिंह सेंगर
- (b) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- (c) इलाचन्द जोशी
- (d) पं. बनारसीदास चतुर्वेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'मार्डन रिव्यू' और 'प्रवासी' के सर्वस्व रामानन्द चट्टोपाध्याय ने हिन्दी जनता की सेवा के लिए वर्ष 1928 में मासिक 'विशाल भारत' का प्रकाशन किया, जिसके सम्पादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। इस पत्रिका में विष्णु दत्त शुक्ल, रुद्रदत्त शर्मा, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते थे। इस दीर्घजीवी पत्र को श्रीराम शर्मा और मोहन सिंह सेंगर ने भी संपादित किया। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन भी पत्र के सम्पादक पद पर प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

34. 'हंस' का सम्पादन किया—

- (a) प्रेमचन्द ने
- (b) अमृत राय ने
- (c) शिवदान सिंह चौहान ने
- (d) इनमें से सभी ने

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्यिक पत्रिका 'हंस' की स्थापना वर्ष 1930 में बनारस में की थी। प्रेमचन्द मृत्युपर्यन्त (8 अक्टूबर, 1936) मासिक रूप से इसे निकालते रहे। मृत्यु के उपरान्त प्रसिद्ध कथाकार जैनेन्द्र तथा प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी संयुक्त रूप से इसके सम्पादक रहे। बाद

के वर्षों में इसके सम्पादक शिवदान सिंह चौहान, श्रीपत राय तथा अमृत राय और तत्पश्चात नरोत्तम नागर रहे।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ कुछ समय तक हंस पत्रिका का सम्पादन बन्द रहा। फिर वर्ष 1959 में 'हंस' का वृहत संकलन हुआ, जिसे बालकृष्ण राव तथा अमृत राय ने संयुक्त रूप से सम्पादित करते हुए आधुनिक साहित्य एवं नवीन मूल्यों को सम्मिलित किया।
- ☛ वर्ष 1986 (प्रेमचन्द की मृत्यु की अर्द्धशती) में हंस के पुनः सम्पादन और प्रकाशन का दायित्व कथाकार-उपन्यासकार राजेन्द्र यादव ने सँभाला और अपनी मृत्यु (2013) तक हंस के 325 अंक निकाले। वर्तमान में हंस के सम्पादक कथाकार संजय सहाय हैं।

35. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम है—

- (a) प्रेमचन्द
- (b) जयशंकर प्रसाद
- (c) राजेन्द्र यादव
- (d) मार्कण्डेय

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

36. हिन्दी की कालजीयी पत्रिका 'हंस' के संस्थापक का नाम है—

- (a) पं. मदनमोहन मालवीय
- (b) प्रेमचन्द
- (c) रामचन्द्र शुक्ल
- (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

37. हंस पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से हुआ?

- (a) मुम्बई
- (b) बनारस
- (c) दिल्ली
- (d) जयपुर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. राजेन्द्र यादव 'हंस' के सम्पादक थे—

- (a) 1980 से 2012
- (b) 1985 से 2014
- (c) 1986 से 2013
- (d) 1987 से 2014

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

39. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम है—

- (a) जयशंकर प्रसाद
- (b) प्रेमचन्द

(c) राजेन्द्र यादव

(d) अमृत राय

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

40. निम्नलिखित पत्रिकाओं के प्रकाशन का सही अनुक्रम है-

- (a) हंस, आलोचना, रविवार, सरस्वती
- (b) आलोचना, सरस्वती, रविवार, हंस
- (c) रविवार, हंस, सरस्वती, आलोचना
- (d) सरस्वती, हंस, आलोचना, रविवार

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पत्रिकाओं का सही अनुक्रम इस प्रकार है- सरस्वती (1900), हंस (1930), आलोचना (1951), रविवार (1977)।

नोट-रविवार साप्ताहिक का प्रथम प्रकाशन वर्ष 1977 में हुआ था। इसके प्रथम सम्पादक एम.जे. अकबर थे। वर्ष 1989 के अन्त में इस पत्रिका को बन्द कर दिया गया।

41. 'सम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन कहाँ से होता है?

- (a) दिल्ली
- (b) बनारस
- (c) कलकत्ता
- (d) इलाहाबाद

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'सम्मेलन पत्रिका' का प्रकाशन वर्ष 1913 में गिरिजा कुमार घोष तथा रामनरेश त्रिपाठी के सम्पादन में इलाहाबाद से हुआ था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा इस पत्रिका का प्रकाशन होता है। यह त्रैमासिक पत्र के रूप में आज भी शोध समीक्षा के क्षेत्र में सक्रिय है।

42. 'हिन्दी नवजीवन' साप्ताहिक का प्रकाशन कहाँ से आरम्भ हुआ?

- (a) अहमदाबाद
- (b) कलकत्ता
- (c) इलाहाबाद
- (d) लखनऊ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

हिन्दी नवजीवन साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1921 में नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद ने किया था। इस पत्रिका में 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' का अनुवाद दिया जाता था। इस पत्रिका के सम्पादक महात्मा गाँधी थे। इन्होंने वर्ष 1933 में 'हरिजन सेवक' पत्रिका हिन्दी में निकाली।

43. निम्नलिखित में से किसने किसी पत्रिका का सम्पादन नहीं किया है?

- (a) राजेन्द्र यादव
- (b) धर्मवीर भारती
- (c) सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- (d) भीष्म साहनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भीष्म साहनी ने किसी भी पत्रिका का सम्पादन नहीं किया है। भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द की परम्परा का अग्रणी लेखक माना जाता है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, आत्मकथा एवं बाल कथाएँ लिखी हैं। इनका प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' है। राजेन्द्र यादव ने वर्ष 1986 (अगस्त) से हंस पत्रिका का पुनः प्रकाशन दरियागंज, दिल्ली से किया। धर्मवीर भारती ने धर्मयुग (8 अक्टूबर, 1950, साप्ताहिक) पत्रिका का सम्पादन किया था। अज्ञेय जी ने वर्ष 1947 में 'प्रतीक' नामक पत्रिका के सम्पादन पहले इलाहाबाद से फिर दिल्ली से किया। इसमें सहयोगी के रूप में रघुवीर सहाय भी जुड़े थे। 'प्रतीक' साहित्यिक पत्रिका थी।

44. हिन्दी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' की प्रकाशन भूमि थी—

- (a) दिल्ली
- (b) इलाहाबाद
- (c) कलकत्ता
- (d) बनारस

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

'उदन्त मार्तण्ड' (उगता सूर्य) का प्रकाशन पण्डित युगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से 1826 ई. में किया। इस साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक और मुद्रक दोनों ही स्वयं बाबू युगल किशोर शुक्ल थे। स्वतन्त्र रूप से इस प्रकार का कोई पत्र पहले हिन्दी में प्रकाशित नहीं होता था। इस प्रकार यह (उदन्त मार्तण्ड) हिन्दी का पहला समाचार-पत्र है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आर्थिक कठिनाइयों के कारण 4 दिसम्बर, 1827 को इस समाचार-पत्र को बन्द कर देना पड़ा।
- पण्डित युगल किशोर शुक्ल ने 1850 ई. में उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन पुनः शुरू किया।
- हिन्दी भाषा में सम्पूर्ण रूप से पहला हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र 'हिन्दोस्तान' माना जाता है, जो 1885 ई. में उत्तर प्रदेश के कालाकांकर (प्रतापगढ़ जनपद) नामक स्थान से राजा रामपाल सिंह ने प्रकाशित किया था। इसके सम्पादक पण्डित मदन मोहन मालवीय थे।
- हिन्दी का दैनिक 'सुधावर्षण' 1854 में श्यामसुन्दर सेन के सम्पादन में कलकत्ता से ही निकला।
- 1829 ई. में संवाद कौमुदी का प्रकाशन हुआ। ताराचन्द्र इसके संचालक और भवानीचरण बंद्योपाध्याय सम्पादक थे। यह एक साप्ताहिक बंगला-पत्र था।

45. हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित होता था—

- (a) दैनिक
- (b) साप्ताहिक
- (c) मासिक
- (d) त्रैमासिक

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

46. हिन्दी के प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के सम्पादक थे—

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) राधाकृष्ण दास
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) बाबू युगल किशोर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

47. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कौन-सा था?

- (a) संवाद कौमुदी (b) दिग्दर्शन
(c) उदन्त मार्तण्ड (d) बंगदूत

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

48. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?

- (a) 1826 में कलकत्ता से (b) 1828 में कलकत्ता से
(c) 1826 में बम्बई से (d) 1828 में मद्रास से

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

49. हिन्दी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ—

- (a) 1840 ई. में (b) 1826 ई. में
(c) 1830 ई. में (d) 1844 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

50. हिन्दी का पहला पत्र है—

- (a) कविवचन सुधा (b) बनारस अखबार
(c) अभ्युदय (d) उदन्त मार्तण्ड

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

51. दैनिक 'हिन्दोस्तान' का प्रकाशन (मातृवीय जी के सम्पादन में) होता था—

- (a) इलाहाबाद से (b) वाराणसी से
(c) प्रतापगढ़ से (d) पटना से

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

52. इंग्लैंड से प्रकाशित होने वाले पत्र का नाम है—

- (a) हिन्दोस्थान (b) भारतमित्र
(c) सदादर्श (d) देशहितैषी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

1886 ई. में राजा रामपाल सिंह इंग्लैंड में 'हिन्दोस्थान' नामक समाचार-पत्र को अंग्रेजी में प्रकाशित करते थे। कुछ समय बाद इसे प्रतापगढ़ (उ.प्र.) के कालाकांकर राजभवन से हिन्दी व अंग्रेजी दोनों संस्करण में दैनिक रूप से प्रकाशित करने लगे।

53. 'कविवचनसुधा' थी—

- (a) एक कविता प्रतियोगिता (b) एक पत्रिका
(c) एक नाटक प्रतियोगिता (d) एक साहित्यिक संस्था

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 18 वर्ष की अत्यायु में ही 1868 ई. में काशी से 'कविवचनसुधा' नामक पत्रिका निकाली जिसमें तत्कालीन अच्छे विद्वानों के लेख निकलते थे। ये आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक के रूप में जाने जाते हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा निकाली गयी अन्य पत्र-पत्रिकाएँ हैं—हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873), हरिश्चन्द्र चन्द्रिका (1874), बालबोधिनी (1874)। 'बालबोधिनी' महिलाओं की पत्रिका थी, जो नारी जागरण के उद्देश्य से निकाली गयी थी।

54. भारतेन्दु जी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया?

- (a) माधुरी (b) मर्यादा
(c) कविवचनसुधा (d) सरस्वती

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

55. निम्नांकित में से किस पत्रिका के सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे?

- (a) सरस्वती (b) कविवचनसुधा
(c) नागरी-प्रचारिणी पत्रिका (d) सुकवि

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

56. हिन्दी समालोचना के सूत्रपात के लिये भारतेन्दु युग की कौन-सी पत्रिका उल्लेखनीय है?

- (a) कविवचनसुधा (b) हरिश्चन्द्र पत्रिका
(c) ब्राह्मण (d) आनन्द कादम्बिनी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

भारतेन्दु युग में आधुनिक आलोचना का रूप यदि कहीं बीज रूप में सुरक्षित है, तो वह पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक समीक्षाओं में ही है। इस क्रम में सबसे पहला उल्लेखनीय नाम बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का है। उन्होंने श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' और गदाधर सिंह कृत 'बंग विजेता' के अनुवादों की विस्तृत आलोचना 'आनन्द कादम्बिनी' में की थी। इसके बाद बालकृष्ण भट्ट और बालमुकुन्द गुप्त ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। भट्ट जी की 'नीलदेवी', 'परीक्षागुरु', 'संयोगिता स्वयंवर' और 'एकान्तवासी योगी' सम्बन्धी आलोचनाएँ तत्कालीन समीक्षा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

57. 'आनन्द कादम्बिनी' का सम्पादक कौन था?

- (a) बालकृष्ण भट्ट (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (d) प्रताप नारायण मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का जन्म 1855 ई. में मिर्जापुर के एक सम्पन्न ब्राह्मण-कुल में हुआ था। इन्होंने साप्ताहिक पत्रिका 'नागरी नीरद' तथा मासिक पत्रिका 'आनन्द कादम्बिनी' का सम्पादन किया। आनन्द कादम्बिनी का प्रकाशन 1881 ई. में मिर्जापुर से हुआ था।

58. आनन्द कादम्बिनी का प्रकाशन बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने किया था—

- (a) कलकत्ता से (b) प्रयाग से
(c) मिर्जापुर से (d) ग्वालियर से

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

59. 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे—

- (a) प्रेमघन (b) भारतेन्दु
(c) श्रीनिवास दास (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

60. 'आनन्द कादम्बिनी' का प्रकाशन कहाँ से होता था?

- (a) बनारस (b) कानपुर
(c) मिर्जापुर (d) इलाहाबाद

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

61. 'आनन्द कादम्बिनी' का प्रकाशन कहाँ से होता था?

- (a) कोलकाता (b) प्रयागराज

(c) कानपुर

(d) मिर्जापुर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

62. 'आलोचना' नामक प्रसिद्ध समीक्षा पत्रिका के सम्पादक कौन थे?

- (a) डॉ. नामवर सिंह (b) डॉ. नगेन्द्र
(c) डॉ. रामविलास शर्मा (d) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

डॉ. नामवर सिंह 'आलोचना' नामक त्रैमासिक समीक्षा पत्रिका के प्रधान सम्पादक थे। इन्होंने 'जन युग' साप्ताहिक पत्रिका का भी सम्पादन कार्य किया।

63. सन् 1954 में प्रकाशित 'नयी कविता' पत्रिका के सम्पादक थे—

- (a) अज्ञेय (b) धर्मवीर भारती
(c) श्री नरेश मेहता (d) जगदीश गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

वर्ष 1954 में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ. जगदीश गुप्त के सम्पादन में 'नयी कविता' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ और जिस काव्य के ऊपर मात्र प्रयोगवाद का विवादग्रस्त आरोप और प्रत्यारोप लगाया जा रहा था, उससे भिन्न स्तर पर सर्वथा विषय-वस्तु की नवीनता को लेकर नयी कविता को प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता अनुभव करके वर्ष 1954 में प्रयाग (इलाहाबाद), अब प्रयागराज की 'साहित्य सहयोग' नामक सहकारी संस्था ने 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन किया। अतः जो काव्यधारा अब तक 'प्रयोगवाद' के नाम से प्रतिष्ठापित थी, 'नयी कविता' के नाम से प्रतिष्ठापित की जाने लगी।

64. 'नयी कविता' पत्रिका का प्रकाशन कहाँ से हुआ?

- (a) इलाहाबाद (b) भोपाल
(c) दिल्ली (d) लखनऊ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

65. निम्नलिखित में से किस पत्रिका का सम्बन्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से नहीं है?

- (a) कविवचनसुधा (b) हरिश्चन्द्र मैगज़ीन
(c) बालबोधिनी (d) ब्राह्मण

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘ब्राह्मण’ पत्रिका का सम्पादन 1883 ई. में प्रतापनारायण मिश्र ने कानपुर से किया था, जबकि ‘कविवचनसुधा’ (1867 ई.), हरिश्चन्द्र मैग्जीन (1873 ई.) एवं बालबोधिनी (1874 ई.) काशी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका थी। जिसके सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र थे। बालबोधिनी पत्रिका स्त्री-शिक्षा के प्रचारार्थ निकाली गई थी।

66. ‘ब्राह्मण’ के सम्पादक थे—

- (a) बालमुकुन्द गुप्त (b) किशोरीलाल गोस्वामी
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रतापनारायण मिश्र

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई. में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ था। इन्हें आधुनिक हिन्दी निर्माताओं में से एक माना जाता है। ये हिन्दी खड़ी बोली और भारतेन्दु युग के उन्नायक कहे जाते हैं। इन्होंने एक लेखक, कवि और पत्रकार के रूप में विशेष प्रसिद्धि पायी। 15 मार्च, 1883 को होली के दिन प्रतापनारायण मिश्र ने ‘ब्राह्मण’ नामक मासिक पत्रिका निकाली।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसी रचना शैली, विषय-वस्तु और भाषागत विशेषताओं के कारण ही मिश्र जी को ‘प्रतिभारतेन्दु’ या ‘द्वितीयचन्द्र’ कहा जाता था।
- 1882 ई. के आस-पास इनकी ‘प्रेम पुष्पावली’ प्रकाशित हुआ, जिसकी प्रशंसा भारतेन्दु जी ने की थी।

67. ‘ब्राह्मण’ पत्रिका का सम्बन्ध निम्नलिखित में से किससे है?

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) बालमुकुन्द गुप्त (d) राधाचरण गोस्वामी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

68. ‘ब्राह्मण’ पत्रिका के सम्पादक थे—

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) बालमुकुन्द गुप्त (d) राधाचरण गोस्वामी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

69. ‘साहित्य भारती’ पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

- (a) इलाहाबाद (b) लखनऊ
(c) वाराणसी (d) कानपुर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘साहित्य भारती’ (1996) पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी संस्थान, लखनऊ से होती है। साहित्य भारती समस्त भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि त्रैमासिक पत्रिका है, जिसके सम्पादक राजेश कुमार बैजल हैं।

70. ‘श्री वेंकटेश्वर समाचार’ प्रकाशित होता था—

- (a) कलकत्ता से (b) इलाहाबाद से
(c) लखनऊ से (d) बम्बई से

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

‘श्री वेंकटेश्वर समाचार’ बम्बई से प्रकाशित होता था। इस प्रेस की स्थापना 1871 ई. में संस्कृत एवं हिन्दी विषय के प्रचार एवं प्रसार के लिए की गयी थी।

71. ‘भारत मित्र’ पत्र प्रकाशित होता था—

- (a) कलकत्ता से (b) पटना से
(c) कानपुर से (d) दिल्ली से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

‘भारत मित्र’ पत्र कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) से प्रकाशित होने वाला समाचार-पत्र था, जिसे 17 मई, 1878 को प्रकाशित किया गया था। उस समय कलकत्ता से हिन्दी का कोई भी पत्र प्रकाशित नहीं होता था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- दुर्गा प्रसाद मिश्र ने ‘भारत मित्र’ का सम्पादन शुरू किया था, जो कश्मीर के रहने वाले थे।
- 16 जनवरी, 1899 को बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने ‘भारत मित्र’ के सम्पादन का कार्य-भार संभाला और अपने विवेक के अनुसार उसे रूपान्तरित कर दिया।

72. ‘भारत मित्र’ पत्रिका के सम्पादक थे—

- (a) माधव प्रसाद मिश्र (b) बाबू बालमुकुन्द गुप्त
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी (d) गोविन्द नारायण मिश्र

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

73. ‘वर्तमान साहित्य’ पत्रिका के सम्पादक हैं—

- (a) अशोक वाजपेयी (b) वीरेश्वर मिश्र
(c) जी. गोपीनाथन (d) विभूति नारायण राय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

‘वर्तमान साहित्य’ पत्रिका के सम्पादक विभूति नारायण राय हैं। यह पत्रिका साहित्य और कला के विकास से सम्बन्धित है। यह मासिक पत्रिका अलीगढ़ से प्रकाशित होती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- विभूति नारायण राय आई.पी.एस. अधिकारी (सेवानिवृत्त) हैं, जो आजमगढ़ (उ.प्र.) के रहने वाले हैं।
- उपन्यास 'तबादला' के लिए उन्हें अन्तरराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान प्राप्त हुआ है।
- इनकी अन्य रचनाएँ हैं—'किस्सा लोकतन्त्र' (उपन्यास), 'एक छात्र का रोजनामचा' (व्यंग्य संग्रह), घर, शहर में कर्पूर, प्रेम की भूत कथा आदि।

74. 'नयी कहानी' पत्रिका का सम्पादक कौन था?

- (a) प्रेमचन्द (b) मोहन राकेश
(c) कमलेश्वर (d) भैरव प्रसाद गुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'विहान' जैसी पत्रिका का वर्ष 1954 में सम्पादन आरम्भ कर कमलेश्वर ने कई पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया, जिनमें 'नयी कहानियाँ' (1963-66), 'सारिका' (1967-78), 'कथा यात्रा' (1978-79), 'गंगा' (1984-88) इत्यादि प्रमुख हैं।

75. 'रूपाम' के सम्पादक हैं—

- (a) पन्त (b) प्रसाद
(c) निराला (d) हरिऔध

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

'रूपाम' के सम्पादक सुमित्रानन्दन पन्त हैं। इसका प्रकाशन वर्ष 1938 में प्रारम्भ हुआ। वर्ष 1938 का 'रूपाम' मुख्यतः प्रगतिशील विचारधारा का ही पत्र था, जिसमें 'प्रगतिवाद' शब्द नहीं प्रयुक्त हुआ है।

76. बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम था—

- (a) ब्राह्मण (b) हिन्दी प्रदीप
(c) आनन्द कादम्बिनी (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'हिन्दी प्रदीप' का सम्पादन बालकृष्ण भट्ट ने 1877 ई. में किया था। यह एक मासिक पत्रिका थी। ब्राह्मण पत्रिका (1833) का सम्पादन प्रताप नारायण मिश्र तथा आनन्द कादम्बिनी का सम्पादन बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'हिन्दी प्रदीप' के मुख पृष्ठ पर छपा रहता था—'शुभ सरस देश, सनेह पूरित प्रकट हवै आनन्द भरे।'।
- भट्ट जी का पहला निबन्ध 'कलिराज की सभा' 1872 ई. में 'कविवचनसुधा' में छपा।

77. 'हिन्दी प्रदीप' के सम्पादक थे—

- (a) अम्बिका दत्त व्यास (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रताप नारायण मिश्र (d) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

78. 'हिन्दी प्रदीप' के यशस्वी सम्पादक का नाम है—

- (a) राधाकृष्ण गोस्वामी (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) अम्बिकादत्त व्यास (d) लाल भगवान दीन

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

79. 'हिन्दी प्रदीप' नामक पत्र निम्न में से किसके द्वारा निकाला गया?

- (a) प्रतापनारायण मिश्र (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) ठाकुर जगमोहन सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

80. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ—

- (a) सन् 1903 में (b) सन् 1900 में
(c) सन् 1930 में (d) सन् 1868 में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

1884 ई. में इंडियन प्रेस की स्थापना इलाहाबाद में चिन्तामणि घोष द्वारा की गई, उन्होंने 1899 ई. में हिन्दी में एक मासिक पत्रिका निकालने का निश्चय किया तथा सभा से अनुरोध किया कि उसका सम्पादन भार वह स्वयं ग्रहण करें। सभा ने इसके लिए एक सम्पादक-मण्डल गठित किया। इस मण्डल के सदस्य थे—श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथदास, कार्तिक प्रसाद और किशोरीलाल गोस्वामी। वर्ष 1900 में प्रयाग में 'सरस्वती' का प्रकाशन हुआ। एक वर्ष तक यह सम्पादक-मण्डल ने कार्य किया। तत्पश्चात् वर्ष 1901 में इस कार्य का दायित्व श्यामसुन्दर दास को मिला। वर्ष 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके सम्पादक बने। अपनी अस्वस्थता के कारण उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद इस पत्रिका का कार्यभार देवीदत्त शुक्ल ने संभाला। सरस्वती पत्रिका में जिन साहित्यकारों ने सम्पादन कार्य किया, उनमें प्रमुख हैं—जगन्नाथदास रत्नाकर, श्यामसुन्दर दास, राधाकृष्ण दास, कार्तिक प्रसाद, किशोरीलाल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, देवीदत्त शुक्ल, श्रीनाथ सिंह, देवी लाल चतुर्वेदी एवं श्रीनारायण चतुर्वेदी।

81. इंडियन प्रेस की स्थापना कब हुई थी?

- (a) 1884 में (b) 1885 में
(c) 1893 में (d) 1900 में

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

82. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है-

- (a) 1905 ई. (b) 1903 ई.
(c) 1902 ई. (d) 1900 ई.

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

83. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन वर्ष क्या था?

- (a) 1843 (b) 1900
(c) 1902 (d) 1903

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

84. निम्नलिखित में कौन 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक नहीं रहे हैं?

- (a) श्यामसुन्दर दास (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्रीनारायण चतुर्वेदी (d) शान्तिप्रिय द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

85. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक हैं—

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) गणेश शंकर विद्यार्थी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

86. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक कौन थे?

- (a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) किशोरीदास वाजपेयी
(c) महावीरप्रसाद द्विवेदी (d) जयशंकर प्रसाद

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

87. इनमें से सरस्वती पत्रिका के सम्पादक का नाम क्या है?

- (a) हजारीप्रसाद द्विवेदी (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

88. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी निम्नलिखित में किस पत्रिका के सम्पादक थे?

- (a) साहित्य सन्देश (b) विशाल भारत
(c) सरस्वती (d) विनय पत्रिका

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

89. महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' के सम्पादक कब नियुक्त हुए?

- (a) 1900 ई. (b) 1902 ई.
(c) 1903 ई. (d) 1905 ई.

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

90. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक बने

- (a) 1890 (b) 1893
(c) 1900 (d) 1903

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

91. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन शुरू किया—

- (a) सन् 1900 से (b) सन् 1901 से
(c) सन् 1903 से (d) सन् 1914 से

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

92. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन-भार ग्रहण किया गया था?

- (a) 1900 ई. में (b) 1903 ई. में
(c) 1907 ई. में (d) 1909 ई. में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

93. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के सम्पादन का उत्तराधिकार अपने पश्चात् किसे सौंपा था?

- (a) गया प्रसाद शुक्ल
- (b) पण्डित गौरी दत्त
- (c) जगदम्बा प्रसाद मिश्र
- (d) पण्डित देवीदत्त शुक्ल

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपयुक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

94. 'सामयिक वार्ता' पत्रिका के सम्पादक हैं—

- (a) किशन पटनायक
- (b) रमेश उपाध्याय
- (c) पंकज विष्ट
- (d) नीलाभ

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'सामयिक वार्ता' पत्रिका के सम्पादक किशन पटनायक हैं। इसका प्रकाशन वाराणसी से होता है।

95. 'धर्मयुग' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक थे?

- (a) रघुवीर सहाय
- (b) सर्वेश्वर दयाल सकसेना
- (c) राजेन्द्र यादव
- (d) धर्मवीर भारती

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जनवरी, 1960 में डॉ. धर्मवीर भारती का 'धर्मयुग' के सम्पादकीय-विभाग में प्रवेश हुआ प्रधान सम्पादक के रूप में। 13 मार्च, 1960 यानी होली अंक में छोटी, किन्तु महत्वपूर्ण सम्पादकीय घोषणा प्रकाशित हुई थी। इसी अंक से सही अर्थ में भारती की परिकल्पना के अनुसार, 'धर्मयुग' का प्रकाशन शुरू होता है।

गद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1-5)— नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों को सदा के लिये बांध देते हैं। वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी लड़ने-मरने से, खून बहाने से, तोप-तलवार के सामने बलिदान करने से होती है, तो कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तःप्रेरणा है। जब कभी उसका विकास हुआ तभी एक रौनक, एक रंग, एक बहार संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। वीरों को बनाने के कारखाने नहीं होते। वे तो देवदार के वृक्ष की भाँति जीवन रूपी वन में स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं। 'जीवन के केन्द्र में निवास करो और सत्य की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह छोड़कर के अन्दर की तहों में पहुँचो तब नये रंग खिलेंगे।' यही वीरता का सन्देश है।

1. इस गद्यांश के लिये उपयुक्त शीर्षक होगा—

- (a) वीरता संस्मरण
- (b) सच्ची वीरता
- (c) वीरों का उत्पन्न होना
- (d) देवदार और वीर

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

प्रस्तुत गद्यांश में 'सच्चे वीर' की चर्चा की गई है। अतः उपयुक्त शीर्षक 'सच्ची वीरता' होगा।

2. वीरता का सन्देश क्या है?

- (a) यह संकल्प कि किसी भी हालत में युद्ध जीतना है
- (b) बुद्ध जैसे राजा की भाँति विरक्त होना
- (c) उद्देश्य के लिये सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना
- (d) हमेशा नया और निराला रहना

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

दिये गये गद्यांश के अन्तिम दो पंक्तियों से स्पष्ट है कि 'उद्देश्य के लिये सच्चाई पर चट्टान की तरह अटल रहना' वीरता का सन्देश है।

3. वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई है। क्योंकि दोनों—

- (a) खाना-पीना मिलने पर ही बढ़ते हैं
- (b) का दिल उदार होता है
- (c) सत्य का हमेशा पालन करते हैं
- (d) स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

वीरों की देवदार वृक्ष से तुलना की गई है, क्योंकि दोनों स्वयं पैदा होते हैं और बिना किसी के दूध पिलाये बढ़ते हैं।

4. निम्न में से कौन-सा रूप वीरता का नहीं है?

- (a) क्रोध (b) युद्ध
(c) त्याग (d) दान

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश के पठन से यह ज्ञात होता है कि क्रोध, वीरता में सम्मिलित नहीं है, जबकि युद्ध, त्याग तथा दान वीरता का रूप है।

5. वीरता का एक विशेष लक्षण है—

- (a) नयापन (b) नकल
(c) हास्य (d) करुणा

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश से स्पष्ट है कि वीरता हमेशा निराली और नई होती है अर्थात् इसका एक विशेष लक्षण नयापन है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 6-10 के लिये)— नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़

कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

सामान्यतः दुष्टों की वन्दना में या तो भय रहता है या व्यंग्य परन्तु जहाँ हम हानि होने के पहले ही हानि के कारण की वन्दना करने लगते हैं वहाँ हमारी वन्दना के मूल में भय नहीं, बल्कि उसकी स्थायी दशा की आशंका है। इस वन्दना में दुष्टों को थपकी देकर सुलाने की चाल है, जिससे विघ्न बाधाओं में जान बच सके। आशंका से उत्पन्न यह नम्रता गोस्वामी जी को आश्रय से आलंबन बना देती है। जब स्फुट अंशों के संचारीभावों तथा अनुभवों को छोड़कर वन्दना के पीछे निहित भावना की दृष्टि से देखते हैं, तो यह आश्रय से संक्रमित आलंबन का उदाहरण बन जाता है। सन्तों, देवताओं तथा राम की वन्दना पर्याप्त नहीं, इसलिये दुष्टों की भी वन्दना की जाती है। इससे दुष्टों के महत्व की भायिक सृष्टि होती है और वह उन्हें और भी उपहास बना देती है।

6. दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य है—

- (a) दुष्टों को लज्जित करना
(b) दुष्टों को थपकी देकर सुलाना
(c) दुष्टों से अपना बचाव करना
(d) दुष्टों का सहयोग प्राप्त करना

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

दुष्ट वन्दना के पीछे लेखक का उद्देश्य दुष्टों को थपकी देकर सुलाना है।

7. रामचरितमानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य है—

- (a) तुलसी की व्यापक दृष्टि
(b) तुलसी का सभी को राममय देखना
(c) तुलसी की उदारता
(d) तुलसी का शील-सौजन्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

रामचरितमानस एक भक्ति काव्य है। इसमें दुष्ट वन्दना का रहस्य तुलसीदास का सभी को राममय देखना है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने लिखा है—

बंदऊँ खल जस सेष सदोषा ।

सहस बदन बरनई पर दोषा ॥

अर्थात् मैं दुष्टों को (हजार मुख वाले) शेषजी के समान समझकर प्रणाम करता हूँ।

8. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक हो सकता है—

- (a) तुलसी की दुष्ट वन्दना
(b) तुलसी की उदारता
(c) तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण
(d) उपर्युक्त तीनों

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'तुलसी का मानवीय दृष्टिकोण' हो सकता है।

9. देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिये सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसीदास—

- (a) सन्तकवि थे
(b) उदारचेता थे
(c) हित-अनहित और अपने-पराये की भावना से ऊपर उठ चुके थे
(d) निर्वरता चाहते थे

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

देवताओं, महापुरुषों, सज्जनों के साथ दुष्टों की वन्दना इसलिये सार्थक कही जायेगी कि महाकवि तुलसीदास निर्वरता चाहते थे।

10. जीवन में हास्य का महत्व इसलिये है कि वह जीवन को-

- (a) प्रेरणा देता है
- (b) आनन्दित करता है
- (c) आगे बढ़ाता है
- (d) सरस बनाता है

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

जीवन में हास्य का महत्व इसलिये है कि वह जीवन को सरस बनाता है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 11-15 के लिये)—नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़

कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया है। शिवाजी और छत्रसाल जैसे महानुभावों के पवित्र चरित्रों का वर्णन करने वाले की जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। शिवाजी ने एक जमींदार और बीजापुरधीश के नौकर के पुत्र होकर चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण सा कर दिखाया और छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया उस समय उसके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे। इसी सेना से इस महानुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों के लिये दो करोड़ वार्षिक मुनाफे का स्वतंत्र राज्य छोड़ा।

—भूषण ग्रन्थावली

11. महाकवि भूषण दरबारी कवि थे। उनके आश्रयदाता राजा का नाम था—

- (a) शिवाजी
- (b) छत्रसाल
- (c) औरंगजेब
- (d) वीर सिंह जूदेव

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(*)

भूषण के प्रमुख आश्रयदाता शिवाजी तथा छत्रसाल बुन्देला थे। कविवर भूषण की पालकी में कंधा देकर तो छत्रसाल ने साहित्य के प्रति सत्ता के समर्पण का उदाहरण पेश किया।

12. छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रन्थों के नाम हैं—

- (a) शिवा बावनी, शिवराज भूषण
- (b) शिवा चरित, शिवा विलास

(c) शिवा वैभव, शिवा चिन्तन

(d) शिवा कथा, शिवा विक्रम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रन्थों के नाम हैं— शिवा बावनी और शिवराज भूषण। 'शिवराज भूषण' में 384 छन्द हैं। इसमें शिवाजी के कार्य-कलापों का वर्णन किया गया है। 'शिवा बावनी' में 52 छन्दों में शिवाजी की कीर्ति का वर्णन किया गया है।

13. इस गद्यांश का सार्थक शीर्षक हो सकता है—

- (a) भूषण विवेक
- (b) भूषण की बुद्धिमत्ता
- (c) भूषण की कला
- (d) भूषण का काव्यनायक चयन

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस गद्यांश का शीर्षक 'भूषण की बुद्धिमत्ता' हो सकता है।

14. 'छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना किया, उस समय उनके पास थे—

- (a) दो सवार और पाँच पैदल
- (b) पाँच सवार और पच्चीस पैदल
- (c) पच्चीस सवार और दो पैदल
- (d) पच्चीस सवार और पाँच पैदल

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

छत्रसाल बुन्देला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया, उस समय उनके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे।

15. भूषण का प्रिय काव्य रस था—

- (a) करुण
- (b) शान्त
- (c) वीर
- (d) शृंगार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

भूषण वीर रस के कवि हैं। चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने इन्हें कविभूषण की उपाधि दी थी।

पद्यांश

निर्देश (प्रश्न संख्या 1-5 के लिये)– नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये–

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

1. उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है–

- (a) झाँसी की रानी (b) 1857 का गदर
(c) अंग्रेजों पर आक्रमण (d) महाराष्ट्र कुल देवी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

उक्त पद्यांश का सही शीर्षक 'झाँसी की रानी' होगा।

2. इस कविता की कवयित्री का नाम है–

- (a) महादेवी वर्मा (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) तारा पाण्डेय (d) मीराबाई

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

'झाँसी की रानी' कविता की कवयित्री का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान है।

3. इस कविता में प्रयोग किया गया रस है–

- (a) भक्ति (b) करुण
(c) शृंगार (d) वीर

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(d)

इस कविता में वीर रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस से ओत-प्रोत इस कविता की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान को 'राष्ट्रीय बसन्त की प्रथम कोकिला' का विरुद दिया गया था।

4. कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ–

- (a) सामाजिक हैं (b) वात्सल्यपूर्ण हैं
(c) देशभक्तिपूर्ण हैं (d) धार्मिक हैं

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ देशभक्तिपूर्ण हैं। 'वीरों का कैसा हो बसन्त' उनकी प्रसिद्ध देश-प्रेम की कविता है। 'स्वदेश के प्रति', 'सेनानी का स्वागत', 'विदाई', 'जलियां वाले बाग में बसन्त' आदि श्रेष्ठ कवित्व

से भरी उनकी अन्य सशक्त कविताएँ हैं। सुभद्रा जी ने मातृत्व से प्रेरित होकर बहुत सुन्दर बाल कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं में भी उनकी राष्ट्रीय भावनाएँ प्रकट हुई हैं।

5. 'खूब लड़ी मरदाने वह तो झाँसी वाली रानी थी' में 'मरदाने' का अर्थ है–

- (a) वीरांगना (b) पुरुषों जैसी
(c) पुरुषत्व वान (d) लड़ाकू

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(a)

सुभद्रा कुमारी चौहान रचित इस रचना में मरदाने का अर्थ पुरुषों जैसी या पुरुषों जैसा वस्त्र पहनने वाली नहीं है। इस कविता में मरदाने का अर्थ वीर से है। अतः अभीष्ट विकल्प (a) है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 6-10 के लिये)–नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये–

अस्ताचल रवि, जल छल-छल छवि
स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन
मन्द पवन बहती सुधि रह रह
परिमल की कह कथा पुरातन
दूर नदी पर नौका सुन्दर
दीखी मृदु तर बहती ज्यों स्वर
वहाँ स्नेह की प्रतनु देह की
बिना गेह की बैठी नूतन

ऊपर शोभित मेघ सत्र सित
नीचे अमित नील जल दोलित
ध्यान-नयन मन चिन्त्य-प्राण-धन
किया शेष रवि ने कर अर्पण

6. इस कविता का सार्थक शीर्षक हो सकता है–

- (a) दिवस का अवसान (b) दिवा-गमन
(c) अस्ताचल रवि (d) रवि कर अर्पण

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(c)

दिये गये कविता का सार्थक शीर्षक 'अस्ताचल रवि' हो सकता है।

7. इस कविता में छायावादी कवि निराला ने–

- (a) प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है।
(b) अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है।
(c) मादक भावनाओं की अभिव्यक्ति की है।
(d) सूर्यास्त का चित्रण किया है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर–(b)

इस कविता में छायावादी कवि निराला ने अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संख्या का वर्णन किया है।

8. इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' अर्थ रखता है—

- (a) प्रमुदित (b) क्षीण
(c) मृत (d) प्रेत

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' क्षीण का अर्थ रखता है जिसका तात्पर्य कमजोर/दुर्बल से है।

9. पण्डित निराला हिन्दी के—

- (a) श्रेष्ठ साहित्यकार थे
(b) लेखक तथा कवि दोनों थे
(c) समाजवादी कवि थे
(d) प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे।

10. उपर्युक्त पद्य में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का प्रयोग अर्थ रखता है—

- (a) गेहूँ (b) एक जीव
(c) घर (d) द्वार

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का अर्थ घर है।

निर्देश (प्रश्न संख्या 11-15 के लिए)—निम्न पद्यांश को पढ़ कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

आज क्यों तेरी वीणा मौन
शिथिल-शिथिल तन थकित हुए कर
स्पन्दन भी भुला जाता डर
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन?

झुकती आती पलकें निश्चल
चित्रित निद्रित से तारक चल
सोता पारावार दृगों में
भर-भर लाया कौन?
आज क्यों तेरी वीणा मौन?

11. इस कविता के रचयिता हैं—

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

इस कविता की रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

12. नीरजा से उद्धृत इस कविता का आशय है—

- (a) न जाने आज क्यों उनकी हृदयतंत्री बज नहीं रही
(b) दुखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है?
(c) विरह व्यथा की कसक तन मन को व्याकुल बना रही है, फिर भी आहें, नहीं भरी जाती। रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ।
(d) विरह व्यथा की कथा अकथनीय है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नीरजा से उद्धृत इस कविता का आशय है—दुखों से आपूरित हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों है?

13. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक होगा—

- (a) सुधि बन छाया कौन (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन
(c) हृदय में आन समाया कौन (d) मौन वीणा का रहस्य

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

इस कविता का उपयुक्त शीर्षक 'आज क्यों तेरी वीणा मौन' होगा।

14. कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह—

- (a) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थीं।
(b) साधना में दूसरी मीरा थीं।
(c) छायावादी भावों में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थीं।
(d) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थीं।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

कवयित्री (महादेवी वर्मा) के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह साधना में दूसरी मीरा थीं। इन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। भक्तिकाल में जो स्थान कृष्ण भक्त मीरा को प्राप्त है, आधुनिक काल में वह स्थान महादेवी वर्मा को मिला है।

15. भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता—

- (a) दुर्बोध रचना है।
(b) श्रेष्ठ रचनाओं में एक है।
(c) आरम्भिक रचना है।
(d) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है।

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता श्रेष्ठ रचनाओं में एक है। नीरजा उनकी आरम्भिक रचना नहीं है।

विविध

1. इनमें से डॉ. नगेन्द्र की कौन-सी पुस्तक साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हुई है?

- (a) आस्था के चरण (b) रस सिद्धान्त
(c) विचार और अनुभूति (d) रीतिकाव्य की भूमिका

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डॉ. नगेन्द्र मूलतः रसवादी आलोचक थे, रस-सिद्धान्त में उनकी गहरी आस्था थी। अपनी पुस्तक 'रस-सिद्धान्त' (काव्य-संग्रह) के लिए वर्ष 1965 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किए थे।

2. रामदरश मिश्र को उनकी किस कृति पर, वर्ष 2015 के लिए, 'हिन्दी साहित्य अकादमी' पुरस्कार दिया गया?

- (a) कितने बजे हैं (b) आग की हँसी
(c) बबूल और कैक्टस (d) बिना दरवाजे का मकान

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य संसार के बहुआयामी रचनाकार हैं। इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास आलोचना और निबन्ध जैसी प्रमुख विधाओं में तो लिखा ही है, आत्म-कथा 'सहचर है समय' यात्रावृत्त तथा संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी रचना 'आग की हँसी' (कविता-संग्रह) के लिए इन्हें वर्ष 2015 में 'हिन्दी साहित्य अकादमी' पुरस्कार दिया गया। इनकी अन्य रचनाएँ हैं- बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ, पक गयी है धूप, कंधे पर सूरज, दिन एक नदी बन गया, जुलूस कहाँ जा रहा है, आग कुछ नहीं बोलती, बारिश में भीगते बच्चे, हंसी ओंठ पर आँखें नम हैं आदि।

3. प्रसिद्ध समीक्षक रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी किस कृति के लिए वर्ष 2017 का 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' दिया गया?

- (a) अथातो सौंदर्य जिज्ञासा
(b) साक्षी है सौंदर्य प्राश्निक
(c) क्योंकि समय एक शब्द है
(d) विश्वमिथकसरित्सागर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2017' का पुरस्कार रमेश कुंतल 'मेघ' को उनकी साहित्यिक समालोचना 'विश्वमिथकसरित्सागर' पर प्रदान किया गया।

4. किस कृति को संगीत नाटक अकादमी का प्रथम पुरस्कार 1959 में प्राप्त हुआ है?

- (a) आषाढ़ का एक दिन (b) आधे अधूरे
(c) लहरों का राजहंस (d) इनमें से कोई भी नहीं

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' यथार्थवादी नाटक है। इस त्रिखंडीय नाटक का प्रकाशन वर्ष 1958 में किया गया। इसे हिन्दी नाटक के आधुनिक युग का प्रथम नाटक भी कहा जाता है। इस नाटक को वर्ष 1959 में सर्वश्रेष्ठ नाटक होने के लिए 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 'आषाढ़ का एक दिन' महाकवि कालिदास के निजी जीवन पर आधारित है, इस नाटक का शीर्षक कालिदास की कृति 'मेघदूतम्' की शुरुआती पंक्तियों से लिया गया है।

5. कैलाश वाजपेयी की 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित काव्यकृति है-

- (a) देहान्त से हटकर (b) महास्वप्न का मध्यान्तर
(c) हवा में हस्तक्षर (d) पृथ्वी का कृष्ण पक्ष

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हवा में हस्तक्षर' कैलाश वाजपेयी का कविता संग्रह है। यह वर्ष 2009 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

- (a) 1960 ई. में (b) 1965 ई. में
(c) 1966 ई. में (d) 1955 ई. में

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(*)

ज्ञानपीठ पुरस्कार साहित्य जगत का सर्वाधिक सम्मानित पुरस्कार है। इसकी स्थापना 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' समाचार-पत्र के सम्पादक 'साहू जैन परिवार' (साहू शान्ति प्रसाद जैन) द्वारा वर्ष 1961 में किया गया। इस पुरस्कार को सर्वप्रथम वर्ष 1965 में मलयालम लेखक श्री शंकर कुरुप को उनके साहित्य 'ओटकुषल' (बाँसुरी) के लिए दिया गया। प्रश्न में पुरस्कार की स्थापना पूछा गया है, जबकि विकल्प में प्रथम पुरस्कार प्रदान करने का वर्ष मौजूद है। अतः कोई भी विकल्प सही नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाली प्रथम महिला बंगाली लेखिका आशापूर्णा देवी थीं, जिन्हें यह पुरस्कार वर्ष 1976 में प्राप्त हुआ।
- वर्ष 2013 का केदारनाथ सिंह को हिन्दी साहित्य के लिए 49वाँ तथा वर्ष 2014 का मराठी साहित्य के लिए भालचन्द्र नेमाडे को 50वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया है।
- वर्ष 2015 का 51वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने गुजराती लेखक डॉ. रघुवीर चौधरी को 11 जुलाई, 2016 को प्रदान किया।
- वर्ष 2016 का 52वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार 23 दिसम्बर, 2016 को बांग्ला साहित्य के कवि शंखा घोष को प्रदान किये जाने की घोषणा की गई।
- वर्ष 2017 का 53वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार हिन्दी लेखिका कृष्णा सोबती को प्रदान किया गया।

7. नरेश मेहता को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर प्राप्त हुआ?

- (a) महाप्रस्थान (b) सम्पूर्ण रचना कर्म
(c) वनपाखी सुनो (d) संशय की एक रात

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नरेश मेहता को किसी एक रचना के लिए नहीं वरन् सम्पूर्ण रचना कर्म के लिए साहित्यिक सेवाओं में विशेष योगदान के लिए वर्ष 1992 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नरेश मेहता दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- नरेश मेहता ने आधुनिक कविता को नयी व्यञ्जना के साथ नया आयाम दिया। रागात्मकता, संवेदना और उदात्तता उनकी सर्जना के मूल तत्व हैं, जो प्रकृति और समूची सृष्टि के प्रति पर्युत्सुक बनाते हैं। आर्ष परम्परा और साहित्य को नरेश मेहता के काव्य में नयी दृष्टि मिली।
- इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—अरण्या, उत्तर कथा, एक समर्पित महिला, कितना अकेला आकाश चैत्या, दो एकान्त, धूमकेतु : एक श्रुति, पुरुष, प्रति श्रुति प्रवाद पर्व, बोले दो चीड़ को, यह पथ बन्धु था, हम अनिकेतन आदि।

8. निम्नलिखित में किस कवि को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ?

- (a) दिनकर (b) पन्त
(c) अज्ञेय (d) सुरेन्द्र वर्मा

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भारतीय भाषाओं (22) में से किसी एक सर्वोत्कृष्ट रचना के लिए प्रदान

किया जाता है। सुरेन्द्र वर्मा को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ है। हिन्दी साहित्य में सर्वप्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले सुमित्रानन्दन पन्त थे, जिन्हें यह पुरस्कार वर्ष 1968 में 'चिदम्बरा' के लिए प्रदान किया गया। तत्पश्चात रामधारी सिंह 'दिनकर' को वर्ष 1972 में 'उर्वशी' के लिए, वर्ष 1978 में अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए, वर्ष 1982 में महादेवी वर्मा को 'यामा' के लिए, वर्ष 1992 में नरेश मेहता को, वर्ष 1999 में निर्मल वर्मा को, वर्ष 2005 में कुँवर नारायण को, वर्ष 2009 में अमरकान्त एवं श्रीलाल शुक्ल को संयुक्त रूप से, वर्ष 2013 में केदारनाथ सिंह को 'अकाल में सारस' के लिए तथा वर्ष 2017 में कृष्ण सोबती को हिन्दी साहित्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस प्रकार अब तक कुल 11 हिन्दी रचनाकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया है।

9. निम्नलिखित में से किस लेखक को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' नहीं मिला है?

- (a) नरेश मेहता (b) दिनकर
(c) नागार्जुन (d) निर्मल वर्मा

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. वर्ष 2017 का ज्ञानपीठ पुरस्कार निम्नलिखित में से किस लेखिका को दिया गया है?

- (a) कृष्णा सोबती (b) मृदुला गर्ग
(c) चित्रा मुद्गल (d) मन्नू भंडारी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित कौन रचनाकार नहीं है?

- (a) महादेवी वर्मा (b) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) रामधारी सिंह 'दिनकर'

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' किससे सम्बन्धित है?

- (a) हिन्दी भाषा से (b) तमिल भाषा से
(c) संस्कृत भाषा से (d) सभी भारतीय भाषाओं से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित नहीं किये गये कवि हैं—

- (a) रामधारी सिंह 'दिनकर' (b) जयशंकर प्रसाद
(c) सुमित्रानन्दन पन्त (d) नरेश मेहता

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. रामधारी सिंह 'दिनकर' को किस कृति पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था?

- (a) उर्वशी (b) कुरुक्षेत्र
(c) सामधेनी (d) हुंकार

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. पन्त को किस काव्य कृति पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला था?

- (a) लोकायतन (b) चिदम्बरा
(c) पल्लव (d) ज्योत्सना

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'धूमिल' को किस काव्यकृति पर 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला था?

- (a) कल सुनना मुझे (b) सुदामा पाण्डे का प्रजातन्त्र
(c) संसद से सड़क तक (d) किसी पर नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2009, 2005

उत्तर—(a)

धूमिल को 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह के लिए वर्ष 1979 का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

17. 'उत्तर कबीर' पर व्यास सम्मान पाने वाले रचनाकार हैं—

- (a) कुँवर नारायण (b) केदारनाथ सिंह
(c) रामविलास शर्मा (d) भवानी प्रसाद मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' केदारनाथ सिंह की कृति है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1995 में हुआ। इस रचना पर इन्हें वर्ष 1997 में व्यास सम्मान प्राप्त हुआ है। 'अकाल में सारस' के लिए ये वर्ष 2013 का ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित हुए।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➤ केदारनाथ सिंह के काव्य संग्रह हैं—अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, बाघ, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और

अन्य कविताएँ, टालस्टॉय और साइकिल आदि।

- कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान, मेरे समय के शब्द केदारनाथ सिंह की गद्य कृतियाँ हैं।
➤ केदारनाथ सिंह ने संकल्प कविता दशक (हिन्दी अकादमी, दिल्ली), तनी हुई प्रत्यंचा (बीसवीं शताब्दी की रूसी कविता) और ताना-बाना (स्वाधीनता के बाद की भारतीय कविताओं का संकलन) पुस्तकों का भी सम्पादन किया।
➤ 19 मार्च, 2018 को केदारनाथ सिंह का नई दिल्ली में निधन हो गया।

18. 'टालस्टॉय और साइकिल' किसकी काव्य कृति है?

- (a) लीलाधर जगूड़ी (b) अरुण कमल
(c) ज्ञानेन्द्र पति (d) केदारनाथ सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

19. जगदीश गुप्त को 1997 में किस सम्मान से विभूषित किया गया?

- (a) भारत-भारती सम्मान से (b) ज्ञानपीठ सम्मान से
(c) सरस्वती सम्मान से (d) व्यास सम्मान से

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

भारत-भारती उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार है। यह पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। पुरस्कार में भारत-भारती सम्मान के रूप में स्मृति चिह्न, अंगवस्त्रम् तथा 5 लाख, 2 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है। जगदीश गुप्त को वर्ष 1998 में भारत-भारती सम्मान से सम्मानित किया गया था, न कि वर्ष 1997 में। अब तक भारत-भारती पुरस्कार प्राप्तकर्ता इस प्रकार हैं—महादेवी वर्मा (1982), धर्मवीर भारती (1990), जगदीश गुप्त (1998), जानकी वल्म्व शास्त्री (2001), नामवर सिंह (2005), परमानन्द श्रीवास्तव (2006), रामदरश मिश्र (2007), केदारनाथ सिंह (2008), अशोक वाजपेयी (2008), महीप सिंह (2009), कैलाश वाजपेयी (2010), गोविन्द मिश्र (2011), गोपाल दास नीरज (2012), दूधनाथ सिंह (2013), काशीनाथ सिंह (2014), डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी (2015), डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित (2016)।

20. प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन कहाँ हुआ था?

- (a) दिल्ली (b) नागपुर
(c) मॉरीशस (d) लंदन

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10-12 जनवरी, 1975 को नागपुर (भारत) में आयोजित किया गया था।

21. जननाट्य मंच (IPTA) की स्थापना.....में हुई है।

- (a) 1939 (b) 1949
(c) 1959 (d) 1969

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

भारतीय जननाट्य मंच (Indian People's Theatre Association-IPTA) की स्थापना राष्ट्रीय स्तर पर 25 मई, 1943 को बम्बई (अब मुम्बई) में हुई थी। स्वर्णजयन्ती (50वां वर्ष) के अवसर पर वर्ष 1993 में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। इप्टा का नामकरण सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक होमी जहाँगीर भाभा ने किया था। इप्टा का प्रतीक चिह्न सुप्रसिद्ध चित्रकार चित्त प्रसाद की कृति 'नगाड़ावादक' है, जो संचार के सबसे प्राचीन माध्यम को याद दिलाता है।

22. 'सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर' में नावक का क्या अर्थ है?

- (a) नायक (b) बहेलिया
(c) नाविक (d) नाव का

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

हिन्दी साहित्यकार सुधीश पचौरी ने 28 अगस्त, 2012 के 'लाइव हिन्दुस्तान डॉट कॉम' के एक साक्षात्कार वार्ता में प्रस्तुत दोहे के अर्थ को समझाते हुए कहा है कि यहाँ 'नावक' का मतलब 'नाविक' नहीं। नावक यानी तीरंदाज। छोटा-सा तीर, घाव गम्भीर! यही काव्यकला है। कहीं-कहीं पर कुछ विद्वानों ने 'नावक' का अर्थ 'नाविक' भी बताया है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) दिया था, किन्तु स्पष्ट न होने के कारण संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

23. विश्वनाथ के अतिरिक्त किस आचार्य ने 'साहित्य' शब्द को अपने ग्रन्थ-नाम में प्रयुक्त किया है?

- (a) भामह (b) राजशेखर
(c) रुय्यक (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

साहित्य शब्द का प्रयोग रुय्यक ने ग्यारहवीं शताब्दी में अपने दूसरे ग्रन्थ 'साहित्य मीमांसा' में 'साहित्य' शब्द का प्रयोग किया था। तत्पश्चात् चौदहवीं शताब्दी के विश्वनाथ ने प्रयोग किया।

24. किस ग्रन्थ में कलचुरि राजवंश के किसी सामन्त की सात नायिकाओं का नखशिख वर्णन है?

- (a) वर्ण रत्नाकर (b) उक्तिव्यक्ति प्रकरण
(c) राउलवेल (d) कुवलयमाला कथा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

उद्योतन सूरि द्वारा रचित कुवलयमाला कथा तीसरी शताब्दी से लेकर 8वीं तक के अपभ्रंश काव्य का वर्णन है। इस ग्रन्थ में कलचुरी राजवंश के सामन्त की सात नायिकाओं का नखशिख वर्णन मिलता है।

25. सन्त साहित्य में प्रयुक्त 'बंकनालि' का पर्याय निम्नांकित में से कौन नहीं है?

- (a) त्रिकुटी (b) वक्रनालि
(c) राजदन्त (d) शंखिनी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

सन्त साहित्य में प्रयुक्त बंकनालि का पर्याय त्रिकुटी, राजदन्त तथा शंखिनी से है। यह हठयोग के अन्तर्गत आता है। वक्रनालि से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

26. केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो..... से सम्बन्धित है।

- (a) शिक्षा मंत्रालय के अनुवाद विभाग
(b) गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग
(c) मानव संसाधन मंत्रालय
(d) प्राविधिक शिक्षा मंत्रालय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

वर्ष 1960 में शिक्षा मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना करके असांविधिक साहित्य के हिन्दी अनुवाद का कार्य आरम्भ किया गया। लेकिन राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का दायित्व गृह मंत्रालय पर होने के कारण केन्द्र सरकार के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य के अनुवाद का दायित्व भी गृह मंत्रालय को सौंपा गया। 1 मार्च, 1971 को गृह मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई और केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य का अनुवाद कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। अनुवाद में सरलता, सहजता और शब्दावली में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 1973 से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य भी कर रहा है।

27. 'हीनयान' और 'महायान' शाखा किस धर्म में सम्बन्धित रहे हैं?

- (a) जैन धर्म (b) वैदिक धर्म
(c) इस्लाम धर्म (d) बौद्ध धर्म

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

'हीनयान' और 'महायान' दोनों बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय हैं। दोनों के बीच अत्यधिक विषमता है। हीनयान और महायान में चरम लक्ष्य के विचार को लेकर विरोध है। हीनयान का लक्ष्य चरम लक्ष्य अर्हत पद की प्राप्ति है, जबकि महायान का चरम लक्ष्य बोधिसत्व को प्राप्त करना है।

28. 'उसने कहा था' के मुख्य पात्र का नाम है-

- (a) खालसा सिंह (b) करतार सिंह
(c) लहना सिंह (d) परमिंदर सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा था' में पात्रों की संख्या अधिक है, किन्तु उसकी मूल आत्मा केवल लहना सिंह और सूबेदारनी से ही अधिक संवेदित दिखायी देती है। लेखक इन्हीं दोनों पात्रों के बीच एक ऐसी प्रेम कहानी का ताना-बाना बुनता है, जो लहना सिंह के जीवन को आदर्शवादी मूल्यों से जोड़ देता है। इसका कथानक प्रथम विश्व युद्ध से लिया गया है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने गिनी-चुनी कहानियाँ ही लिखीं, जिसमें बुद्ध का काँटा और सुखमय जीवन भी थी, किन्तु 'उसने कहा था' कहानी से वे हिन्दी के अमर कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

29. इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण प्रायः है।

- (a) आध्यात्म परक (b) विकास परक
(c) यथार्थ परक (d) अनुसंधान परक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

इतिहास के प्रति भारतीय दृष्टिकोण प्रायः आदर्श मूलक एवं आध्यात्मवादी रहा है, इसीलिए उसमें भौतिक जगत की स्थूल घटनाओं में भी आध्यात्मिक तत्वों व प्रवृत्तियों के अनुसंधान की प्रवृत्ति रही है। भारतीय सभ्यता में प्रायः सामाजिक तत्वों की अपेक्षा चिरंतन मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता रहा है। अतः यहाँ के प्राचीन इतिहासकारों ने अतीत की व्याख्या भी इसी दृष्टिकोण से की।

30. सुरति से आशय है-

- (a) उन्माद (b) विरक्ति
(c) ध्यान (d) आनन्द का अनुभव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सुरति निरति का संयुक्त प्रयोग सबसे पहले नाथपंथी रचनाओं में मिलता है, जिसका महत्व सन्त साहित्य के अन्तर्गत बहुत माना गया है। सिद्धों में सुरति शब्द तो मिलता है, किन्तु सुरति निरति दोनों शब्दों का अर्थ विकास सिद्ध साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। डॉ. बड़थवाल सुरति शब्द की उत्पत्ति 'स्मृति' शब्द से मानते हैं। आचार्य क्षितिमोहन सेन ने सुरति का अर्थ प्रेम और निरति का वैराग्य किया है। हिन्दी में सुरति के कई अर्थ (प्रेम-क्रीड़ा, स्मृति) होते हैं। सन्तों ने सुरति का प्रयोग निस्सन्देह नाथ योगियों के शब्द सुरति-योग के अर्थ में किया है। सुरति साधना मानसिक साधना है, अजपाजाप है, लययोग है, यही ध्यानयोग है। इसके द्वारा साधक आन्तरिक अवस्थाओं का पर्यवेक्षण कर उपलब्ध ज्ञान द्वारा परम तत्व का साक्षात्कार करता है, जिससे उसे आत्मदर्शन की उपलब्धि होती

है। विद्वानों में सुरति शब्द पर पर्याप्त मतभेद है। कबीर के मतानुसार सुरति शब्द योग महारस का आस्वादन कराने का साधन है। गोरखबानी में सुरति को साधन तथा निरति को सिद्धि कहा गया है। निरति का अर्थ वैराग्य वृत्ति नहीं है। डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी ने सुरति का अर्थ 'ध्यान' बताया है।

31. प्रयोजनमूलक भाषा का प्रमुख सम्बन्ध..... है।

- (a) साहित्य (b) कला
(c) कल्पना (d) जीविकोपार्जन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजन मूलक भाषा कहते हैं, जो विशेष भाषा समुदाय के समस्त जीवन-संदर्भों को निश्चित शब्दों और वाक्य संरचना के द्वारा अभिव्यक्त करने में सक्षम हो। भाषिक उपादेयता एवं विशिष्टता का प्रतिपादक प्रयोजनमूलक भाषा से होता है।

32. 'समान्तर कहानी' के पुरस्कर्ता कमलेश्वर का मूल नाम है-

- (a) नीरज सक्सेना (b) कैलाश सक्सेना
(c) गोपाल दास सक्सेना (d) प्रभाकर सक्सेना

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'समान्तर कहानी' के पुरस्कर्ता कमलेश्वर का मूल नाम 'कैलाश सक्सेना' है। वर्ष 1974 में 'सारिका' के अक्टूबर अंक में 'समान्तर कहानी' का क्रम शुरू हुआ। 'मेरा पन्ना' स्तम्भ में कमलेश्वर ने इसकी पृष्ठभूमि और वैचारिकता का धारावाहिक परिचय दिया। इसके नामकरण के बारे में इब्राहिम शरीफ ने लिखा है-"आज की हिन्दी कहानी को हम लोगों ने समान्तर कहानी का नाम दिया है, डफली बजाकर लोगों को चौंकाए के लिए नहीं, सिर्फ अपनी पहचान के लिए। पहचाने जाने के लिए नाम भी तो चाहिए ही।"

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- गोपाल दास सक्सेना को 'नीरज' के नाम से भी जानते हैं।
- कमलेश्वर जी ने कई पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया जिनमें विहान (1954), नई कहानियाँ (1963-66), सारिका (1957-78), कथा यात्रा (1978-79), गंगा (1984-88) आदि हैं।
- कमलेश्वर का नाम नई कहानी आन्दोलन से जुड़े अग्रणी कथाकारों में आता है। उनकी पहली कहानी वर्ष 1948 में प्रकाशित हो चुकी थी, परन्तु 'राजा निरबंसिया' (1957) से वे रातों-रात एक बड़े कथाकार बन गए।
- कमलेश्वर की प्रमुख कहानियाँ हैं-मांस का दरिया, नीली झील, तलाश, बयान, नागमणि, अपना एकांत, आसक्ति, जिन्दा मुर्दे, जॉर्ज पंचम की नाक, मुर्दों की दुनियाँ, कस्बे का आदमी एवं स्मारक आदि।

33. समान्तर कहानी आन्दोलन.....ने चलाया।

- (a) सुदर्शन (b) मोहन राकेश
(c) मुक्तिबोध (d) कमलेश्वर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

34. इनमें से कौन-सा प्रकार समालोचना का नहीं है?

- (a) सैद्धान्तिक आलोचना (b) आलोचनात्मक आलोचना
(c) निर्णयात्मक आलोचना (d) व्याख्यात्मक आलोचना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

सैद्धान्तिक आलोचना, निर्णयात्मक आलोचना, व्याख्यात्मक आलोचना, परिचयात्मक आलोचना, तुलात्मक आलोचना, मनोवैज्ञानिक आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना इत्यादि समालोचना के प्रकार हैं। आलोचनात्मक आलोचना, समालोचना का प्रकार नहीं है।

35. 'संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदन' सूत्र के प्रयोक्ता हैं—

- (a) रमेश कुन्तल मेघ
(b) विजयदेव नारायण साही
(c) गजानन माधव मुक्तिबोध
(d) मनोहर श्याम जोशी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

मुक्तिबोध ने अपनी चिन्तन प्रणाली से एक सूत्र को जन्म दिया, जो उनकी कविताओं और आलोचनाओं में परोया हुआ है। वह सूत्र है—संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदन। रचना की प्रक्रिया में चूँकि ऐन्द्रिय संवेदन की प्रधान भूमिका होती है और उसे दृश्य रूप में बोध को व्यक्त करना होता है, इसलिए ज्ञान को संवेदना में घोलने की जिम्मेदारी होती है। संवेदना ही दृश्यांकन में सक्षम होती है। रचना की आदि बिन्दु संवेदना और अन्तिम परिणति संवेदना होती है। ज्ञान की भूमिका मध्य में है। यह संवेदना को भी विश्लेषित करता हुआ तिरोहित हो जाता है। मुक्तिबोध इसे "संवेदन शक्ति में विलक्षण विश्लेषण 'प्रवृत्ति का होना' कहते हैं।"

36. 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' यह कथन किसका है?

- (a) रसखान का
(b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का
(c) आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का
(d) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

रसखान का मूल नाम सैय्यद इब्राहीम था। वैष्णव धर्म से आशक्त होकर कृष्णभक्ति में लीन हो गये। इसी परम्परा का पालन वाहिद और आलम ने भी किया। इन मुस्लिम हरिभक्तों के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने उपर्युक्त उक्ति कही।

37. 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए' लिखने वाले कवि हैं—

- (a) अमीर खुसरो (b) जायसी
(c) आलम (d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

38. आचार्य शुक्ल ने एडविन आर्नल्ड के आख्यान काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का 'बुद्धचरित' नाम से किस भाषा में अनुवाद किया?

- (a) खड़ी बोली में (b) अवधी में
(c) ब्रजभाषा में (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एडविन आर्नल्ड के आख्यान काव्य 'लाइट ऑफ एशिया' का ब्रजभाषा में 'बुद्धचरित' के नाम से पद्यानुवाद किया। रामचन्द्र शुक्ल ने 'जायसी' तथा 'बुद्धचरित' की भूमिका में क्रमशः अवधी तथा ब्रजभाषा का भाषा-शास्त्रीय विवेचन करते हुए उनका स्वरूप भी स्पष्ट किया है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जोसेफ एडिसन के 'प्लेजर्स ऑफ इमेजिनेशन' का 'कल्पना का आनन्द' नाम से एवं राखालदास बन्धोपाध्याय के 'शशांक' उपन्यास का हिन्दी में रोचक अनुवाद किया है।
- 'शशांक' मूल बंगला में दुःखान्त है, पर उन्होंने उसे सुखान्त बना दिया है।

39. "ऋतुवर्णन तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन किस कवि के लिए है?

- (a) बिहारी (b) घनानन्द
(c) सेनापति (d) पद्माकर

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

"ऋतुवर्णन तो इनके ऐसा और किसी शृंगारी कवि ने नहीं किया है। इनके ऋतु वर्णन में प्रकृति निरीक्षण पाया जाता है।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन सेनापति कवि के लिए है।

40. कवि त्रिलोचन का पूरा नाम है-

- (a) राधिका रमण सिंह (b) शिव प्रसाद सिंह
(c) वासुदेव सिंह (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005, 2004

उत्तर—(c)

हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा का प्रमुख हस्तक्षर माने जाने वाले कवि त्रिलोचन का मूल नाम वासुदेव सिंह था। वे आधुनिक हिन्दी कविता को प्रगतिशील त्रयी के तीन स्तम्भों (नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह तथा कवि त्रिलोचन) में से एक थे। उन्हें हिन्दी लघु कविता (सॉनेट) का साधक माना जाता है। इनका जन्म सुल्तानपुर जिले में वर्ष 1917 में तथा मृत्यु 9 दिसम्बर, 2007 को गाजियाबाद में हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ त्रिलोचन का पहला कविता संग्रह 'धरती' वर्ष 1945 में प्रकाशित हुआ।
- ☛ 'ताप के तापे हुए दिन' के लिए वर्ष 1981 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।
- ☛ वर्ष 1989-90 में हिन्दी अकादमी द्वारा शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा 'शास्त्री' और 'साहित्य रत्न' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है।
- ☛ इनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं-धरती (1945), गुलाब और बुलबुल (1956), दिगंत (1957), शब्द (1980), मैं उस जनपद का कवि हूँ (1981), अरधान (1984), तुम्हे सौपता हूँ (1985), चैती (1987) आदि।

41. त्रिलोचन का वास्तविक नाम है-

- (a) वासुदेव सिंह (b) त्रिलोकी नाथ
(c) त्रिमूर्ति सिंह (d) मनमोहन सिंह

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

42. 'मैं उस जनपद का कवि हूँ' काव्य रचना किस कवि की है?

- (a) नागार्जुन (b) रांगेय राघव
(c) त्रिलोचन (d) केदारनाथ अग्रवाल

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

43. प्रेमचन्द की मृत्यु हुई थी-

- (a) 1933 ई. में (b) 1934 ई. में
(c) 1935 ई. में (d) 1936 ई. में

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

मुंशी प्रेमचन्द जिनका वास्तविक नाम धनपत राय था, का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के निकट लमही नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायब राय था। इनका निधन 8 अक्टूबर, 1936 को हुआ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ मुंशी प्रेमचन्द प्रारम्भ में नवाब राय के नाम से अपनी रचनाएँ उर्दू में लिखते थे।
- ☛ 'प्रेमचन्द' नाम दयानारायण निगम द्वारा दिया गया था।
- ☛ 'प्रेमचन्द' उपनाम इन्हें प्रथम पाँच कहानियों के संग्रह 'सोजेवतन' के बाद मिला।
- ☛ 'गोदान' इनकी समस्त रचनाओं में सर्वाधिक प्रसिद्ध हुई।
- ☛ 'कफन' उनकी अन्तिम कहानी मानी जाती है।
- ☛ प्रेमचन्द को 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी गयी है।

44. मुंशी धनपत राय को 'प्रेमचन्द' नाम से सुशोभित करने वाले व्यक्ति का नाम है—

- (a) मुंशी दयानारायण (b) मुंशी अजायबलाल
(c) मुंशी देवनाारायण (d) इनमें से कोई नहीं

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

45. कवि धूमिल का पूरा नाम था-

- (a) गोरख पाण्डेय (b) सुधाकर पाण्डेय
(c) सुदामा पाण्डेय (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

कवि धूमिल का पूरा नाम सुदामा पाण्डेय था। इनका जन्म 9 नवम्बर, 1936 को खेवली (वाराणसी) में हुआ था। इनका निधन 10 फरवरी, 1975 को हुआ। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-संसद से सड़क तक (1972), कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र (1983)।

46. इनमें से कौन 'भ्रमरानन्द' उपनाम से लिखा करते थे?

- (a) विद्यानिवास मिश्र (b) बालमुकुन्द गुप्त
(c) विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कैशिक' (d) कुबेरनाथ राय

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

विद्यानिवास मिश्र 'भ्रमरानन्द' उपनाम से भी रचनाएँ करते थे। जब भी ये भ्रमरानन्द नाम से लिखते हैं, तो इनके लेखन और भाषा में एक प्रकार का व्यंग्य आ जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ विद्यानिवास मिश्र के अनुसार, "हिन्दी में यदि आंचलिक बोलियों के शब्दों को प्रोत्साहन दिया जाये तो दुरुह राजभाषा से बचा जा सकता है, जो बेहद संस्कृतनिष्ठ है।"

47. 'कुट्टिचातन' के उपनाम से किसके व्यक्तिपरक निबन्ध छपे हैं?

- (a) मुक्तिबोध (b) अज्ञेय
(c) भारत भूषण अग्रवाल (d) नेमिचन्द्र जैन

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'कुट्टिचातन' के नाम से अज्ञेय के ललित निबन्धों का संग्रह 'सब रंग' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। अज्ञेय जी अपने निबन्धों में अपना अनुभूत लिखते हैं। 'त्रिशंकु', 'आत्मने पद' और 'हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य' में संग्रहीत निबन्धों में अनुभूत का वैचारिक विश्लेषण है।

48. इनमें से कौन-सा गुण अथवा दोष समालोचक में नहीं होना चाहिए?

- (a) आलोच्य विषय का सम्यक् ज्ञान
(b) निष्पक्षता
(c) सहृदयता
(d) ईर्ष्या की भावना

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

समालोचक के आवश्यक गुण इस प्रकार हैं-

- (i) अन्तर्दृष्टि या पैठ ((Insight)
(ii) सहानुभूति
(iii) बहुज्ञता
(iv) औचित्य
(v) धैर्य एवं निष्पक्षता
(vi) प्रभावोत्पादक अभिवृत्ति
ईर्ष्या की भावना समालोचक में नहीं होना चाहिए।

49. 'वीथी' क्या है-

- (a) वृत्ति (b) सन्धि
(c) अभिनय (d) रूपक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराज ने रूपक के दस प्रकार बताये हैं- नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समविकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसना। इनमें नाटक सर्वाधिक प्रचलित है।

50. निम्नलिखित में जो कथन रचित नहीं है, उसे छाँटिए:-

- (a) एक भाषा में प्रकट किए गए भावों व विचारों को दूसरी भाषा में प्रकट करना 'अनुवाद' कहलाता है।
(b) अनुवादक के लिए केवल किसी एक भाषा का ज्ञान पर्याप्त है।

- (c) जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोतभाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाए उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।
(d) 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' का पर्याय है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

अनुवाद के लिए कम से कम दो भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जा सके।

51. अनपेक्षित व कामुकतादर्शी समाचारों को किस वर्ग में रखा जाता है?

- (a) एकांगी समाचार (b) डायरी समाचार
(c) सनसनीखोज समाचार (d) गर्म समाचार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

अनपेक्षित व कामुकतादर्शी समाचारों को 'गर्म समाचार' (Hot News) में रखा जाता है।

52. रेडियो के ब्रॉडकास्टिंग कमर्शियल और टी.वी. कमर्शियल में क्या अन्तर है?

- (a) रेडियों में सारा सन्देश, शब्द, संगीत और ध्वनि के प्रभावों में होता है, जबकि टी.वी. में सारे प्रभाव पर्दे पर दिखाई देते हैं।
(b) टी.वी. की तुलना में रेडियो कॉपी लेखक को समय की पूरी स्वतंत्रता नहीं होती।
(c) रेडियो विज्ञापनों में संवाद अधिक होते हैं।
(d) रेडियो विज्ञापन अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, जबकि टी.वी. के कम।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रेडियो में सारा सन्देश शब्द, संगीत और ध्वनि के प्रभावों में होता है, जबकि टी.वी. में सारे प्रभाव पर्दे पर दिखाई देते हैं। यही रेडियो के ब्रॉडकास्टिंग कमर्शियल और टी.वी. कमर्शियल में अंतर है।

53. भारत की सर्वप्रमुख और एशिया की सबसे बड़ी संवाद-समिति कौन सी है?

- (a) नेशनल न्यूज एजेंसी (b) प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया
(c) यूनिवार्ता (d) हिन्दुस्तान समाचार

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

भारत की सर्वप्रमुख और एशिया की सबसे बड़ी संवाद-समिति 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' (PTI) है।

54. रिपोर्टर बनने के लिए क्या आवश्यक है?

- (a) सहजबुद्धि व भाषा पर अधिकार
- (b) उच्च शिक्षा व दो भाषाओं पर अधिकार
- (c) उत्सुकता की भावना
- (d) भावुक व चंचल व्यक्तित्व

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रिपोर्टर (संवाददाता) बनने के लिए सहज बुद्धि व भाषा पर अधिकार होना आवश्यक है, जिससे वह तात्कालिक घटना को पूर्णतः सत्यता एवं समझदारी के साथ एकत्र कर सके।

55. डेस्क के लिए समाचारों की आपूर्ति कौन करता है?

- (a) संपादक
- (b) रिपोर्टर
- (c) कंपोजिटर
- (d) प्रूफरीडर

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डेस्क के लिए समाचारों की आपूर्ति रिपोर्टर (संवाददाता) करता है।

56. समाचार का प्रमुख तत्व क्या है?

- (a) रोचकता
- (b) उत्तेजकता
- (c) महत्वपूर्णता
- (d) सत्यता व नवीनता

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

सत्यता व नवीनता समाचार का प्रमुख तत्व है, जो पाठक के ज्ञान वृद्धि में सहायक होता है।

57. अक्षरों अथवा शब्दों को जोड़ने के लिए प्रूफ रीडर किस चिह्न का प्रयोग करते हैं?

- (a) ()
- (b) x
- (c) :
- (d) :

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

अक्षरों अथवा शब्दों को जोड़ने के लिए प्रूफ रीडरों द्वारा () चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

58. पत्रकार मेरिस फेगस के अनुसार, समाचारों को पाठक के लिए बोधगम्य कौन बनाता है?

- (a) संपादक
- (b) संवाददाता
- (c) कंपोजर
- (d) संशोधक

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

पत्रकार मेरिस फेगस के अनुसार, समाचारों को पाठक के लिए बोधगम्य संवाददाता बनाता है, क्योंकि वह पाठकों के रुचियों को ध्यान में रखता है।

59. इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है।

- (a) संचार माध्यमों में अनेक भाषाओं का प्रयोग होता है।
- (b) विदेशों के कार्यक्रम भी भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनमें पात्र और दृश्य विदेशी हैं, केवल भाषा भारतीय है।
- (c) विदेशों में भी भारतीय कार्यक्रमों को भारतीय पात्र और कथानकों के साथ वहाँ की भाषा में प्रसारित किया जाता है।
- (d) संचार माध्यमों में एक ही भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संचार माध्यमों में अनेक भाषाओं का प्रयोग होना चाहिए। अन्य विकल्पों के कथन सही हैं।

60. संचार माध्यमों का प्रमुख प्रयोजन क्या है?

- (a) सूचना को जनसामान्य तक पहुँचाना।
- (b) सूचना को विशिष्ट वर्ग तक पहुँचाना।
- (c) सूचना को पढ़े-लिखे लोगों तक पहुँचाना।
- (d) सूचना को केवल साहित्य-प्रेमियों तक पहुँचाना।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

संचार माध्यमों का प्रमुख प्रयोजन सूचना को जनसामान्य तक पहुँचाना है, जिससे वे लाभ प्राप्त कर सकें।

61. दृश्य-श्रव्य काव्य से क्या अभिप्राय है?

- (a) जो साहित्य दिखाई दे (जैसे पुस्तकें) वह दृश्य है।
- (b) जो साहित्य सुना जा सके (जैसे उपन्यास) वह श्रव्य है।
- (c) देखने के साथ-साथ जिसे सुन भी सकें (जैसे चलचित्र) वह दृश्य-श्रव्य है।
- (d) दृश्य काव्य (जैसे नाटक), श्रव्य काव्य (जैसे कविता, कहानी)

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

दृश्य-श्रव्य काव्य से अभिप्राय है, जो देखने के साथ-साथ सुन भी सके (जैसे चलचित्र)। इसके अन्तर्गत टेलीविजन, फिल्म आदि आते हैं।

62. इनमें से जो श्रव्य संचार का माध्यम नहीं है, उसे चिह्नित कीजिये -

- (a) दूरदर्शन
- (b) टेपरिकॉर्डर
- (c) कैसेट
- (d) रेडियो

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

‘दूरदर्शन’ श्रव्य संचार का माध्यम नहीं, बल्कि दृश्य-श्रव्य संचार का माध्यम है। टेपरिकॉर्डर, कैसेट, रेडियो श्रव्य संचार के माध्यम हैं।

63. आप किस कथन को असंगत मानते हैं?

- (a) एक भाषा के साहित्य को विश्व के दूसरे क्षेत्रों में पहुँचाने में अनुवाद पुल का कार्य करता है।
- (b) अनुवाद के माध्यम से संसार का समस्त ज्ञान और साहित्य हमारे पास आ जाता है।
- (c) अनुवाद में 'अनु' का अर्थ पहले, 'वाद' का अर्थ है उसे पुनः बाद में लिख देना।
- (d) एक भाषा में व्यक्त भावों व विचारों को दूसरे भाषा में रूपान्तरित करना अनुवाद कहलाता है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

विकल्प (c) का कथन असंगत है। अनुवाद दो शब्दों के (अनु+वाद) के योग से बना है। अनु का अर्थ बाद या पुनः होता है, जबकि वाद का अर्थ कथन।

64. इनमें से कौन तत्व रेडियो विज्ञापन में नहीं होता?

- (a) चित्र
- (b) वाचन
- (c) सन्देश
- (d) संगीत

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रेडियो विज्ञापन में वाचन, सन्देश तथा संगीत शामिल होता है। इसमें चित्र का कोई स्थान नहीं है।

65. बाल-साहित्य के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?

- (a) उसकी भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए।
- (b) वह बालकों के लिए प्रेरणाप्रद होना चाहिए।
- (c) वह मनोरंजक और रोचक होना चाहिए।
- (d) वह बालकों द्वारा ही लिखा जाना चाहिए।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) में प्रस्तुत कथन सही नहीं है। अन्य विकल्प बाल-साहित्य के विषय में सही हैं।

66. इनमें से जो शब्द-संचार का माध्यम नहीं है, उसे चिह्नित कीजिये -

- (a) समाचार-पत्र
- (b) पुस्तक
- (c) पत्र-पत्रिका
- (d) रेडियो

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

संचार वह व्यवस्था है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात दूसरों तक पहुँचाता है। इसमें समाचार-पत्र, पुस्तक, पत्र-पत्रिका शामिल हैं, जबकि रेडियो श्रव्य संचार का माध्यम है।

67. संचार के दो प्रमुख रूपों मुद्रित माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के विषय में जो कथन सत्य नहीं है, उसे छाँटिए-

- (a) इन दोनों माध्यमों से संचार क्षेत्र में अभूतपूर्व गति आयी।
- (b) मुद्रित माध्यम लगभग 500 वर्ष पूर्व प्रकाश में आया, जबकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम बीसवीं शताब्दी की देन है।
- (c) वैज्ञानिकों की सूझबूझ से दोनों माध्यम अस्तित्व में आए।
- (d) ये दोनों माध्यम अन्ततः मानव जाति का विनाश करेंगे।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विकल्प (d) का कथन असत्य है। शेष सभी कथन सत्य हैं।

68. सूरदास जी को 'जीवनोत्सव' का कवि किसने कहा?

- (a) पं. रामचन्द्र शुक्ल
- (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- (c) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी
- (d) मैथिलीशरण गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

पं. रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है "वृन्दावन के उसी सुखमय जीवन के हास-परिहास के बीच गोपियों के प्रेम का उदय होता है। गोपियाँ कृष्ण के दिन-दिन खिलते हुए सौन्दर्य और मनोहर चेष्टाओं को देख मुग्ध होती चली जाती हैं और कृष्ण कौमार्य अवस्था की स्वाभाविक चपलतावश उनसे छेड़छाड़ आरम्भ करते हैं। हास-परिहास और छेड़छाड़ के साथ-साथ प्रेम व्यापार का अत्यन्त स्वाभाविक आरम्भ सूर ने दिखाया है। किसी की रूप चर्चा सुन या अकस्मात् किसी की एक झलक पाकर हाय-हाय करते हुए इस प्रेम का आरम्भ नहीं हुआ है। नित्य अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-बोलते, वन में गाय चराते देखते-देखते गोपियाँ कृष्ण में अनुरक्त होती हैं और कृष्ण गोपियों में। इस प्रेम को हम **जीवनोत्सव के रूप में** पाते हैं, सहसा उठ खड़े हुए तूफान या मानसिक विप्लव के रूप में नहीं, जिसके अनेक प्रकार के प्रतिबन्धों और विघ्न-बाधाओं को पार करने की लम्बी-चौड़ी कथा खड़ी होती है।" अतः स्पष्ट है कि पं. रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास को 'जीवनोत्सव' का कवि कहा है।

69. किसकी कविताएँ स्वाधीन भारत का इस्पाती दस्तावेज हैं?

- (a) अज्ञेय
- (b) गिरिजा कुमार माथुर
- (c) मुक्तिबोध
- (d) दिनकर

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

क्रान्तिकारी कवियों में 'निराला' के बाद स्थान प्राप्त गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविताएँ स्वाधीन भारत की इस्पाती दस्तावेज कहलाती हैं। ये प्रगतिशील/प्रयोगवादी कवि थे। इनकी प्रथम कहानी 'खलील काका' थी।

70. 'कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसी पा तुलसी की कला।'
यह प्रशंसापरक उक्ति किसने लिखी है?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त
- (b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- (c) रामचन्द्र शुक्ल
- (d) बालमुकुन्द गुप्त

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त उक्ति तुलसीदास जी की प्रशंसा में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने लिखी है।

71. 'कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।'
तुलसीदास जी के लिए यह प्रशस्ति-वचन इनमें से किसका है?

- (a) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- (b) जगदम्बा प्रसाद 'हितैषी'
- (c) नाभादास
- (d) जगन्नाथ 'रत्नाकर'

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

72. 'इतना सुनके पातसाहिजी श्री अकबरसाहिजी
आद सेर सोना नरहरदास चारन को दिया।
इनके डेढ़ सेर सोना हो गया। रास बंचना पूरन भया।
आम्खास बरखास हुआ।' इन पंक्तियों का सम्बन्ध है-

- (a) 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' से
- (b) 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' से
- (c) 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' से
- (d) 'आईने अकबरी की भाषा वचनिका' से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

खड़ी बोली में गद्य की पहली पुस्तक अकबर के समकालीन कवि 'गंग' लिखित 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' है। उपर्युक्त पंक्तियाँ इसी कृति से ली गयी हैं।

73. पालि भाषा की समय-सीमा मानी जाती है-

- (a) 1000 ई. पू. से 500 ई. तक
- (b) 500 ई. पू. से प्रथम शताब्दी ई. तक

- (c) 1000 ई. पू. से 500 ई. पू. तक
- (d) प्रथम शताब्दी ई. से 500 ई. तक

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

प्राकृत का प्रारम्भिक रूप पालि कहलाया, दूसरा रूप साहित्यिक प्राकृत तथा तीसरा रूप अपभ्रंश। यद्यपि प्राकृत भी अपने शब्द-संसार को भरने के लिए संस्कृत का आश्रय लेती रही, तथापि उसमें एक प्रकार की प्रकृति जन्य सहजता तथा सरलता छापी रही। अतः वह जनसाधारण के अतिनिर्गुण रही तथा उसका रूप निरन्तर परिवर्तित होता रहा। प्राकृत का काल-विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है—

- (क) प्रथम प्राकृत काल (पालि काल)—ईस्वी पूर्व 500 से पहली ईस्वी तक।
 - (ख) द्वितीय प्राकृत काल (साहित्यिक काल)—ईस्वी 1 से 500 ईस्वी तक।
 - (ग) अपभ्रंश काल (तृतीय प्राकृत काल)—500 ईस्वी से 1000 ईस्वी तक।
- बौद्ध काल में संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत को महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुआ और बौद्ध धर्म के अधिकांश ग्रन्थों-धम्मपद, जातकों तथा कथा साहित्य की रचना पालि नामक प्राकृत में ही हुई।

74. 'कर्म के बिना वह लूला-लँगड़ा, ज्ञान के बिना अन्धा और भक्ति के बिना हृदयविहीन क्या निष्प्राण रहता है।'—में 'वह' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- (a) धर्म
- (b) ब्रह्म
- (c) भक्ति
- (d) श्रद्धा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

प्रस्तुत गद्यांश 'लोक जागरण और हिन्दी साहित्य' से लिया गया है जिसका सम्पादन रामविलास शर्मा ने किया है। इसमें उल्लिखित है— 'धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है। कर्म के बिना वह लूला-लँगड़ा, ज्ञान के बिना अन्धा और भक्ति के बिना हृदयविहीन क्या निष्प्राण रहता है।' अतः स्पष्ट है कि इस गद्यांश में 'वह' धर्म के लिए प्रयुक्त हो रहा है।

75. निम्नलिखित में धीरोद्धत नायक कौन है?

- (a) युधिष्ठिर
- (b) दुष्यन्त
- (c) माधव
- (d) भीमसेन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार, नायक के चार भेद होते हैं-

- (1) **धीरोदात्त-** यह शोक, क्रोध आदि से अविचलित अत्यन्त गम्भीर, क्षमावान, आत्मश्लाघा न करने वाला अहंकार शून्य तथा दृढ़व्रत होता है **जैसे-**राम, युधिष्ठिर आदि।
- (2) **धीरललित-** यह बड़े कोमल स्वभाव वाला, कलाविद्, सुखान्वेषी और भोग-विलास तथा सुखद ललित क्रीड़ाओं में लगे रहने वाला नायक होता है। **जैसे-**दुष्यन्त, अहमदशाह रंगीला आदि।
- (3) **धीर प्रशान्त-** यह शान्त स्वभाव वाला, परन्तु क्षत्रिय नहीं होता। ऐसा नायक अधिकतर ब्राह्मण या वैश्य होता है **जैसे-**गौतम आदि।
- (4) **धीरोद्धत-** यह मायावी, आत्म-प्रशंसा सुनने वाला, प्रचण्ड स्वभाव, धोखेबाज और चपल अहंकार तथा दर्प से भरा रहता है **जैसे-**परशुराम, भीम, मेघनाद, रावण आदि।

76. शृंगार रस की दृष्टि से कृष्ण किस प्रकार के नायक हैं?

- (a) अनुकूल
- (b) दक्षिण
- (c) शट
- (d) धृष्ट

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

शृंगार-विचार या नायिका के प्रति नायक के दृष्टिकोण के आधार पर नायक चार प्रकार के बताये गये हैं—1. अनुकूल, 2. दक्षिण, 3. शट और 4. धृष्ट। अनुकूल नायक पत्नीव्रती होता है। परनारी को माँ-तुल्य मानता है। वह एक ही नायिका में अनुरक्त रहता है। दक्षिण नायक कई नायिकाओं का प्रणयी होता है, फिर भी वह पूर्व प्रणयिनी को नहीं भूलता। प्रधान महिषी का सबसे ज्यादा ध्यान रखता है। सभी नायिकाओं के प्रति उसका व्यवहार सरल, भद्र तथा दयावान होता है। वह एक साथ सभी को प्रसन्न रख सकता है। **जैसे-**राम 'अनुकूल' नायक हैं, एक पत्नीव्रत हैं, जबकि कृष्ण 'दक्षिण' नायक। दुष्यन्त भी दक्षिण नायक हैं। शट नायक वह है, जो छल, कपट और प्रवंचना से परिपूर्ण होता है। वह अन्य नायिकाओं से प्रेम तो अवश्य करता है, किन्तु प्रकट रूप से नहीं। वह निर्लज्ज नहीं होता। इसके विपरीत धृष्ट नायक खुले रूप में दुराचरण करता है और निर्लज्ज होता है। वह अपनी प्रधान महिषी का मन दुखाने में नहीं चूकता और उसकी प्रताड़ना की भी परवाह नहीं करता।

77. 'रज्जु' शब्द का हिन्दी में अर्थ है-

- (a) मछली
- (b) मेढ़क
- (c) रस्सी
- (d) घोड़ा

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

रज्जु: शब्द का हिन्दी में अर्थ रस्सी होता है।

78. फन्तासी के बारे में कौन-सा वक्तव्य सही नहीं है?

- (a) फन्तासी का प्रयोग यथार्थ सृष्टि के निषेध के लिए होता है।
- (b) फन्तासी का प्रयोग अतिरंजनापूर्ण वर्णन के लिए होता है।

(c) फन्तासी का प्रयोग एक समानान्तर संसार के निर्माण के लिए होता है।

(d) फन्तासी का प्रयोग सत्य निरूपण के लिए होता है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

फान्तासी में चरित्र पूर्णतः यथार्थ नहीं होते, किन्तु उनका चित्रण कुछ इस प्रकार किया जाता है कि वे यथार्थ का भ्रम पैदा करते हैं और कभी-कभी तो यथार्थ को पूरी ईमानदारी से व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। फन्तासी में लोक कल्पना का पूरा इस्तेमाल होने के कारण 'फन्तासी' लोक जीवन के विविध रंगों को उभारने में पर्याप्त सहायक होती है। अतः विकल्प (a) सही नहीं हैं। शेष विकल्प सही हैं।

79. भारतीय नारी की समस्याओं को आधार बनाकर महादेवी वर्मा ने कौन-सा ग्रन्थ लिखा है?

- (a) पथ के साथी
- (b) शृंखला की कड़ियाँ
- (c) अतीत के चलचित्र
- (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

महादेवी वर्मा ने भारतीय नारी की समस्याओं को आधार बनाकर 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक ग्रन्थ लिखा। इसमें नारी-संवेदना के बौद्धिक एवं सामाजिक पक्ष का उद्घाटन हुआ है। रूढ़िवादी समाज और पुरुष-प्रधान परम्परावादी दृष्टिकोण का इन्होंने तीव्र प्रतिवाद किया है।

80. 'त्रिवेणी' में किन तीन महान कवियों की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है?

- (a) कबीर, सूर, तुलसी
- (b) जायसी, सूर, तुलसी
- (c) पन्त, प्रसाद, निराला
- (d) केशव, बिहारी, घनानन्द

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'त्रिवेणी' में तीन महान कवियों-गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास तथा जायसी की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है। तुलसीदास उनके प्रिय कवि थे। अतः सर्वप्रथम उन्होंने 'तुलसी-ग्रन्थावली' (1923) का सम्पादन किया और उसकी भूमिका में 'रामचरितमानस' तथा तुलसी के अन्य ग्रन्थों के काव्यसौन्दर्य का विस्तरपूर्वक उद्घाटन किया।

81. खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति किससे हुई?

- (a) चित्र लिपि
- (b) कीलक्षर लिपि
- (c) अरमाइक लिपि
- (d) ब्राह्मी लिपि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ति 'अरमाइक' लिपि से हुई है। खरोष्ठी लिपि गांधारी लिपि के नाम से जानी जाती है, जो गांधारी और संस्कृत भाषा को लिपिबद्ध प्रयोग करने में आती है। इसका प्रयोग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक प्रमुख रूप से एशिया में होता रहा है। खरोष्ठी लिपि दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती थी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आरम्भ में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए चित्रों के प्रयोग किए गए, जिन्हें चित्र लिपि कहते हैं। 'ललित विस्तार' नामक ग्रन्थ में कहा गया है कि बोधिसत्व ने 64 लिपियाँ सीखी थी।
- कीलक्षर लिपि लिखने के लिए मिट्टी के छोटे-छोटे फलक प्रयोग में लाए जाते थे। गीली चिकनी मिट्टी को गूँथकर और थापकर एक फलक अथवा पट्टी का आकार दे दिया जाता था। तत्पश्चात् लिपिक इसकी नम एवं चिकनी सतह पर सरकंडे की तीली की तीखी नोक से कीलक्षर चिह्न (Cuneiform) बना देता था। बाद में उन फलकों को धूप में सुखा लिया जाता था अथवा भट्टी में पका लिया जाता था।
- सुमेरियाईयों की लिपि को कीलक्षर अथवा क्यूनीफार्म के नाम से जाना जाता था।

82. 'चूलिका' किसका भेद है-

- (a) पालि (b) प्राकृत
- (c) अपभ्रंश (d) पारसी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'प्राकृत' नाम के अन्तर्गत वैयाकरणों के अनुसार कई भाषाएँ आती हैं। सबसे प्राचीन वैयाकरण वररुचि हैं, जिन्होंने चार प्राकृतों का उल्लेख किया है—महाराष्ट्री, पेशाची, मागधी और शौरसेनी। 12वीं शती के अन्त के जैन लेखक हेमचन्द्र ने तीन और प्राकृतों का उल्लेख किया है—आर्ष, जो अन्य लोगों की अर्द्धमागधी ही है, चूलिका, पेशाचिका और अपभ्रंश। परवर्ती वैयाकरणों ने सामान्यतया हेमचन्द्र का अनुसरण किया है। वररुचि ने अपभ्रंश को एक पृथक् प्राकृत नहीं माना है और सम्भवतः यह ठीक भी है। यह वही है जिसे बहुत से काव्यशास्त्रियों ने 'देशभाषित' कहा। 'देशभाषित' का अर्थ है—देश में अथवा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा। दण्डी के काव्यादर्श से पता चलता है कि काव्य में अपभ्रंश से अभिप्राय है—चरवाहों और इस प्रकार के अन्य लोगों की भाषा। व्याकरण अथवा छन्दशास्त्र की पुस्तकों में जो कुछ भी संस्कृत से भिन्न था, अपभ्रंश कहा जाता था। प्राकृत के अन्तर्गत उन्होंने महाराष्ट्री, जो श्रेष्ठ प्राकृत है, शौरसेनी, गौड़ी और लाटी को लिया है। गौड़ी प्रत्यक्ष ही मागधी का दूसरा नाम था; लाटी से उनका क्या अभिप्राय है, यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है।

83. निबन्ध या निबन्ध-काव्य कौन नहीं है?

- (a) विनय पत्रिका (b) प्रलय की छाया
- (c) शिवाजी को पत्र (d) राम की शक्तिपूजा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

विनय पत्रिका निबन्ध-काव्य नहीं, बल्कि गीतकाव्य है। निबन्ध काव्यों की श्रेणी में जयशंकर प्रसाद की 'प्रलय की छाया', शेर सिंह का 'शस्त्र समर्पण', निराला का 'शिवाजी का पत्र' आते हैं। निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' भी निबन्ध काव्य है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

84. प्रगीत काव्य में प्रधानता होती है-

- (a) भावना और गीतात्मकता की
- (b) संगीतात्मकता की
- (c) प्रकृति चित्रण की
- (d) उपर्युक्त में से किसी की नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

प्रगीत काव्य में संगीतात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगीत में अन्तर्जगत का स्वाभाविक रागात्मक स्फुरण होता है। अतः संगीतात्मकता एक आवश्यक तत्त्व माना गया है। प्रगीत काव्य की तात्त्विक विवेचना आधुनिक युग में हुई। आलोचनाशास्त्रियों ने प्रगीत के छः मुख्य तत्त्व संगीतात्मकता, आत्माभिव्यक्ति, रागात्मक अनुभूति का समत्व, जीवन के एक अंश का चित्रण, भावाभिव्यंजना और संक्षिप्तता निर्धारित किये हैं।

85. चम्पू के दो भेद हैं-

- (a) विरुद और कपालक (b) विरुद और कुलक
- (c) विरुद और ब्रज्या (d) विरुद और करम्बक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

सामान्य तौर पर काव्य के दो भेद होते हैं—दृश्य काव्य (जिसका अभिनय किया जा सके, नाटक/रूपक इत्यादि) और श्रव्य काव्य (जिसका अभिनय न हो सके यानी जिसे पढ़कर या सुनकर आनन्द लिया जाय)। श्रव्य काव्य के तीन भेद हैं—पद्य (छन्द में रचित), गद्य (छन्द रहित) तथा चम्पू (गद्य और पद्यमय काव्य)। पद्य काव्य की दो शैलियाँ हैं—प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक या निर्बंध शैली। प्रबन्ध काव्य के तीन उपभेद—महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा एकार्थ और मुक्तक काव्य। मुक्तक काव्य के दो उपभेद—पादय तथा गेय हैं। चम्पू दृश्य नहीं, किन्तु श्रव्य ही होता है, मिश्र होने से ही दृश्य काव्य चम्पू नहीं होता है। गद्य पद्यमयी राजस्तुति को विरुद तथा अनेक भाषाओं से निर्मित काव्य को करम्बक कहते हैं।

86. कालक्रम की दृष्टि से इनमें सबसे पुराने कवि हैं-

- (a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) बिहारी (d) विद्यापति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

विद्यापति ठाकुर का जन्म 1380 ई. में ग्राम विसपी, मधुबनी, बिहार में तथा निधन 1460 ई. में हुआ था। बिहारी लाल का जन्म 1595 ई. बसुआ गोविन्दपुर, ग्वालियर में तथा निधन 1663 ई. में हुआ था। सूरदास जी का जन्म 1483 ई. तथा निधन 1573 ई. में हुआ था। तुलसीदास जी का जन्म 1532 ई. में ग्राम राजापुर जिला बाँदा (अब जिला चित्रकूट) में तथा निधन 1623 ई. में हुआ था। कालक्रम की दृष्टि से इनमें से सबसे पुराने कवि विद्यापति हैं।

87. हिन्दी आलोचना में 'जातीय' शब्द का राष्ट्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. राम विलास शर्मा
(d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'हिन्दी जाति की अवधारणा' डॉ. राम विलास शर्मा की एक मौलिक अवधारणा है। उनकी सभी स्थापनाओं में से यह स्थापना सर्वाधिक विवादग्रस्त रही है। अपनी इस स्थापना में वे जाति शब्द का प्रयोग 'नेशन' (राष्ट्र) के अर्थ में करते हैं। इस अर्थ में जाति शब्द का प्रयोग सबसे पहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया। उसके बाद कर्तिक प्रसाद व महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी किया, जिसकी चर्चा करते हुए रामविलास जी लिखते हैं, "हिन्दी में तथा भारत की अन्य भाषाओं में जाति शब्द पेशेवर बिरादरी (Caste), नस्ल (Race) और कौम (Nationality) के लिए प्रयुक्त होता रहा है।" कौम के लिए उसका प्रयोग अपेक्षाकृत नया नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'जातीय संगीत' नामक निबन्ध में प्रदेशगत जाति के संगीत की चर्चा की थी, किसी पेशेवर बिरादरी के संगीत की नहीं। श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित जनवरी, 1902 की 'सरस्वती' में कर्तिक प्रसाद के लेख का शीर्षक था 'महाराष्ट्रीय जाति का अभ्युदय'। जाति और साहित्य के सम्बन्ध में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने वर्ष 1923 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कानपुर अधिवेशन में कहा था, "जिस जाति विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको दिखाई पड़े, आप यह निश्चित समझिए कि वह जाति असम्भ्य किंवा अपूर्ण सम्भ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है उसका साहित्य भी ठीक वैसा ही होता है।" अतः स्पष्ट है कि हिन्दी आलोचना में 'जातीय' शब्द का राष्ट्रीय अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया।

88. 'रूपकों का बादशाह' किसे कहा जाता है?

- (a) तुलसीदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) परमानन्ददास

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

बच्चन सिंह अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' में लिखते हैं कि रूपकों के बादशाह गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। रूपक सादृश्यमूलक होता है पर इसमें विसादृश्य भी होता है। विसादृश्य पर सादृश्य के आरोप में कल्पना की आवश्यकता के साथ अवधारणा की जरूरत होती है। अवधारणा विसादृश्य में निहित होती है। इसके लिए मानस के अयोध्या-काण्ड का 'कैकेयि रोष तरंगिनी ठाढ़ी' और कवितावली के लंक-दाह के रूपक देखे जा सकते हैं।

89. बिहारी सतसई पर 'फिरंगे सतसई' नाम से फारसी भाषा में एक टीका लिखी गयी, जिसके टीकाकार हैं-

- (a) फिराक गोरखपुरी (b) आनन्दी लाल शर्मा
(c) अमीर खुसरो (d) मिर्जा गालिब

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

'बिहारी सतसई' पर 'फिरंगे सतसई' नामक फारसी में टीका आनन्दी लाल शर्मा ने लिखी है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

➔ सूरति मिश्र ने बिहारी सतसई पर टीका 'अमरचन्द्रिका' नाम से तथा लल्लू लाल जी ने 'लाल चन्द्रिका' नाम से लिखी।

90. 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूत।।'
कविता किस पत्र में छपी थी?

- (a) ब्राह्मण (b) हिन्दी प्रदीप
(c) आनन्द कादम्बिनी (d) नागरी नीरद

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त कविता हिन्दी प्रदीप में छपी थी। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने भी इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) अर्थात् 'हिन्दी प्रदीप' माना है।

91. 'सिवा को बखानों कि बखानों छत्रसाल को' में सिवा का अर्थ क्या है?

- (a) शिवजी (b) शिवाजी
(c) महादेव (d) बालाजी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्र ने 'भूषण' को 'कविभूषण' की उपाधि दी थी। ये कई राजाओं के आश्रय में रहे। कहा जाता है कि भूषण, शिवाजी के यहाँ कुछ दिनों तक रहकर अपने घर लौटते समय महाराज छत्रसाल के दरबार में गये। इन्हें शिवाजी का राजकवि समझकर महाराज छत्रसाल ने इनका बड़ा आदर किया और यथोचित सम्मान करने के लिये विदा करते समय इनकी पालकी को कंधा लगाया। 'भूषण' यह देखकर पालकी से कूद पड़े और उनकी प्रशंसा में 'सिवा को बखानों कि बखानों छत्रसाल को' कवित्व पढ़ा। स्पष्ट है कि यहाँ 'सिवा' का अर्थ 'शिवाजी' है।

92. 'यदि प्रेम स्वप्न है, तो श्रद्धा जागरण है' यह पंक्ति किस निबन्ध से ली गयी है?

- (a) भाव या मनोविकार (b) श्रद्धा-भक्ति
(c) कविता क्या है? (d) करुणा

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कृति 'चिन्तामणि' (निबन्ध संग्रह) के द्वितीय निबन्ध 'कविता क्या है?' से 'यदि प्रेम स्वप्न है, तो श्रद्धा जागरण है' पंक्ति उद्धृत है।

93. 'अधैर्य का कवि' किसे कहा गया है?

- (a) दिनकर (b) त्रिलोचन
(c) अज्ञेय (d) गिरिजा कुमार माथुर

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

रामधारी सिंह दिनकर को 'अधैर्य का कवि' कहा जाता है। स्वतंत्रता के पूर्व उन्हें 'विद्रोही कवि' भी कहा जाता था, किन्तु स्वतंत्रता के बाद वे 'राष्ट्रकवि' कहलाएँ।

94. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'लघु कथा' की विशेषता है?

- (a) कहानी को लघु रूप में लिखना ही लघु कथा है।
(b) लघु आकार के कारण लघु कथा उद्देश्यहीन होती है।
(c) बालकों द्वारा लिखी गई कहानी लघु कथा होती है।
(d) लघु कथा का ताना-बाना किसी एक मर्यादित बिन्दु पर केन्द्रित होता है और यह आकार में लघु होती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

अधिक तीक्ष्ण दृष्टि और सूक्ष्म मानवीय संवेदना, लघु कथा के सन्दर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है। कथ्य की गहन और सूक्ष्म चयन तथा उसकी उचित अभिव्यक्ति उसे मानवीय संवेदना से जोड़ती है और उसकी निष्पत्ति उसे अतिरिक्त महत्व दिला जाता है। लघुकथा के आकार पर लघु होना उसके विशिष्ट शिल्प विधान का अनिवार्य परिणाम है। अतः विकल्प (d) में लघु कथा की विशेषता समाहित है।

95. उपन्यास और कहानी के अन्तर को व्यक्त करने वाला जो कथन सही नहीं है, उसे छाँटिए-

- (a) उपन्यास में कथानक होता है, कहानी में वह अनिवार्य नहीं है। कहानी में चरित्र, वातावरण आदि की प्रधानता होती है।
(b) उपन्यास में जीवन के समग्र रूप का चित्रण होता है, जबकि कहानी में किसी एक अंश का।
(c) उपन्यास में अनेक स्थलों पर इतिवृत्तात्मक वर्णन मिलते हैं, जबकि कहानी में छोटे आकार के कारण ऐसे स्थल नहीं होते।
(d) उपन्यास कहानी का लघु संस्करण होता है, कहानी उपन्यास का दसवाँ भाग होती है।

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

लघु कथा से बड़ी कहानी होती है। कहानी से बड़ा उपन्यास। कहानी, उपन्यास का लघु संस्करण होती है, जो एक घटना को समेटते हुए उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वरूप को विस्तारपूर्वक कहने की चेष्टा करती है। अतः विकल्प (d) असत्य है।

96. उपन्यास और कहानी का मूल अन्तर है, उसका-

- (a) आकार-प्रकार (b) विषय निरूपण
(c) घटना का चयन (d) पात्रों की विविधता

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

उपन्यास और कहानी का मूल अन्तर उसका विषय निरूपण होता है। कहानी लघु आकार की होती है, जबकि उपन्यास काफी विस्तृत होता है। कहानी में प्रायः किसी मनोदशा या एक घटना का वर्णन होता है, जबकि उपन्यास में समग्र मानव जीवन से सम्बन्धित विविध घटनाओं का समावेश होता है।

97. अनुकरण सिद्धान्त के प्रणेता हैं -

- (a) अरस्तू (b) कॉलरिज
(c) रिचर्ड्स (d) वड्सवर्थ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

अनुकरण का सिद्धान्त (Theory of Mimesis) प्लेटो और उनके शिष्य अरस्तू का बहुचर्चित सिद्धान्त है। अरस्तू के अनुसार, कलाकार तीन प्रकार की वस्तुओं में से किसी एक का अनुकरण कर सकता है- 'जैसी वे थीं या हैं', 'जैसी वे कही या समझी जाती हैं' और 'जैसी वे होनी चाहिए'।

98. आचार्य शुक्ल का निबन्ध संग्रह 'चिन्तामणि' सर्वप्रथम किस नाम से प्रकाशित हुआ?

- (a) विचार-कौस्तुभ (b) विचार-मणि
(c) विचार-बैन (d) विचार-वीथी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मनोवैज्ञानिक एवं साहित्यिक विषयों पर बहुत से उच्च कोटि के निबन्ध लिखे हैं। ऐसे निबन्धों का एक संग्रह 'विचार-वीथी' और दूसरा 'चिन्तामणि' के नाम से प्रकाशित हुआ। शुक्ल जी जब 'विचार-वीथी' के बाद अपने निबन्ध संग्रह के नाम के लिए चिन्तित थे, तो उन्होंने पण्डित जी से नामकरण संस्कार के लिए कहा 'पूछते ही पण्डित जी चट बोल उठे-पायउ नाम चारु उर करते न खसैहों' शुक्ल जी उछल पड़े। इस 'चिन्तामणि' नाम से शुक्ल जी का चिन्तन और रागात्मिका वृत्ति दोनों का मेल तो हुआ ही, उनके श्रद्धेय कवि तुलसीदास का भी समावेश हो गया, जिनके आधार पर उन्होंने अपने सिद्धान्तों का भवन खड़ा किया। अतः स्पष्ट है कि 'चिन्तामणि' ही पूर्व नाम से 'विचार-वीथी' था।

99. 'भ्रमर गुफा' के लिए दूसरा उपयुक्त नाम है-

- (a) ब्रह्मरंध्र (b) हृद्देश
(c) नाभिक्र (d) मूलाधार

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'भ्रमर गुफा' जिसके अन्तर्गत 'हठ योग' आता है। इसका दूसरा उपयुक्त नाम ब्रह्मरंध्र भी है।

100. "साहित्य मनुष्य के अन्तर का उच्छलित आनन्द है।"

यह कथन किसका है?

- (a) आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. नगेन्द्र (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "साहित्य वस्तुतः मनुष्य का वह उच्छलित आनन्द है, जो उसके अन्तर में अँटाए नहीं अट सका था।" प्रस्तुत पंक्ति इसी का संक्षिप्त रूप है। द्विवेदी जी का कथन है- "साहित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होकर सीधे मानव जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवन्त विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।"

101. 'लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।' तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन किसका है?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल (b) नन्ददुलारे बाजपेयी

(c) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(d) ग्रियर्सन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

"भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय का अपार धैर्य लेकर आया हो। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। तुलसी में केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है, वैराग्य और गृहस्था का निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेश और अनासक्त चिन्तन का, ब्राह्मण और चाण्डाल का, पंडित और अपंडित का समन्वय है।" तुलसीदास के सम्बन्ध में यह कथन हजारी प्रसाद द्विवेदी का है।

102. हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना का शुभारम्भ.....ने किया।

- (a) भगवानदीन (b) पद्मसिंह शर्मा
(c) मिश्र बन्धु (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

तुलनात्मक मूल्यांकन आलोच्ययुगीन समीक्षा की प्रमुख प्रवृत्ति कही जा सकती है। तुलनात्मक आलोचना का आरम्भ वर्ष 1907 में पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी और सादी की तुलना द्वारा किया। वर्ष 1908-1912 तक वे 'सरस्वती' में संस्कृत और हिन्दी-कविता के बिम्ब-प्रतिबिम्ब-भाव की परीक्षा करते रहे। वर्ष 1910 में मिश्र बन्धुओं का 'हिन्दी-नवरत्न' प्रकाशित हुआ। इसमें भी तुलनात्मक आलोचना का महत्व दिया गया था। आगे चलकर तुलनात्मक आलोचना की धूम मच गयी। लाला भगवानदीन और कृष्णबिहारी मिश्र ने देव और बिहारी की विशद तुलना करते हुए एक को दूसरे से बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

103. मनोवैज्ञानिक आलोचना के मूल में है-

- (a) आध्यात्मिकता (b) सामाजिक यथार्थ
(c) निर्वैयक्तिकता (d) वैयक्तिक चिंतन

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

मनोवैज्ञानिक आलोचना के मूल में वैयक्तिक चिंतन है। मनोवैज्ञानिक आलोचना में काव्यानुभूति के विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाता है और रचना के मूल्यांकन पर कम। मनोवैज्ञानिक आलोचना के अनुसार, कविता कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यंजना तक ही सीमित हो गयी। मनोवैज्ञानिक आलोचना की प्रक्रिया व्यक्तिमानस से रचना की ओर गतिशील होती है, रचना के यथार्थ से रचनाकार की सामाजिक चेतना के सम्बन्ध की उपेक्षा करती है, इसलिए उसका व्यक्तिवादी स्वरूप इतिहास विरोधी होता है। मनोवैज्ञानिक आलोचना लेखक के व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्व देती है लेकिन फ्राई की आलोचना में रचनाकार की चेतना और उसके अभिप्रायों की चर्चा के लिए कोई स्थान नहीं है।

104. एलियट का मूर्तविधान भारतीय काव्यशास्त्र के किस तत्व से तुलनीय है?

- (a) साधारणीकरण (b) रीति
(c) विभावन-व्यापार (d) प्रतिभा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

एलियट ने अपने बहुचर्चित निबन्ध 'हेमलेट एंड हिज प्रॉब्लम्स' में 'मूर्त विधान' की व्याख्या एवं प्रतिपादन किया है। उनकी 'मूर्त विधान' की अवधारणा को भारतीय काव्यशास्त्र की 'विभावन-व्यापार' से सम्बन्धित अवधारणा के एकदम निकट माना जाता है। मूलतः यह प्रक्रिया अमूर्त के मूर्त अथवा वैयक्तिक के निर्वैयक्तिक में रूपान्तरण की प्रक्रिया है।

105. साधारणीकरण की सही व्याख्या है—

- (a) जब कोई भी पाठक किसी साधारण काव्य या साधारण नाटक का रसास्वादन करे तब यह क्रिया साधारणीकरण कहलाती है।
(b) जब कोई पाठक किसी कृति को पढ़ते समय स्वयं का साधारण ही समझें तो यह क्रिया साधारणीकरण कहलाती है।
(c) जब कोई पाठक या श्रोता किसी असाधारण व्यक्ति की तुलना या मूल्यक्रम साधारण व्यक्ति को लेकर करता है, तब उसे साधारणीकरण कहते हैं।
(d) साधारणीकरण वह व्यापार है, जिसके द्वारा काव्य सृष्टि में कविनिर्मित पात्र व्यक्ति विशेष न बनकर सामान्य बन जाते हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

किसी काव्य का श्रोता या पाठक जिन विषयों को मन में लाकर रति, करुणा, क्रोध, उत्साह इत्यादि भावों तथा सौन्दर्य, रहस्य, गांभीर्य आदि भावनाओं का अनुभव करता है, वे अकेले उसी के हृदय से सम्बन्ध रखने वाले नहीं होते; मनुष्य मात्र की भावात्मक सत्ता पर प्रभाव डालने वाले होते हैं। उसी से उक्त काव्य को एक साथ पढ़ने या सुनने वाले सहजों मनुष्य उन्हीं भावों या भावनाओं का थोड़ा बहुत अनुभव कर सकते हैं। जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता है कि वह सामान्यतः सबसे उसी भाव का आलम्बन हो सके, तब तक उसने रसोद्बोधन की पूर्ण शक्ति नहीं आती। इसी रूप में 'लाया जाना' 'साधारणीकरण' कहलाता है। यह सिद्धान्त यह घोषित करता है कि सच्चा कवि वही है, जिसे लोक हृदय की पहचान हो, जो अनेक विशेषताओं और विचित्रताओं के बीच मनुष्य जाति के सामान्य हृदय को देख सके। इसी लोक हृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस दशा है। अतः साधारणीकरण वह व्यापार है, जिसके द्वारा काव्य सृष्टि में कवि निर्मित पात्र व्यक्ति विशेष न बनकर सामान्य बन जाते हैं।

106. 'उन्नतम्ना' शब्द का सही अर्थ है—

- (a) अच्छे भावों एवं विचारों से युक्त
(b) समान भावों एवं विचारों से युक्त
(c) सामान्य भावों एवं विचारों से युक्त
(d) उच्च भावों एवं विचारों से युक्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

जो उच्च भावों एवं विचारों से युक्त होता है, उसे 'उन्नतम्ना' कहते हैं।

107. "यद्यपि मैं खुद उर्दू का बड़ा पक्षपाती हूँ, लेकिन मेरे विचार में हिन्दी को विभाषा या बोली कहना उचित नहीं।" किसका कथन है?

- (a) शिव प्रसाद सितारे हिंद (b) गार्सा द तासी
(c) जॉर्ज ग्रियर्सन (d) राजा लक्ष्मण सिंह

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

गार्सा द तासी ने संवत् 1909 के आस-पास हिन्दी और उर्दू दोनों का रहना आवश्यक समझा था और कहा भी था "यद्यपि मैं खुद उर्दू का बड़ा पक्षपाती हूँ, लेकिन मेरे विचार में हिन्दी को विभाषा या बोली कहना उचित नहीं।" वहीं गार्सा द तासी आगे चलकर मजहबी कट्टरपन की प्रेरणा से सर सैयद अहमद की भरपेट तारीफ करके हिन्दी के सम्बन्ध में फरमाते हैं— "इस वक्त हिन्दी की हैसियत भी एक बोली की-सी रह गयी है, जो हर गाँव में अलग-अलग ढंग से बोली जाती है।"

108. हिन्दी का ऐसा कौन निबन्धकार है जिसके ध्यान में लिखते समय बाण और दण्डी रहा करते थे?

- (a) रामचन्द्र शुक्ल
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) गोविन्द नारायण मिश्र
(d) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

गोविन्द नारायण मिश्र यद्यपि हिन्दी के बहुत पुराने लेखकों में थे, पर उस पुराने समय में वे अपने फुफेरे भाई पं. सदानन्द मिश्र के 'सारसुधा निधि' पत्र में कुछ सामयिक और कुछ साहित्यिक लेख ही लिखा करते थे, जो पुस्तकाकार छपकर स्थायी साहित्य में परिगणित न हो सके। इनकी लेख शैली का पता इनके सम्मेलन के भाषण और 'कवि और चित्रकार' नामक लेख से लगता है। गद्य के सम्बन्ध में इनकी धारणा प्राचीन 'गद्यकाव्य' की-सी थी। लिखते समय बाण और दण्डी इनके ध्यान में रहा करते थे। इनके गद्य को समास अनुप्रास में गुंथे 'शब्दगुच्छों का अटाला' कहा गया है।

109. “कविता मनुष्य को स्वार्थ संबंधों के संकुचित घेरे से ऊपर उठाती है”

यह कथन किसका है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) श्यामसुंदर दास (d) डॉ. नगेन्द्र

U.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ‘कविता क्या है?’ शीर्षक के अंतर्गत लिखा है कि “कविता मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडलों से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार होता है और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है।”

110. “कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।” किसने कहा है?

- (a) वर्ड्सवर्थ (b) टेनीसन
(c) शेली (d) मैथ्यू आर्नल्ड

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

मैथ्यू आर्नल्ड ने कहा है “कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।” वर्ड्सवर्थ का विचार है “कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है जिसका स्रोत शान्ति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है।” शेली के विचार से “सर्वसुखी और सर्वोत्तम मनो के सर्वोत्तम और सर्वाधिक सुखपूर्ण क्षणों का लेखा कविता है।”

111. “कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है” किसने कहा है?

- (a) निराला (b) प्रसाद
(c) पन्त (d) महादेवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

पन्त जी ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है “कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।” परिपूर्ण क्षण से उनका क्या तात्पर्य है— यह स्पष्ट नहीं होता। सम्भवतः उनका आशय भाव और भाषा की पूर्ण संगति तथा रचनाकार की तन्मयता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- छन्दों के चुनाव के विषय में पन्त जी लिखते हैं “हिन्दी का संगीत केवल मात्रिक छन्दों में ही अपना स्वाभाविक विकास तथा स्वास्थ्य की सम्पूर्णता प्राप्त कर सकता है।
- बंगला भाषा का संगीत आलाप-प्रधान होने से “बंगला के छन्द भी हिन्दी कविता के लिए सम्यक् वाहन नहीं हो सकते।”
- पन्त जी कहते हैं, “कवित छन्द मुझे ऐसा जान पड़ता है हिन्दी का औरस जात नहीं पोष्यपुत्र है, न जाने, यह हिन्दी में कैसे और कहाँ से आ गया, अक्षर मात्रिक छन्द बंगला में मिलते हैं, हिन्दी के उच्चारण संगीत की ये रक्षा नहीं कर सकते।”

112. “सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है” किसने कहा है?

- (a) वर्ड्सवर्थ (b) कीट्स
(c) कॉलरिज (d) टेनीसन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

“सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होती है।” यह कथन अंग्रेजी साहित्यकार सैमुअल टेलर कॉलरिज का है।

113. “हमारे सबसे मधुर गान वे हैं जिनमें विषादपूर्ण भाव व्यक्त किये जाते हैं।” पंक्ति किसकी है?

- (a) शेली (b) टेनीसन
(c) वर्ड्सवर्थ (d) कीट्स

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

“हमारे सबसे मधुर गान वे हैं जिनमें विषादपूर्ण भाव व्यक्त किये जाते हैं।” यह पंक्ति शेली की है।

114. आलोचना को ‘कला की सजगता’ किसने कहा है?

- (a) मिडिलटन मरे (b) वार्ड
(c) हर्बर्ट रीड (d) नारमन फोस्टर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

मिडिलटन मरे ने कहा है कि ‘कला यदि जीवन की सजगता है, तो आलोचना कला की सजगता है।’

115. ‘चिन्ता एक—है’ वाक्यांश में रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु सही शब्द है—

- (a) रोग (b) कष्ट
(c) व्याधि (d) आधि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

मानसिक पीड़ा की संज्ञा ‘आधि’ है, जबकि शारीरिक पीड़ा को ‘व्याधि’ कहते हैं। अतः चिन्ता एक मानसिक पीड़ा है। कष्ट प्रायः शारीरिक होता है, किन्तु अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। रग (नस) की व्यथा ‘रोग’ कहलाती है।

116. “इनकी-सी विशुद्ध सरस एवं शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ।”

आचार्य शुक्ल ने किस कवि के बारे में यह टिप्पणी की है?

- (a) देव (b) ठाकुर
(c) घनानन्द (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

घनानन्द की प्रशंसा करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है "इनकी-सी विशुद्ध सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता एवं माधुर्य भी अपूर्व ही है। विप्रलम्भ शृंगार ही अधिकतर उन्होंने लिखा है। ये शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं। 'प्रेम की पीर' को लेकर ही इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेममार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जबाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।"

117. प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत-यात्रा का विस्तृत और ब्यौरेवार वर्णन 'युवराज की यात्रा' शीर्षक से किसने किया है?

- (a) सत्यदेव परित्राजक (b) मौलवी महेश प्रसाद
(c) चण्डी प्रसाद सिंह (d) भगवानदीन दूबे

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

चण्डी प्रसाद सिंह द्वारा 1886 ई. में लिखित 'युवराज की यात्रा' शीर्षक से लिखा गया, जो खड़ग विलास प्रेस, बांकीपुर से प्रकाशित हुआ था। इस रचना में उन्होंने 'प्रिंस ऑफ वेल्स' की भारत-यात्रा का जीवंत रूप से चित्रण किया है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार, "इतिहास की प्रधानता इसमें जरूर है, पर सूक्ष्म ब्यौरे आधुनिक रिपोर्टाज जैसे ही दिये गये हैं। हाँ शैली में प्रभावविषयजना की ओर ध्यान कम है पर महत्वपूर्ण बात तो उस काल में इस ढंग के वृत्त की उपस्थिति ही है।"

118. हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का कवि कौन कहा जाता है?

- (a) हरिऔध (b) रामनरेश त्रिपाठी
(c) श्रीधर पाठक (d) राधाकृष्ण दास

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b&c)

1887 ई. में प्रकाशित श्रीधर पाठक की मौलिक काव्यकृति 'जगत सचाई सार' और वर्ष 1904 में छपी 'कश्मीर सुषम' में स्वच्छन्दतावादी भावानुभूति और कल्पना-रंजित दृश्यप्रसार के मधुर कवित्वपूर्ण चित्र दर्शनीय हैं। श्रीधर पाठक की 'स्वर्गीय वीणा' कविता में प्रकृति की गतिमयता परोक्ष दिव्य संगीत की ओर रहस्यमय संकेत करती है। डॉ. नगेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने श्रीधर पाठक को आधुनिक काव्यधारा में 'सच्चे स्वच्छन्तावाद के प्रवर्तक' के रूप में स्वीकार किया है। आचार्य शुक्ल ने रामनरेश त्रिपाठी मुकुटधर पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', उदयशंकर भट्ट प्रभृति कवियों को मान्यता दी और इस प्रकार की 'सच्ची नैसर्गिक स्वच्छन्दता' के लिए 'स्वच्छन्दतावाद' संज्ञा प्रदान की। चूँकि विकल्प में दो उत्तर (श्रीधर पाठक तथा रामनरेश त्रिपाठी) सही हैं, यही कारण है, कि उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी तृतीय संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। इससे पूर्व अपनी प्रारंभिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) सही माना था।

119. रोमैन्टिसिज्म' के लिए हिन्दी में स्वच्छन्दतावाद का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?

- (a) भारतेन्दु (b) महावीर प्रसाद द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (d) सुमित्रानन्दन पन्त

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

120. स्वच्छन्दतावाद की विशेषता नहीं है—

- (a) प्रकृति पर्यवेक्षण (b) प्रेम चित्रण
(c) कथा गीत प्रयोग (d) ब्रजभाषा में रचना

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

स्वच्छन्दतावादी काव्य वह काव्य है, जिसमें उस भावुकतामय जीवन की प्रधानता हो, जो कल्पना की दृष्टि से उदीप्त अथवा निर्दृष्ट हुआ हो और जिसमें स्वयं कवि की आत्मा इस कल्पना दृष्टि को सशक्त बनाती एवं निर्देश करती रहती हो।

स्वच्छन्दतावाद की विशेषता—

1. शास्त्रबहिर्भूत कल्पित देशों, मध्य युग या अतीत युग के राष्ट्रीय गौरव के आकर्षण दृश्य तथा मोहक संस्कृति का मनोहर चित्रण।
2. रंग गत सामंजस्य की अपेक्षा उत्तेजक एकांगी रंगों पर बल देना।
3. प्रकृति को व्यक्तिगत और अव्यवहृत प्रत्यक्ष अनुभूति का विषय समझना और विशेष भाव से उसके उद्धत और उद्दाम वेग वाले रूप पर बल देना।
4. रहस्यवाद और अति प्राकृत तत्व में विश्वास।
5. स्वप्नलोक, अवचेतन चित्त और आवेशावस्था की बातें।

121. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन स्वच्छन्दतावाद की विशेषता नहीं है?

- (a) बाह्य भावावेग पर बल (b) कल्पना-व्यापार का महत्व
(c) व्यक्ति-स्वातंत्र्य पर बल (d) मान्यतावादी जीवन-दृष्टि पर बल

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

स्वच्छन्दतावादी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. यह आंतरिक अनुभूतियों का काव्य होता है, फलतः इसमें भावावेग का उच्छल प्रवाह बहता है।
2. यह मूलतः आत्मप्रधान और व्यक्तिपरक होता है, अर्थात् कवि बाह्य जगत को उतना महत्व नहीं देता, जितना अपने को देता है।
3. यह सभी प्रकार की रुढ़ियों से युक्त होता है, इसलिए इसमें अभिनवत्व और अद्भुतता के तत्व निहित रहते हैं।
4. अभिव्यंजना में यह सांकेतिक और व्यंजनाप्रधान होता है, इसलिए कहीं-कहीं 'रहस्यात्मकता का पुट' भी इसमें आ जाता है।

5. इसमें कल्पना और असाधारणता का प्राचुर्य रहता है।
6. यह भावप्रधान अधिक और रूप प्रधान कम होता है। कवि की प्रवृत्ति अपने हृदय की पर्त खोलने की अधिक होती है अपनी उक्ति को सजाने संवारने की कम।

122. निम्नलिखित में से कौन 'नवगीत' के प्रसिद्ध उन्नायक कवि हैं?

- (a) वीरेन्द्र मिश्र (b) दुष्यंत कुमार
(c) भवानी प्रसाद मिश्र (d) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(a)

वर्ष 1950-55 के मध्य जिन गीतकारों के कविता संग्रह प्रकाशित हुए उनमें शिल्प की नवीनता, लोकतत्व, प्रकृति साहचर्य तथा सामाजिक मनःस्थिति का सूत्रपात हुआ। गीत का स्वभाव एक नये फैलाव, एक नये परिवेश की माँग करने लगा। वर्ष 1951-52 की काशी में आयोजित नवगीत की नौका गोष्ठी, वर्ष 1955 में वीरेन्द्र मिश्र का हालावाद के साहित्यकार सम्मेलन में नवगीत के आविर्भाव का संकेत मिलता है। मूर्धन्य नवगीतकारों में वीरेन्द्र मिश्र, धर्मवीर भारती, रवीन्द्र भ्रमर, नविकेता, देवेन्द्र शर्मा, महेन्द्र शंकर, सूर्यभानु गुप्त, कैलाश गौतम, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, शान्ति सुमन आदि के नाम हैं।

123. हिन्दी के काव्यभाषा-परक समीक्षक का नाम है-

- (a) विजयदेव नारायण साही (b) डॉ. रघुवंश
(c) नेमिचन्द्र जैन (d) रामस्वरूप चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार, काव्यभाषा वह है, जो काव्य के परम्परागत भेदक लक्षण तुक, छन्द, अलंकरण, लय, रस आदि के विलुप्त हो जाने के बाद शेष रह जाती है। यदि थोड़ी देर के लिए आधुनिक कविता की चर्चा छोड़कर प्राचीन कविता की भाषा को ही लें, जिसे प्राचीन आलोचकों ने छन्द, अलंकार, रस आदि के द्वारा समझने-समझाने की कोशिश की थी, तो क्या उस युग की कोई 'काव्य-भाषा' न थी? स्पष्ट है कि डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी छन्द, अलंकार, रस आदि को प्राचीन 'काव्य-भाषा' को समझने का शास्त्रीय उपकरण न मानकर काव्य-भाषा का वास्तविक अंग मानते हैं। इसीलिए वे कवियों की भाषा में यह कहते हुए पाये जाते हैं कि आप की कविता सचमुच 'प्रास के रजत पाश' से मुक्त हो चुकी है, अलंकारों की उपयोगिता अस्वीकार कर चुकी है और छन्दों की पायलें उतार चुकी हैं।

124. नानक दर्शन का सारतत्व है-

- (a) असा दी वार (b) रहिरास
(c) सोहिला (d) जपुजी

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

नानक ने अनेक पदों की रचना की, जो 'ग्रन्थ साहिब' में संकलित हैं। 'जपुजी' नानक दर्शन का सारतत्व है। 'असा दी वार', 'रहिरास' तथा 'सोहिला' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। नानकदेव की काव्य भाषा के तीन रूप हैं- हिन्दी, फारसी बहुल पंजाबी और पंजाबी। 'नसीहतनामा' की भाषा में खड़ी बोली का रूप व्यक्त है। नानक का अधिकांश साहित्य पंजाबी में है, किन्तु उन्होंने ब्रजभाषा की शब्दावली का भी प्रयोग किया है।

125. तुलसीदास किस दार्शनिक मत के भक्त कवि थे?

- (a) अद्वैतवाद (b) शुद्धद्वैतवाद
(c) द्वैतवाद (d) विशिष्टद्वैतवाद

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

तुलसी के काव्य का अनुशीलन करने वाले अध्येताओं ने तुलसी को विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों से जोड़ा है। यथा-पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, श्री विजयानन्द त्रिपाठी, श्री नरेन्द्र नाथ बसु, पं. रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुन्दर दास और डॉ. बड़थवाल ने तुलसी को शंकर के अद्वैतवाद के निकट, पं. जयरामदास तथा श्रीकान्त शरण ने विशिष्टद्वैतवाद के अनुकूल, पं. केशवप्रसाद मिश्र ने द्वैत सिद्धान्त के अनुरूप व पं. बलदेव प्रसाद मिश्र, डॉ. राजपति दीक्षित तथा डॉ. रामदत्त भारद्वाज आदि ने समन्वयवादी कहा है। अधिकतर विद्वानों के मत के अनुसार, तुलसीदास को अद्वैतवाद का समर्थक माना जा सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ अद्वैत वेदांत में तत्व केवल एक है-ब्रह्म। तुलसी के मत में अंशी राम ही मूलभूत तत्व हैं, जीव-जगत उसी से आविर्भूत हैं-जड़-चेतन गुणदोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।
- ☛ तुलसी ने राम को साक्षात् ब्रह्म रूप में माना है। वे कहते हैं-
**राम ब्रह्म परमारथ रूपा।
अविगत अलख अनादि अनूपा।**
- ☛ विशिष्टद्वैतवाद में तीन तत्व माने गये हैं-चित्त, अचित और ईश्वर। रामानन्द ने भी प्रकृति, जीव और राम के रूप में तीन तत्व स्वीकार किये हैं।

126. अद्वैतवाद के अनुसार—

- (a) जीव और ब्रह्म एक है।
(b) संसार सत्य है।
(c) जीव और ब्रह्म अलग-अलग हैं।
(d) ब्रह्म विशेषणयुक्त है।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

127. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिये और दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये-

सूची-I	सूची-II
(A) शुद्धद्वैतवाद	(i) बल्लभाचार्य
(B) अद्वैतवाद	(ii) शंकराचार्य
(C) विशिष्टाद्वैतवाद	(iii) रामानुजाचार्य
(D) द्वैतवाद	(iv) मध्वाचार्य

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
शुद्धद्वैतवाद	बल्लभाचार्य
अद्वैतवाद	शंकराचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	मध्वाचार्य

128. 'द्वैतवाद' किस आचार्य द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है?

- (a) निम्बार्काचार्य (b) विष्णुस्वामी
(c) रामानुजाचार्य (d) मध्वाचार्य

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

129. 'शुद्धाद्वैतवाद दर्शन' के प्रवर्तक हैं-

- (a) शंकराचार्य (b) मध्वाचार्य
(c) बल्लभाचार्य (d) विष्णु स्वामी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

130. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिये गये कूट द्वारा सही

उत्तर चुनिए-

सूची-I	सूची-II
(a) विशिष्टाद्वैत	(1) निम्बार्काचार्य
(b) द्वैत	(2) विष्णुस्वामी

- (c) शुद्धद्वैत (3) रामानुजाचार्य
(d) द्वैताद्वैत (4) मध्वाचार्य

कूट:

(A)	(B)	(C)	(D)
(a) 2	1	4	3
(b) 4	3	1	2
(c) 1	2	3	4
(d) 3	4	2	1

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

सही सुमेलन इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
विशिष्टाद्वैत	- रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	- मध्वाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	- विष्णुस्वामी
द्वैताद्वैतवाद	- निम्बार्काचार्य

131. रामानुज के श्रीसम्प्रदाय में किसकी उपासना होती थी?

- (a) शंकर (b) ब्रह्मा
(c) विष्णु (d) लक्ष्मी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

रामानुज के श्रीसम्प्रदाय में भगवान विष्णु की उपासना की जाती है। श्रीसम्प्रदाय वैष्णव धर्म के चार सम्प्रदायों में से एक है। श्रीसम्प्रदाय को रामानुज मत के नाम से भी जाना जाता है।

132. कविता के लिए खड़ी बोली के पक्ष में आन्दोलन की शुरुआत की—

- (a) प्रेमघन ने
(b) भारतेन्दु ने
(c) जगन्नाथदास रत्नाकर ने
(d) अयोध्या प्रसाद खत्री ने

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

कविता के लिए खड़ी बोली के पक्ष में आन्दोलन की शुरुआत अयोध्या प्रसाद खत्री ने की। ये हिन्दी खड़ी बोली के आरम्भिक प्रबल समर्थक थे। 1887-89 ई. में उन्होंने 'खड़ी बोली का पद्य' नामक संग्रह दो भागों में प्रस्तुत किया। 'सरस्वती' पत्रिका के मार्च, 1905 में प्रकाशित 'अयोध्या प्रसाद खत्री' शीर्षक जीवनी के लेखक पुरुषोत्तम प्रसाद ने लिखा था कि खड़ी बोली का प्रचार करने के लिए उन्होंने इतना द्रव्य खर्च किया कि राजा-महाराजा भी कम करते हैं। 1888 ई. में उन्होंने 'खड़ी बोली का आन्दोलन' नामक पुस्तिका प्रकाशित कराई।

133. भारत में सबसे पहला पश्चिमी रंगमंच की स्थापना..... में हुई है।

- (a) मुंबई (b) उज्जैन
(c) बंगाल (d) कर्नाटक

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

पारसी व्यावसायियों ने सर्वप्रथम नये रंगमंच का आयोजन किया। भाषा मिश्रित थी। इन्द्र सभा, चित्रा-बकावली, चन्द्रावली और हरिश्चन्द्र आदि अभिनय होते थे, अनुकरण था रंगमंच में शेक्सपीरियन स्टेज का; क्योंकि वहाँ भी विक्टोरियन युग की प्रेरणा ने रंगमंच में विशेष परिवर्तन कर लिया। भारतीय रंगमंच पर पिछली धारा का प्रभाव सर्वप्रथम बंगाल पर हुआ, किन्तु इन दोनों प्रभावों के बीच में दक्षिण में भारतीय रंगमंच निजी स्वरूप में अपना अस्तित्व रख सका।

134. नाटक का अभिनय रंगमंच के जिस अगले स्थान पर होता है उसका नाम क्या है?

- (a) रंगपीठ (b) रंगशीर्ष
(c) नेपथ्य (d) मत्तवारिणी

नवेदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(a)

रंगमंच में दो भाग होते हैं। पिछले भाग को रंगशीर्ष, जबकि सबसे आगे वाले भाग को रंगपीठ कहा जाता है। इन दोनों के बीच में जवनिका रहती है। अभिनय का मुख्य स्थल 'रंगपीठ' होता है।

135. रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान क्या कहलाता है?

- (a) पृष्ठमंच (b) दर्शक दीर्घा
(c) नेपथ्य (d) कलाकार दीर्घा

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

नेपथ्य, रंगमंच का वह भाग होता है जो दर्शकों की दृष्टि से ओझल रहता है अर्थात् पर्दे के पीछे का वह स्थान होता है, जहाँ अभिनेता रंगमंच पर आने से पूर्व उपयुक्त वेश-भूषा धारण करते हैं।

136. इनमें से कौन नाट्य-वृत्तियों के अन्तर्गत नहीं है?

- (a) सात्विक (b) कैशिकी
(c) आरभटी (d) भारती

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

नाट्य-वृत्तियों के अन्तर्गत सात्विक नहीं आता है। 'नाट्य' के सन्दर्भ में वृत्तियों का विशेष महत्व होता है। इन्हें नाट्य की माताएँ कहा जाता है। वृत्तियाँ चार प्रकार की होती हैं- भारती, कैशिकी, सात्वती और आरभटी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- भारती को ऋग्वेद से उत्पन्न माना गया है।
➤ सात्वती को यजुर्वेद से उत्पन्न माना गया है।

➤ कैशिकी को सामवेद से उत्पन्न माना गया है।

➤ आरभटी को अथर्ववेद से उत्पन्न माना गया है।

➤ भारती वृत्ति वाचिक होती है। इसमें अभिनय का सारा कौशल वचन-भंगिमा पर ही निर्भर होता है। इसलिए इसे शब्द-वृत्ति कहते हैं।

➤ कैशिकी वृत्ति में गीत, नृत्य तथा विलास चेष्टाओं की योजना होती है। इसमें स्त्रियों के कार्य-व्यापार भी सम्मिलित होते हैं।

➤ सात्वती वृत्ति में नायक के सत्व, शौर्य, त्याग आदि व्यापारों की योजना होती है।

➤ आरभटी वृत्ति में युद्ध, माया, इन्द्रजाल, क्रोध आदि व्यापारों की योजना होती है।

137. "नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए, रंगमंच के लिए नाटक नहीं" यह कथन किसका है?

- (a) मोहन राकेश (b) मुद्राराक्षस
(c) डॉ. रामकुमार वर्मा (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

जयशंकर प्रसाद ने कहा था "नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए, न कि रंगमंच के लिए नाटक"। रंगमंच के विकास का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि पहले कहानी, कथानक अथवा आलेख का जन्म हुआ और उसके मंचन के लिए एक उपयुक्त स्थान की जरूरत आयी।

138. 1965 में आयोजित कथा समारोह में.....को 'जेबी आलोचक' कहा गया है।

- (a) मोहन राकेश (b) धनंजय वर्मा
(c) मन्नू भण्डारी (d) राजेन्द्र यादव

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

वर्ष 1965 में आयोजित कलकत्ता कथा समारोह में धनंजय वर्मा को 'जेबी आलोचक' कहा गया है।

139. राजस्थानी परिवेश में प्रेम की निगूढ़ अभिव्यक्ति.....कहानी में हुई है।

- (a) गदल (b) मृगतृष्णा
(c) कुत्ते की दुम और शैतान (d) धूल की आँधी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

रांगेय राघव द्वारा कृति 'मेरी कहानियाँ' कहानियों का एक संग्रह है। इसमें ऊँट की करवट, कुत्ते का दुम और शैतान : नए टेक्नीकस, गदल, जाति और पेशा, तबेले का धुँधलका, देवदासी, नारी का विक्षोभ, पंच परमेश्वर, बिल और दाना, भय शीर्षक नामक कहानियाँ हैं। गदल कहानी में राजस्थानी परिवेश में प्रेम की निगूढ़ अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गई है।

140. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिये और दिये गये कूट से सही विकल्प चुनिये-

सूची-I	सूची-II
(A) आदिकाल	(i) आलम
(B) भक्तिकाल	(ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(C) रीतिकाल	(iii) अमीर खुसरो
(D) आधुनिक काल	(iv) जायसी

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
आदिकाल	अमीर खुसरो
भक्तिकाल	जायसी
रीतिकाल	आलम
आधुनिक काल	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

141. नाटक को पंचम वेद की मान्यता प्रदान की-

- (a) भरतमुनि ने (b) विश्वनाथ ने
(c) दशरथ ओझा ने (d) पाणिनी ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

नाटक को पंचम वेद की मान्यता भरतमुनि ने प्रदान किया था। नाटक के उद्भव के सम्बन्ध में भरतमुनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में एक घटना का उल्लेख किया है, जिसमें त्रेता युग में मनुष्य क्रोध, दुःख और ईर्ष्या, द्वेष आदि से पीड़ित था, तब देवराज इन्द्र ने ब्रह्मा जी से मनोरंजन के लिये क्रीडा युक्त साधन के लिये प्रार्थना किया तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर पाँचवें वेद के रूप में नाट्यशास्त्र की रचना की। आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र को अभिनय का विस्तृत-विवेचन करने वाला विश्व का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है।

142. नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का तत्व है-

- (a) अभिनेता (b) कथावस्तु
(c) रस (d) उपरोक्त सभी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

रूपकों के भेदों का विश्लेषण करते हुए आचार्य धनंजय ने कहा है- 'वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः।' यानी रूपकों को एक-दूसरे से भिन्न करने वाले तत्व हैं, बल्कि यह कि ये भेदक तत्व हैं। वस्तु को कथावस्तु या इतिहास कहा गया। नेता से नायक का अर्थ लिया गया। रस तो नाटक की वह मूलभूत चेतना ही है, जो नाटक के सभी अंगों में व्याप्त रहती है और नाटक के प्रदर्शित होने पर दर्शकों के मन में अपेक्षित प्रभाव की सृष्टि करती है। अभिनवगुप्त ने लिखा है कि रस ही नाट्य है। इस प्रकार नाटक के तत्व के रूप में वस्तु, नेता और रस की गणना संस्कृत नाट्यशास्त्र में होती रही। धनंजय जब यह कहते हैं कि नाटक की प्रकृति को देखते हुए कथावस्तु तीन प्रकार की मानी जा सकती है- सर्वश्राव्य, नियतश्राव्य और अश्राव्य, तो वे संवाद को भी वस्तु के अन्तर्गत मान लेते हैं। नाटक के तत्व हैं- कथानक, चरित्र, संवाद, देशकाल, शैली और जीवन दर्शन।

143. भारतीय नाट्यशास्त्र की दृष्टि से नाटक का मुख्य उद्देश्य है-

- (a) व्यक्तित्व का परिशोधन (b) चरित्रचित्रण
(c) दृश्यों का प्रस्तुतीकरण (d) रसास्वादन

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

आचार्य भरत ने 'लोकमंगल' तथा 'रसास्वादन' को नाटकों का मुख्य उद्देश्य माना है। इसीलिए नाटक के तत्वों में केवल तीन ही प्रमुख माने गए वस्तु, नेता और रस, जिसमें रस एक प्रमुख तत्व है।

144. स्कूल बुक सोसाइटी की स्थापना हुई थी-

- (a) 1733 में (b) 1780 में
(c) 1833 में (d) 1880 में

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अंग्रेज शासकों और मिशनों के प्रयास से बहुत-सी टेक्स्ट-बुक सोसाइटियाँ खुलीं। उनमें कलकत्ता स्कूल बुक सोसाइटी (1817 ई.), मद्रास स्कूल बुक सोसाइटी (1828 ई.), आगरा बुक सोसाइटी (1820 ई.), आगरा स्कूल बुक सोसाइटी (1833 ई.) और नार्दर्न इंडियन क्रिश्चियन बुक सोसाइटी आगरा-बनारस (1848 ई.) प्रमुख हैं। (1840 ई.) में 'ज्ञान प्रकाश' आगरा बुक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित हुआ।

145. ईसाई मिशनरियों का प्रधान केन्द्र.....में था।

- (a) इलाहाबाद (b) दिल्ली
(c) मुम्बई (d) सिरामपुर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

अंग्रेजी शासनकाल में ईसाई मिशनरियों ने धर्मप्रचार के लिए हिन्दी गद्य को अपनाया। अतः हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशन की सुदृढ़ नींव पड़ी। श्रीरामपुर (सिरामपुर) इसका प्रधान केंद्र था। डॉ. गणपति चन्द्र के कथनानुसार, “ईसाई धर्म प्रचारकों ने गद्य शैली के विकास की दृष्टि से भले ही विशेष सफलता न प्राप्त की हो, किन्तु हिन्दी गद्य को विषय-विस्तार प्रदान करने एवं गद्य लेखन के प्रयासों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया।”

146. सही आरोही क्रम चुनिए—

- प्रयोगवाद, छायावाद, नई कविता, प्रगतिवाद
- प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता
- छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता
- नई कविता, छायावाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

द्विवेदी युग के पश्चात हिन्दी साहित्य में छायावाद का विकास हुआ। छायावाद की कालावधि वर्ष 1918 से 1938 तक मानी जाती है। छायावाद के गर्भ से नवीन सामाजिक चेतना से युक्त प्रगतिवादी (प्रगतिशील) साहित्य धारा का उदय वर्ष 1936 में हुआ, जो वर्ष 1943 तक प्रभावित रहा। प्रयोगवाद की वर्ष 1943 से 1953 तक मानी जाती है, जबकि वर्ष 1953 के बाद की कविता को नई कविता की संज्ञा दी जाती है।

147. 'निबन्ध' को गद्य की कसौटी किसने माना है?

- बाबू श्यामसुन्दर दास
- महावीर प्रसाद द्विवेदी
- रामचन्द्र शुक्ल
- रामविलास शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

‘निबन्ध’ को गद्य की कसौटी रामचन्द्र शुक्ल ने माना है। ‘गद्य कवीनां निकष वदन्ति’ संस्कृत की इस उक्ति में गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। हिन्दी में निबन्ध लेखन का आगाज भारतेन्दु युग से ही माना गया है।

148. “यदि गद्य कवियों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी हैं” - यह कथन किसका है?

- रामचन्द्र शुक्ल
- महावीर प्रसाद द्विवेदी
- श्याम सुन्दर दास
- वनमाली

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

149. ‘आत्माराम’ के छद्म नाम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की आलोचना किसने की थी?

- बाबू श्यामसुन्दर दास
- बाबू बालमुकुन्द गुप्त

(c) झाबर मल शर्मा

(d) पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जब ‘सरस्वती’ (भाग 6, संख्या 11) के प्रसिद्ध ‘भाषा और व्याकरण’ शीर्षक लेख में ‘अनस्थिरता’ शब्द का प्रयोग किया, तब बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने ‘आत्माराम’ के छद्म नाम से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की आलोचना करते हुए लेखमाला निकाली जिसमें चुहलबाजी का पुट पूरा था।

150. मुद्राराक्षस द्वारा प्रणीत ‘तिलचट्टा’ नाटक में ‘तिलचट्टा’ प्रतीक है—

- यौन कुण्डाओं का
- मानव मन की पाशविक प्रवृत्तियों का
- अधिकारी वर्ग का स्वार्थपरता व क्रूरता का
- समाजव्यापी संत्रास का

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

मुद्राराक्षस द्वारा प्रणीत नाटक ‘तिलचट्टा’ में तिलचट्टा यौवन कुण्डाओं का प्रतीक है। इनके प्रसिद्ध नाटक हैं—योरस फेथफुली, मरजीवा, तेन्दुआ, प्रथम स्तुति, आलाअफसर (1979), गुफाएँ (1979), सन्तोला (1980) आदि। आलाअफसर से इन्हें ख्याति प्राप्त हुई।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- मुद्राराक्षस का मूल नाम सुभाष चन्द्र था। इनका जन्म 21 जून, 1933 को लखनऊ में तथा मृत्यु 13 जून, 2016 को हुई।
- ये हिन्दी के मशहूर उपन्यासकार, नाट्य लेखक तथा आलोचक थे।
- इन्होंने ‘अनुवार्ता’ पत्रिका तथा कलकत्ता से निकलने वाली पत्रिका ‘ज्ञानोदय’ का सम्पादन भी किया।
- दो स्वप्न-दृश्यों की कल्पना द्वारा भी काम कुण्डा एवं नैतिक वर्जनाओं को उद्घाटित किया गया है।
- ‘योरस फेथफुली’ में अधिकारी वर्ग की क्रूरता और स्वार्थपरता को उजागर किया गया है।
- ‘मरजीवा’ में वर्तमान समाज की पूरी विसंगति और उसमें जीने के लिए अभिशप्त मनुष्य की नियति को मूर्त किया गया है। इस नाटक में पुलिस की मक्कारी, नेताओं का प्रपंच, मन्त्रियों की स्वार्थपरता, नक्सलवादियों की ध्वंसकारी राजनीति तथा समाजव्यापी संत्रास, नैराश्य, द्वन्द्व, कुण्डा एवं हिंसा को दृश्यांकित किया गया है।
- ‘तेन्दुआ’ मानव की पाशविक प्रवृत्तियों का प्रतीक है। इसमें नाटककार ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि आज के सभ्य सफेदपोश और अभिजात कहे जाने वाले वर्ग में भी हिंसात्मक और पाशविक प्रवृत्तियाँ पूरी आक्रामकता के साथ जीवित हैं।

- 'आलाअफसर' रूसी नाटककार 'गोगोले' के नाटक 'इन्स्पेक्टर जनरल' का हिन्दी रूपान्तरण है। इसमें नौकरशाही के क्रूर, कुटिल रूप और नेताओं से उनकी सॉट-गॉट पर चोट की गयी है। नाटक, नौटंकी शैली में लिखा गया है।
- 'गुफाएँ' में मानव की आदिम प्रवृत्तियों-क्रूरता, भय, हिंसा, यौनवेग, जंगलीपन की स्थिति का बोध कराया गया है।
- 'सन्तोला' में नाटककार ने वर्तमान जीवन-स्थितियों के भीतर से ही नये बेहतर समाज रचना की सम्भावना की खोज का प्रयत्न किया है।

151. 'तिलचट्टा' नाटक के लेखक हैं—

- (a) मुद्राराक्षस (b) सुरेन्द्र वर्मा
(c) सत्यव्रत सिन्हा (d) मोहन राकेश

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

152. 'हिन्दी नई चाल में ढली' भारतेन्दु की यह पंक्ति किस पुस्तक से ली गई है?

- (a) भारत दुर्दशा (b) अंधेर नगरी
(c) कालचक्र (d) बादशाह दर्पण

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने 'कालचक्र' नामक ग्रन्थ में लिखा है "हिन्दी नये चाल में ढली-1873 ई." इस वर्ष के सम्बन्ध में राधा कृष्णदास ने लिखा है, "यद्यपि भारतेन्दु जी ने 1864 ई. से हिन्दी गद्य-पद्य को लिखना प्रारम्भ किया था और 1868 ई. में 'कविवचनसुधा' का उदय हुआ, परन्तु इसे स्वयं भारतेन्दु जी हिन्दी के उदय का समय नहीं मानते। वह 'मैगजीन' के उदय (1873 ई.) से हिन्दी का पुनर्जन्म मानते हैं।"

153. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेहूँ और गुलाब' में गुलाब किसका प्रतीक है?

- (a) सुगन्ध (b) कला और संस्कृति
(c) राजतन्त्र (d) पूंजीवाद

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'गेहूँ और गुलाब' में गेहूँ को आर्थिक और राजनीतिक प्रगति का प्रतीक माना है तथा गुलाब को सांस्कृतिक प्रगति का। इसमें लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि राजनीतिक और आर्थिक प्रगति सदा एकांगी रहेगी और उसे पूर्ण बनाने के लिए सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकता होगी। मानव संस्कृति के विकास के लिए साहित्यकारों

एवं कलाकारों की भूमिका गुलाब की भूमिका है और अपना इसका महत्व है। भावपूर्ण शैली में लिखित यह 'प्रतीकात्मक निबन्ध' अत्यन्त ही प्रभावपूर्ण और आकर्षक है। अतः स्पष्ट है कि यहाँ गुलाब, कला और संस्कृति का प्रतीक है।

154. हिन्दी काव्य में.....मांसलवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं।

- (a) रामेश्वर शुक्ल अंचल
(b) हरिवंशराय बच्चन
(c) सुमित्रानन्दन पन्त
(d) जयशंकर प्रसाद

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

हिन्दी काव्य में रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' मांसलवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनकी रचनाओं में मांसल प्रणय की आवेशमयी अभिव्यक्ति मिलती है। इसलिए इनकी कविताओं में कोमल भावों की अनुभूति भी आवेशमयी और ओजपूर्ण हो उठी है। 'अंचल' के काव्य में छायावादी प्रणय के व्यापक और उदान्त रूप की कोई छाया नहीं दिखायी देती। वे प्रणय के उस छोर पर खड़े हैं, जो शारीरिक और वासना से आक्रांत है।

155. भक्तिकाल में गृहस्थ जीवन का जैसा सुन्दर चित्रण सूरदास में मिलता है, वैसा ही आधुनिक काल के किस कवि में यह मिलता है?

- (a) हरिऔध (b) जगन्नाथ दास रत्नाकर
(c) निराला (d) मैथिलीशरण गुप्त

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

मैथिलीशरण गुप्त की महत्ता इस बात में है कि व्यापक आलोचकीय अनिच्छा के बावजूद वे आधुनिक काल के एक बड़े कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के पीछे कई कारण बताये जाते हैं। जैसे-सीधी सरल भाषा, पौराणिक कथानकों का चुनाव, गृहस्थ जीवन की महिमा का आख्यान, व्यापक हिन्दू नैतिक मूल्यों का समर्थन और राष्ट्रीय भाव-धारा की अभिव्यक्ति।

156. धनिया और झुनिया प्रेमचन्द के किस उपन्यास के पात्र हैं?

- (a) गबन (b) गोदान
(c) कर्मभूमि (d) प्रेमाश्रम

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' में होरी, धनिया, झुनिया, गोबर, हीरा, सोभा और रूपा आदि पात्र एक परिवार के ही हैं। भोली, दुलारी, झिगुरी साहू, दातादीन, मंगरू साहू, पटेश्वरी, मातादीन, वगैरह भी आस-पास के लोग हैं। शहर के राय साहब, मेहता, खन्ना, तनखा, मिर्जा, मालती आदि पात्र भी हैं।

157. रामचन्द्र वर्मा प्रसिद्ध हैं—

- (a) कवि के रूप में (b) आलोचक के रूप में
(c) भाषाविद् के रूप में (d) कोशकार के रूप में

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

आचार्य रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिन्दी कोश का उपयोग पिछले 50 वर्षों से किया जा रहा है। वे एक हिन्दी के कोशकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी दर्जनों शब्दकोष कृतियाँ आज उपलब्ध हैं।

158. अब तक निम्नलिखित में से किस साहित्यकार की जन्म शताब्दी नहीं मनाई गई है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (d) जयशंकर प्रसाद

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

प्रश्नकाल में रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की जन्म शताब्दी नहीं मनायी गयी थी, लेकिन वर्ष 2013 में उज्जैन में उनकी जन्म शताब्दी मनायी गयी। अतः वर्तमान में उपर्युक्त सभी की जन्म शताब्दी मनायी गयी है।

159. 'आर्य समाज' के संस्थापक हैं—

- (a) स्वामी विवेकानन्द (b) महात्मा गाँधी
(c) केशवचन्द्र सेन (d) दयानन्द सरस्वती

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

आर्य समाज की स्थापना दयानन्द सरस्वती द्वारा अप्रैल, 1875 में बम्बई (अब मुम्बई) में किया गया था। इनका वास्तविक नाम 'मूलशंकर' था। आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुनः स्थापना करना था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- दयानन्द सरस्वती मूल रूप से गुजरात के रहने वाले थे। इन्हें वैदिक परम्परा में पूर्ण विश्वास था जिससे प्रभावित होकर इन्होंने 'वेदों की ओर चलो' (Back to the Vedas) का नारा दिया।
- 1863 ई. में झूठे धर्मों का खण्डन करने के लिए "पाखण्ड खण्डनी पताका" लहरायी।
- 1877 ई. में आर्य समाज लाहौर की स्थापना की थी।
- उनका उद्देश्य धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से भारत की एकता पर बल देना था।
- उन्होंने मानव कर्म पर बल दिया और कहा "मानव भाग्य का खिलौना नहीं, अपितु अपने भाग्य का निर्माता है।"
- उनके सभी विचार उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित हैं।
- दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक संस्थाएँ उनके द्वारा 1886 ई. में प्रारम्भ की गयी।
- वर्ष 1902 में हरिद्वार में उनके द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की गयी, जहाँ वैदिक रीति से शिक्षा प्रदान की जाती थी।

160. 'सत्यार्थ प्रकाश' के लेखक का नाम क्या है?

- (a) स्वामी दयानन्द (b) स्वामी श्रद्धानन्द
(c) स्वामी विवेकानन्द (d) केशवचन्द्र सेन

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

161. खड़ी बोली को प्रधानता देने में सर्वाधिक योगदान रहा—

- (a) ब्रह्म समाज (b) प्रार्थना समाज
(c) थियोसोफिकल सोसाइटी (d) आर्य समाज

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'आर्य समाज' के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अहिन्दी-भाषी होने पर भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में प्रकाशित कर उसको 'आर्य भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित किया। उपर्युक्त सभी संस्थानों में खड़ी बोली को प्रधानता देने में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का था।

162. हिन्दी को आर्य भाषा का दर्जा देने वाले हैं—

- (a) दयानन्द सरस्वती (b) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(c) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (d) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

163. 'वियोगी हरि' का वास्तविक नाम क्या है?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) हरि प्रसाद द्विवेदी
(c) लल्लन प्रसाद व्यास (d) सुदामा प्रसाद

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार 'वियोगी हरि' का जन्म 1896 ई. में छतरपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इनका वास्तविक नाम 'हरि प्रसाद द्विवेदी' था। ये आधुनिक ब्रज भाषा के प्रमुख कवि, हिन्दी के सफल गद्यकार एवं गाँधीवादी तथा समाजसेवी सन्त थे। इनकी सबसे महत्वपूर्ण कृति 'वीर सतसई' थी, जिसके लिए इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वियोगी हरि ने 'हरिजन सेवक संघ' का सम्पादन किया था तथा बाद में इसके अध्यक्ष भी रहे।
- इन्होंने वर्ष 1925 में पुरुषोत्तम दास टण्डन के साथ मिलकर प्रयाग में 'हिन्दी विद्यापीठ' की स्थापना की थी।
- वियोगी हरि की महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में लिखी गयी पुस्तक 'श्रद्धा के कण' है।

☛ वियोगी हरि की प्रमुख रचनाएँ हैं—साहित्य विहार (1922), छद्मवैगिनी नाटिका (1922), ब्रज माधुरी सार (1923), कवि कीर्तन (1923), सूरदास की विनयपत्रिका (1924), अन्तर्नाद (1926), भावना (1928), प्रार्थना (1929), वीर सतसई (1927), विश्वधर्म (1930), योगी अरविन्द की दिव्यवाणी, छत्रसाल ग्रन्थावली, मन्दिर प्रवेश, प्रबुद्ध यामुन अथवा यामुनार्च्य चरित (1929), अनुरागवाटिका, मेवाड़ केशरी, चरखा स्तोत्र, मेरा जीवन प्रवाह, तरंगिणी, चरखे की गूँज, प्रेम शतक, प्रेम पथिक, प्रेमांजलि, प्रेम परिषद इत्यादि।

164. वियोगी हरि का वास्तविक नाम क्या था?

- (a) हरिहर प्रसाद (b) हरि प्रसाद
(c) राम प्रसाद (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

165. 'वियोगी हरि' जी का पूर्ण नाम था—

- (a) श्री राम प्रसाद द्विवेदी
(b) श्री हरिहर प्रसाद द्विवेदी
(c) श्री हरि प्रसाद द्विवेदी
(d) श्री गिरधर द्विवेदी

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

166. इनमें से कौन-सा कवि सतसईकार है?

- (a) केशवदास (b) पद्माकर
(c) सियारामशरण गुप्त (d) वियोगी हरि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

167. किस कवि की 'सतसई' पर हिन्दी का प्रसिद्ध मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया?

- (a) बिहारी (b) मतिराम
(c) दुलारेलाल भार्गव (d) वियोगी हरि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

168. सतसई, काव्य-परम्परा को आगे बढ़ाने वालों में कौन हैं?

- (a) गया प्रसाद शुक्ल 'रत्नेही'
(b) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(c) वियोगी हरि
(d) अनूप शर्मा

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

सतसई काव्य-परम्परा को आगे बढ़ाने वाले वियोगी हरि हैं। वियोगी हरि ने 'वीर सतसई' नामक ग्रन्थ की रचना की। सतसई मुक्तक काव्य की एक विशिष्ट विधा है। इसके अन्तर्गत कविगण 700 या उससे अधिक दोहे लिखकर एक ग्रन्थ के रूप में संकलित करते हैं। 'सतसई' शब्द 'सत' और 'सई' से बना है, 'सत' का अर्थ सात और सई का अर्थ 'सौ' है। इस प्रकार सतसई काव्य वह काव्य है जिसमें सात सौ छन्द होते हैं।

169. 'कलाधर' उपनाम से कविता लिखते थे—

- (a) भगवती चरण वर्मा (b) जयशंकर प्रसाद
(c) मैथिलीशरण गुप्त (d) माखनलाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

जयशंकर प्रसाद पहले ब्रजभाषा में 'कलाधर' उपनाम से कविता लिखा करते थे। ये कविताएँ 'चित्राधार' (1918) में संकलित हैं। इनके भाव, भाषा शैली आदि पर रीतिकालीन काव्य-बोध की स्पष्ट छाप है। 'प्रेमपथिक' में रीतिकालीन काव्य-बोध देखा जा सकता है। 'प्रेमपथिक' पहले ब्रजभाषा में लिखा गया। वह श्रीधर पाठक के एकान्तवासी योगी की छाया से मुक्त नहीं है। बाद में उन्होंने बहुत कुछ इसी को परिवर्तित, परिवर्धित रूप में खड़ी बोली में प्रस्तुत किया। 'कानन-कुसुम' खड़ी बोली का उनका पहला काव्य-संग्रह है।

170. 'कलाधर' किस कवि का आरम्भिक उपनाम है?

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) रामकुमार वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) निराला

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

171. 'कलाधर'.....कवि का आरम्भिक उपनाम है।

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त (b) रामकुमार वर्मा
(c) जयशंकर प्रसाद (d) निराला

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

172. 'कलाधर' उपनाम से रचना करने वाले का नाम है—

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त
- (b) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
- (c) महादेवी वर्मा
- (d) जयशंकर प्रसाद

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

173. 'त्रिशूल' उपनाम किसका है?

- (a) सुमित्रानन्दन पन्त
- (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (c) रामनरेश त्रिपाठी
- (d) गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

गया प्रसाद शुक्ल का उपनाम 'त्रिशूल' एवं 'सनेही' था। शृंगार आदि परंपरागत विषयों पर जहाँ ये 'सनेही' उपनाम से लिखते थे, वही राष्ट्रीय भावनाओं की कविता को इन्होंने 'त्रिशूल' उपनाम से लिखा है। ये उर्दू के भी अधिकारी विद्वान थे और हिन्दी के साथ-साथ उर्दू में भी अच्छी कविता करते थे। हिन्दी में इन्होंने प्राचीन और नवीन दोनों शैलियों की कविता लिखी है। खड़ी बोली में कवित और सवैया छन्दों का प्रयोग करने में ये बड़े माहिर थे। ये 'सुकवि' नामक काव्य पत्रिका के सम्पादक भी थे। कृष्ण-क्रंदन, प्रेम पचीसी, राष्ट्रीय-वीणा, त्रिशूल-तरंग, करुणा-कादंबिनी आदि इनकी मुख्य काव्य रचनाएँ हैं।

174. 'ब्रजकोकिल' के नाम से प्रसिद्ध कवि -

- (a) हरिऔध
- (b) सत्यनारायण कविरत्न
- (c) श्रीधर पाठक
- (d) रत्नाकर

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

ब्रजकोकिल के नाम से प्रसिद्ध कवि पंडित सत्यनारायण कविरत्न हैं। बनारसीदास चतुर्वेदी ने सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी 'कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी' नामक शीर्षक से वर्ष 1926 में लिखी। यह हिन्दी की एक बहुप्रशंसित कृति है। इसमें कविरत्न के सीधे-साधे जीवन वृत्त को लेखक ने बड़े आत्मीय भाव से प्रस्तुत किया है। 'कविरत्न' जी की कविताओं का एक संग्रह 'हृदयतरंग' नाम से प्रकाशित हुआ है। 'भ्रमरदूत' में राष्ट्रीय भावना की सशक्त व्यंजना हुई है। लॉर्ड मैकाले की प्रसिद्ध रचना 'होरेशस' का भी इन्होंने बहुत अच्छा अनुवाद किया है।

175. 'एक भारतीय आत्मा' किस कवि का उपनाम था?

- (a) सोहनलाल द्विवेदी
- (b) रामचरित उपाध्याय
- (c) मैथिलीशरण गुप्त
- (d) माखनलाल चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिन्दी रचनाकार थे। इनकी रचनाओं में देश के प्रति गंभीर प्रेम और देश-कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग की उत्कट भावना दिखायी देती है। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक इनकी प्रसिद्ध कविता है। ये 'कर्मवीर' राष्ट्रीय दैनिक के सम्पादक थे। इन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इनका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' है। इनका परिवार राधावल्लभ सम्प्रदाय का अनुयायी था।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वर्ष 1913 में माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा' पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया। वर्ष 1919 में जबलपुर से 'कर्मवीर' का प्रकाशन किया।
- चतुर्वेदी जी ने वर्ष 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी की गिरफ्तारी के बाद 'प्रताप' का सम्पादकीय कार्यभार संभाला। वर्ष 1927 में भरतपुर में सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष बने और वर्ष 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्यभार संभाला।
- चतुर्वेदी जी की रचनाओं को प्रकाशन की दृष्टि से इस क्रम में रखा जा सकता है— कृष्णार्जुन युद्ध (1918), हिमकिरीटिनी (1941), साहित्य देवता (1942), हिमतरंगिनी (1949), माता (1952)। युगचरण, समर्पण और वेणु लो गूँजे धरा आदि उनकी कहानियों का संग्रह 'अमीर इरादे', 'गरीब इरादे' नाम से छपा है।
- हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा इन्हें वर्ष 1955 में अपनी कविता-संग्रह 'हिमतरंगिनी' के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।
- हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्राप्त करने वाले ये प्रथम व्यक्ति थे।

176. हिन्दी के किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' नाम से अभिहित किया गया है?

- (a) मैथिलीशरण गुप्त
- (b) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (c) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- (d) माखनलाल चतुर्वेदी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

177. 'एक भारतीय आत्मा' निम्न में से किस कवि का उपनाम था?

- (a) नागार्जुन
- (b) माखनलाल चतुर्वेदी
- (c) सुमित्रानन्दन पन्त
- (d) इनमें से किसी का भी नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

178. इनमें से किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से जाना जाता है?

- (a) माखनलाल चतुर्वेदी
- (b) बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'
- (c) मैथिलीशरण गुप्त
- (d) श्रीधर पाठक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

179. राष्ट्रीय काव्य धारा के किस कवि को 'एक भारतीय आत्मा' कहकर सम्बोधित किया गया?

- (a) माखनलाल चतुर्वेदी
- (b) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- (c) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
- (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

180. 'पुष्प की अभिलाषा' नामक प्रसिद्ध कविता किसने लिखी है?

- (a) माखनलाल चतुर्वेदी
- (b) राम नरेश त्रिपाठी
- (c) रत्नाकर
- (d) नवीन

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

181. रामानन्द ने किस पुस्तक में अपनी पूरी गुरु परम्परा का उल्लेख किया है—

- (a) आनन्दभाष्य
- (b) पंचस्तवी
- (c) सहस्रगीति
- (d) रामार्चन पद्धति

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

श्री रामार्चन पद्धति में रामानन्द जी ने अपनी पूरी गुरु परम्परा दी है। उनके अनुसार, रामानुजाचार्य जी रामानन्द से 14 पीढ़ी ऊपर थे। रामानुजाचार्य के मतावलम्बी होने पर भी अपनी उपासना पद्धति का उन्होंने विशेष रूप रखा। उन्होंने उपासना के लिए बैकुंठ के 'विष्णु' का स्वरूप न लेकर लोक में लीला विस्तार करने वाले उनके अवतार 'राम' का आश्रय लिया।

182. तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति हेतु लिखा गया ग्रन्थ है—

- (a) रामलला नहछू
- (b) बरवै रामायण
- (c) हनुमान बाहुक
- (d) विनयपत्रिका

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

तुलसीदास द्वारा शारीरिक पीड़ा से मुक्ति हेतु हनुमान बाहुक ग्रन्थ लिखा गया है। हनुमान बाहुक की रचना सन्त प्रवर गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी दाहिनी बाहु में हुई असह्य पीड़ा के निवारण के लिये की थी। इसमें श्रीमरुति महिमा का चिन्तन तथा उनसे सर्व अंगों में होने वाली पीड़ा की निवृत्ति की प्रार्थना है।

183. तुलसीदास ने कौन-सी रचना कलिकाल से मुक्ति पाने हेतु लिखी?

- (a) कवितावली
- (b) विनयपत्रिका
- (c) रामाज्ञा प्रश्न
- (d) हनुमान बाहुक

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपनी कृति 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में लिखा है कि वेणीमाधवदास ने 'विनयपत्रिका' (विनयावली) का रचनाकाल सं. 1639 के लगभग दिया है। उसमें लिखा है कि कलियुग से सताए जाने पर तुलसीदास ने अपने कष्ट के निवारणार्थ इस ग्रन्थ की रचना की। ग्रन्थ में यह तो अवश्य ज्ञात होता है कि तुलसी ने अपनी दारुण व्यथा प्रकट करने के लिए यह ग्रन्थ लिखा, पर रचनाकाल का निर्णय अन्तर्साक्ष्य से नहीं होता। रचना इतनी प्रौढ़ है कि वह हनुमान बाहुक के समय लिखी हुई ज्ञात होती है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'तुलसी ग्रन्थावली' के दूसरे खण्ड में 'विनयपत्रिका' की पद संख्या 279 दी गई है। 'विनयपत्रिका' के प्रारम्भ में गणेश, सूर्य, शिव, पार्वती आदि की स्तुति की गई है। इसकी रचना गीति-काव्य के रूप में है। इस रचना में शान्त रस का प्रयोग हुआ है। 'हनुमान बाहुक' तुलसीदास की अंतिम रचना है। आधुनिक शब्दावली में इसे मृत्युपीड़ा की चीख कहा जा सकता है। गोस्वामी जी की मृत्यु बाहुपीड़ा में ही हुई थी। इस पीड़ा के निवारण हेतु उन्होंने 'हनुमान बाहुक' की रचना की थी।

184. तुलसीदास-रचित 'विनयपत्रिका' में पदों की कुल संख्या है -

- (a) 269
- (b) 272
- (c) 279
- (d) 289

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

185. अमीर खुसरो किस नाम से जाने जाते थे?

- (a) तूतिए हिन्द (b) तोता-ए-हिन्द
(c) सितारे हिन्द (d) सरहिन्द

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

अमीर खुसरो का पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था। इनके पिता का नाम सैफुद्दीन था। इनका जन्म 1523 ई. में एटा (उ.प्र.) के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था। वर्तमान में पटियाली कासगंज जनपद में स्थित है। ये सूफी सम्प्रदाय के साधक तथा सन्त हजरत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। हजरत औलिया इन्हें 'तुर्क-ए-अल्लाह' कहकर पुकारते थे। खुसरो को हिन्दी खड़ी बोली का पहला लोकप्रिय कवि माना जाता है। ये मुख्य रूप से फारसी कवि थे। इन्हें 'तूतिए हिन्द' की उपाधि दी गयी। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में विकल्प (a) को सही माना है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- अमीर खुसरो की प्रमुख रचनाएँ हैं—ताज-उल-फतह, तुगलकनामा, शारीन-ओ खुसरो, लैला-ओ मजनूँ आदि।
- फारसी काव्य शैली 'सबक-ए-हिन्दी' अथवा हिन्दुस्तानी शैली के जन्मदाता अमीर खुसरो थे।
- अमीर खुसरो ने दिल्ली के सात सुल्तानों का शासनकाल देखा था।

186. अमीर खुसरो का पूरा नाम है—

- (a) अब्दुल रईस खुसरो (b) अब्दुल खालिक खुसरो
(c) अब्दुल फजल खुसरो (d) अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

187. "मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी में पूछो, जिससे कि मैं कुछ अद्भुत बातें बता सकूँ।" यह किसका कथन है?

- (a) अमीर खुसरो (b) कण्डपा
(c) मौलवी करीम (d) इनमें से कोई नहीं

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

अमीर खुसरो ने कहा है, " मैं हिन्दुस्तान की तूती हूँ, अगर तुम वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो, तो हिन्दवी (हिन्दी) में पूछो : मैं तुम्हें हिन्दवी में अनुपम बातें बता सकूँगा।" मनसदी किरानुस्सादैन में भी हिन्दवी के संबंध में इसी प्रकार की उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण इनके उद्गार उपलब्ध हैं।

188. "पुस्तक जल्हण हृथ्य दै, चलि गज्जन नृप काज" में जल्हण को कौन-सी पुस्तक देने का उल्लेख है?

- (a) वीसलदेव रासो (b) हम्मीर रासो
(c) पृथ्वीराज रासो (d) विजयपाल रासो

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

प्रस्तुत उक्ति में जल्हण को 'पृथ्वीराज रासो' देने का उल्लेख है। यह वर्णन उस समय का है, जिस समय पृथ्वीराज को मुहम्मद गोरी बन्दी बनाकर अपने देश ले जा रहा था, उस समय चन्दबरदाई महाराज के साथ गया था तथा अपने पुत्र जल्ल को 'पृथ्वीराज रासो' सौंप गया था। कहा जाता है कि जल्ल ने चन्द के अधूरे महाकाव्य को पूरा किया था।

189. 'नीमा' किस कवि की माता का नाम था?

- (a) रहीमदास (b) सूरदास
(c) कबीरदास (d) मलूकदास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कहा जाता है कि कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था, जिसे उसने वाराणसी के समीप 'लहरतारा' तालाब के पास फेंक दिया था। वहाँ से गुजरने वाले जुलाहा दम्पति 'नीरू-नीमा' ने बालक के रूप में विद्यमान सत्पुरुष को अपने घर लाकर पालन-पोषण किया। वैसे कबीर ने अपने माता-पिता का कहीं भी उल्लेख नहीं किया, किन्तु जाति 'जुलाहा' एवं 'बनारस' का रहने वाला बताया है। जनश्रुतियों में प्रसिद्ध है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई था। उनकी संतान के रूप में पुत्र कमाल और पुत्री कमाली का उल्लेख मिलता है। कबीरदास की मृत्यु मगहर में हुई थी। इन्हीं के नाम पर उ.प्र. सरकार ने वर्ष 1997 में सन्त कबीर नगर के नाम से एक नये जनपद का गठन किया है। जिसका मुख्यालय खलीलाबाद (मगहर से लगभग 7 किमी. पश्चिम में) है। खोज रिपोर्टों, सन्दर्भ-ग्रन्थों पुस्तकालयों आदि विवरणों के अनुसार उनके विरचित तिरसठ (63) ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है, जिनमें प्रमुख हैं—अगाध मंगल, अनुराग सागर, अमरमूल, अक्षरखण्ड की रमैनी, अक्षरभेद की रमैनी, उग्रगीता, कबीर की बानी, कबीर गोरख की गोष्ठी, कबीर की साखी, बीजक, ब्रह्म निरूपण, मुहम्मदबोध, रेखता, विचारमाला, विवेकसागर, शब्दावली, हंसमुक्तावली और ज्ञान सागर इत्यादि। बीजक जिसमें साखी, सबद, रमैनी शामिल हैं, इनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

190. कबीरदास की मृत्यु कहाँ हुई?

- (a) काशी (b) मगहर
(c) बनारस (d) इलाहाबाद

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

191. सिकन्दर लोदी ने किसके कहने पर कबीरदास को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबाया था?

- (a) गुलाम हसनैन (b) मुहम्मद शाह
(c) शेख तकी (d) शेख फिदा हुसैन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

कबीरदास, सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में लिखा है कि वैरागियों की परम्परा में रामानन्द जी का मानिकपुर के शेख तकी पीर के साथ वाद-विवाद होना माना जाता है। ये शेख तकी दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के समय में थे। कुछ लोगों का मत है कि ये सिकन्दर लोदी के पीर (गुरु) थे और उन्हीं के कहने से उसने कबीर साहब को जंजीर से बाँधकर गंगा में डुबाया था। कबीर के शिष्य धर्मदास ने भी इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है—

साह सिकन्दर जल में बोरे, बहुरि अग्नि परजारे।

मैमत हाथी आनि झुकाये, सिंहरूप दिखराये।

निरगुन कथैं, अमयपद गावैं जीवन को समझाये।

काजी पण्डित सबै हराए, पार कोउ नहि पाये।।

शेख तकी और कबीर के संवाद प्रसिद्ध ही हैं। उससे सिद्ध होता है कि रामानन्द जी दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। 'कबीर परिचय' में अनन्तदास ने कबीर के व्यक्तित्व और जीवनी से सम्बन्धित कुछ तथ्यों का उल्लेख स्पष्ट शब्दों में किया है। उनके अनुसार, वे जन्म से जुलाहे थे, उनका निवास स्थान काशी था, उनके गुरु रामानन्द थे, सिकन्दर लोदी ने उन्हें अनेक प्रकार से यातना दी तथा उन्होंने 120 वर्ष का पवित्र जीवन पाया।

192. कबीर किस शासक के समकालीन थे?

- (a) हुमायूँ (b) अकबर
(c) सिकन्दर लोदी (d) बहादुरशाह जफर

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

193. कबीरदास दिल्ली सल्तनत के शासकों में किसके समकालीन थे?

- (a) इल्तुतमिश
(b) बहलोल लोदी
(c) सिकन्दर लोदी
(d) अलाउद्दीन खिलजी

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

194. "सन् नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरंभ बैन कवि कहा" में नौ सै सत्ताइस का ईसवी सन् क्या होगा?

- (a) 1525 ई. (b) 1550 ई.
(c) 1540 ई. (d) 1520 ई.

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

"सन् नौ सै सत्ताइस अहा। कथा आरंभ बैन कवि कहा" में नौ सै सत्ताइस का ईसवी सन् 1520 होगा। पद्मावत का यह प्रारम्भिक वचन कवि ने 927 हिजरी सन् 1520 ईसवी के लगभग में कहे थे।

195. 'कवित कष्टयो दोहा कष्टयो, तुलै न छप्पय छंद।

बिरच्यो यहै बिचारि कै, यह बखै रस कंद॥' यह काव्यपंक्तियाँ किसकी हैं?

- (a) तुलसीदास
(b) रहीम
(c) त्रिलोचन शास्त्री
(d) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त काव्यपंक्तियाँ रहीम की हैं। यह बरवै-नायिका भेद से लिया गया है।

196. स्थापना (Assertion) (A) : अनुभव की प्रमाणिकता दलित और स्त्री लेखन की मूल शर्त है।

कारण (Reason) (R) : क्योंकि साहित्यकार वर्ग चेतना से प्रतिबद्ध होता है।

उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में सही उत्तर चुनिए

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं।
(b) (A) गलत (R) सही है।
(c) (A) सही (R) गलत है।
(d) (A) तथा (R) दोनों गलत हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

अनुभव की प्रमाणिकता दलित और स्त्री लेखक की मूल शर्त है। लेकिन साहित्यकार वर्ग किसी विचारधारा विशेष से प्रतिबद्ध नहीं होता है। अतः (A) सही (R) गलत है।

197. स्थापना (Assertion) (A) : पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद को बढ़ावा दिया।

कारण (Reason) (R) : उसी कारण साहित्य में विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी।

उपर्युक्त वक्तव्यों के आधार पर नीचे दिये गये विकल्पों में सही उत्तर चुनिए

- (a) (A) सही (R) गलत है।
 (b) (A) गलत (R) सही है।
 (c) (A) और (R) दोनों सही हैं
 (d) (A) तथा (R) दोनों गलत हैं।

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद को बढ़ावा दिया, उसी कारण साहित्य में विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी। अतः (A) और (R) दोनों सही हैं।

198. 'नारी-विमर्श' पर लिखने वाली पहली लेखिका हैं—

- (a) महादेवी वर्मा (b) बंग महिला
 (c) शिवानी (d) सुभद्रा कुमारी चौहान

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'नारी-विमर्श' पर लेखन की शुरुआत का श्रेय बंग महिला (वास्तविक नाम-राजेन्द्रबाला घोष) को जाता है। ये हिन्दी नवजागरण की पहली छापामार लेखिका थीं। वे 'बंग महिला' के छद्मनाम से लिखती थीं। ये मिर्जापुर के एक प्रतिष्ठित बंगाली महाशय राम प्रसन्न घोष की पुत्री और पूर्णचन्द्र की धर्मपत्नी थीं। मिर्जापुर में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के सम्पर्क में आने के बाद ये हिन्दी लिखने लगीं। 'दुलाई वाली' कहानी इनकी मौलिक कहानी है। इस कहानी को हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी होने का श्रेय दिया जाता है। यह वर्ष 1907 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई।

199. बंग महिला का असली नाम क्या था?

- (a) मामूनी (b) राजेन्द्रबाला घोष
 (c) विद्यावती (d) रामेश्वरी देवी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

200. 'फरिश्ते निकले' की मुख्य पात्र है—

- (a) चम्पा बहू (b) बेला बहू
 (c) नरगिस बहू (d) चमेली बहू

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित उपन्यास 'फरिश्ते निकले' एक तरह से यौन हिंसा की शिकार ग्रामीण स्त्रियों की कहानियों का कोलैज है। उपन्यास में दो मुख्य पात्र हैं—बेला बहू और उजाला। ये दोनों स्त्रियाँ चाहती तो प्रेम हैं, पर उन्हें प्रेम नहीं मिलता; यौन प्रताड़ना मिलती है। यह कितनी दुःखदायी बात है कि प्रेम चाहने वाली स्त्री को समाज यौन हिंसा का पुरस्कार देता है। कही ईसुरी फाग, चाक, मैत्रेयी, बेतवा बहली रही, चिह्नार, अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा के प्रमुख उपन्यास हैं।

201. "घूरे क लता बीनै, कनातन क डोल बाँधै" जैसा शीर्षक किस लेखक ने दिया था?

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (b) प्रताप नारायण मिश्र
 (c) बालकृष्ण भट्ट (d) बदरीनारायण चौधरी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

"घूरे क लता बीनै, कनातन क डोल बाँधै", "समझदार की मौत है", "बात", "मनोयोग", "वृद्ध" तथा "भौं" जैसे शीर्षकों से प्रताप नारायण मिश्र जी लिखते थे, जिससे इनके विषयों की अनेकरूपता के बारे में पता चलता है।

202. कीरति भनिति भूति भलि सोई।

सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

—तुलसीदास की इस पंक्ति में कौन-सा काव्य प्रयोजन स्पष्ट है?

- (a) यश की प्राप्ति (b) स्वान्तः सुखाय
 (c) लोकमंगल (d) धनार्जन

P.G.T. परीक्षा, 2005, 2010

उत्तर—(c)

कवि के रूप में तुलसीदास ने यद्यपि काव्य प्रयोजन में 'स्वान्तः सुखाय' की चर्चा की है, किन्तु उनकी दृष्टि से 'लोकहित' या 'लोकमंगल' काव्य का मुख्य प्रयोजन है। इसीलिए उन्होंने काव्य को 'सुरसरि' के समान सबका कल्याण करने वाला कहा है। प्रस्तुत पंक्ति का यही निहितार्थ है।

203. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' यह किसने कहा?

- (a) ध्रुवस्वामिनी (b) देवसेना
 (c) कार्नेलिया (d) मधुलिका

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

प्रस्तुत पद्यांश जयशंकर प्रसाद कृति 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है जिसमें भारत देश के विषय में कहा जा रहा है। कहने वाली यूनानी शासक सेल्युकस की पुत्री कार्नेलिया है, जो मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त से प्रेम करती है और उसका विवाह चन्द्रगुप्त से हो जाता है। भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक वैभव से प्रसन्न होकर कार्नेलिया भारत को अपना देश मानने लगती है। देश-प्रेम के इस गीत में प्रसाद ने एक विदेशिनी के माध्यम से भारत भूमि की प्रशंसा की है।

204. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत 'प्रसाद' जी की किस कृति में है?

- (a) झरना (b) लहर
(c) ध्रुवस्वामिनी (d) चन्द्रगुप्त

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

205. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' नामक गीत प्रसाद के किस नाटक का है?

- (a) स्कन्दगुप्त (b) अजातशत्रु
(c) चन्द्रगुप्त (d) ध्रुवस्वामिनी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

206. जयशंकर प्रसाद के किस नाटक में कार्नेलिया विदेशी पात्र है?

- (a) स्कन्दगुप्त (b) चन्द्रगुप्त
(c) विशाख (d) अजातशत्रु

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

207. निम्नलिखित में से एक कथन गलत है -

- (a) 'कामायनी' प्रसाद द्वारा लिखा गया महाकाव्य है।
(b) 'आँसू' प्रसाद द्वारा रचित खण्डकाव्य है।
(c) 'काव्यकला तथा अन्य निबन्ध' प्रसाद द्वारा रचित निबन्ध संग्रह है।
(d) 'इरावती' प्रसाद द्वारा लिखी गयी कहानी है।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'इरावती' जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया उपन्यास है, न कि कहानी। काल कलवित होने के कारण वे इस रचना को पूर्ण न कर सके। अन्य कथन सत्य है।

208. "वे पूरवीपन की परवाह न करके अपने बैसवारे की ग्राम्य कहावतें और शब्द भी बोझड़क रख दिया करते थे" शुक्लजी की इन पंक्तियों का सम्बन्ध किससे है?

- (a) भारवेन्दु (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) प्रेमघन (d) प्रताप नारायण मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त पंक्तियों के सम्बन्ध में शुक्ल जी प्रताप नारायण मिश्र के बारे में कहते हैं। इन्होंने भी उर्दू के उन्हीं शब्दों को लिया है, जिनका चलन हिन्दी में पूर्व काल से था। इनकी भाषा में विशेष सजीवता और बोल-चाल का चलतापन है, इनमें विनोद-प्रियता अधिक है, इसी विनोद-प्रियता के कारण ये पूर्वीपन की परवाह न करके बैसवारे की ग्रामीण कहावतों और शब्दों का प्रयोग निःसंकोच करते थे।

209. "आठ मास बीते, जजमान ।

अब तौ करौ दच्छिना दान ॥"

पंक्तियों का सम्बन्ध किस सम्पादक से है?

- (a) भारवेन्दु (b) प्रताप नारायण मिश्र
(c) बालकृष्ण भट्ट (d) प्रेमघन

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रताप नारायण मिश्र ने 'हरिगंगा' गीत के माध्यम से उस समय लिखा और 'ब्राह्मण' में छापा था, जब अनेक ग्राहकों ने 'ब्राह्मण' का शुल्क नहीं भेजा था। इसी तरह उन्होंने विज्ञापन में लिखा था—
"दाता जजमान! प्यारे पाठक! अनुग्राहक ग्राहक!
चार महीने हो चुके 'ब्राह्मण' की सुधि लेवा!"

210. "मोहिका हँसेसि कि कोहरहि" किसने किससे कहा है?

- (a) केशवदास ने अकबर से
(b) तुलसीदास ने अकबर से
(c) जायसी ने शेरशाह से
(d) सूरदास ने वल्लभाचार्य से

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त पंक्ति जायसी ने शेरशाह से कहा है। एक बार जायसी शेरशाह के दरबार में गये, तो बादशाह ने इनका मुँह देखकर हँस दिया। जायसी ने शान्त भाव से पूछा—मोहिका हँसेसि कि कोहरहि? अर्थात् तू मुझ पर हँसा या उस कुम्हार पर, इस पर शेरशाह ने लज्जित होकर क्षमा माँगी।

211. "भक्ति आन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है"। यह कथन किसका है?

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
(d) डॉ. भगीरथ मिश्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

"भक्ति आन्दोलन भारतीय चिन्ताधारा का स्वाभाविक विकास है"। यह कथन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का है।

212. “मैं पुनि निज गुरु सुन सुनी कथा सो सूकर खेत”—यह कथन किस कवि का है?

- (a) तुलसीदास (b) कबीरदास
(c) नाभादास (d) सूरदास

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त कथन कवि तुलसीदास जी का है। लाला सीताराम, गौरीशंकर द्विवेदी एवं अन्य विद्वानों ने गोस्वामी जी की इस उक्ति को प्रमाणिक मानते हुए सूकर खेत का अभिप्राय ‘सोरों’ माना है। आचार्य शुक्ल का अभिमत है कि ‘सूकर खेत’ को ‘सोरों’ समझ लिया गया। ‘सूकरछेत्र’ गोंडा जिले में सरयू के किनारे एक पवित्र तीर्थ है, जहाँ आस-पास के कई जिलों के लोग स्नान करने जाते हैं और मेला लगता है। सूकरछेत्र मध्यकाल में तथा उसके पश्चात् तीर्थ रूप से मान्य रहा है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण की कथा सर्वप्रथम सूकरछेत्र में ही सुनी थी।

213. “जब हम प्रीति, उदारता और भलमनसाहत का बरताव करते हैं तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे घृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना ही उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।” यह कथन किस निबन्ध से लिया गया है?

- (a) घृणा (b) प्रीत और लोभ
(c) ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से (d) मित्रता

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

प्रस्तुत गद्यांश रामधारी सिंह ‘दिनकर’ के निबन्ध ‘ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से’ लिया गया है।

214. “साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है”। इस पंक्ति के सही लेखक हैं—

- (a) महावीर प्रसाद द्विवेदी (b) गुलाब राय
(c) रामचन्द्र शुक्ल (d) प्रेमचन्द

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

“साहित्य जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है”। इस पंक्ति के लेखक रामचन्द्र शुक्ल हैं। यह पंक्ति ‘हिन्दी शब्द सागर’ की भूमिका के रूप में लिखी गयी है।

215. ‘भक्तन को कहा सीकरी सों काम/आवत जात पन्हैया टूटी विसरि गये हरिनाम’ ये किसकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं?

- (a) कुम्भनदास (b) नन्ददास
(c) चतुर्भुजदास (d) कृष्णदास

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

कुम्भनदास अष्टछाप के एक कवि हैं। किंवदन्ती है कि एक बार अकबर ने इन्हें फतेहपुर सीकरी बुलाया था। सम्राट की भेजी हुई सवारी पर न जाकर ये पैदल ही गये और जब सम्राट ने इनका कुछ गायन सुनने की इच्छा प्रकट की, तो इन्होंने उपर्युक्त पंक्तियाँ सुनायी। इस पर अकबर ने प्रसन्न होकर कुछ मांगने को कहा, तो उन्होंने सबसे पहले यह इच्छा प्रकट की कि भविष्य में मुझे ‘सीकरी’ न बुलाया जाय।

216. ‘भक्तन को कहा सीकरी सों काम’ यह अभिकथन किसका है?

- (a) सन्त कबीरदास (b) सन्त रैदास
(c) कुम्भनदास (d) मलूकदास

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

217. दिनकर की कौन-सी काव्य कृति भीष्म पितामह एवं धर्मराज के संवाद के रूप में रचित है?

- (a) रश्मिरथी (b) कुरुक्षेत्र
(c) उर्वशी (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

‘कुरुक्षेत्र’ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित विचारात्मक काव्य है। इसमें भीष्म पितामह तथा धर्मराज युधिष्ठिर के संवाद हैं। इस रचना में महाभारत (कुरुक्षेत्र) के भीष्म नरसंहार के पश्चात् युधिष्ठिर कहते हैं कि यदि अपने अहंकार और अपमान के प्रतिशोध में आकर हम युद्ध में लिप्त न होते, तो नरसंहार बचाया जा सकता था, पर जब वे उस पश्चाताप की अभिव्यक्ति शर-शय्या पर पड़े नीति-निपुण भीष्म पितामह से करते हैं, तो उनका उत्तर होता है कि अकीर्ति और अन्याय के विरुद्ध युद्ध करना ही धर्म है। क्षमा भी उसे ही शोभा देती है, जिसमें शक्ति हो।

218. बिहारी के दोहों की चमत्कारपूर्ण तुलना संस्कृत, उर्दू फारसी के कवियों से किसने की?

- (a) हजारी प्रसाद द्विवेदी (b) रामचन्द्र शुक्ल
(c) पद्मसिंह शर्मा (d) महावीर प्रसाद द्विवेदी

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

पद्मसिंह शर्मा को तुलनात्मक समीक्षा का प्रवर्तक माना जाता है। इन्होंने जुलाई, 1907 में ‘सरस्वती’ में बिहारी और फारसी कवि सादी की तुलना की थी। इसके बाद ‘संस्कृत और हिन्दी कविता में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव’, ‘भिन्न-भिन्न भाषाओं में समानार्थी पद्य’ आदि निबन्धों में वे तुलनात्मक आलोचना के कार्य को आगे बढ़ाते रहे। इसी क्रम में उनकी प्रसिद्ध कृति ‘बिहारी सतसई : तुलनात्मक अध्ययन’ प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने बिहारी की तुलना संस्कृत, प्राकृत, उर्दू तथा हिन्दी के कवियों से की।

219. भाषा की समास शक्ति और कल्पना की समाहार शक्ति का सर्वाधिक उपयोग निम्नलिखित में से किस कवि ने किया है?

- (a) बिहारी (b) चिन्तामणि
(c) भूषण (d) घनानन्द

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

आचार्य शुक्ल जी की शब्दावली का प्रयोग करते हुए हम कह सकते हैं कि सफल मुक्तककार के लिए जो कल्पना की समाहार-शक्ति और भाषा की समास-शक्ति वांछनीय है, वह बिहारी में पूरी तौर से वर्तमान थी। बिहारी की यह विशेषता है कि वे कल्पना के सहारे बहुत से चित्रों को एक साथ उपस्थित कर भाषा की समास शक्ति के कारण दोहे जैसे छन्द में उन्हें गुम्फित कर देते हैं।

220. कामायनी को 'मानवता के रसात्मक इतिहास' की संज्ञा प्रदान की है—

- (a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(b) नलिनविलोचन शर्मा
(c) नन्ददुलारे बाजपेयी
(d) रामनाथ लाल शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिवादी कवियों के साहित्य को दरबारी कवियों का साहित्य मानकर उसमें जो अच्छा लिखा गया था, उसकी दाद दी और जो अंश चमत्कारी था, उसकी कड़ी आलोचना की। इसी दृष्टि से उन्होंने अपने युग के नये साहित्य छायावाद का नीर-क्षीर विवेक किया। उसकी अच्छाइयों की तारीफ की, 'कामायनी' को 'मानवता का रसात्मक इतिहास' भी कहा और दूसरी ओर उसकी 'मधुचर्या' की निन्दा भी की।

221. "शहर में कोई किसी की जाति नहीं पूछता शहर के लोगों की जाति का क्या ठिकाना है, लेकिन गाँव में तो बिना जाति के आपका पानी नहीं चल सकता।" यह कथन किस रचना से लिया गया है?

- (a) परती परिकथा
(b) रतिनाथ की चाची
(c) बलचनमा
(d) मैला आँचल

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

प्रस्तुत कथन फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल से लिया गया है। इस कथन का सन्दर्भ डॉ. प्रशान्त के जाति के बारे में लोगों की जिज्ञासा है।

222. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा था?

- (a) भूषण (b) केशव
(c) देव (d) पद्माकर

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

केशव की कविता में अलंकरण, चमत्कार प्रदर्शन एवं पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रमुखता है। उनकी कविता में क्लिष्टता आ गयी है, जिसके कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है। उनकी कविता की क्लिष्टता के विषय में यह उक्ति प्रायः कही जाती है—

"कवि को देन न चहै विदाई।

पूछे केशव की कविताई॥"

आचार्य शुक्ल ने उनके सम्बन्ध में कहा है—'केशव को कवि हृदय नहीं मिला था। उनमें वह सहृदयता और भावुकता न थी, जो एक कवि में होनी चाहिए। कवि कर्म में सफलता के लिए भाषा पर जैसा अधिकार चाहिए, वैसा उन्हें प्राप्त न था। केशव केवल उक्ति वैचित्र्य एवं शब्द क्रीडा के प्रेमी थे।"

223. रीतिकालीन कवियों में 'कठिन काव्य का प्रेत' किसे कहा जाता है?

- (a) बिहारीलाल (b) भूषण
(c) घनानन्द (d) केशवदास

K.V.S. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

224. 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता है?

- (a) सेनापति को (b) चिन्तामणि को
(c) मतिराम को (d) केशवदास को

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

225. चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता मूल रूप से—

- (a) जीवनवृत्त है (b) कथा-कहानी है
(c) आत्मकथा है (d) निबन्ध है

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता का मूल रूप जीवनवृत्त है। कृष्ण भक्त कवियों की जीवनवृत्त की चर्चा जिन ग्रन्थों में है, उनके नाम हैं—

कृति	लेखक
1. चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
3. भक्तमाल	नाभादास
4. भाव प्रकाश	हरिराय
5. बल्लभ दिग्विजय	यदुनाथ

226. 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' के लेखक कौन हैं?

- (a) सूरदास (b) नन्ददास
(c) नामदास (d) गोकुलनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

227. 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' किस लेखक की रचना है?

- (a) नामदास (b) वल्लभाचार्य
(c) नन्ददास (d) गोस्वामी गोकुलनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

228. गोकुलनाथ की रचना का नाम है—

- (a) चौरासी वैष्णवन की वार्ता (b) भक्तमाल
(c) छिताईवार्ता (d) गोसाईं चरित

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

229. "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" के लेखक हैं—

- (a) नाभादास (b) नन्ददास
(c) गोकुलदास (d) सूरदास

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

230. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में किस युग के लेखकों की दृष्टि व्याकरण के नियमों पर अच्छी तरह नहीं जमी थी?

- (a) द्विवेदी युग (b) भारतेन्दु युग

(c) छायावाद युग

(d) प्रगतिवाद युग

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, भारतेन्दु और उनके सहयोगी लेखकों की दृष्टि व्याकरण के नियमों पर अच्छी तरह जमी नहीं थी। यह कथन भारतेन्दु युग से सम्बन्धित है। इस सन्दर्भ में कहा जाता है कि वे 'इच्छा किया', 'आशा किया' ऐसे प्रयोग भी कर जाते थे और वाक्य विन्यास की सफाई पर उतना ध्यान नहीं रखते थे, पर उनकी भाषा हिन्दी ही होती थी, मुहावरे के खिलाफ प्रायः नहीं जाती थी।

231. निम्नलिखित में से कौन मार्क्सवादी विचारधारा का आलोचक नहीं है?

- (a) नामवर सिंह
(b) शिवदान सिंह चौहान
(c) रामविलास शर्मा
(d) विजयदेव नारायण साही

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

विजयदेव नारायण साही मार्क्सवादी विचारधारा के आलोचक नहीं हैं। मार्क्सवादी आलोचक में सर्वप्रथम शिवदान सिंह चौहान का नाम आता है। इनके प्रमुख आलोचना ग्रन्थ हैं—प्रगतिवाद (1946), साहित्य की परख (1948), आलोचना के मान (1958), साहित्य की समस्याएँ और साहित्यानुशीलन। सर्वविख्यात मार्क्सवादी आलोचक रामविलास शर्मा हैं। उनके आलोचना ग्रन्थ हैं—प्रगति और परम्परा (1948), प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ (1954), आस्था और सौन्दर्य (1956) आदि। इस वर्ग के अन्य उल्लेखनीय आलोचक हैं—अमृतराय (नयी समीक्षा), नामवर सिंह (इतिहास और आलोचना, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ)।

232. विख्यात मार्क्सवादी समीक्षक हैं—

- (a) रामविलास शर्मा
(b) शान्तिप्रिय द्विवेदी
(c) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(d) रामस्वरूप चतुर्वेदी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

233. संकलन-त्रय में कौन नहीं है?

- (a) स्थान (b) काल
(c) वस्तु (d) कथानक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में नाटक के कथा-विन्यास एवं औचित्य के सम्बन्ध में तीन प्रकार के ऐक्य विधान का प्रावधान है। ये हैं—स्थान, काल तथा कार्य के ऐक्य। इसे परिभाषिक शब्दावली में 'संकलन-त्रय' कहते हैं। जो घटनाएँ नाटक में दिखाई जाएँ, उनका सम्बन्ध एक ही स्थान से हो, यह नहीं कि एक दृश्य आगरा का हो, तो दूसरा कोलकाता का। इसी को स्थान की एकता (Unity of Place) कहते हैं। जो घटना नाटक में दिखाई जाए वह वास्तव में उतने समय की हो जितना कि नाटक के अभिनय में लगता हो, इसे समय की एकता (Unity of Time) कहते हैं। कथावस्तु एक रस हो। इस एकरसता को निभाने के लिए प्रासंगिक कथाओं को स्थान नहीं मिलता। इस नियम को कार्य एकता (Unity of Action) कहते हैं। कार्य की एकता हर समय के नाटकों में एक आवश्यक तत्व रहता है, किन्तु एकता का मतलब शुष्क वैविध्यहीन एकता नहीं। समय की एकता, स्थान की एकता तथा कार्य की एकता का उल्लेख अरस्तू ने त्रासदी का विवेचन करते हुए लिखा है "त्रासदी को यथासंभव सूर्य की एक परिक्रमा या इससे कुछ अधिक समय तक सीमित रखने का प्रयत्न किया जाता है।" यहीं से कालान्विति का तत्व सामने आया। स्थान की एकता का तत्व कालान्विति से ही उद्भूत माना जाता है। कार्यान्विति के सम्बन्ध में अरस्तू का कथन है "कथानक को, जो कार्यव्यापार की अनुकृति होता है—एक तथा सर्वांगपूर्ण कार्य का अनुकरण करना चाहिए और उसमें अंगों का संगठन ऐसा होना चाहिए कि यदि एक अंग को भी अपनी जगह से इधर-उधर करें, तो सर्वांग ही छिन्न-भिन्न और अस्त-व्यस्त हो जाए।" कथानक का आरम्भ, मध्य और अन्त एक सूत्र में बंधा होना चाहिए। अतः स्पष्ट है कि संकलन-त्रय में कथानक शामिल नहीं है। इस प्रश्न के विकल्प (c) में वस्तु दिया गया है, जबकि वास्तविक रूप से कथावस्तु होना चाहिए।

234. संकलन-त्रय के अंतर्गत कौन-सा तत्व सम्मिलित नहीं है?

- (a) स्थान (b) काल
(c) घटना (d) गीत

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

235. विज्ञापन के सम्बन्ध में क्या नैतिक है?

- (a) शर्त को छोटे टाइप में छापना
(b) भ्रामक चित्र बनाना
(c) अधूरी जानकारी
(d) सही जानकारी

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

विज्ञापन के सम्बन्ध में 'सही जानकारी' देना ही नैतिकता है। जिससे उपभोक्ता उत्पादों का सही क्रय कर सकें। अन्य विकल्पों में अनैतिकता प्रदर्शित है।

236. निम्नलिखित में से कौन-सा फीचर लेखन का उद्देश्य नहीं है?

- (a) मनोरंजन (b) शून्य पठनीयता
(c) ज्ञानवर्धन (d) मार्गदर्शन

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

फीचर लेखन का उद्देश्य मनोरंजन, ज्ञानवर्धन तथा मार्गदर्शन होता है। शून्य पठनीयता इसमें शामिल नहीं है।

237. रेडियो आलेख लिखते समय किस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए?

- (a) बातचीत (b) है
(c) था (d) निम्नलिखित

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(d)

रेडियो संचार का श्रव्य माध्यम है। अतः रेडियो आलेख लिखते समय 'निम्नलिखित' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह मुद्रण तकनीक में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। शेष रेडियो आलेख लिखते समय प्रयोग करना चाहिए।

238. टी.वी चैनलों पर कॉमर्शियल ब्रेक से तात्पर्य है—

- (a) फ्रेशन्यूज (b) विज्ञापन
(c) हाई न्यूज (d) सॉफ्ट न्यूज

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(b)

विभिन्न कम्पनियाँ अपने उत्पाद के विक्रय हेतु श्रव्य-दृश्य संचार के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुँचाती हैं, जो कार्यक्रमों के प्रसारण के मध्य में कुछ समय के लिए प्रसारित की जाती है।

239. साहित्य—

1. शिवेतर रक्षते है।
2. सामान्य के लिए है।
3. सबका हित चाहता है।
4. का कार्य बिम्ब का निर्माण करना है।

- (a) 1,2 (b) 1,2,3
(c) 1,3,4 (d) 3,4

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

काव्य निर्माण में शत-प्रतिशत कल्पना शक्ति का विशेष हाथ रहता है और यही कल्पना अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका बिम्ब निर्माण के क्षेत्र में अदा करती है। उसका महत्वपूर्ण कार्य बिम्ब प्रस्तुत करना है। शेष कथन साहित्य के बारे में सत्य हैं।

संस्कृत साहित्य

□ संस्कृत साहित्य के प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ

1. 'कादम्बरी' किसकी रचना है?

- (a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भवभूति (d) भास

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

कादम्बरी बाणभट्ट की प्रौढ़ और अंतिम कृति है। यह उनकी ही नहीं समस्त संस्कृत वाङ्मय की अनूठी गद्य-रचना है। कादम्बरी की कथा एक जन्म से सम्बद्ध न होकर चन्द्रापीड तथा वैष्ण्वायन के तीन जन्मों से सम्बद्ध है। कादम्बरी की कथा दो भागों में विभक्त है— पूर्व भाग तथा उत्तर भाग। पूर्व भाग बाणभट्ट की रचना है और उत्तर भाग उनके पुत्र भूषणभट्ट (पुत्रिभट्ट) की।

2. 'कुवलयानन्द' के रचयिता हैं—

- (a) भामह (b) दण्डी
(c) पण्डितराज जगन्नाथ (d) अप्पय दीक्षित

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

अप्पय दीक्षित (1525-1598 ई.) संस्कृत के काव्यशास्त्री, दार्शनिक और व्याख्याकार थे। 'अद्वैतवादी' होते हुए भी 'शैवमत' की ओर इनका विशेष झुकाव था। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी, जिनमें 'कुवलयानन्द', 'चित्रमीमांसा' इत्यादि प्रसिद्ध हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ सुप्रसिद्ध वैयाकरण भट्टोजि दीक्षित इनके शिष्य थे। इनके करीब 400 ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।
- ☛ शंकरानुसारी अद्वैत वेदान्त का प्रतिपादन करने के अलावा इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र' के शैव भाष्य पर भी शिव की 'मणिदीपिका' नामक 'शैव सम्प्रदायानुसारी' टीका लिखी थी।

3. 'दशरूपकम्' के लेखक हैं—

- (a) धनिक (b) धनंजय
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'दशरूपकम्' नाट्य के दशरूपों के लक्षण और उनकी विशेषताओं का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ है। अनुष्टुप श्लोकों द्वारा प्रणीत दसवीं शती का यह ग्रन्थ धनंजय की कृति है। दशरूपकम् में कुल चार अध्याय हैं जिन्हें 'आलोक' कहा गया है।

4. 'ध्वन्यालोक' किस तत्व से सम्बन्धित ग्रन्थ है?

- (a) अलंकार (b) रस
(c) नाट्य (d) ध्वनि

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

आनन्दवर्धनाचार्य ने विषमबाणलीला, अर्जुनचरित, देवी शतक, तत्त्वालोक तथा ध्वन्यालोक नामक पाँच ग्रन्थों की रचना की। इस ग्रन्थ में काव्य के आत्मभूत 'ध्वनितत्व' का प्रतिपादन किया गया है। ग्रन्थ में चार 'उद्योत' हैं। ध्वन्यालोक में तीन भाग हैं—मूलकारिका, वृत्ति तथा उदाहरण। प्रथम दो भागों के निर्माता स्वयं आनन्दवर्धनाचार्य ही हैं, जबकि 'उदाहरण' में कुछ उदाहरण उन्होंने स्वयं अपने बनाए, जो 'विषमबाणलीला' और 'अर्जुनचरित' आदि ग्रन्थों से दिए हैं, किन्तु अधिकांश उदाहरण अन्य प्रसिद्ध कवियों के ग्रन्थों से दिए हैं। ध्वन्यालोक 'ध्वनितत्व' से सम्बन्धित है।

5. आनन्दवर्धन का सम्बन्ध इनमें से किससे है?

- (a) अलंकार सम्प्रदाय (b) रीति सम्प्रदाय
(c) वक्रोक्ति सम्प्रदाय (d) ध्वनि सम्प्रदाय

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रवर्तक	सम्प्रदाय
आनन्द वर्धन	ध्वनि सम्प्रदाय
भामह	अलंकार सम्प्रदाय
वामन	रीति सम्प्रदाय
कुन्तक	वक्रोक्ति सम्प्रदाय
क्षेमेन्द्र	औचित्य सम्प्रदाय

6. 'मुद्राराक्षस' नाटक का रचयिता कौन है?

- (a) कुमारदास (b) शूद्रक
(c) अमर सिंह (d) विशाखदत्त

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

मुद्राराक्षस संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है, जिसके रचयिता विशाखदत्त हैं। इस नाटक में इतिहास और राजनीति का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ के चरित्र-चित्रण में विशेष निपुणता का प्रदर्शन मिलता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ☛ विशाखदत्त की दो और रचनाएँ हैं—देवीचन्द्रगुप्त तथा अभिसरिकावंचितक।
- ☛ विशाखदत्त के इस नाटक में चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य सम्बन्धी ख्यात वृत्त के आधार पर चाणक्य की राजनीतिक सफलताओं का अपूर्व विश्लेषण मिलता है।

- इस महत्वपूर्ण नाटक को हिन्दी में सर्वप्रथम अनूदित करने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को प्राप्त है।
- मुद्राराक्षस में साहित्य और राजनीति के तत्वों का मणि-कांचन-योग मिलता है, जिसका कारण सम्भवतः यह है कि विशाखदत्त का जन्म राजकुल में हुआ था। वे सामन्त बटेश्वरदत्त के पौत्र और महाराज पृथु के पुत्र थे।

7. 'मुद्राराक्षस' किसकी नाट्य कृति है?

- (a) कालिदास (b) भारवि
(c) भवभूति (d) विशाखदत्त

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. श्रीहर्ष के पिता का नाम बताइये?

- (a) सुधीर (b) सुशील
(c) हरि (d) कृष्ण

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

श्रीहर्ष के पिता का नाम श्रीहीर और माता का नाम मामल्ल देवी था। कन्नौज के राजा जयन्तचन्द्र (प्रचलित नाम जयचन्द्र) उनके आश्रयदाता थे। हर्ष के पिता श्रीहीर को प्रसिद्ध नैयायिक आचार्य उदयन ने शास्त्रार्थ में हराया था। प्रश्न विकल्प में हरि दिया है, जबकि वास्तव में श्रीहीर है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) माना है।

9. श्रीहर्ष का ग्रन्थ है—

- (a) हितहरिवंश (b) नैषध काव्य
(c) राजतरंगिणी (d) मेघदूत

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है। हालाँकि प्रश्न विकल्प में 'नैषध-काव्य' दिया है, किन्तु वास्तविक रचना नैषधीयचरितम् ही है। श्रीहर्ष की अन्य रचनाएँ हैं— स्थायिकविचारप्रकरण, श्रीविजयप्रशस्ति, खण्डनखण्डखाद्य, गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णववर्णन, छिन्दप्रशस्ति, शिवशक्तिसिद्धि, नवसाहस्रान्वयचरितम्। राजतरंगिणी कल्हण की रचना है, जबकि मेघदूत कालिदास की रचना है।

10. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना श्रीहर्ष की नहीं है?

- (a) शिशुपालवध (b) अर्णववर्णन
(c) छिन्दप्रशस्ति (d) नवसाहस्रान्वयचरितम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. 'नवसाहस्रान्वयचरितम्' कृति के रचनाकार हैं—

- (a) श्रीहर्ष (b) दण्डी
(c) भास (d) बाणभट्ट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्नलिखित में से कृति और उसके रचनाकार का एक युग्म गलत है, वह है—

- (a) स्वप्नवासवदत्ता-भासद्व
(b) हर्षचरित-बाणभट्ट
(c) दशकुमारचरित-दण्डी
(d) नवसाहस्रान्वयचरितम्-राजाशेखर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'नवसाहस्रान्वयचरितम्' काव्यकृति के रचनाकार हैं—

- (a) दण्डी (b) भारवि
(c) श्रीहर्ष (d) अश्वघोष

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'नैषधीयचरितम्' रचना के लेखक का नाम बताइये?

- (a) श्रीहर्ष (b) दण्डी
(c) भास (d) भवभूति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए औषधि माना गया है?

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्
(c) रघुवंशम् (d) नैषधीयचरितम्

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष की रचना है। यह महाकाव्य की बृहत्त्रयी में गिना जाता है। इसमें कुल 22 सर्ग स्वीकार किए गए हैं। श्रीहर्ष के प्रौढ़ पाण्डित्यपूर्ण काव्य ने पण्डितविद्वत्समूहों में यह कहने के लिए बाध्य कर दिया कि 'नैषधं विद्वदौषधम्' अर्थात् नैषध विद्वानों के लिए औषध है।

16. 'उज्ज्वलनीलमणि' रचना है—

- (a) जीवगोस्वामी (b) रूपगोस्वामी
(c) भवभूति (d) इनमें से कोई नहीं

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

‘उज्ज्वलनीलमणि’ के रचनाकार रूपगोस्वामी हैं। इनकी अन्य रचनाएँ इस प्रकार से हैं— ‘हंसदूत’ काव्य, ‘उद्धव सन्देश’ काव्य, भक्तिरसामृतसिन्धु, ‘विदग्धमाधव’ नाटक, ‘ललितमाधव’ नाटक, ‘दानकेलिकौमुदी’ भाषिका, ‘नाटकचन्द्रिका’ ये आठ ग्रन्थ विशेष महत्वपूर्ण हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- रूपगोस्वामी वृन्दावन की विभूति हैं।
- ‘भक्तिरसामृतसिन्धु’ तथा ‘उज्ज्वलनीलमणि’ ये दोनों ग्रन्थ रस विषय पर हैं।
- ये चैतन्य महाप्रभु के शिष्य प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य हैं।

17. ‘उज्ज्वलनीलमणि’ किसका ग्रन्थ है?

- (a) रूपगोस्वामी (b) विश्वनाथ
(c) वात्स्यायन (d) केशव मिश्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. राजतरंगिणी किस कवि की रचना है?

- (a) कल्हण (b) बिल्हण
(c) आचार्य हेमचन्द्र (d) क्षेमेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

राजतरंगिणी कवि कल्हण की रचना है। इतिहास लेखन के विकास के लिए राजतरंगिणी ने कश्मीरी लेखकों के लिए प्रेरणास्रोत का भी काम किया, क्योंकि हमें ज्ञात है कि कल्हण की राजतरंगिणी के बाद कम-से-कम तीन राजतरंगिणियों का प्रणयन इसी परम्परा में हुआ, जिसका श्रेय क्रमशः जोनराज, श्रीवर तथा संयुक्त रूप से प्राज्यभट्ट तथा शुक को जाता है और जो कल्हणकृत राजतरंगिणी के ‘पारम्परिक नैरन्तर्य’ का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है।

19. ‘कविकण्ठाभरण’ के रचनाकार हैं -

- (a) दण्डी (b) क्षेमेन्द्र
(c) केशव मिश्र (d) धनंजय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

‘कविकण्ठाभरण’ के रचनाकार क्षेमेन्द्र हैं। इस रचना में कवि-शिक्षा के विषय में लिखा गया है। इसमें पांच संधि या अध्याय हैं और 55 करिकाएँ हैं। इसमें कवित्वप्राप्ति के उपाय, कवियों के भेद, काव्य के गुण-दोष का विवेचन संक्षेप में, परंतु सुबोध रीति से किया गया है। ‘औचित्य-विचार-चर्चा’ एवं कविकर्णिका’ इनके अन्य ग्रंथ हैं।

20. ‘चन्द्रालोक’ के रचनाकार हैं-

- (a) विश्वनाथ (b) राजशेखर
(c) दण्डी (d) जयदेव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

जयदेव प्रणीत ‘चन्द्रालोक’, प्रसन्नराघव और गीतगोविन्द ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं। ‘चन्द्रालोक’ में 10 मयूख हैं। ‘गीतगोविन्द’ में उन्होंने अपने आश्रयदाता लक्ष्मणसेन तथा अपने सहयोगी पञ्चरत्नों का परिचय दिया है— आर्यासप्तशतीकार गोवर्धनाचार्य, जयदेव, शरणकवि, उमापति और कविराज। राजा लक्ष्मणसेन के सभा भवन के द्वार पर ‘सभा रत्नों’ के नाम शिलापट्ट पर एक श्लोक के रूप में निम्नलिखित प्रकार अंकित था— गोवर्धनश्च शरणो जयदेव उमापतिः। कविराजश्च रत्नानि समितौ लक्ष्मणस्य तु॥ ‘चन्द्रालोक’ एवं ‘प्रसन्नराघव’ नाटक में अपने माता-पिता का परिचय दिया है, उनके पिता का नाम महादेव और माता का नाम सुमित्रा था।

21. ‘गीतगोविन्द’ के रचयिता हैं—

- (a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भारवि (d) जयदेव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

22. इनमें से कौन-सी एक रचना महाकाव्य नहीं है?

- (a) प्रसन्नराघव (b) शिशुपालवध
(c) कुमारसंभव (d) किरातार्जुनीय

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(a)

‘प्रसन्नराघव’ जयदेव का नाटक है, शेष महाकाव्य हैं।

23. इनमें से सही अनुक्रम कौन-सा है?

- (a) काव्यानुशासन, साहित्य दर्पण, रस मंजरी, रस गंगाधर
(b) साहित्य दर्पण, काव्यानुशासन, रस गंगाधर, रस मंजरी
(c) रस मंजरी, साहित्य दर्पण, रस गंगाधर, काव्यानुशासन
(d) काव्यानुशासन, साहित्य दर्पण, रस गंगाधर, रस मंजरी

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

सही अनुक्रम इस प्रकार से हैं— काव्यानुशासन (हेमचन्द्र : 1080 ई. से 1172 ई.), साहित्य दर्पण (कविराज विश्वनाथ : चौदहवीं शताब्दी), रसमंजरी (भानुदत्त : 14वीं शताब्दी), रस गंगाधर (पण्डितराज जगन्नाथ : 1600 ई. से 1660 ई.)।

24. सूची-I के समूहों का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I

- A. कालिदास
B. भवभूति
C. दण्डी
D. बाणभट्ट
E. श्रीहर्ष

सूची-II

1. ऋतुसंहारम्
2. दशकुमारचरितम्
3. नैषधीयचरितम्
4. उत्तररामचरितम्
5. कादम्बरी

कूट :

	A	B	C	D	E
(a)	1	4	2	5	3
(b)	2	3	4	5	1
(c)	1	4	3	2	5
(d)	4	1	5	3	2

P.G.T. परीक्षा, 2009

T.G.T. परीक्षा, 2010

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	3	2	4	1
(c)	4	1	2	3
(d)	1	3	2	4

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
कालिदास	- ऋतुसंहारम्
भवभूति	- उत्तररामचरितम्
दण्डी	- दशकुमार चरितम्
बाणभट्ट	- कादम्बरी
श्रीहर्ष	- नैषधीयचरितम्

25. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. स्वप्नवासवदत्तम्
B. भास	2. मेघदूतम्
C. मम्मट	3. साहित्यदर्पण
D. विश्वनाथ	4. काव्यप्रकाश

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	1	2	3	4
(c)	3	4	1	2
(d)	4	3	2	1

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
कालिदास	- मालविकाग्निमित्रम्
भवभूति	- मालतीमाधवम्
दण्डी	- दशकुमार चरितम्
श्रीहर्ष	- नैषधीयचरितम्

27. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए—

सूची-I	सूची-II
(कृति)	(लेखक)
A. दशकुमारचरितम्	1. श्रीहर्ष
B. नैषधीयचरितम्	2. भवभूति
C. उत्तररामचरितम्	3. दण्डी

कूट :

	A	B	C
(a)	1	2	3
(b)	3	2	1
(c)	3	1	2
(d)	2	1	3

T.G.T. पुनर्परीक्षा, 2004

उत्तर—(a)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
कालिदास	- मेघदूतम्
भास	- स्वप्नवासवदत्तम्
मम्मट	- काव्यप्रकाश
विश्वनाथ	- साहित्यदर्पण

26. सूची-I एवं सूची-II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही विकल्प चुनिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. मालतीमाधवम्
B. भवभूति	2. दशकुमारचरितम्
C. दण्डी	3. नैषधीयचरितम्
D. श्रीहर्ष	4. मालविकाग्निमित्रम्

उत्तर—(c)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I	सूची-II
(कृति)	(लेखक)
दशकुमार चरितम्	- दण्डी
नैषधीयचरितम्	- श्रीहर्ष
उत्तररामचरितम्	- भवभूति

28. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
A. कालिदास	1. दशकुमारचरितम्
B. माघ	2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
C. भवभूति	3. शिशुपालवधम्
D. दण्डी	4. उत्तररामचरितम्

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	3	4	1
(c)	3	1	2	4
(d)	4	2	3	1

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
कालिदास	-	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
माघ	-	शिशुपालवधम्
भवभूति	-	उत्तररामचरितम्
दण्डी	-	दशकुमारचरितम्

भास

1. निम्नलिखित में से कौन भास द्वारा रचित नाटक नहीं है?

- (a) मृच्छकटिकम् (b) ऊरुभंगम्
(c) दूतवाक्यम् (d) मध्यम व्यायोग

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

संस्कृत नाटककारों में भास का नाम उल्लेखनीय है। भास, कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। भास, लौकिक संस्कृत के प्रथम साहित्यकार थे। सबसे पहले वर्ष 1909 में गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की थी, जो इस प्रकार हैं—प्रतिमानाटकम्, अभिषेक, पंचरात्र, मध्यम व्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्यम्, ऊरुभंग, बालचरित, चारुदत्त, अविमारक, प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्।

2. इसमें से भास की कृति है -

- (a) बालभारत (b) बालचरित (c) नैषधचरित (d) नागानन्द

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'प्रतिमानाटकम्' के रचयिता हैं—

- (a) शूद्रक (b) भास (c) कालिदास (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. भास की रचना है—

- (a) विक्रमोर्वशीय (b) मृच्छकटिकम्
(c) रत्नावली (d) प्रतिमानाटकम्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. इनमें से कौन-सा नाटक भास का नहीं है?

- (a) प्रतिमानाटकम् (b) ऊरुभंग
(c) दूतवाक्यम् (d) मालविकाग्निमित्रम्

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

- (a) कालिदास (b) भास
(c) भवभूति (d) व्यास

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. इनमें से महाकवि भास की रचना है—

- (a) कर्पूरमंजरी (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) मालविकाग्निमित्र (d) मालतीमाधव

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. निम्नलिखित में से एक कृति भास रचित नहीं है—

- (a) प्रतिमानाटकम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (d) महाभाष्यम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

'महाभाष्यम्' भास की कृति नहीं है, जबकि शेष रचनाएँ भास की हैं। महाभाष्यकार परंजलि (150 ई.पू.) ने भी इसी शृंखला में 'महानन्द-काव्य' लिखा है। समुद्रगुप्त ने 'कृष्णचरित' की प्रस्तुतना में लिखा है कि परंजलि ने योगशास्त्र की व्याख्या के रूप में 'महानन्द' नामक काव्य लिखा है।

9. कौन-सा नाटक भास का नहीं है?

- (a) स्वप्नवासवदत्तम् (b) प्रतिज्ञा
(c) प्रतिमानाटकम् (d) मुद्राराक्षस

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भास का नाटक 'मुद्राराक्षस' नहीं है। यह विशाखदत्त की प्रथम रचना है। शेष रचना भास की हैं। भास द्वारा रचित कुल 13 नाटक हैं। जिसमें दो रामकथाश्रित नाटक— 1. प्रतिमानाटकम्, 2. अभिषेक तथा सात महाभारतकथाश्रित नाटक—(1) ऊरुभङ्गम् (2) दूतवाक्यं, (3) पंचरात्रम् (4) दूतघटोत्कच (5) कर्णभार (6) मध्यम व्यायोग (7) बाल चरित्र तथा दो लोककथाश्रित नाटक—(1) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (2) स्वप्नवासवदत्तम् तथा इसके अतिरिक्त दो कल्पनाश्रित नाटक (1) अविमारक (2) चारुदत्तम् की रचना की है।

कालिदास

1. महाकवि कालिदास किस अलंकार के लिए प्रसिद्ध हैं?

- (a) उपमा (b) श्लेष
(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(a)

महाकवि कालिदास उपमा अलंकार के लिए प्रसिद्ध हैं। यह इस उक्ति से स्पष्ट होता है—

उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

अर्थात् कालिदास उपमा के लिए, भारवि अर्थगौरव के लिए, दण्डी पदलालित्य के लिए तथा माघ इन तीनों (उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य) गुणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. निम्नलिखित में से कौन कवि कालिदास के पूर्ववर्ती हैं?

- (a) भारवि (b) भास
(c) दण्डी (d) भवभूति

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

भारतीय नाटककारों में सबसे प्राचीन रचनाएँ महाकवि भास की प्राप्त होती हैं। तत्पश्चात् शूद्रक, कालिदास, अश्वघोष, हर्ष, भवभूति आदि के नाटक हैं। अतः स्पष्ट है कि भास कालिदास के पूर्ववर्ती हैं।

3. 'रघुवंशम्' किसकी रचना है?

- (a) व्यास (b) भरतमुनि
(c) कालिदास (d) चाणक्य

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कालिदास रचित 'रघुवंशम्' एक चरित्र महाकाव्य है। यह उन्नीस सर्गों में विभक्त है। इसमें मनु से लेकर सूर्यवंशी दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम आदि सहित कुल 31 राजाओं के जीवन का वर्णन है। इसी प्रकार इन्दुमती, सीता, कुमुदवती आदि रानियों का भी वर्णन है। इस रचना के वैशिष्ट्य के कारण ही कवियों और आलोचकों को कहना पड़ा है कि 'क इह रघुकारे न रमते'। व्यास द्वारा वेद, भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र तथा चाणक्य द्वारा अर्थशास्त्र की रचना की गई।

4. 'रघुवंशम्' के रचयिता हैं—

- (a) कालिदास (b) बाण
(c) भवभूति (d) माघ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. संस्कृत के निम्नलिखित ग्रन्थों में कौन-सा ग्रन्थ 'नाटक' नहीं है?

- (a) उभयमिसारिका (b) रघुवंशम्

(c) मालतीमाधव

(d) वेणीसंहार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. कालिदास की रचना 'रघुवंशम्' है—

- (a) एक खण्ड काव्य (b) एक मुक्तक काव्य
(c) एक गीति काव्य (d) एक महाकाव्य

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'रघुवंशम्' महाकाव्य में सर्ग हैं—

- (a) अट्टारह (b) उन्नीस
(c) बीस (d) इक्कीस

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. कालिदास की प्रथम काव्यकृति है—

- (a) मेघदूत (b) ऋतुसंहार
(c) रघुवंश (d) नैषध

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

कालिदास की प्रथम काव्य कृति ऋतुसंहार है। इसमें 6 सर्ग और 144 श्लोक हैं। इन 6 सर्गों में 6 ऋतुओं का क्रमशः वर्णन है—ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और बसन्त। संस्कृत साहित्य में केवल यही ग्रन्थ है, जिसमें 6 ऋतुओं का पूरे विवरण के साथ वर्णन है। कवि की प्रथम काव्यकृति होने पर भी ऋतुसंहार में कुछ मनोरम पद्य, रमणीय कल्पनाएँ और सुन्दर पद-शय्या मिलती हैं।

9. इनमें से कालिदास की प्रथम काव्यकृति है -

- (a) रघुवंश (b) मेघदूत
(c) कुमारसम्भव (d) ऋतुसंहार

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना लघुत्रयी में नहीं आती है?

- (a) रघुवंशम् (b) कुमारसम्भवम्
(c) मेघदूतम् (d) ऋतुसंहार

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

कालिदास द्वारा रचित रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् तथा मेघदूतम् 'लघुत्रयी' के नाम से जाने जाते हैं। ऋतुसंहार लघुत्रयी के अन्तर्गत नहीं आती है। इसमें 6 सर्ग और लगभग 144 श्लोक हैं। इसमें ग्रीष्म से बसन्त तक छह ऋतुओं का सुन्दर चित्रण है और मानवीय प्रेम एवं नैसर्गिक सुषमा का सुन्दर समन्वय किया गया है।

11. संस्कृत का महाकाव्य 'कुमारसम्भव' किसकी रचना है?

- (a) भारवि (b) कालिदास
(c) भवभूति (d) भरतमुनि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. निम्न में कौन-सा ग्रन्थ कालिदास प्रणीत है?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) मुद्राराक्षस

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

कालिदास प्रणीत 'मालविकाग्निमित्रम्' प्रथम नाटक है। इसमें पाँच अंकों में मालविका और अग्निमित्र के प्रणय तथा विवाह का वर्णन है। 'उत्तररामचरितम्' भवभूति का अन्तिम सर्वश्रेष्ठ नाटक है। 'मृच्छकटिकम्' शूद्रक का एवं 'मुद्राराक्षस' विशाखदत्त द्वारा रचित है।

13. 'मृच्छकटिकम्' के रचयिता का नाम है—

- (a) भास (b) शूद्रक (c) कालिदास (d) भारवि

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

- (a) कालिदास (b) भवभूति (c) भास (d) भारवि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. कालिदास की किस रचना को 'दूतकाव्य' माना जाता है?

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) विक्रमोर्वशीयम्
(c) मेघदूतम् (d) मालविकाग्निमित्रम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

'मेघदूतम्' महकवि कालिदास द्वारा रचित विख्यात 'दूतकाव्य' है। 'मेघदूतम्' काव्य दो खंडों में विभक्त है - पूर्वमेघ तथा उत्तरमेघ।

16. 'बृहत्त्रयी' में कौन-सा महाकाव्य नहीं आता है?

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

बृहत्त्रयी के अन्तर्गत तीन महाकाव्यों की गणना की जाती है। ये महाकाव्य हैं— भारवि प्रणीत—किरातार्जुनीयम्, माघ प्रणीत—शिशुपालवधम् तथा श्रीहर्ष प्रणीत—नैषधीयचरितम्। कालिदास प्रणीत महाकाव्य 'कुमारसम्भवम्', रघुवंशम् तथा मेघदूतम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं, बल्कि त्रयत्रयी के अन्तर्गत आते हैं।

17. बृहत्त्रयी में कौन-सा महाकाव्य नहीं आता है?

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) शिशुपालवधम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) रघुवंशम्

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना कालिदास की नहीं है?

- (a) मेघदूतम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) दशकुमारचरितम् (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है। जिसमें 8 उच्छ्वास हैं। काव्यादर्श, अवन्तिपुन्दरी कथा, छन्दोविचित, कलापरिच्छेद और द्विसन्धानकाव्य दण्डी की रचनाएँ हैं, जबकि मेघदूतम्, रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् ऋतुसंहार, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् और विक्रमोर्वशीयम् कालिदास की प्रमुख रचना है।

19. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के लेखक का नाम बताइये?

- (a) भवभूति (b) भास
(c) कालिदास (d) भारवि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है?

- (a) ऋतुसंहार (b) कुमारसम्भव
(c) बुद्धचरित (d) रघुवंश

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

कालिदास की रचना 'बुद्धचरित' नहीं, बल्कि यह अश्वघोष का एक महाकाव्य है, इसमें बुद्ध का जीवन चरित तथा उनके सिद्धान्त का उल्लेख है। इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है। शेष रचना कालिदास की हैं।

21. इनमें से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है?

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मालविकाग्निमित्रम्
(c) विक्रमोर्वशीयम् (d) प्रतिमानाटकम्

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

प्रतिमानाटकम् भास की रचना है, शेष रचनाएँ कालिदास की हैं।

22. निम्नलिखित में से एक रचना कालिदास की नहीं है—

- (a) ऋतुसंहार (b) मेघदूत
(c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (d) नैषधीयचरित

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

कालिदास की रचना नैषधीयचरित नहीं है। यह श्रीहर्ष की रचना है। शेष रचनाएँ कालिदास की हैं।

23. निम्नलिखित में से कौन-सी कृति कालिदास कृत नहीं है?

- (a) कुमारसम्भवम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) उत्तररामचरितम् (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उत्तररामचरितम् भवभूति की कृति है। यह करुण रस प्रधान नाटक है। इसमें 7 अंकों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। शेष कृतियाँ कालिदास की हैं।

भवभूति

1. भवभूति का मूल नाम क्या था?

- (a) श्रीपति (b) दामेदर (c) श्रीकण्ठ (d) नीलकंठ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

भवभूति का मूल नाम 'श्रीकण्ठ' था। ये कवि रूप में भवभूति के नाम से विख्यात हुए। भवभूति की पाँचवीं पीढ़ी (अर्थात् पितामह के पितामह) का नाम 'महाकवि' था। इनके पितामह का नाम भट्टगोपाल था। भवभूति के पिता का नाम नीलकण्ठ तथा माता का नाम 'जतुकर्णी' था। कुछ विद्वान् इन्की माता का नाम 'जातूकर्णी' मानते हैं। भवभूति को 'श्रीकण्ठपदलाञ्छन' कहा गया है। भवभूति पदवाच्यप्रमाणज्ञ थे। इसका अभिप्राय यह है कि वे पद (व्याकरण), वाच्य (न्यायशास्त्र) और प्रमाप (मीमांसा दर्शन) के महविद्वान् थे। इनके गुरु का नाम 'ज्ञाननिधि' था, जो कि यथार्थ नाम वाले थे।

2. 'मालतीमाधव' के रचनाकार हैं—

- (a) भारवि (b) कालिदास (c) श्रीहर्ष (d) भवभूति

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

भवभूति द्वारा विरचित 'मालतीमाधव' शृंगार रस प्रधान नाटक है। यह 10 अंकों का प्रकरण रूपक है। इसमें मालती और माधव तथा मकरन्द और मदयन्तिका के प्रणय और परिणय का वर्णन है।

3. 'मालतीमाधव' किसकी रचना है?

- (a) भास की (b) भरतमुनि की
(c) भारवि की (d) भवभूति की

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'मालतीमाधव' रचना के लेखक का नाम बताइये—

- (a) भवभूति (b) कालिदास (c) भास (d) श्रीहर्ष

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. कौन-सी कृति भवभूति की नहीं है?

- (a) महावीरचरित (b) मालतीमाधव
(c) उत्तररामचरित (d) कर्पूरमंजरी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

भवभूति की रचना 'कर्पूरमंजरी' नहीं है। राजशेखर प्रणीत 'कर्पूरमंजरी' चार अंकों का 'सट्टक' नामक रूपक है। सट्टक की भाषा प्राकृत होती है। शेष रचना भवभूति की हैं।

6. 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक का सम्बन्ध किससे है?

- (a) वाल्मीकि के आश्रम से (b) अयोध्या से
(c) सरयू के तट से (d) पंचवटी से

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक का सम्बन्ध पंचवटी से है। उत्तररामचरितम् भवभूति का सबसे प्रसिद्ध नाटक है। इसमें कुल सात अंक हैं तथा राम कथा का वर्णन किया गया है। प्रथम अंक की घटनाओं का स्थान अयोध्या है। द्वितीय अंक का स्थान दण्डकारण्य का जनस्थान नामक प्रदेश है जबकि तृतीय अंक का सम्बन्ध दण्डकारण्य का पंचवटी प्रदेश से है चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं सप्तम् अंक का सम्बन्ध वाल्मीकि के आश्रम से है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

अंक	अंक का नाम
➤ प्रथम अंक	चित्रदर्शन
➤ द्वितीय अंक	पंचवटी प्रवेश
➤ तृतीय अंक	छाया
➤ चतुर्थ अंक	कौशल्या-जनक मिलन
➤ पंचम अंक	कुमार विक्रम
➤ षष्ठम् अंक	कुमार प्रत्यभिज्ञान
➤ सप्तम् अंक	सम्मेलन (गर्भांक)

7. भवभूति की रचना का नाम है—

- (a) उत्तररामचरितम् (b) उत्तररामायण
(c) रामचरित (d) हर्षचरितदर्शन

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

भवभूति द्वारा प्रणीत 'उत्तररामचरितम्' करुण रस प्रधान नाटक है। इसमें 7 अंकों में रामायण के उत्तरकाण्ड की कथा वर्णित है। महावीरचरितम् और उत्तररामचरितम् में कवि ने अपने आपको 'वश्यवाक्' और 'परिणतपद्म' कहा है।

8. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रचना भवभूति की है?

- (a) उत्तररामचरितम् (b) कादम्बरी
(c) किरातार्जुनीयम् (d) नैषधीयचरितम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. भवभूति की रचना है—

- (a) मृच्छकटिकम् (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) उत्तररामचरितम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. 'उत्तररामचरितम्' के रचनाकार हैं—

- (a) वाल्मीकि (b) भारवि
(c) श्रीहर्ष (d) भवभूति

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. संस्कृत के किस कवि ने 'एको रसः करुण एव' कहकर करुण रस को रसराज घोषित किया?

- (a) कालिदास (b) भवभूति
(c) माघ (d) भास

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(b)

भवभूति द्वारा विरचित उत्तररामचरितम् के तृतीय अंक में वर्णित 47वें श्लोक के माध्यम से भवभूति स्पष्ट रूप से इसे करुण रस नाटक मानते हैं। इतना ही नहीं वह करुण रस को अन्य रसों का आधारभूत मानते हैं। उनके मतानुसार, करुण रस ही रूपान्तरित होकर शृंगार, वीर आदि रसों के रूप में परिणत है। सर्वत्र रसों की आत्मा के रूप में करुण रस है। करुण रस प्रकृति है और शृंगार रस आदि विकृति है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भवभूति ने करुण रस को रसराज घोषित किया।

12. 'करुण रस' को एकमात्र रस किसने माना?

- (a) भरतमुनि (b) भवभूति
(c) मम्मट (d) आचार्य विश्वनाथ

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'करुण' के रसराजत्व का प्रतिष्ठापक ग्रन्थ है—

- (a) किरातार्जुनीयम् (b) मेघदूतम्
(c) उत्तररामचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

'करुण' रस राजत्व की प्रतिष्ठापना उत्तररामचरितम् ग्रन्थ के द्वारा की गई है। भवभूति ने तीन नाटक लिखे हैं—मालतीमाधवम् (शृंगार रस प्रधान), महावीरचरितम् (वीर रस प्रधान), उत्तररामचरितम् (करुण रस प्रधान), लेकिन उनमें से उत्तररामचरित के बारे में कहा गया है—उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते (उत्तररामचरित में भवभूति कालिदास से विशिष्ट हो गए हैं)। इनके तीनों नाटकों में विदूषक का सर्वथा अभाव है।

साहित्य शास्त्र के नौ रसों में करुण रस एक है। भवभूति ने उत्तररामचरित में करुण रस को अपूर्व प्रतिष्ठा दिलाकर उसे सभी रसों का मूल स्रोत बना दिया।

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद् भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्। आवर्तबुद्बुद्दतरङ्गमयान्विकारा नम्पो यथा, सालिलमेव हि तत्समस्तम्। अर्थात् रस तो एक ही है—करुण, जो भिन्न-भिन्न प्रयोजनों से पृथक्-पृथक् परिणामों (रसों) का आश्रय लेता है। जैसे वही जल, भँवर, बुलबुला और लहर जैसे अनेक रूपों को प्राप्त होकर भी रहता जल ही है।

14. 'एको रसः करुण एव' किस कवि की उक्ति है?

- (a) कालिदास (b) बाणभट्ट
(c) भवभूति (d) माघ

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

15. 'एको रसः करुण एव' किसका कथन है?

- (a) विश्वनाथ (b) भवभूति
(c) भारवि (d) जयदेव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. 'करुण के रसराजत्व की प्रतिष्ठापना किस ग्रन्थ द्वारा की गई?

- (a) रघुवंशम् (b) उत्तररामचरितम्
(c) प्रतिमानाटकम् (d) किरातार्जुनीयम्

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. 'उत्तररामचरितम्' का प्रधान रस क्या है?

- (a) करुण (b) शृंगार (c) वीर (d) शान्त

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भारवि

1. 'भारवि' की माता का क्या नाम था?

- (a) सुशीला (b) गीता
(c) सुनीता (d) मीता

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

भारवि के माता का नाम सुशीला तथा पिता का नाम श्रीधर था। उनकी पत्नी का नाम रसिकवती या रसिका था। उनका वास्तविक नाम दामोदर था और 'भारवि' उनकी उपाधि थी।

2. निम्नलिखित में से कौन कवि 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं?

- (a) भारवि (b) भास (c) कालिदास (d) श्रीहर्ष

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

महाकवि भारवि 'अर्थगौरव' शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं। भारवि के महाकाव्य का सर्वश्रेष्ठ वैशिष्ट्य उनका अर्थगाम्भीर्य है, जिसका तात्पर्य है—अल्प शब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश। इसीलिए यह कथन युक्ति संगत है कि—
उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

3. 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' इस सूक्ति से युक्त रचना है—

- (a) शिशुपालवधम् (b) किरातार्जुनीयम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) कुमारसम्भवम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'सहसा विदधीत न क्रियाम्' (अचानक कार्य न करें) प्रस्तुत श्लोकांश महाकवि भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का 30वां श्लोक है। यह भारवि का अति प्रिय श्लोक था, उन्होंने अपने शयनकक्ष में इसे लगा रखा था।

4. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है—

- (a) लक्ष्मी (b) विभु (c) शिव (d) श्री

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'किरातार्जुनीयम्' महाकवि भारवि प्रणीत एक महाकाव्य है। इसमें कुल 18 सर्ग और 1040 श्लोक हैं। इसकी कथावस्तु को महाभारत के वनपर्व से लिया गया है। किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ महाराज युधिष्ठिर द्वारा भेजे गए एक गुप्तचर के आगमन से प्रारम्भ होता है, जो कि ब्रह्मचारी वेश धारण किए हुए हैं। इसमें अर्जुन और 'किरात' वेशधारी शिव के बीच युद्ध का वर्णन है। अन्ततोगत्वा शिव प्रसन्न होकर अर्जुन को 'पाशुपतास्त्र' प्रदान करते हैं। वस्तुतः भारवि संस्कृत काव्यों में रीति शैली के जन्मदाता हैं। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में 'श्री' शब्द तथा प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग उसकी प्रमुख विशेषता है।

5. इनमें से कौन-सी रचना भारवि की है?

- (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) रघुवंश महाकाव्यम्
(c) दशकुमार चरितम् (d) किरातार्जुनीयम्

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. 'किरातार्जुनीयम्' के रचनाकार हैं—

- (a) राजशेखर (b) श्रीहर्ष (c) भारवि (d) माघ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. निम्नलिखित कृतियों में से कौन-सी भारवि द्वारा रचित है?

- (a) शिशुपालवधम् (b) कुमारसम्भवम्
(c) किरातार्जुनीयम् (d) नैषधीयचरितम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस है—

- (a) वीर रस (b) शृंगार रस
(c) करुण रस (d) शान्त रस

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर रस है।

9. किस कवि की वाणी 'नारिकेल फल' के समान है?

- (a) घटकर्पूर (b) भर्तृहरि (c) कालिदास (d) भारवि

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भारवि की रचना की उपमा नारियल के फल से की है; जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि भारवि की वाणी 'नारिकेल फल' के समान है।

माघ

1. काव्य-रचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किये जाते हैं?

- (a) सत्व, रज, तम (b) ओज, प्रसाद, माधुर्य
(c) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य (d) गौड़ी, वैदर्भी, पांचाली

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

महाकवि माघ द्वारा प्रणीत 'शिशुपालवधम्' बृहत्त्रयी के अन्तर्गत द्वितीय रत्न है। यह महाभारत के 'सभा पर्व' से लिया गया है। काव्य रचना की दृष्टि से महाकवि माघ 'उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य' तीनों गुणों से विभूषित स्वीकार किये जाते हैं। इसीलिए यह कथन युक्तिसंगत है कि—

उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

अर्थात् कालिदास की उपमा, भारवि का अर्थगौरव तथा दण्डी का पदलालित्य इन तीनों गुणों का एकत्र सन्निवेश बताया गया। माघ की विशेषता यह है कि उसने तीनों गुणों का मणि-कांचन-संयोग प्रस्तुत किया।

2. काव्य-रचना की दृष्टि से महाकवि माघ किन तीन गुणों से विभूषित स्वीकार किये जाते हैं?

- (a) सत्व, रज, तम (b) ओज, प्रसाद, माधुर्य
(c) गौड़ी, वैदर्भी, पांचाली (d) उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. उपमा, पदलालित्य और अर्थगौरव की दृष्टि से एक साथ तीनों गुणों से युक्त कौन-सा संस्कृत-कवि प्रसिद्ध है?

(a) कालिदास (b) भारवि (c) दण्डी (d) माघ

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' के अनुसार, माघ कवि में समाविष्ट तीनों गुण क्रमशः किन तीन कवियों में है—

(a) कालिदास, भारवि, दण्डी (b) कालिदास, श्रीहर्ष, दण्डी
(c) कालिदास, भास, दण्डी (d) भारवि, भास, कालिदास

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'शिशुपालवध' के रचनाकार का नाम है—

(a) भामह (b) भारवि (c) कुन्तक (d) माघ

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'शिशुपालवध' के रचनाकार माघ हैं। शिशुपालवध में 20 सर्ग हैं, यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसमें देवर्षि नारद द्वारा शिशुपाल के पूर्व जन्म का विवरण देते हुए उसके अत्याचारों का उल्लेख, श्रीकृष्ण से उसके संहार की प्रार्थना, युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण का इन्द्रप्रस्थ पहुँचना, शिशुपाल का अभद्र व्यवहार और क्रुद्ध श्रीकृष्ण द्वारा उसका वध करना वर्णित है। शिशुपालवध में वंशस्थ छन्द है।

6. 'शिशुपालवध' किसकी रचना है?

(a) माघ (b) भारवि (c) श्री हर्ष (d) बाण

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'शिशुपालवध' के लेखक का नाम बताइये?

(a) माघ (b) कालिदास (c) हर्ष (d) भास

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'शिशुपालवध' रचना के लेखक का नाम बताइये?

(a) माघ (b) कालिदास (c) श्रीहर्ष (d) भवभूति

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. निम्नलिखित में से माघ विरचित कृति है—

(a) बुद्धचरितम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्

(c) रघुवंशम्

(d) शिशुपालवधम्

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. संस्कृत के किस कवि के लिए 'घण्टा' विशेषण प्रयुक्त हुआ है?

(a) बाणभट्ट (b) माघ (c) भारवि (d) श्रीहर्ष

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

महाकवि माघ द्वारा विरचित शिशुपालवधम् बृहत्त्रयी के अन्तर्गत द्वितीय रत्न है। माघ ने अपनी अपूर्व कल्पना का परिचय देते हुए निदर्शना अलंकार का उपयोग करते हुए चतुर्थ सर्ग में रैवतक पर्वत के एक ओर सूर्योदय और दूसरी ओर चन्द्रास्त को देखकर महाकाय हाथी के दोनों ओर लटकते हुए दो विशाल घण्टों की कल्पना की है। इस कल्पना की उत्कृष्टता के आधार पर माघ का नाम ही 'घण्टामाघ' पड़ गया।

दण्डी

1. संस्कृत काव्य में पदलालित्य के लिए किसकी प्रसिद्धि सर्वाधिक है?

(a) कालिदास (b) माघ (c) भारवि (d) दण्डी

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

महाकवि दण्डी संस्कृत साहित्य में अपने पदलालित्य के लिए विख्यात हैं। इनकी शैली समास रहित एवं प्रसाद गुण से युक्त है। उनके पात्र सांसारिक प्राणी हैं, जो सीधी और सरल भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा में कहीं भी दुर्बोधिता नहीं आने पायी है। दण्डी की शैली की विशेषताएँ हैं—1. अर्थ की स्पष्टता, 2. पद-लालित्य, 3. शब्दों के दिन-प्रतिदिन की क्षमता तथा 4. रस की सुन्दर अभिव्यक्ति। इन विशेषताओं के कारण कुछ विद्वान् दण्डी को वाल्मीकि तथा व्यास की कोटि का तीसरा कवि मानते हैं।

2. 'काव्यादर्श' के रचनाकार निम्नलिखित में से कौन हैं?

(a) माघ (b) भास (c) भवभूति (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

काव्यादर्श के रचनाकार दण्डी हैं। यह संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृति है। दण्डी के अन्य प्रचलित ग्रन्थ हैं— दशकुमारचरितम्, अवन्तिपुन्दरी कथा, छन्दोविचित, कलापरिच्छेद, द्विसन्धानकाव्य।

3. 'काव्यादर्श' किसकी रचना है?

(a) मम्मट (b) दण्डी (c) विश्वनाथ (d) भरतमुनि

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. इनमें से कौन-सी रचना दण्डी की है?

- (a) दशकुमारचरितम् (b) शिवराजविजय
(c) मेघदूत (d) हर्षचरित

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'दशकुमारचरितम्' के लेखक का नाम बताइये?

- (a) दण्डी (b) हर्ष (c) व्यास (d) भारवि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. दण्डी के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ का नाम है—

- (a) प्रतिदर्श (b) काव्यशास्त्र
(c) काव्यादर्श (d) भाषादर्श

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'कलापरिच्छेद' के रचनाकार हैं—

- (a) दण्डी (b) भवभूति (c) श्रीहर्ष (d) बाण

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'कलापरिच्छेद' के लेखक कौन हैं?

- (a) कालिदास (b) भवभूति (c) दण्डी (d) भारवि

T.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. इनमें से कौन-सी रचना दण्डी की नहीं है?

- (a) दशकुमारचरितम् (b) सुबन्धु
(c) वासवदत्ता (d) कादम्बरी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(*)

दशकुमारचरितम् दण्डी की रचना है, जबकि कादम्बरी बाणभट्ट की कृति है। सुबन्धु स्वयं संस्कृत गद्यकार हैं। इनकी एकमात्र रचना वासवदत्ता प्राप्त होती है। सुबन्धु की शैली श्लेष प्रधान है। सुबन्धु संस्कृत-गद्यकारों की 'बृहत्त्रयी' में गिने जाते हैं। अन्य दो महाकवि दण्डी और बाण हैं। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का प्रारूप त्रुटिपूर्ण है। प्रश्न में रचना के बारे में उल्लेख है, जबकि इसमें एक रचनाकार का नाम विकल्प में उपस्थित है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

10. "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते" किसने कहा है?

- (a) विश्वनाथ (b) भरत (c) जगन्नाथ (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

अलंकार के सम्बन्ध में प्रथम काव्यशास्त्रीय परिभाषा आचार्य दण्डी की है— "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते"। अर्थात् काव्य के शोभाकारक धर्म का नाम अलंकार है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में सर्वप्रथम अलंकार को परिभाषित तो नहीं किया, लेकिन चार अलंकारों उपमा, रूपक, यमक तथा दीपक का उल्लेख किया। काव्यशास्त्र का विषय काव्य सौन्दर्य के प्रतिमानों का विवेचन करना है। अतः इसके प्रारम्भिक चरण में कई काव्यशास्त्रियों ने अपने ग्रन्थों का नाम 'काव्यालंकार' अर्थात् 'काव्य सौन्दर्य' ही रखा। 'काव्यसौन्दर्यलंकार' के अनुसार 'अलंकार' शब्द सौन्दर्य का वाचक है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में विकल्प (d) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

11. 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते - अलंकार की यह परिभाषा किस आचार्य की है?

- (a) भामह (b) दण्डी (c) उद्भट (d) रुद्रट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2016

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

12. "काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते" अलंकार की यह परिभाषा किसकी है?

- (a) आचार्य दण्डी (b) आचार्य वामन
(c) आचार्य कुन्तक (d) आचार्य मम्मट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. "काव्यशोभाकरान् धर्मानलंकारान् प्रचक्षते"-उक्ति के लेखक हैं—

- (a) आचार्य भामह (b) आचार्य विश्वनाथ
(c) आचार्य मम्मट (d) आचार्य दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. दण्डी निम्नलिखित में से किस प्रकार के आचार्य हैं?

- (a) अलंकारवादी (b) रसवादी
(c) रीतिवादी (d) ध्वनिवादी

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

मम्मट

1. 'काव्यप्रकाश' नामक ग्रन्थ के प्रणेता हैं—

- (a) रुद्रट (b) भामह (c) विश्वनाथ (d) मम्मट

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(d)

'काव्यप्रकाश' (10 उल्लास) नामक ग्रन्थ के प्रणेता मम्मट हैं, जबकि भामह ने 'काव्यालंकार' की रचना की है। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' (10 परिच्छेद) ग्रन्थ की रचना की है। काव्यालंकार भामह को अमरता प्रदान करने वाला ग्रन्थ है।

2. 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार हैं—

- (a) मम्मट (b) दण्डी (c) विश्वनाथ (d) राजशेखर

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. इनमें से आचार्य मम्मट की रचना है—

- (a) नाट्यशास्त्र (b) व्यक्ति विवेक
(c) काव्यालंकार (d) काव्यप्रकाश

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' किसका काव्य लक्षण है?

- (a) जयदेव (b) दण्डी (c) मम्मट (d) हेमचन्द्र

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण है—तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।

5. "तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि" यह काव्यलक्षण किस आचार्य द्वारा निरूपित है?

- (a) पंडितराज जगन्नाथ (b) मम्मट
(c) दण्डी (d) महिमभट्ट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

विश्वनाथ

1. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' उक्ति के लेखक हैं—

- (a) मम्मट (b) विश्वनाथ
(c) पंडितराज जगन्नाथ (d) वामन

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने काव्य लक्षण को परिभाषित करते हुए 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहा है। रसगंगाधरकार पण्डितराज जगन्नाथ ने काव्य के विषय में कहा कि 'रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्', जबकि वामन ने काव्य लक्षण को परिभाषित करते हुए 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहा है।

2. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' किसका कथन है?

- (a) विश्वनाथ (b) राजशेखर (c) श्रीहर्ष (d) भास

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'-काव्य-परिभाषा के प्रस्तोता हैं—

- (a) पण्डितराज जगन्नाथ (b) आचार्य भामह
(c) आचार्य दण्डी (d) आचार्य विश्वनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'रसौ वै सः' को अपनी परिचर्चा में किस आचार्य ने सम्मिलित किया है?

- (a) पण्डित जगन्नाथ (b) आचार्य विश्वनाथ
(c) आचार्य अभिनवगुप्त (d) आचार्य भट्ट नायक

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

'रसौ वै सः' को अपनी परिचर्चा में आचार्य विश्वनाथ ने सम्मिलित किया है। तैत्तिरीय उपनिषद् में रस का वर्णन इस प्रकार से है—'रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।' अर्थात् रस वह ईश्वरीय अनुभूति है, जिसे प्राप्त करके आत्मा आनन्दित हो जाता है। साहित्यशास्त्र में रस के विषय में यह कथन भरतमुनि एवं आचार्य विश्वनाथ का है। भारतीय साहित्य शास्त्र में काव्य का मूल प्रयोजन इसी रसरूप आनन्द की प्राप्ति है।

5. 'रसापकर्षका दोषाः' उक्ति किस आचार्य की है?

- (a) वामन (b) विश्वनाथ (c) मम्मट (d) भरत

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रन्थ साहित्यदर्पण में दोष के लक्षण का वर्णन करते हुए कहते हैं—रसापकर्षका दोषाः अर्थात् रस का अपकर्ष करने वाले कारक दोष कहलाते हैं। रस को साहित्य की आत्मा मानने वाले विश्वनाथ प्रथम संस्कृत आचार्य थे। साहित्यदर्पण में उनका सूत्र वाक्य 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' आज भी साहित्य का मूल माना जाता है और बार-बार उद्धृत किया जाता है।

6. 'सत्यर्थे पृथगर्थ्याः स्वरव्यंजनसंहतेः, क्रमेण तेनैवावृत्तिर्मयं विनिगद्यते।' 'यमक' की यह परिभाषा किस आचार्य ने दी है?

- (a) मम्मट
(b) विश्वनाथ

- (c) राजशेखर
(d) उपर्युक्त में से किसी ने भी नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने यमक अलंकार को परिभाषित करते हुए कहा है कि भिन्न-भिन्न अर्थों वाले सार्थक स्वर-व्यंजन समुदाय की उसी क्रम में आवृत्ति होने को यमक अलंकार कहते हैं।

सत्यर्थे पृथगर्थ्यायाः स्वरव्यंजनसंहते।

क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।

इसका तात्पर्य यह है कि जिस स्वर-व्यंजन समुदाय की आवृत्ति हो, उसका कोई एक अंश अथवा समूचा अंश यदि निरर्थक हो, तो कोई आपत्ति नहीं है, परन्तु यदि उस समुदाय का कोई अंश या सर्वांश सार्थक है, तो आवृत्त (दुहराया गया) अंश अवश्य ही भिन्न अर्थ वाला होना चाहिए। समानार्थक शब्दों की आवृत्ति को यमक नहीं माना जाता है, इस प्रकार यमक के उदाहरण में—

(क) कहीं दोनों पद सार्थक होते हैं, (ख) कहीं दोनों पद निरर्थक होते हैं, (ग) कहीं एक पद सार्थक होता है तथा एक निरर्थक, (घ) यमक में आवृत्ति उसी क्रम में होनी चाहिए, जिस क्रम में पूर्ववर्ती पद प्रयुक्त हुआ है।

उदाहरणार्थ—

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।

मृदुलतान्तलतान्तमलोकवत्स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः॥

(क) यहाँ पर दोनों पद सार्थक हैं जैसे पलाश-पलाश तथा सुरभिं सुरभिम्। परन्तु दोनों ही सार्थक शब्दों के अर्थ भिन्न हैं। यहाँ एक पलाश का अर्थ पत्र से तथा दूसरे पलाश का अर्थ वृक्ष विशेष से है। इसी प्रकार एक सुरभि का अर्थ सुगन्धित तथा दूसरे सुरभि का अर्थ बसंत ऋतु से है।

(ख) इन दोनों पदों में रभिंसुरभिंसु निरर्थक है।

(ग) कहीं एक पद सार्थक है, दूसरा निरर्थक है, जैसे लतान्त-लतान्त में दूसरा 'लतान्त' शब्द ही सार्थक है पहले 'लतान्त' में लकार मृदुल शब्द का अंश है। इसी प्रकार 'पराग-पराग' में बाद वाला पराग शब्द परागत का अंश होने से निरर्थक है।

(घ) उपर्युक्त शब्दों की आवृत्ति एक ही क्रम में हुई है।

7. वक्रोक्ति के विरोधी आचार्य है—

- (a) भामह (b) रुद्रट (c) मम्मट (d) विश्वनाथ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

वक्रोक्ति के विरोधी आचार्य साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य विश्वनाथ संस्कृत काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य थे। इनका पूरा नाम आचार्य विश्वनाथ महापात्र था।
- इनके पिता का नाम चन्द्रशेखर और पितामह का नाम नारायणदास था। महापात्र इनकी उपाधि थी।
- ये कलिंग के रहने वाले थे। इन्होंने अपने आपको 'सन्धिविग्रहिक', 'अष्टादशभाषावारविलासनी भुजंग' कहा है।
- ये अलाउद्दीन के शासनकाल में थे।

राजशेखर

1. 'काव्यमीमांसा' के रचनाकार हैं—

- (a) भारवि (b) भास (c) श्रीहर्ष (d) राजशेखर

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

राजशेखर मुख्य रूप से कवि और नाटककार हैं। उन्होंने चार नाटकों— बालरामायण, बाल भारत, विद्वत्शालभंजिका और कर्पूरमंजरी की रचना की। 'कर्पूरमंजरी' संस्कृत भाषा में न लिखकर प्राकृत भाषा में लिखा गया 'सट्टक' है। इनका पाँचवां ग्रन्थ 'काव्यमीमांसा' है। यह ग्रन्थ साहित्य समीक्षा से सम्बन्ध रखता है। इसी ग्रन्थ के कारण अलंकारशास्त्र के इतिहास में उनको गौरवमय स्थान प्राप्त हुआ है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- काव्यमीमांसा में अष्टादह अध्याय हैं।
- नाट्यशास्त्र के टीकाकार अभिनवगुप्त ने सबसे पहले सट्टक की परिभाषा की और इसे 'नाटिका' के निकट रखा।
- हेमचन्द्राचार्य ने अपने काव्यानुशासन में लिखा है कि सट्टक एकभाषीय होता है। प्रायः सट्टकों का नाम उसकी नायिकाओं के नाम पर दिया गया है।

2. राजशेखर के नाटक का नाम है—

- (a) बालरामायण (b) चण्डकौशिक
(c) नैषधानन्द (d) आचार्य चूड़ामणि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. काव्यशास्त्रीय ग्रंथ 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं -

- (a) भरतमुनि (b) विश्वनाथ
(c) राजशेखर (d) दण्डी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'काव्यमीमांसा' के लेखक हैं—

- (a) रुद्रट (b) भामह (c) राजशेखर (d) दण्डी

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. सट्टक है—

- (a) एक प्रकार का छन्द (b) एक प्रकार की युद्ध शैली
(c) एक प्रकार का नाटक (d) एक प्रकार का गीत

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. राजशेखर की निम्नलिखित रचनाओं में से कौन रचना अधूरी है?

- (a) बालरामायण (b) काव्यमीमांसा
(c) कर्पूरमंजरी (d) विद्धशालभंजिका

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

राजशेखर ने 'काव्यमीमांसा' नामक अपूर्ण ग्रन्थ लिखा।

7. भारतीय समीक्षा के जनक हैं।

- (a) भरतमुनि (b) राजशेखर
(c) विश्वनाथ (d) मम्मट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

राजशेखर भारतीय समीक्षा के जनक माने जाते हैं। संस्कृत में रस, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति आदि सम्प्रदायों के आधार पर सैद्धांतिक समीक्षा का व्यापक रूप से क्रमबद्ध ढंग से विकास हुआ, किन्तु व्यावहारिक समीक्षा लक्षणों के उदाहरणों तक सीमित रही।

कुन्तक

1. निम्न में से कौन किसके लिए प्रसिद्ध नहीं है?

- (a) उपमा के लिए कालिदास (b) करुणा के लिए भवभूति
(c) अलंकार के लिए भामह (d) वक्रोक्ति के लिए क्षेमेन्द्र

T.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' कहकर वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले आचार्य कुन्तक हैं, जबकि औचित्य सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में क्षेमेन्द्र प्रसिद्ध हैं।

2. 'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' के रचयिता हैं—

- (a) आनन्दवर्द्धन (b) कुन्तक (c) दण्डी (d) भामह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'वक्रोक्ति काव्य जीवितम्' कहकर वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले आचार्य हैं—

- (a) विश्वनाथ (b) मम्मट (c) कुन्तक (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के कितने भेद माने हैं?

- (a) पाँच (b) छह (c) सात (d) आठ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति के छह भेद माने हैं। कुन्तक ने वक्रोक्ति को अति व्यापक रूप से ग्रहण किया है। इनकी वक्रता वर्ण से लेकर प्रबन्ध रचना तक व्याप्त है। इन्होंने 'वक्रोक्तिजीवितम्' में वक्रता के छह प्रकारों का वर्णन किया है—वर्ण विन्यास वक्रता, पदपूर्वार्द्ध वक्रता, पदपरार्द्ध वक्रता (प्रत्याश्रित वक्रता), वाक्य वक्रता, प्रकरण वक्रता एवं प्रबन्ध वक्रता है। इस षट् वक्रता प्रकारों का भी भेदोपभेदपूर्वक सविस्तार वर्णन किया है।

पण्डित जगन्नाथ

1. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' परिभाषा किसने दी है?

- (a) भरत (b) जगन्नाथ (c) भामह (d) विश्वनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

पण्डित जगन्नाथ के अनुसार काव्य का लक्षण है—रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द काव्य है।

2. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' निम्नलिखित में से किसका काव्य लक्षण है?

- (a) हेमचन्द्र (b) पण्डितराज जगन्नाथ
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' के प्रवर्तक हैं—

- (a) दण्डी (b) पण्डितराज जगन्नाथ
(c) मम्मट (d) विश्वनाथ

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'रस गंगाधर' किसकी रचना है?

- (a) अभिनव गुप्त (b) भट्ट नायक
(c) पण्डितराज जगन्नाथ (d) भरतमुनि

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

'रस गंगाधर' पण्डितराज जगन्नाथ की रचना है। पण्डितराज जगन्नाथ जी की कृतियों को विषय की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जाता है—(i) काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ (ii) व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ (iii) साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थ। 'रस गंगाधर' 'साहित्य शास्त्रीय ग्रन्थ' के अन्तर्गत आता है। यह आलोचना की दृष्टि से सबसे अधिक प्रौढ़ और पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ है। पण्डितराज जगन्नाथ द्वारा विरचित कृतियाँ हैं—प्रस्तावित विलास, शृंगार विलास, करुण विलास, शान्त विलास, गंगा लहरी, अमृत लहरी, लक्ष्मी लहरी, करुणा लहरी, रस गंगाधर, मनोरमा कुचमर्दन, चित्र मीमांसा खण्डन, आसफ विलास, यमुना वर्णना।

वामन

1. 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः' काव्यगुण का यह सूत्र लिखा है—

- (a) आचार्य भरत ने (b) आचार्य दण्डी ने
(c) आचार्य वामन ने (d) आचार्य मम्मट ने

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

वामन (8-9वीं शती ई.) जिनका स्थान भामह के समान ही साहित्य शास्त्र के इतिहास में विशेष महत्वपूर्ण है। इन्होंने 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहकर 'रीति' को काव्य की आत्मा माना और साहित्य शास्त्र में रीति सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। इनका एकमात्र ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्र' है, जो सूत्र शैली में उपनिबद्ध है। इन सूत्रों पर 'कविप्रिया' नाम की वृत्ति भी वामन ने लिखी है। वामन ने 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः' तथा 'तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः' इन दो सूत्रों को लिखकर गुण अलंकारों के बीच भेदक-रेखा का दिग्दर्शन किया। इससे पूर्व उद्भट आदि विद्वानों का मत था कि संसार में शौर्यादि गुण तथा हारादि अलंकारों में तो विभेद किया जा सकता है, क्योंकि शौर्यादि गुण आत्मा में समवाय सम्बन्ध से तथा हारादि अलंकार शरीर पर संयोग सम्बन्ध से रहते हैं, किन्तु काव्य में ओज आदि गुण तथा उपमादि अलंकार दोनों समवाय सम्बन्ध से ही रहते हैं। अतः उनमें कोई भेद नहीं हो सकता।

2. 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः' काव्यगुण के संदर्भ में यह कथन किस आचार्य का है?

- (a) भामह (b) वामन
(c) मम्मट (d) दण्डी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः'

काव्यगुण के सम्बन्ध में यह कथन है—

- (a) आचार्य मम्मट का (b) आचार्य वामन का
(c) आचार्य भामह का (d) आचार्य कुन्तक का

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्' किसका कथन है?

- (a) दण्डी (b) वामन
(c) कुन्तक (d) मम्मट

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(b)

8वीं शती ईसवी में रीति सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य वामन ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकारसूत्रवृत्ति' में उल्लेख किया है—'काव्यं ग्राह्यमलंकारात्'। सौन्दर्यमलंकारः। अर्थात् काव्य अलंकार के कारण ही ग्रहण करने योग्य है तथा सौन्दर्य ही अलंकार है।

5. रीति सम्प्रदाय से सम्बन्धित काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ है—

- (a) काव्यालंकार सूत्र (b) काव्यादर्श
(c) काव्यालंकार सूत्रवृत्ति (d) काव्यादर्श

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

रीति सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य वामन हैं, जिन्होंने अपनी कृति 'काव्यालंकार सूत्र' में रीति को स्पष्ट शब्दों में काव्य की आत्मा माना है (रीतिरात्मा काव्यस्य)। वामन काव्यशास्त्र में रीति सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। चूँकि 'काव्यालंकार' सूत्र मूलतः सूत्रों में रचित है। अतः उसको अधिकाधिक सुबोध बनाने के लिए स्वयं आचार्य वामन ने ही 'कविप्रिया' नाम से इसका एक भाष्य भी लिखा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- 'रीति' शब्द 'रीड' धातु से 'क्ति' प्रत्यय लगा देने पर बनता है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, पद्धति, प्रणाली या मार्ग है। परन्तु वर्तमान में 'शैली' के रूप में यह अधिक समाहृत है।
- रीति सम्प्रदाय में रीति का अर्थ लगभग वैसा ही है जैसा अंग्रेजी साहित्य में Style का है। हिन्दी में इसका निकटतम पर्याय 'शैली' है। इस प्रकार रीति या शैली को काव्य की आत्मा मानकर काव्य पर विचार करने वाला सम्प्रदाय ही 'रीति सम्प्रदाय' है।

6. रीति सम्प्रदाय से सम्बन्धित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है—

- (a) काव्यालंकार सूत्र (b) काव्यादर्श
(c) काव्यदर्पण (d) काव्यालंकार सूत्रवृत्ति

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं—

- (a) भरतमुनि (b) कुन्तक (c) वामन (d) क्षेमेन्द्र

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

भामह

1. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं—

- (a) दण्डी (b) भामह (c) मम्मट (d) भरतमुनि

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

भारतीय काव्य-सम्प्रदायों में रस के अतिरिक्त शेष सम्प्रदायों में सबसे पुराना अलंकार-सम्प्रदाय ही है। वैसे तो स्वयं भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में चार अलंकारों—उपमा, दीपक, रूपक तथा यमक की विवेचना की है, किन्तु इन्हें अधिक महत्व नहीं दिया। अलंकारों को काव्य की आत्मा घोषित करते हुए पृथक् रूप में अलंकार सम्प्रदाय की स्थापना करने का श्रेय 'काव्यालंकार' के रचयिता भामह को ही प्राप्त है। भरत और भामह

के बीच में राम शर्मा, मेघाविन, राजमित्र आदि विद्वान हो चुके थे, जिन्होंने अलंकारों की चर्चा की थी, किन्तु अनेक ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। इन विद्वानों के नाम केवल भामह के ही 'काव्यालंकार' में आये हैं। ऐसी स्थिति में अलंकार-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भामह ही माने जाते हैं।

2. 'अलंकार सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य थे—

- (a) दण्डी (b) भामह (c) उद्भट्ट (d) राजशेखर

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक कौन थे?

- (a) जयदेव (b) भामह (c) कुन्तक (d) केशव

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. निम्नलिखित में से किस आचार्य ने अलंकार और अलंकार्य में अन्तर माना है?

- (a) भामह (b) कुन्तक
(c) विश्वनाथ (d) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

किसी पदार्थ या वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को अलंकार्य कह सकते हैं, अर्थात् स्वभाव वर्णन ही अलंकार्य है। प्राचीन आलंकारिक भामह, दण्डी, वामन आदि ने अलंकार और अलंकार्य में अन्तर स्थापित कर सम्पूर्ण काव्यसौन्दर्य को 'अलंकार' में समाहित किया है। उन्होंने लिखा है, 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते' तथा 'सौन्दर्यमलंकारः'। स्पष्ट है कि इन आचार्यों के अनुसार, काव्य-शोभा की आर्यवृद्धि में सहायक सभी तत्व अलंकार हैं। इसी से उन्होंने रस को भी रसवत आदि अलंकारों में अन्तर्भूत कर दिया है। भामह के अनुसार, काव्य का प्रस्तुत पक्ष चमत्कार रहित होने के कारण, काव्य न होकर वार्ता मात्र है।

रस और ध्वनि-सम्प्रदाय के अनुयायियों ने शब्द-अर्थ को प्रत्यक्षतः तथा रस को मूलतः अलंकार्य कहा है और उपमा-रूपकदि को अलंकार के नाम से अभिहित किया है। उन्होंने उपमा-रूपक आदि अलंकारों को रस-रूपी अंगी का उत्कर्ष-विधायक कहा है अर्थात् उपमादि अलंकार रस-रूप अलंकार्य को अलंकृत करते हैं।

मम्मट और विश्वनाथ ने प्रकारान्तर से इसी मत का समर्थन किया है। कुन्तक ने अलंकार्य और अलंकार की पृथक्ता का निर्देश अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में किया है। उनके अनुसार, शब्द और अर्थ अलंकार्य होते हैं और चतुरतापूर्ण शैली से कथन रूप वक्रोक्ति ही उन दोनों का अलंकार होती है। हिन्दी के आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी काव्य के प्रस्तुत अर्थ को अलंकार्य कहा है उनके अनुसार, अलंकार्य और अलंकार में अनिवार्य भेद है, जो सर्वथा अमिट है। प्राचीन पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी इस तथ्य को इसी रूप में स्वीकृत किया गया है। अतः स्पष्ट है कि अलंकार और अलंकार्य में भामह ने अन्तर माना है।

5. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्' यह अभिमत है—

- (a) आचार्य रुद्रट (b) पीयूषवर्षी जयदेव का
(c) आचार्य भामह का (d) आचार्य मम्मट का

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

भामह पहले आचार्य हैं, जिन्होंने विधिवत् 'साहित्यशास्त्र' की रचना की। अलंकारों को प्रधानता देते हुए कहा—न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्। भामह ने 38 प्रकार के अलंकार माने हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- आचार्य भामह ने सभी अलंकारों में वक्रोक्ति को प्रधानता दी है।
- अलंकार सम्प्रदाय का प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ भामह का 'काव्यालंकार' है। इस ग्रन्थ के व्यवस्थित प्रतिपादन को देखते हुए कहा जा सकता है कि यह किसी पूर्ववर्तिनी परम्परा पर आधारित है।
- भामह के मन से काव्यत्व के निमित्त अलंकार प्रयोग में एक प्रकार की उक्ति वैचित्र्य अपेक्षित होता है, जिसका सम्पादन कवि प्रतिमा से किया जाता है।

6. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्' यह कथन किसका है?

- (a) रुद्रट (b) भामह
(c) दण्डी (d) मम्मट

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्' इस उक्ति के लेखक हैं—

- (a) भामह (b) दण्डी
(c) उद्भट्ट (d) रुद्रट

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्' परिभाषा किनके द्वारा दी गई है?

- (a) आचार्य दण्डी (b) आचार्य रुद्रट
(c) आचार्य भामह (d) आचार्य विश्वनाथ

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

साहित्यशास्त्र के भीष्मपितामह 'भामह' का काव्य लक्षण सबसे अधिक प्राचीन है। उन्होंने कहा है—'शब्दार्थो सहितौ काव्यम् गद्य पद्यं च तद् द्विधा।' उन्होंने शब्द और अर्थ दोनों के सहभाव को काव्य माना है। वे सहभाव या 'सहितौ' शब्द का क्या अर्थ लेते हैं, इसकी व्याख्या भी उन्होंने नहीं की, पर उनका अभिप्राय यह है कि जिस रचना में वर्णित अर्थ के अनुरूप शब्दों का प्रयोग हो या शब्दों के अनुरूप अर्थ का वर्णन हो। वे शब्द और अर्थ ही 'सहितौ' पद से विवक्षित हैं। वही शब्द और अर्थ का 'साहित्य' है।

9. 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्' किसने कहा है?

- (a) भरत (b) विश्वनाथ
(c) भामह (d) जगन्नाथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने संशोधित उत्तर-पत्रक में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है। प्रारम्भिक उत्तर-पत्रक में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) ही दिया गया था।

10. 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम्'-किसका कथन है?

- (a) कुन्तक (b) वामन
(c) दण्डी (d) भामह

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

□ काव्यलक्षण

1. 'ननु शब्दार्थो काव्यम्' किस आचार्य का काव्यलक्षण है?

- (a) भामह (b) दण्डी
(c) जयदेव (d) रुद्रट

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'ननु शब्दार्थो काव्यम्' यह काव्यलक्षण आचार्य रुद्रट का है। आचार्य भामह ने कहा था "शब्दार्थो सहितौ काव्यम्"। तब से यह विवाद चलता रहा कि काव्य शब्द में या अर्थ में या दोनों में। इस विवाद को एक निर्णयात्मक मोड़ दिया आचार्य रुद्रट ने काव्य का लक्षण करते हुए कहा—'ननु शब्दार्थो काव्यम्' अर्थात् शब्दार्थ निश्चय ही काव्य है। यह विवाद आगे भी चलता रहा है। हेमचन्द्र, विद्यानाथ, वाग्भट्ट, जयदेव, भोज आदि शब्दार्थ के सौन्दर्य को काव्य मानते रहे, हाँ यह स्पष्ट था कि ये सभी भामह और मम्मट के काव्यलक्षण को थोड़े बहुत फेर-बदल के साथ प्रस्तुत करते रहे बाद में अग्निपुराणकार ने कहा, "ध्वनि वर्ण, पद और वाक्य का ही नाम वाङ्मय है, जिसके अन्तर्गत शास्त्र, इतिहास तथा काव्य का समावेश होता है, किन्तु अभिधा के कारण काव्यशास्त्र और इतिहास से अलग होता है।" काव्यलक्षण को उन्होंने परिभाषित करते हुए कहा, "जिस वाक्य समूह में अलंकार स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो तथा जो गुणों से युक्त और दोषों से मुक्त हो, उसे काव्य कहते हैं।"

2. निम्नलिखित आचार्यों को उनके द्वारा निरूपित काव्यलक्षण के साथ सुमेलित कीजिए—

- | | |
|--------------------|---------------------------------------|
| सूची-I
(आचार्य) | सूची-II
(काव्यलक्षण) |
| (क) हेमचन्द्र | (अ) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम् |

(ख) विश्वनाथ

(ब) अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थो काव्यम्

(ग) पण्डितराज जगन्नाथ

(स) शब्दार्थो सहितौ काव्यम्

(घ) भामह

(द) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

कूट :

- | | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| (क) | (ख) | (ग) | (घ) |
| (a) | (ब) | (स) | (अ) |
| (b) | (स) | (द) | (ब) |
| (c) | (ब) | (द) | (अ) |
| (d) | (अ) | (ब) | (द) |

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है—

सूची-I

सूची-II

(आचार्य)

(काव्यलक्षण)

हेमचन्द्र

— अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थो काव्यम्

विश्वनाथ

— वाक्यं रसात्मकं काव्यम्

पण्डितराज जगन्नाथ

— रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्

भामह

— शब्दार्थो सहितौ काव्यम्

□ सन्धि

स्वर सन्धि

1. 'दैत्य + अरिः = दैत्यारिः' एक उदाहरण है—

- (a) व्यंजन सन्धि का (b) स्वर सन्धि का
(c) विसर्ग सन्धि का (d) इनमें से कोई नहीं

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

'दैत्य + अरिः = दैत्यारिः' दीर्घ स्वर सन्धि का उदाहरण है। 'अकः सवर्ण दीर्घः' सूत्र के अनुसार, यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ ही आवे, तो उनके स्थान पर 'सवर्ण दीर्घ' स्वर होता है।

2. 'कृष्णैकत्वम्' शब्द में सन्धि है—

- (a) गुण (b) वृद्धि
(c) अयादि (d) दीर्घ

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'कृष्णैकत्वम्' का सन्धि विच्छेद कृष्ण + एकत्वम् होगा। यह वृद्धि स्वर सन्धि है। 'वृद्धिरेचि' सूत्र के अनुसार, जब 'अ' अथवा 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आवे, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता है। 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आवे, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है।

3. 'सु + आगतम् = स्वागतम्' इस सन्धि में निम्नलिखित में से कौन-सा सूत्र लागू होगा?

- (a) अकः सवर्णे दीर्घः (b) आद् गुणः
(c) इकोयणचि (d) वृद्धिरेचि

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

इकोयणचि (यण सन्धि) —इक् = (इ, उ, ऋ, लृ) को यण् = (य्, व्, र् लृ) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आने पर क्रमशः य्, व्, र् तथा लृ हो जाता है।

जैसे—

सु + आगतम् = स्वागतम्

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

गुरु + आज्ञाः = गुर्वाज्ञा

पितृ + आदेशः = पित्रादेशः

लृ + आकृतिः = लाकृतिः

पितृ + आकृतिः = पित्राकृतिः

धातृ + अंशः = धात्रंशः

4. 'पित्राकृतिः' का शुद्ध सन्धि विच्छेद है—

- (a) पितृ + आकृतिः (b) पित्र + आकृतिः
(c) पितृ + आकृतिः (d) पितृ + आकृतिः

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

5. 'इत्यलम्' में कौन-सी सन्धि है?

- (a) यण (b) गुण (c) वृद्धि (d) दीर्घ

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'इत्यलम्' में यण स्वर सन्धि है। 'इकोयणचि' सूत्रानुसार यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ तथा लृ के बाद असवर्ण स्वर आवे तो इ, उ, ऋ, लृ के स्थान पर क्रमशः य व र ल हो जाते हैं। जैसे—
इति + अलम् = इत्यलम्
इति + आह = इत्याह
दधि + अत्र = दध्यत्र

6. महोत्सवः शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) दीर्घ (b) गुण (c) यण (d) वृद्धि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

महोत्सवः शब्द का सन्धि विच्छेद महा + उत्सवः होता है। यह गुण सन्धि है। गुण संधि (सूत्र-आद्गुणः) में अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ तथा लृ हो, तो क्रमशः ए, ओ, अर् तथा अल् हो जाता है जैसे—
तथा + इति = तथेति, हित + उपदेशः = हितोपदेशः, गंगा + उद्कम = गंगोदकम्, ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः।

7. यदि ए, ओ, ऐ, औ के आगे कोई भी स्वर हो, तो इसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है, तो यह कौन-सी स्वर सन्धि कहलाती है?

- (a) वृद्धि स्वर सन्धि (b) यण स्वर सन्धि
(c) अयादि स्वर सन्धि (d) दीर्घ स्वर सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

यदि ए, ओ, ऐ, औ के आगे कोई स्वर हो, तो इसके स्थान पर क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाता है, यह अयादि (एचोऽयवायावः) स्वर सन्धि कहलाता है। जैसे—

नै + अकः = नायकः

पौ + अकः = पावकः

विष्णो + ए = विष्णवे

8. 'यदि ए, ऐ, औ तथा औ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो इनके स्थान पर क्रमशः 'अय्', 'आय्', 'अव्', 'आव्' हो जाता है। यह सन्धि कौन-सी है?

- (a) दीर्घ (b) गुण (c) वृद्धि (d) अयादि

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

9. 'विष्णवे' का सन्धि विच्छेद है—

- (a) विष्णु + ए (b) विष्णो + ए
(c) विष्णु + अए (d) विष्णु + अवे

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

व्यंजन/हल् सन्धि

1. 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र के अनुसार, श्चुत्व सन्धि का निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण सही है?

- (a) रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति
(b) रामस् + टीकते = रामष्ठीकते
(c) रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

श्चुत्वव्यंजन सन्धि— 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र के अनुसार, जब सकार या त वर्ग शकार या च वर्ग के स्थान पर क्रमशः शकार और च वर्ग हो जाता है, तो वहाँ श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः) या व्यंजन सन्धि होता है जैसे—
रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति
हरिस् + शेते = हरिश्शेते
सत् + चित् = सच्चित्।

2. 'हरिश्चते' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) श्चुत्व सन्धि (b) गुण
(c) विसर्ग (d) चर्त्त सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

3. 'सच्चित्' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) वृद्धि (b) गुण
(c) यण (d) श्चुत्व सन्धि

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. 'उड्डयनम्' का सन्धि विच्छेद होगा—

- (a) उत् + डयनम् (b) उद् + डयनम्
(c) उड् + अयनम् (d) उड् + डयनम्

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

ष्टुत्व (सूत्र-ष्टुनाष्टुः) के अनुसार, यदि 'स' या 'त' वर्ग का 'ष' या 'ट' वर्ग के साथ योग हो, तो 'स' को 'ष' और 'त' वर्ग के स्थान पर 'ट' वर्ग हो जाता है। जैसे—

रामस् + टीकते = रामषटीकते

रामस् + षष्ठ = रामषष्ठः

तत् + टीका = तट्टीका

उत् + डयनम् = उड्डयनम्

आकृष् + तः = आकृष्टः

यत् + टीका = यट्टीका

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

जश्त्व (सूत्र-झलां जशोऽन्ते) के अनुसार, पद के अन्त में झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ श्, ष्, स् तथा ह कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर (ज, ब, ग, ड, द, श) होता है। इसके अतिरिक्त वर्ग के प्रथम, द्वितीय तथा चतुर्थ वर्णों के स्थान पर वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह में ष् के स्थान पर 'ड' आते हैं। जैसे—

वाक् + ईशः = वागीशः

जगत् + ईशः = जगदीशः

सुप् + अन्तः = सुबन्तः

अक् + अन्तः = अजन्तः

दिक् + अम्बर = दिग्म्बर

दिक् + गजः = दिग्गजः

षट् + एव = षडेव

षट् + आननः = षडाननः।

5. गृहं गच्छति शब्द का सन्धि विच्छेद कीजिये?

- (a) गृहम् + गच्छति (b) गृह + गच्छति
(c) गृहय + गच्छति (d) गृह + आगच्छति

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

गृहं गच्छति का सन्धि विच्छेद गृहम् + गच्छति होता है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (a) माना है।

विसर्ग सन्धि

1. 'पितुरिच्छा' शब्द में कौन-सी सन्धि है?

- (a) स्वर सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) गुण सन्धि

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

ससजुषो रुः—पद के अन्तिम स् को रु (र्) होता है तथा सजुष् शब्द के ष को भी रु होता है। [विशेष—इस रु (र्) को साधारणतया अगले नियम में विसर्ग (:) होकर विसर्ग ही शेष रहता है।] यथा—राम + स् = रामः, कृष्ण + स् = कृष्णः। इसी विसर्ग को "अतोरोरप्लुतादप्लुते" हशि च "भौ भगो" सूत्र से उ या य् होता है। जहाँ उ या य् नहीं होगा, वहाँ र् शेष रहता है। अतः अ, आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद स् या विसर्ग का र् शेष रहता है, बाद में कोई स्वर या व्यंजन (वर्ग के द्वितीय, तृतीय, पंचम अक्षर) हों तो। यथा—पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा, हरिः + अवदत् = हरिरवदत्, शिशुः + आगच्छत् = शिशुरागच्छत्, वधूः + एषा = वधूरेषा, गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम्, हरेः + द्रव्यम् = हरेर्द्रव्यम्।

2. मनोरम का सन्धि विच्छेद है—

- (a) मनः + ओरम (b) मन + रम
(c) मनो + रम (d) मनः + रम

T.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुण सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है। जैसे—मनः + रम = मनोरम
मनः + रथ = मनोरथ
सरः + ज = सरोज
पयः + द = पयोद
यशः + धरा = यशोधरा
मनः + योग = मनोयोग
यशः + दा = यशोदा
सरः + वर = सरोवर
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

3. 'कः + अपि' की सन्धि होगी—

- (a) कपि (b) कपिः (c) कर्पि (d) कोऽपि

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

अतो रोरप्लुतादप्लुते सूत्र के अनुसार, ह्रस्व अ के बाद रु (: या र्) को उ हो जाता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो।

नोट—इस उ को पूर्ववर्ती अ के साथ गुण संधि करके ओ हो जाता है और बाद के अ का पूर्वरूप सन्धि हो जाता है (अतएव अः + अ = ओऽ होता है)। जैसे—

कः + अपि = कोऽपि

सः + अपि = सोऽपि

सः + अपठत् = सोऽपठत्

देवः + अधुना = देवोऽधुना

नृपः + अगच्छत् = नृपोऽगच्छत्।

□ समास

1. 'अनुदिनम्' में कौन-सा समास है?

- (a) अव्ययीभाव (b) कर्मधारय
(c) बहुव्रीहि (d) द्वन्द्व

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'अनुदिनम्' में अव्ययीभाव समास है। दिनं दिनम् = अनुदिनम्। अत्रापि तेनैव सूत्रेण यथार्थं वीप्सायां समासः। यद्यप्यत्र दिनस्य पश्चादनुदिनमिति पश्चादर्थेऽपि अव्ययीभावस्य सत्त्वात् अर्थमनुसृत्य वीप्सार्थे समासः।

2. 'प्रतिदिनम्' शब्द का समास विग्रह कीजिये।

- (a) दिनं दिनं च (b) दिनं दिनं प्रति
(c) दिनम् दिनम् (d) दिनं च दिनं

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'प्रतिदिनम्' शब्द का समास विग्रह दिनं दिनं प्रति होगा। यह अव्ययीभाव समास है। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (b) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना है।

3. 'कष्टापन्नः' शब्द में समास है—

- (a) अव्ययी भाव (b) तत्पुरुष
(c) बहुव्रीहि (d) कर्मधारय

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

तत्पुरुष समास वह होता है, जिसमें प्रथम शब्द द्वितीय शब्द की विशेषता बताए (प्रायेणोत्तरपदार्थं प्रधानोत्तत्पुरुषः)। द्वितीया जब श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यन्त, प्राप्त, आपन्न शब्दों के संयोग में आती है, तब द्वितीया तत्पुरुष समास होता है। जैसे—

कृष्णं श्रितः = कृष्णाश्रितः

अग्निं पतितः = अग्निपतितः

कष्टम् आपन्नः = कष्टापन्नः

जीवनं प्राप्तः = जीवनप्राप्तः

प्रलयं गतः = प्रलयगतः

मेघम् अत्यस्तः = मेघात्यस्तः।

4. 'हरित्रातः' समास-पद का विग्रह होगा :

- (a) हरे त्रातः (b) हरौ त्रातः
(c) हरिणा त्रातः (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(c)

'हरित्रातः' समास पद का विग्रह 'हरिणा त्रातः' होगा। इसमें तृतीया तत्पुरुष समास है। इस समास के अन्य उदाहरण हैं—

पित्रा युक्तः = पितृयुक्तः

सर्पेण दष्टः = सर्पदष्टः

शरेण बिद्धः = शरविद्धः

अग्निना दग्धः = अग्निदग्धः

धनेन हीनः = धनहीनः

विद्यया हीनः = विद्याहीनः

5. निम्नलिखित शब्द में नञ् तत्पुरुष समास कौन है?

- (a) रोगमुक्तः (b) राजपुरुषः
(c) अभावः (d) पुत्रहितम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

नञ् तत्पुरुष के पूर्वपद में निषेधार्थक 'अ' या 'अन्' शब्द का प्रयोग होता है। 'अभावः' में नञ् तत्पुरुष समास है। 'रोगमुक्तः' में अपादान तत्पुरुष, 'राजपुरुषः' में सम्बन्ध तत्पुरुष तथा 'पुत्रहितम्' में सम्प्रदान तत्पुरुष समास है।

6. 'अकृतम्' में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) कर्मधारय (c) अव्ययीभाव (d) द्वन्द्व

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

'अकृतम्' में नञ् तत्पुरुष समास है। नञ् तत्पुरुष समास में जब तत्पुरुष में प्रथम शब्द 'न' (नञ्) रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण रहे, तो उसे यह नाम दिया जाता है। यह 'न' व्यञ्जन के पूर्व 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है। जैसे—

न ब्राह्मणः = अब्राह्मण

न गर्दभः = अगर्दभः

न अब्जम् = अनब्जम्

न सत्यम् = असत्यम्

न चरम् = अचरम्

न कृतम् = अकृतम्

न आगतम् = अनागतम्

7. 'युधिष्ठिरः' में कौन-सा समास है?

- (a) तत्पुरुष (b) बहुव्रीहि
(c) अलुक् (d) कर्मधारय

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

जिस समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता, वह अलुक् तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे—मनसागप्ता, जनुषान्ध (जन्मान्ध), परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्, दूरागतः, देवानांप्रियः पश्यतोहरः (देखते-देखते चुराने वाला), युधिष्ठिरः, अन्तेवासी, सरसिजम्, खेवरः आदि।

8. निम्नलिखित में से कर्मधारय समास किसमें है?

- (a) चक्रपाणि (b) चतुर्युगम्
(c) नीलोत्पलम् (d) माता-पिता

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

जब कोई एक खण्ड विशेषण या उपमासूचक शब्द हो, तो कर्मधारय समास बनता है। इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं, क्योंकि विग्रह करने पर इसके दोनों पद एक ही कारक या विभक्ति में होते हैं। जैसे—नीलोत्पलम्, नीलकलम् आदि।

9. 'नीलोत्पलम्' शब्द में समास है—

- (a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

10. नीलोत्पलम् में कौन-सा समास है—

- (a) कर्मधारय (b) बहुव्रीहि
(c) अव्ययीभाव (d) तत्पुरुष

T.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

11. निम्नलिखित में से 'पितरौ' शब्द का कौन-सा समास विग्रह उपयुक्त है?

- (a) माता पिता च (b) माता च पिता
(c) पिता च माता (d) माता च पिता च

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान रहते हैं अथवा उनके समूह का प्रधानत्व रहता है (उभयपद प्रधानो द्वन्द्वः)। द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है—इतरेतर द्वन्द्व, 2. समाहार द्वन्द्व तथा 3. एकशेष द्वन्द्व। पितरौ शब्द का विग्रह 'माता च पिता च' होता है, यह एकशेष द्वन्द्व समास के अन्तर्गत आता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- जहाँ दो या दो से अधिक पदों का योग होता है, वहाँ दो पदों के लिए द्विवचन और अधिक पदों के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। लिंग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। वहाँ इतरेतर द्वन्द्व समास होता है। जैसे—भीमश्च अर्जुनश्च = भीमार्जुनौ, पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ, नरश्च नारी च = नरनार्यौ, रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ।
- जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। इसमें समास करते समय नपुंसकलिंग एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे—पाणी च पादौ च = पाणिपादम्, रथाश्च अश्वाश्च = रथाश्वम्, अहिश्च नकुलश्च = अहिनकुलम्, मथुरा च पाटलिपुत्र च = मथुरापाटलिपुत्रम्, अहः च रात्रि च = अहोरात्रम्।
- जिस सामासिक पद में समान रूप से प्रयुक्त होने वाले शब्दों में से केवल एक पद शेष रह जाता है और अपने भाव को विभक्ति व वचन के अनुसार प्रकट करता है, वहाँ एकशेष द्वन्द्व समास होता है। जैसे—पुत्रश्च पुत्री च = पुत्रौ, हंसश्च हंसी च = हंसौ, युवा च युवती च = युवनौ।

12. 'गोधूमचणकम्' में समास है -

- (a) इतरेतर द्वन्द्व (b) द्विगु
(c) एकरोष द्वन्द्व (d) समाहार द्वन्द्व

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'गोधूमचणकम्' में समाहार द्वन्द्व समास है। इसका विग्रह है—गोधूमश्च चणकश्च = गोधूमचणकम्। इस समास के अन्य उदाहरण हैं—पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (हाथ और पैर) गङ्गा च यमुना च = गङ्गायमुने (गङ्गा और यमुना) गङ्गा च शोणश्च = गङ्गाशोणम् मार्दङ्गिकाश्च पाणविकाश्च = मार्दङ्गिकपाणविकम् यूका च लिखा च = यूकालिक्षम्

13. 'पाणिपादम्' का विग्रह है—

- (a) पाणि च पादम् च (b) पाणौ च पादौ च
(c) पाणिम् च पादम् च (d) पाणी च पादौ च

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

14. 'चन्द्रकान्तिः' शब्द में समास है—

- (a) बहुव्रीहि (b) कर्मधारय
(c) तत्पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

जब समास में आये हुए दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य शब्द के विशेषण स्वरूप रहते हैं, तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि शब्द का यौगिक अर्थ है—बहुः व्रीहिः (धान्यं) यस्य अस्ति सः बहुव्रीहिः (जिसके पास बहुत चावल हों)। इसमें दो शब्द हैं—‘बहु’ और ‘व्रीहि’। प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण है और दोनों मिलकर किसी तीसरे के विशेषण हैं। इसलिए इस समास का नाम ‘बहुव्रीहि’ पड़ा। बहुव्रीहि समास दो प्रकार के होते हैं— 1. समानाधिकरण तथा 2. व्यधिकरण। समानाधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसके दोनों या सभी शब्दों का एक ही अधिकरण (विभक्ति) हो अर्थात् वे प्रथमान्त हों, जैसे—पीताम्बरः = पीतम् अम्बरं यस्य सः (जिसका कपड़ा पीला हो अर्थात् श्री कृष्ण)। व्यधिकरण बहुव्रीहि वह है, जिसमें दोनों शब्द प्रथमान्त न हों; केवल एक ही शब्द प्रथमान्त हो, दूसरा षष्ठी या सप्तमी में हो, जैसे—चन्द्रकान्तिः = चन्द्रस्य कान्तिः इव कान्तिः यस्य सः, चन्द्रशेखरः = चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिवः), चक्रपाणिः = चक्रं पाणौ यस्य सः (विष्णुः)।

15. ‘चक्रपाणिः’ में समास है—

- (a) बहुव्रीहि (b) द्वन्द्व
(c) कर्मधारय (d) द्विगु

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. इन युग्मों में से कौन-सा सही नहीं है?

- (a) नीलोत्पलम् - कर्मधारय समास
(b) दशाननः - बहुव्रीहि समास
(c) रामलक्ष्मणौ - अव्ययीभाव समास
(d) दिवारात्रि - द्वन्द्व समास

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

‘रामलक्ष्मणौ’ में अव्ययीभाव समास नहीं है, बल्कि द्वन्द्व समास है। शेष युग्मों का सुमेलन सही है।

□ विभक्ति

1. ‘विद्यालयं निकषा नदी अस्ति’ में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पंचमी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि अर्थात् अभितः (चारों ओर या सब ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा, प्रति (ओर, तरफ) शब्द जिस शब्द के सम्बन्ध में प्रयुक्त हों, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। प्रस्तुत वाक्य में निकषा का प्रयोग हुआ है। अतः यह द्वितीया विभक्ति है।

2. ‘सह’ के योग में कौन-सी विभक्ति प्रयुक्त होती है?

- (a) तृतीया (b) चतुर्थी
(c) पंचमी (d) षष्ठी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(a)

‘सह’ के योग में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। ‘सहयुक्तेऽप्रधाने’ सूत्र का अभिप्राय यह है कि ‘सह’ के योग में अ प्रधान अर्थात् जो प्रधान (क्रिया के कर्ता) का साथ देता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे पुत्रेण सह पिता गच्छति। यहाँ ‘पुत्रेण’ में तृतीया इसलिए लगी है कि गमन क्रिया के साथ पिता का मुख्य सम्बन्ध है। इसी प्रकार ‘पित्रा सह पुत्रः गच्छति’ में पुत्र प्रधान है और पिता अप्रधान रूप से उसका साथ देता है। अतः उसमें तृतीया हुई। इसी प्रकार साथ’ अर्थ वाले साकम्, सार्धम् और समम् के योग में तृतीया होती है।

3. ‘भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति’ में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) प्रथमा विभक्ति (b) द्वितीया विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) षष्ठी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

येनाङ्गविकारः अर्थात् शरीर का जो अंग विकार से विकृत दिखाई पड़े, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। ‘भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति’ में तृतीया विभक्ति है।

4. ‘गणेशाय नमः’ में प्रयुक्त विभक्ति है—

- (a) प्रथमा (b) द्वितीया
(c) चतुर्थी (d) षष्ठी

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलं वषड्योगाच्च अर्थात् नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। अतः ‘गणेशाय नमः’ में सूत्रानुसार चतुर्थी विभक्ति है।

5. “नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा.....” के योग में प्रयुक्त होती है।

- (a) द्वितीया विभक्ति (b) चतुर्थी विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) पंचमी विभक्ति

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

6. ‘नमःस्वस्तिस्वाहास्वधा.....’ के योग में कौन विभक्ति होती है?

- (a) प्रथमा विभक्ति (b) द्वितीया विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) चतुर्थी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

7. 'नमः शिवाय' शब्द में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) चतुर्थी विभक्ति (b) पंचमी विभक्ति
(c) तृतीया विभक्ति (d) षष्ठी विभक्ति

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

8. 'सर्वस्य, सर्वयोः, सर्वेषाम् - किस विभक्ति के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन के रूप हैं?

- (a) पंचमी (b) षष्ठी
(c) सप्तमी (d) चतुर्थी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

सर्वस्य, सर्वयोः एवं 'सर्वेषाम्' सर्व पुल्लिङ्ग शब्द के षष्ठी विभक्ति के एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन का रूप है। पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप क्रमशः सर्वस्मात् सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः है। चतुर्थी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप क्रमशः है-सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः है। 'सर्वस्मिन्', सर्वयोः एवं सर्वेषु सप्तमी विभक्ति के तीनों वचनों के रूप हैं।

9. 'जगति', जगत् शब्द के किस विभक्ति का रूप है -

- (a) चतुर्थी (b) पंचमी
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2017

उत्तर—(d)

'जगति', 'जगत्' शब्द के सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'जगत्' शब्द का षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन में 'जगत्तौः' और सप्तमी विभक्ति बहुवचन में 'जगत्सु' रूप होता है। 'जगत्' शब्द का पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन में 'जगतः' षष्ठी विभक्ति बहुवचन में 'जगताम्' रूप होता है। 'जगत्' का चतुर्थी विभक्ति एकवचन में 'जगते' रूप होता है।

10. निम्नलिखित में से एक वाक्य में क्रिया 'भक्षण' करने के अर्थ में प्रयुक्त हुई है। यह वाक्य है—

- (a) वह हराम का पैसा खाता है।
(b) वह जूते खाता है।
(c) वह कसम खाता है।
(d) वह आम खाता है।

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(d)

'भक्षण' का अर्थ किसी खाद्य पदार्थ को खाने से होता है। प्रस्तुत विकल्पों में विकल्प (d) में आम खाद्य पदार्थ है। अतः इस वाक्य में 'भक्षण' क्रिया का सर्वोत्तम अर्थ प्राप्त होता है।

□ प्रत्यय

1. 'कृति' शब्द का निर्माण किस प्रत्यय के योग से हुआ है?

- (a) वत् (b) क्तिन्
(c) तव्य (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(b)

कृ (करणे) + क्तिन् > कृति (स्त्री)। संस्कृत में 'कृ' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय जुड़कर शब्द 'कृति' बनता है, जिसका अर्थ है— क्रिया से प्राप्त वस्तु।

2. विभक्तिसूचक प्रत्यय को कहते हैं -

- (a) टिप् (b) सुप्
(c) गुप् (d) टुप्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

विभक्तिसूचक प्रत्यय को 'सुप्' कहते हैं। 'विभक्तिश्च सुपतिङ् विभक्तिसंज्ञौ स्तः' सूत्र के अनुसार, विभिन्न कारक को प्रकट करने के लिए प्रतिपदिकों में जो प्रत्यय लगाये या जोड़े जाते हैं, इन्हें 'सुप्' कहते हैं। इस प्रकार विभिन्न काल की क्रियाओं का अर्थ प्रकट करने के लिए धातुओं में जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उन्हें 'तिङ्' कहते हैं। इन्हीं सुप् और तिङ् को विभक्ति कहते हैं।

3. 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग निम्नलिखित में से किस अर्थ में होता है?

- (a) चाहिए (b) योग्य
(c) के लिए (d) करके

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

तुमुन् प्रत्यय 'को', 'के लिए' अर्थ में होता है। जैसे— पठ् + तुमुन् = पठितुम् (पढ़ने के लिए)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- काल-समय वेलासु तुमुन् इस सूत्र के अनुसार काल, समय और बेला, इन शब्दों के उपपद रहते धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। 'तुमुन्' में मकारोत्तरवर्ती उकार एवं नकार की इत्संज्ञा होने से केवल 'तुम्' ही शेष बचता है।
- तुमुन्-प्रत्यान्त अव्यय होता है। अतः रूप नहीं चलते।

4. 'तव्यत्' और 'अनीयर्' प्रत्यय का प्रयोग होता है—

- (a) करने के अर्थ में
(b) चाहिए के अर्थ में
(c) चुका है के अर्थ में
(d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

‘तव्यत्’ तथा ‘अनीयर्’ प्रत्यय का प्रयोग ‘चाहिए’ के अर्थ में प्रयुक्त होता है। तव्यत् (तव्य) तथा अनीयर् (अनीय्) शेष रहता है। जैसे—
दा + अनीयर् = दानीयम्
पठ् + तव्यत् = पठितव्यम्

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ‘कर्ता’ या ‘वाला’ अर्थ में—ण्वुत्/तृच्-प्रत्यय
- ‘कर’ या ‘करके’ अर्थ में— क्त्वा और ल्यच् प्रत्यय
- तव्यत् कृत्य प्रत्यय है, जो विभिन्न धातु से जुड़कर ‘योग्य’ अथवा ‘चाहिए’ अर्थ का बोध कराते हैं।

5. करणीयः शब्द में कौन-सा प्रत्यय है?

- (a) क्त्वा (b) तव्यत्
(c) अनीयर् (d) तद्धित प्रत्यय

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

विधिलिङ्ग लकार के अर्थ में विधि कृदन्त (तव्यत् तथा अनीयर् इत्यादि) प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग होता है। जैसे—आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः (यह आश्रम का मृग है, इसे नहीं मारना चाहिए, नहीं मारना चाहिए) तथा गृहमागतोऽपि शत्रुनं सम्माननीयः (घर में आए हुए भी शत्रु का सम्मान नहीं करना चाहिए)। ‘चाहिए’ के अर्थ में ‘तव्यत्’ तथा ‘चाहिए’ अथवा ‘योग्य’ के अर्थ में अनीयर् प्रत्यय होता है। तव्यत् का तव्य तथा अनीयर् का अनीय रूप ही धातु के साथ जुड़ता है। धातुओं से तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होने पर धातु के स्वर (इ, उ, ऋ, लृ) को गुण (ए, ओ, अर्, अल्) हो जाता है। जैसे— नो + तव्यत् = नेतव्यः, श्रु + तव्यत् = श्रोतव्यः, कृ + तव्यत् = कर्तव्यः, नी + अनीयर् = नयनीयः, श्रु + अनीयर् = श्रवणीयः, कृ + अनीयर् = करणीयः।

□ शब्द-रूप

1. ‘राज्ञा’ शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) तृतीया (b) चतुर्थी
(c) पंचमी (d) षष्ठी

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

‘राज्ञा’ शब्द तृतीया विभक्ति का एकवचन है। इसका द्विवचन राजभ्याम् तथा बहुवचन राजभिः होता है।

2. ‘राम’ शब्द का तृतीया द्विवचन रूप है—

- (a) रामाभ्याम् (b) रामान्
(c) रामैः (d) रामेभ्यः

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

‘राम’ शब्द का तृतीया द्विवचन रूप ‘रामाभ्याम्’ है, जबकि एकवचन एवं बहुवचन रूप क्रमशः रामेण तथा रामैः है। ‘रामान्’ द्वितीया विभक्ति का बहुवचन का रूप है, जबकि ‘रामेभ्यः’ चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप है।

3. ‘रामेण’ शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) प्रथमा (b) द्वितीया
(c) तृतीया (d) पंचमी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

4. ‘राम’ शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है—

- (a) रामौ (b) रामस्य
(c) रामे (d) रामेषु

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

रामस्य ‘राम’ अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है। ‘रामौ’ प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति के द्विवचन का रूप है। ‘रामे’ सप्तमी एकवचन और ‘रामेषु’ सप्तमी बहुवचन का रूप है।

5. ‘गुरोः’ गुरु शब्द के किस विभक्ति का रूप है?

- (a) पंचमी (b) तृतीया
(c) द्वितीया (d) चतुर्थी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(a)

‘गुरोः’ उकारान्त पुल्लिङ्ग गुरु शब्द के पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। पंचमी विभक्ति के द्विवचन में ‘गुरुभ्याम्’ एवं बहुवचन में ‘गुरुभ्यः’ रूप है। द्वितीया विभक्ति के क्रमशः रूप हैं—गुरुम्, गुरु, गुरुन् । तृतीया विभक्ति एकवचन में ‘गुरुणा’ और बहुवचन में ‘गुरुभिः’ रूप है। चतुर्थी विभक्ति एकवचन में ‘गुरुवे’ और बहुवचन में ‘गुरुभ्यः’ रूप है।

6. ‘मुनि’ शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन रूप है—

- (a) मुनये (b) मुनेः
(c) मुनौ (d) मुन्योः

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘मुनेः’, ‘मुनि’ इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द का पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। ‘मुनये’ चतुर्थी विभक्ति एकवचन, ‘मुनौ’ सप्तमी विभक्ति एकवचन, ‘मुन्योः’ षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन का रूप है।

7. “अर्थवैमल्यं प्रसादः— अर्थ कि विमलता ही प्रसाद गुण है।”

उपर्युक्त परिभाषा किस आचार्य की है—

- (a) आनंदवर्धन (b) रुद्रट
(c) वामन (d) दण्डी

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(c)

वामन ने 10 अर्थ गुण बताए हैं, वे हैं—
अर्थस्यप्रौढिरोजः। अर्थवैमल्यं प्रसादः। घटनाश्लेषः। अवैभ्यं समता। अर्थदृष्टिः
समाधिः। उक्तिवैचित्र्यं माधुर्यम्। अपारुष्यं सौकुमार्यम्। अग्राम्यत-मुदारता।
वस्तुस्वभावस्फुटत्वमर्थव्यक्तिः। दीप्तरसत्वं कान्तिः। 'अर्थवैमल्यं प्रसादः'
का अर्थ है- विमलता ही प्रसाद गुण है।

8. 'पितृ' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है—

- (a) पितृः (b) पितराः
(c) पितरः (d) पितारः

T.G.T. परीक्षा, 2001

उत्तर—(c)

पितरः, पितृ (पिता) ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप है, जबकि प्रथम तीनों वचनों के रूप हैं—पिता, पितरौ, पितरः।

9. इनमें से किस शब्द में सप्तमी विभक्ति एकवचन है?

- (a) जगते (b) नाम्ना
(c) सरिति (d) हरेः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

सरित् (नदी) स्त्रीलिङ्ग शब्द में सप्तमी विभक्ति एकवचन में 'सरिति' रूप होता है, जबकि इसका द्विवचन में 'सरितोः' और बहुवचन में सरित्सु रूप होता है। 'जगते' चतुर्थी विभक्ति एकवचन, 'नाम्ना' तृतीया विभक्ति एकवचन, 'हरेः', 'हरि' शब्द के पंचमी और षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

10. 'रमा' शब्द के रूप की सप्तमी विभक्ति के बहुवचन में होगा—

- (a) रमासु (b) रमाणाम्
(c) रमयोः (d) रमायाम्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'रमासु', रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के सप्तमी विभक्ति का बहुवचन है। 'रमाणाम्' षष्ठी विभक्ति बहुवचन, 'रमयोः' षष्ठी और सप्तमी विभक्ति द्विवचन, 'रमायाम्' सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है।

11. 'मति' शब्द के षष्ठी एकवचन का रूप है—

- (a) मत्या (b) मत्याः
(c) मतयः (d) मतये

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

'मत्या' तथा 'मतेः', 'मति' (बुद्धि) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'मत्या' तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है। 'मतयः' प्रथमा बहुवचन तथा 'मतये' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। इसी प्रकार मत्याम् अथवा मतौ सप्तमी विभक्ति एकवचन एवं मतिषु सप्तमी विभक्ति बहुवचन का रूप है।

12. 'मत्याम्' शब्द रूप है—

- (a) 'मति' शब्द के द्वितीया एकवचन का
(b) 'मति' शब्द के द्वितीया बहुवचन का
(c) 'मति' शब्द के षष्ठी बहुवचन का
(d) 'मति' शब्द के सप्तमी एकवचन का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

13. 'नामन्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन का रूप है—

- (a) नाम्ना नामभ्याम् नामभिः (b) नाम्नः नामभ्याम् नामभिः
(c) नाम्नः नाम्नोः नाम्नम् (d) नाम्ने नामभ्याम् नामभ्यः

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2015

उत्तर—(d)

'नामन्' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन में 'नाम्ने', द्विवचन में 'नामभ्याम्' एवं बहुवचन में 'नामभ्यः' रूप है। 'नाम्नः, नाम्नोः तथा नाम्नाम्', 'नामन्' शब्द के पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों का रूप है। 'नाम्ना, 'नामभ्याम्' तथा नामभिः' तृतीया विभक्ति के तीनों वचनों का रूप है।

14. 'स्वसृ' शब्द के चतुर्थी विभक्ति में दिए हुए रूपों में गलत कौन-सा है?

- (a) स्वस्त्रे (b) स्वसुः
(c) स्वसृभ्याम् (d) स्वसृभ्यः

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

'स्वसृ' शब्द के चतुर्थी विभक्ति में दिए हुए रूपों में स्वसुः गलत है। 'स्वसुः' पंचमी और षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

15. 'आत्मन्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप है—

- (a) आत्मन्ः (b) आत्मभ्यः
(c) आत्मने (d) आत्मनी

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(b)

नकारान्त आत्मन् शब्द के चतुर्थी विभक्ति बहुवचन का रूप 'आत्मभ्यः' है। जबकि इसका एकवचन में 'आत्मने' एवं द्विवचन में 'आत्मभ्याम्' रूप है। 'आत्मन्ः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है।

16. 'आत्मन्' शब्द का चतुर्थी विभक्ति द्विवचन में रूप होगा—

- (a) आत्मभ्याम् (b) आत्माभ्याम्
(c) आत्मानम् (d) आत्मनोः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

17. सही जोड़ी कौन है?

- (a) रमायाम्-प्रथमा बहुवचन (b) गौर्याः-पंचमी एकवचन
(c) वारिणि-द्वितीया द्विवचन (d) गावः-षष्ठी एकवचन

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

रमायाम्—रमा (लक्ष्मी) आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है।

गौर्याः—गौरी, ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का पंचमी एकवचन का रूप है।
वारिणि—वारि (पानी) इकारान्त नपुंसकलिंग शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है।

गावः—गो (गाय या बैल) ओकारान्त पुल्लिंग शब्द का प्रथमा बहुवचन का रूप है।

18. 'जगत' शब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है—

- (a) जगते (b) जगतः
(c) जगतोः (d) जगद्भ्यः

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

जगते—'जगत्' शब्द के चतुर्थी एकवचन का रूप है।

जगतः—पंचमी और षष्ठी एकवचन का रूप है।

जगतोः—षष्ठी और सप्तमी द्विवचन का रूप है।

जगद्भ्यः—चतुर्थी और पंचमी बहुवचन का रूप है।

19. जगतः शब्द रूप में कौन-सा वचन है?

- (a) एकवचन (b) द्विवचन
(c) बहुवचन (d) सभी सही हैं।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

20. 'सरिते' शब्द रूप में कौन-सी विभक्ति है?

- (a) प्रथमा (b) द्वितीया
(c) तृतीया (d) चतुर्थी

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(d)

'सरिते' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। इसका द्विवचन सरिद्भ्याम् तथा बहुवचन सरिद्भ्यः होता है।

21. 'अस्मभ्यम्' शब्द रूप है—

- (a) 'अस्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का
(b) 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का
(c) 'अस्मद्' शब्द के षष्ठी एकवचन का
(d) 'अस्मद्' शब्द के षष्ठी बहुवचन का

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'अस्मद्' शब्द के चतुर्थी बहुवचन का रूप 'अस्मभ्यम्'/'नः', तृतीया एकवचन का रूप 'मया', षष्ठी एकवचन का रूप 'मम'/'मे' तथा षष्ठी बहुवचन का रूप 'अस्माकम्'/'नः' है।

22. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के रूप हैं—

- (a) अहम्, आवाम्, वयम् (b) मया, आवाम्भ्याम्, अस्माभिः
(c) मत्, आवाम्भ्यम्, अस्मत् (d) मम्, आवयोः, अस्माकम्

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'अस्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति का रूप हैं—मया, आवाम्भ्याम्, अस्माभिः। अहम्, आवाम्, वयम् प्रथमा विभक्ति, मत्, आवाम्भ्याम्, अस्मत् पंचमी विभक्ति तथा मम/मे, आवयोः/नौ, अस्माकम्/नः, षष्ठी विभक्ति के रूप हैं।

23. 'अस्मद्' (मैं) शब्द का तृतीया बहुवचन रूप है—

- (a) अस्मान् (b) वयम्
(c) अस्मत् (d) अस्माभिः

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

24. अस्मद् शब्द के पंचमी विभक्ति में दिए हुए रूपों में गलत कौन-सा है?

- (a) मत् (b) आवाम्भ्याम्
(c) अस्मत् (d) अस्मभ्यम्

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

25. 'युष्मद्' शब्द का तृतीया में एकवचन होगा—

- (a) त्वम् (b) त्वाम्
(c) त्वया (d) त्वत्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(c)

'युष्मद्' शब्द का तृतीया विभक्ति एकवचन में 'त्वया' होगा। 'त्वम्', 'युष्मद्' शब्द का प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है। 'त्वाम्' 'युष्मद्' शब्द का द्वितीया विभक्ति एकवचन का रूप है, जबकि इसका द्विवचन में 'युवाम्, वाम् तथा बहुवचन में 'युष्मान्'/'वः' रूप होता है। 'त्वत्' युष्मद् शब्द का षष्ठी विभक्ति एकवचन तथा बहुवचन में 'युष्मत्' रूप होता है।

26. युष्मद् शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिए रूपों में गलत कौन-सा है?

- (a) तव (b) त्वयि
(c) युवयोः (d) युष्मासु

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(a)

'युष्मद्' शब्द के सप्तमी विभक्ति में दिए गए रूपों में 'तव' गलत है। 'तव/ते' षष्ठी विभक्ति का एकवचन का रूप है।

27. 'युष्मद्' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होगा—

- (a) त्वयि (b) तव
(c) त्वम् (d) त्वत्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2015

उत्तर—(b)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

28. 'हरि' शब्द का सप्तमी बहुवचन रूप है—

- (a) हरिभिः (b) हरिभ्यः
(c) हरिषु (d) हरीन्

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'हरि' शब्द का सप्तमी बहुवचन का रूप 'हरिषु' है, जबकि इसका एकवचन में 'हरौ' तथा द्विवचन में 'हर्योः' रूप होता है। 'हरिभिः' तृतीया बहुवचन का रूप है, इसका एकवचन में 'हरिणा' एवं द्विवचन में हरिभ्याम् रूप होता है। 'हरिन्' द्वितीया बहुवचन का रूप है, इसका एकवचन में 'हरिम्' एवं द्विवचन में 'हरी' है। 'हरेः' पंचमी एवं षष्ठी एकवचन का रूप है।

29. 'हरिणा' 'हरिभ्याम्' हरिभिः - किस विभक्ति के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के रूप हैं?

- (a) पंचमी (b) चतुर्थी
(c) तृतीया (d) सप्तमी

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

30. 'हरि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का सही रूप है—

- (a) हरये (b) हरे
(c) हरी (d) हरयोः

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012 कूट :

उत्तर—(a)

'हरि' शब्द के चतुर्थी विभक्ति एकवचन का सही रूप 'हरये' है, जबकि द्विवचन में 'हरिभ्याम्' और बहुवचन में 'हरिभ्यः' रूप होता है।

31. 'इदम्' शब्द (स्त्रीलिंग) के तृतीया विभक्ति एकवचन में रूप होगा—

- (a) अस्यै (b) अस्याः
(c) अनया (d) अनयोः

G.I.C. (प्रवक्ता)परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'इदम्' शब्द (स्त्रीलिंग) के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप 'अनया' अथवा 'एनया' होता है। 'अस्यै' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अस्याः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अनयोः' अथवा 'एनयोः' षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति द्विवचन का रूप है।

32. 'अदस्' (वह) शब्द के स्त्रीलिंग, पंचमी विभक्ति बहुवचन में रूप होगा—

- (a) अमूभ्यः (b) अमुष्याः
(c) अमूः (d) अमुया

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

'अमूभ्यः', अदस् (वह) शब्द के स्त्रीलिंग चतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति बहुवचन का रूप है। 'अमुष्याः' पंचमी एवं षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप है। 'अमूः' प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति बहुवचन, 'अमुया' तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है।

33. 'सर्वस्य' रूप है—

- (a) चतुर्थी का (b) पंचमी का
(c) षष्ठी का (d) सप्तमी का

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

सर्व (सब) सर्वनाम पुल्लिङ्ग एवं नपुंसकलिंग का षष्ठी विभक्ति एकवचन का रूप सर्वस्य है। चतुर्थी एकवचन में सर्वस्मै, पंचमी विभक्ति एकवचन में सर्वस्मात्, सप्तमी एकवचन में सर्वस्मिन् रूप है।

□ धातु रूप

1. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
A. लट् लकार	1. भविष्यत काल
B. लोट लकार	2. वर्तमान काल
C. लङ् लकार	3. आज्ञार्थक
D. लृट् लकार	4. भूतकाल

	A	B	C	D
(a)	3	4	1	2
(b)	3	1	2	4
(c)	1	2	3	4
(d)	2	3	4	1

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

सही सुमेलित क्रम इस प्रकार है—

सूची-I		सूची-II
लट् लकार	-	वर्तमान काल
लोट लकार	-	आज्ञार्थक
लङ् लकार	-	भूतकाल (अनद्यतन भूत)
लृट् लकार	-	भविष्यत काल

2. 'लृट्' लकार किस काल का बोधक है?

- (a) वर्तमान काल का
- (b) भूतकाल का
- (c) भविष्यत् काल का
- (d) किसी काल का नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(c)

लृट् लकार भविष्यत् काल का बोधक है। संस्कृत में धातु के 10 लकार (वृत्तियाँ) होते हैं। ये दसों लकार इस प्रकार से हैं—

लकार	काल का बोधक
लट् लकार	वर्तमान काल
लङ् लकार	भूतकाल (अनद्यतन भूत)
लृट् लकार	भविष्यत् काल
लोट् लकार	आज्ञार्थक
विधिलिङ्	आज्ञा या चाहिए अर्थ
लिट् लकार	अनद्यतन परोक्ष भूत
लुट् लकार	अनद्यतन भविष्यत्
आशीर्लिङ्	आशीर्वाद
लङ् लकार	सामान्य भूतकाल
लृङ् लकार	हेतुहेतुमद् भूत या भविष्यत्
नोट—	'लेट् लकार' वेदों में प्राप्त होता है।

3. लोट् लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है?

- (a) भूतकाल के लिए
- (b) वर्तमान काल के लिए
- (c) आज्ञा व आशीर्वाद के लिए
- (d) चाहिए के अर्थ में

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में लोट् लकार के बारे में हैं, किन्तु उत्तर विकल्प में लोट् लकार एवं आशीर्लिङ् के अर्थ 'आज्ञा व आशीर्वाद के लिए' दिया गया है, जबकि उत्तर रूप में केवल 'आज्ञार्थक' होना चाहिए।

4. 'वेत्ति' आख्यात पद में कौन-सा लकार है?

- (a) लट्
- (b) लोट्
- (c) लृट्
- (d) लङ्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

'वेत्ति' आख्यात पद में लट् लकार है।

5. 'पिब' धातु का लोट् लकार, में प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप होगा—

- (a) पिबत
- (b) पिबन्तु

(c) पिबन्ति

(d) पिबथः

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

'पिबन्तु', 'पिब' धातु का लोट् लकार के प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है। 'पिबथः' लट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है। 'पिबन्ति' लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप तथा पिबत लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है, नोट—'पा' को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पिब हो जाता है।

6. 'अपिबत्' धातु रूप में कौन-सा लकार है?

- (a) लङ् लकार
- (b) लट् लकार
- (c) लोट् लकार
- (d) लृट् लकार

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'अपिबत्', 'पा' धातु लङ् लकार (भूतकाल) प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है तथा प्रथम पुरुष द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः अपिबताम् और अपिबन् है।

7. 'अकरोः' रूप है—

- (a) 'कृ' धातु, लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- (b) 'कृ' धातु, लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
- (c) 'कृ' धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
- (d) 'कृ' धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

T.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(b)

अकरोः 'कृ' धातु लङ् लकार, मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। करोतु 'कृ' धातु लोट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। कुर्वन्ति 'कृ' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है। करिष्यावः 'कृ' धातु लृट् लकार, उत्तम पुरुष द्विवचन का रूप है।

8. 'नी' धातु के 'लङ् लकार' मध्यम पुरुष एकवचन में रूप होगा—

- (a) अनयम्
- (b) अनयन्
- (c) अनयत्
- (d) अनयः

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(d)

'अनयः', 'नी' धातु उभयपदी लङ् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। मध्यम पुरुष के तीनों वचनों का रूप अनयः, अनयताम्, अनयन् है। लङ् लकार प्रथम पुरुष तीनों वचनों का रूप अनयत्, अनयताम्, अनयन् है।

9. स्पर्श धातु के लङ् लकार के मध्यम पुरुष के दिए रूपों में गलत कौन है?

- (a) स्पर्क्ष्यसि
- (b) स्पर्क्ष्यावः
- (c) स्पर्क्ष्यथः
- (d) स्पर्क्ष्यथ

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का स्वरूप ही गलत है। प्रश्न में स्पर्श धातु के लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष का गलत रूप पूछा गया है, जबकि तीन विकल्पों में लृट् लकार के मध्यम पुरुष के तीनों रूप दिए गये हैं और एक विकल्प में स्पर्शधातु दिया गया है, जो उत्तम पुरुष के द्विवचन का रूप है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (b) बताया गया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

10. स्पर्श धातु के लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष में दिए रूपों में गलत कौन है?

- (a) अस्पृशः (b) अस्पृशताम्
(c) अस्पृशतम् (d) अस्पृशत

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(b)

‘स्पर्श’ धातु परस्मैपदी लङ्ग लकार के मध्यम पुरुष में दिए रूपों में ‘अस्पृशताम्’ गलत है। यह लङ्ग लकार के प्रथम पुरुष द्विवचन का रूप है।

11. ‘हस’ धातु के लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन में रूप होगा—

- (a) अहसः (b) अहसतम्
(c) अहसन् (d) अहसताम्

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012, 2015

उत्तर—(b)

‘हस’ धातु के लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन में ‘अहसतम्’ रूप होगा, जबकि इसका एकवचन में ‘अहसः’ एवं बहुवचन में ‘अहसत’ रूप है। ‘अहसन्’ लङ्ग लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप है, जबकि इसका एकवचन में ‘अहसत्’ एवं द्विवचन में ‘अहसताम्’ रूप होता है।

12. पठ् धातु के लङ्ग लकार, उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन-सा होगा?

- (a) अपठाम (b) अपठाम
(c) अपठम (d) अपठन

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अपठाम पठ् धातु के लङ्ग लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है। पठ् धातु के लङ्ग लकार के उत्तम पुरुष तीनों वचनों का रूप है—अपठम्, अपठाव, अपठाम।

13. ‘पठ्’ धातु के वर्तमान काल में मध्यम पुरुष के एकवचन का रूप है—

- (a) पठति (b) पठसि
(c) पठन्ति (d) पठामि

T.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

‘पठ्’ धातु परस्मैपदी वर्तमान काल (लट् लकार) में मध्यम पुरुष एकवचन का रूप ‘पठसि’ है। मध्यम पुरुष के तीनों वचनों के रूप ‘पठसि, पठथः, पठथ’ है। प्रथम पुरुष के तीनों वचनों के रूप ‘पठति, पठतः, पठन्ति’ हैं, जबकि ‘पठामि, पठावः, पठामः’ उत्तम पुरुष का तीनों वचनों का रूप है।

14. पठ् धातु (परस्मैपदी) लृट् लकार के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है—

- (a) पठिष्यतः (b) पठिष्यामः
(c) पठिष्यथ (d) पठिष्यामि

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(d)

‘पठ्’ धातु (परस्मैपदी) लृट् लकार के उत्तम पुरुष एकवचन का रूप ‘पठिष्यामि’ है; जबकि इसका द्विवचन में ‘पठिष्यावः’ एवं बहुवचन में ‘पठिष्यामः’ रूप है।

15. ‘दुह’ धातु के लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप है—

- (a) धोक्षि (b) दोहि
(c) दुग्धसि (d) दुहसि

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

‘दुह’ धातु का लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप धोक्षि होता है, जबकि इसका द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः दुग्धः एवं दुग्ध होता है।

16. ‘स्था’ धातु का लङ्ग लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप होगा—

- (a) तिष्ठत् (b) अतिष्ठति
(c) अतिष्ठन् (d) अतिष्ठत

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

‘स्था’ धातु का लङ्ग लकार परस्मैपद मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है—अतिष्ठत। इसका एकवचन एवं द्विवचन में क्रमशः अतिष्ठः तथा अतिष्ठतम्, होता है।

नोट—स्था का लट्, लोट्, लङ्ग और विधिलिङ्ग में तिष्ठ हो जाता है। स्था का अर्थ है—रुकना या ठहरना।

17. ‘तिष्ठति’ धातु रूप में कौन-सा लकार है?

- (a) लट् लकार (b) लोट् लकार
(c) लङ्ग लकार (d) विधिलिङ्ग

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

‘स्था’ (रुकना) धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) ‘तिष्ठति’ प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है। इसके द्विवचन एवं बहुवचन क्रमशः तिष्ठतः एवं तिष्ठन्ति हैं।

18. 'बभूव' धातु रूप किस लकार का है?

- (a) लङ्ग (b) लुङ्ग
(c) लिट् (d) लिङ्ग

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'बभूव' भ्वादिगण की परस्मैपदी 'भू' (होना) धातु का लिट् लकार (परोक्ष भूत) का प्रथम पुरुष, एकवचन, मध्यम पुरुष, बहुवचन और उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है। 'लङ्ग लकार', अनद्यतन भूतकाल में होता है। आज का भूतकाल होगा, तो लङ्ग नहीं होगा, अपितु लुङ्ग होगा।

19. 'वन्द' धातु के लङ्ग लकार के प्रथम पुरुष के दिए रूपों में गलत कौन सा है?

- (a) वन्दते (b) वन्देते
(c) वन्दये (d) वन्दन्ते

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का स्वरूप ही गलत है। प्रश्न में 'वन्द' धातु के लङ्ग लकार के प्रथम पुरुष का गलत रूप पूछा गया है, जबकि प्रश्न के तीनों विकल्पों में लट् लकार का रूप दिया है। यदि प्रश्न का स्वरूप सही होता अर्थात् लट् लकार के प्रथम पुरुष के लिए गलत रूप पूछा गया होता, तो इसका उत्तर विकल्प (c) अर्थात् वन्दये होता। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने इस प्रश्न का उत्तर अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में विकल्प (c) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यंकन से बहर कर दिया है।

20. 'गमिष्यति' धातु रूप में कौन-सा काल है?

- (a) वर्तमान काल (b) भूतकाल
(c) भविष्यकाल (d) लोट् लकार

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

'गमिष्यति' (गम् धातु) लृट् लकार (भविष्यत् काल) के एकवचन का प्रथम पुरुष है। इसका मध्यम पुरुष गमिष्यसि तथा उत्तम पुरुष गमिष्यामि होता है।

कारक

1. 'प्रजाभयः स्वस्ति' शब्द में कौन-सा कारक है?

- (a) करण (b) सम्प्रदान
(c) अपादान (d) कर्ता

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'प्रजाभयः स्वस्ति' शब्द में सम्प्रदान कारक है जिसका सूत्र 'नमः स्वस्तिस्वाहास्वधातं वषट्छो गाव्य' अर्थात् नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थ वाले अन्य अर्थ) वषट् के साथ चतुर्थी (सम्प्रदान कारक) होती है। जैसे—गुरवे नमः। शिष्याय स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा आदि।

2. 'सहयुक्तेप्रधाने' में कौन-सा कारक है?

- (a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) अपादान

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(c)

क्रिया की सिद्धि में कर्ता के साधकतम को करण कहते हैं और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

सहार्थे तृतीया अथवा 'सहयुक्तेऽप्रधाने'—सह, साकम्, समम्, और सार्धम् के योग से (साथ अर्थ में) अप्रधान पद (गौणपद) में तृतीया विभक्ति होती है। क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध रहने पर शब्द प्रधान और पारस्परिक सम्बन्ध रहने पर अप्रधान होता है। यथा—रामेण सह (साकं साधं समं वा) सीता वनं जगाम (राम के साथ सीता वन गई)। यहाँ सह के योग में 'रामेण' में तृतीया विभक्ति हुई।

3. निम्नलिखित वाक्यों में शुद्ध है—

- (a) मातरं निलीयते कृष्णः (b) मातरि निलीयते कृष्णः
(c) मातुर्निलीयते कृष्णः (d) मात्रा निलीयते कृष्णः

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' सूत्रानुसार, जब कोई अपने को किसी से छिपाता है, तो जिससे छिपाता है, वह अपादान होता है। जैसे—मातुर्निलीयते कृष्णः (कृष्ण अपनी माता से छिपता है) यहाँ पर कृष्ण अपने को 'माता से' छिपाता है, इसलिए 'माता से' अपादान कारक हुआ।

4. 'अर्जुनस्य वचनं द्वयम्' वाक्य में 'अर्जुनस्य' का कारक है—

- (a) करण (b) सम्प्रदान
(c) सम्बन्ध (d) इनमें से कोई नहीं

P.G.T. परीक्षा, 2002

उत्तर—(c)

षष्ठी शेषे 2/3/50 (पाणिनीसूत्र) इस सूत्र का अर्थ यह है कि जो बात विभक्तियों से नहीं बताई जा सकती, उनको बताने के लिए षष्ठी होती है। उदाहरण—अर्जुनस्य वचनं द्वयम् अर्थात् अर्जुन का दुविधापूर्ण मत। यहाँ पर अर्जुन द्वारा बोला गया वचन दुविधापूर्ण है अर्थात् इसमें सम्बन्ध कारक है, इसी को दिखाने के लिए अर्जुनस्य में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग करते हुए सम्बन्ध कारक का प्रयोग किया गया है।

अनुवाद

1. 'छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं।' इसका सही संस्कृत अनुवाद है—

- (a) छात्रः द्वे पुस्तकौ क्रीतः। (b) छात्रः पुस्तकौ अक्रीणात्।
(c) छात्रः द्वौ पुस्तकौ क्रीतः। (d) छात्रः द्वे पुस्तकाणि क्रीयन्ते।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

'छात्र ने दो पुस्तकें खरीदीं।' इसका सही संस्कृत अनुवाद 'छात्रः द्वौ पुस्तकौ क्रीतः' है।

2. 'विद्यालयं निष्ठा जलाशयः अस्ति' का सही अर्थ है?

- (a) विद्यालय से दूर जलाशय है।
- (b) विद्यालय के समीप जलाशय है।
- (c) विद्यालय के थोड़ी दूरी पर विद्यालय है।
- (d) विद्यालय के कोने में जलाशय है।

P.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(b)

'विद्यालयं निष्ठा जलाशयः अस्ति' इसका सही अर्थ है— विद्यालय के समीप जलाशय है।

3. 'रामः गृहं गच्छति' शब्द का हिन्दी अनुवाद कीजिए।

- (a) राम घर जाता है।
- (b) राम घर से आता है।
- (c) राम घर पर आता है।
- (d) राम घर को जाता है।

T.G.T. परीक्षा, 2011

उत्तर—(a)

'रामः गृहं गच्छति' शब्द का हिन्दी अनुवाद है—'राम घर जाता है।'

4. 'हम महान् राष्ट्र के नागरिक हैं' का संस्कृत में अनुवाद होगा—

- (a) वयं भारत राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।
- (b) वयं भारत राष्ट्रे नागरिकः अस्मि।
- (c) वयं महतः भारतस्य नागरिकाः स्म।
- (d) वयं महतः राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(d)

'हम महान् राष्ट्र के नागरिक हैं' का संस्कृत अनुवाद होगा—वयं महतः राष्ट्रस्य नागरिकाः स्म।

5. ज्ञानिभिः सार्धं कदापि न दुह्यते' का अनुवाद है—

- (a) ज्ञानी के साथ बैर अच्छा नहीं होता है।
- (b) ज्ञानियों के साथ बैर नहीं करना चाहिए।
- (c) ज्ञानी के साथ कभी भी बैर नहीं करना चाहिए।
- (d) ज्ञानी जनों के साथ बैर अनुचित है।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(c)

ज्ञानिभिः सार्धं कदापि न दुह्यते का हिन्दी में अनुवाद है—ज्ञानी के साथ कभी भी बैर नहीं करना चाहिए।

6. 'वह बालक उद्यान में विचरण करता है' - इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—

- (a) सः बालकाः उद्यानात् विहरति।
- (b) सः बालकाः उद्याने विहरति।
- (c) सः बालकाः उद्याने विहरन्ति।
- (d) सः बालकः उद्याने विहरति।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(d)

'वह बालक उद्यान में विचरण करता है'—इस वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—सः बालकः उद्याने विहरति। जिस पुरुष और जिस वचन में कर्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन की होगी।

7. 'वह स्नान करके जाती है'—वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—

- (a) सा स्नानं कृत्वा गच्छति।
- (b) सा स्नानं कृत्वा गच्छसि।
- (c) सा स्नानं कृत्वा गमिष्यसि।
- (d) सा स्नानं कृत्वा गच्छाव।

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009

उत्तर—(a)

'वह स्नान करके जाती है'—वाक्य का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—सा स्नानं कृत्वा गच्छति।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

1. क्त्वा प्रत्यय का 'त्वा' शेष रहता है।
2. यह भूतकाल में प्रयोग किया जाता है।
3. 'क्त्वा' प्रत्यय 'करके' अर्थ में प्रयोग किया जाता है।
4. 'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है।

8. 'राम दशरथ के पुत्र थे' का संस्कृत मूल है—

- (a) रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।
- (b) रामः दशरथस्य पुत्रः अस्मिन्।
- (c) दशरथ रामस्य जनकः आसीत्।
- (d) रामस्य दशरथः जनकः अस्मिन्।

T.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

'राम दशरथ के पुत्र थे', का संस्कृत अनुवाद है—रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

9. 'मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष हैं' का संस्कृत में अनुवाद होगा—

- (a) मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
- (b) मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
- (c) मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
- (d) मार्गे वृक्षाः सन्ति।

T.G.T. परीक्षा, 2005, 2009

उत्तर—(a)

उभयसर्वतसोः कार्यधिगुपर्यादिषु त्रिषु।
द्वितीयप्रेडितान्तेषु, ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।
अर्थात् उभयः, सर्वतः, थिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अर्धध्वि शब्दों का जिसमें संयोग हो, तो उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। अतः स्पष्ट है कि 'मार्ग के दोनों तरफ वृक्ष हैं' का संस्कृत अनुवाद मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति होगा।

10. गाँव के चारों ओर जल है,
उपर्युक्त वाक्य का निम्नलिखित में से कौन-सा संस्कृत अनुवाद सही है?

- (a) ग्रामम् परितः जलम् अस्ति।
(b) ग्रामस्य परितः जलम् अस्ति।
(c) ग्रामस्य चहुँदिशासु जलम् अस्ति।
(d) ग्रामस्य चहुँदिशासु जलम् सन्ति।

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(a)

अभितः परितः समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि अर्थात् अभितः (चारों ओर या सब ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा, प्रति (ओर, तरफ) शब्द जिस शब्द के सम्बन्ध में प्रयुक्त हों, उसमें द्वितीया होती है। जिसका अनुवाद इस नियम के आधार पर 'गाँव के चारों ओर जल है' का संस्कृत में अनुवाद 'ग्रामम् परितः जलम् अस्ति' होगा।

11. शुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) ग्रामे परितः वृक्षाः सन्ति। (b) ग्रामस्य परितः वृक्षाः सन्ति।
(c) ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति। (d) ग्रामं परितः वृक्षाः अस्ति।

G.I.C. (प्रवक्ता) परीक्षा, 2012

उत्तर—(c)

उपर्युक्त विकल्पों में 'ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति' वाक्य शुद्ध है। शेष व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है।

12. "गांव के दोनों ओर रास्ते हैं".....का संस्कृत में सही अनुवाद होगा—

- (a) ग्रामस्य परितः मार्गाणि सन्ति।
(b) ग्रामम् उभयतः मार्गो स्तः।
(c) ग्रामम् उभयतः मार्गः सन्ति।
(d) ग्रामस्य उभयतः मार्गो स्तः।

U.P.P.S.C. (एल.टी. ग्रेड) परीक्षा, 2018

उत्तर—(a)

"गांव के दोनों ओर रास्ते हैं" का संस्कृत अनुवाद है—ग्रामस्य परितः मार्गाणि सन्ति।

13. 'गंगा हिमालय से निकलती है' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिए गए हैं, सही वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) गंगा हिमालयोः प्रभवति। (b) गंगा हिमालयम् प्रभवति।
(c) गंगा हिमालयेण प्रभवति। (d) गंगा हिमालयात् प्रभवति।

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'भुवः प्रभवश्च' सूत्र के अनुसार, उत्पन्न वाले का जो 'प्रभव' अर्थात् उत्पत्ति स्थान होता है, वह अपादान कहलाता है।
'गंगा हिमालय से निकलती है' का संस्कृत में अनुवाद होगा—
गंगा हिमालयात् प्रभवति।

14. 'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं' के लिए संस्कृत में चार वाक्य दिए गए हैं, सही वाक्य का चयन कीजिए—

- (a) वृक्षस्य पत्राणि पतन्ति। (b) वृक्षेण पत्राणि पतन्ति।
(c) वृक्षत् पत्राणि पतन्ति। (d) वृक्षे पत्राणि पतन्ति।

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(*)

'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं' के लिए अनुवाद 'वृक्षात् पत्राणि पतन्ति' होगा। यह अपादान पंचमी के अन्तर्गत आता है। उ.प्र.माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में विकल्प (c) सही उत्तर होता, किन्तु वर्तनी त्रुटि के कारण यह त्रुटिपूर्ण है। विकल्प (c) में वृक्षत् के स्थान पर वृक्षात् होना चाहिए। चयन बोर्ड ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) माना था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न को मूल्यांकन से बाहर कर दिया है।

विविध

1. 'सुखदुःखात्मकोरसः' कहने वाले आचार्य हैं—

- (a) भरतमुनि (b) रामचन्द्र गुणचन्द्र
(c) आचार्य विश्वनाथ (d) आनन्द वर्धन

P.G.T. परीक्षा, 2004

उत्तर—(b)

नाट्यदर्पण की 109वीं कारिका है—सुखदुःखात्मकोरसः अर्थात् रस सुख-दुःख स्वभाव वाले होते हैं। नाट्यदर्पण की रचना आचार्य रामचन्द्र और गुणचन्द्र ने किया था। ये दोनों भारतीय नाट्यशास्त्र के आचार्य थे। आचार्य रामचन्द्र और आचार्य गुणचन्द्र दोनों ही जैन विद्वान हेमचन्द्राचार्य के शिष्य थे। दोनों की सम्मिलित रचना 'नाट्यदर्पण' है।

2. "अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः"—यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बन्ध रखती है?

- (a) नीतिशातकम् (b) उत्तररामचरितम्
(c) कादम्बरी-शुकनासोपदेश (d) स्वप्नवासवदत्तम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

प्रस्तुत सूक्ति बाणभट्ट द्वारा प्रणीत कादम्बरी-शुकनासोपदेश से अवतरित है। यह प्रसंग चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर शुकनास द्वारा उपदेश देने के समय का है—"अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः" अर्थात् नवयुवकों की आँखें (अपनी) सफेदी को न छोड़ती हुई भी (सफेद रहती हुई भी) 'सराग' (लाल-कामोन्माद से प्रभावित) हो जाती हैं।

3. कालिदास ने 'सुलभकोपो महर्षिः' किसे कहा है?

- (a) दुर्वासा को (b) परशुराम को
(c) वशिष्ठ को (d) विश्वामित्र को

P.G.T. परीक्षा, 2010

उत्तर—(a)

कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक में शकुन्तला की सखी प्रियंवदा दुर्वासा को—'एषः दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः' (यह हैं अति क्रोधी दुर्वासा) कहती है।

4. 'वामाः कुलस्याधयः' में 'वामाः' शब्द का अभिप्राय है—

- (a) मनोनुकूल व्यवहार करने वाली स्त्रियाँ
- (b) विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ
- (c) सामान्य युवतियाँ
- (d) वक्र स्वभाव वाली स्त्रियाँ

P.G.T. परीक्षा, 2009

उत्तर—(b)

'वामाः' शब्द का अभिप्राय है— 'विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ' तथा 'आधयः' का अर्थ है, 'विपत्ति के कारण स्वरूप'। अर्थात् 'वामाः कुलस्याधयः, का अभिप्राय है—'विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ कुल के लिए अभिशाप होती हैं'। यह प्रकरण अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अंक के 18वें श्लोक में वर्णित है।

5. 'कामार्ता हि प्रकृतिवृष्णाश्चेतनाचेतनेषु'—यह पंक्ति किस ग्रन्थ से है?

- (a) नीतिशतकम्
- (b) शृंगारशतकम्
- (c) मेघदूतम्
- (d) रघुवंशम्

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

प्रस्तुत सूक्ति कालिदास कृत 'पूर्व मेघदूतम्' से अवतरित है। इस सूक्ति का तात्पर्य है—कामपीडित (व्यक्ति) चेतन और जड़ के विषय में स्वभाव से दीन (विवेकशून्य) होते हैं।

6. 'समास की अधिकता ओज कहलाती है' (ओजस्समास-भूयस्त्वम्) यह किसका कथन है?

- (a) भरत
- (b) वामन
- (c) रुय्यक
- (d) दण्डी

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

'ओजस्समास-भूयस्त्वम्' यह कथन आचार्य वामन का है। काव्य में रीति का विशेष महत्व है, क्योंकि वह काव्य शरीर का एकमात्र आधार है। वामन ने वैदर्भी, गौडी एवं पांचाली तीन रीतियाँ मानी हैं। प्रायः यह तीनों ही अधिकांश आचार्यों को मान्य है।

वैदर्भी—माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त, दीर्घ समासों से रहित अथवा छोटे समासों वाली ललितपद रचना का नाम वैदर्भी है।

गौडी—ओज प्रकाश वर्णों से सम्पन्न, दीर्घसमास वाली शब्दाडम्बरवती रीति गौडी होती है।

पांचाली—ओज एवं कान्तिसमन्वित पदों की मधुर सुकुमार रचना को पांचाली कहते हैं।

7. संस्कृत व्याकरण के अनुसार इनमें से एक ही शब्द शुद्ध है -

- (a) नीरोग
- (b) मृत्योपरान्त
- (c) श्राप
- (d) षष्ठम्

आश्रम पद्धति (प्रवक्ता) परीक्षा, 2009, 2012

उत्तर—(a)

संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'नीरोग' शब्द शुद्ध है। इसका सन्धि विच्छेद 'निः + रोग' होता है। मृत्योपरान्त, श्राप तथा षष्ठम् अशुद्ध वर्तनी हैं। इसका शुद्ध वर्तनी क्रमशः मृत्यूपरान्त, श्राप तथा षष्ठम् हैं।

8. इनमें से किके अनुसार 73 अलंकार हैं?

- (a) रुद्रट
- (b) दण्डी
- (c) भामह
- (d) विश्वनाथ

दिल्ली केन्द्रीय विद्यालय (P.G.T.) परीक्षा, 2015

उत्तर—(*)

भरत नाट्यशास्त्र में उपमा, रूपक, दीपक तथा यमक केवल इन चार ही अलंकारों का वर्णन पाया जाता है। रुद्रट ने अपने काव्यालंकार में 52 प्रकार के, दण्डी ने 35 प्रकार के, भामह ने 39 प्रकार के, विश्वनाथ ने 78 प्रकार के, वामन ने 33 प्रकार के, उद्भट ने 40 प्रकार के काव्यप्रकाशकार मम्मट ने 67 प्रकार के, जयदेव ने 'चन्द्रालोक' में 100 प्रकार के, और अप्पय दीक्षित ने अपने ग्रन्थ 'कुवलयानन्द' में 124 प्रकार के अलंकारों का वर्णन किया है।

9. 'प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः' में कर्ता कौन है?

- (a) मध्याः
- (b) उत्तमाः
- (c) नीचैः
- (d) साधारणः

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

'प्रारभ्यते न खलु, विघ्नभयेन नीचैः' नीतिशतक में संकलित अथ धैर्य पद्धतिः से अवतरित है। जिसके लेखक भर्तृहरि हैं। इस उक्ति का अर्थ है कि अधम (नीच) लोग विघ्नों के भय से किसी कार्य को प्रारम्भ नहीं करते हैं। यह सूक्ति विशाखदत्त विरचित 'मुद्राराक्षस' में भी प्राप्त होती है।

10. उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' यह किस उपनिषद् का मन्त्र है?

- (a) कठ
- (b) छान्दोग्य
- (c) प्रश्न
- (d) मुण्डक

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

प्रस्तुत मन्त्र 'कठोपनिषद्' के तृतीय वल्ली से अवतरित है। इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषों के समीप जाकर ज्ञान प्राप्त करो।

11. 'काशिका' है—

- (a) पतंजलि कृत 'महाभाष्य' की टीका
- (b) पतंजलि कृत 'योगसूत्र' की टीका

- (c) पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी' की टीका
(d) भर्तृहरि कृत 'वाक्यपदीय' की टीका

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(c)

अष्टाध्यायी की टीकाओं में सबसे महत्वपूर्ण है। जयादित्य और वामन द्वारा लिखित काशिका है। काशिका के व्याख्याता हरदत्त के अनुसार, काशिका की रचना काशी में हुई थी, इसलिए उसे काशिका कहा गया (काशीषु भवा काशिका)।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- काशिका पाणिनी के सूत्रों की वृत्ति प्रस्तुत करती है अर्थात् सूत्रों की संक्षिप्तता के कारण अर्थ में जो अस्पष्टता है, उसका निराकरण करती है।
- काशिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उसके पहले अष्टाध्यायी पर और भी अनेक वृत्तियाँ थीं, जिनके मतों को काशिका में उपन्यस्त किया गया है, जो अन्यत्र अप्राप्य है।
- गणपाठ का समावेश काशिका की अन्यतम विशेषता है।
- काशिका में सूत्रों के उदाहरण अधिकतर प्राचीन वृत्तियों से लिए गए हैं। अतः उन उदाहरणों का ऐतिहासिक महत्व है।

12. किस रचना में कुट्टनियों का वर्णन किया गया है?

- (a) कादम्बरी (b) मृच्छकटिकम्
(c) दशकुमार चरितम् (d) रत्नावली

P.G.T. परीक्षा, 2003

उत्तर—(b)

कुट्टनी वेश्याओं को कामशास्त्र की शिक्षा देने वाली वृद्धा होती थी। वेश्या संस्था के अनिवार्य अंग के रूप में इसका अस्तित्व पहली बार पाँचवीं शती ई. के आस-पास ही देखने में आता है। इससे अनुमान होता है कि इसका आविर्भाव गुप्त साम्राज्य के वैभवशाली और भोग विलास के युग में हुआ। 'मृच्छकटिकम्' नाटक इसका प्रमाण है, इसमें 10 अंक हैं। इसके रचनाकार महाराज शूद्रक हैं।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कश्मीर नरेश जयापीड के प्रधानमंत्री दामोदर गुप्त ने 'कुट्टनीमतम्' नामक काव्य की रचना की थी। यह काव्य अपनी मधुरिमा, शब्दसौष्ठव तथा अर्थग्राभीर्य के निमित्त आलोचनाजगत् में पर्याप्त विख्यात है, परन्तु कवि का वास्तविक अभिप्राय सज्जनों को कुट्टनी के हथकंडों से बचाना है।
- इसी उद्देश्य से कश्मीर के प्रसिद्ध कवि क्षेमेन्द्र ने भी 'एकादश शतक' में 'समयमातृका' तथा 'देशोपदेश' नामक काव्यों का प्रणयन किया था। इन दोनों काव्यों में कुट्टनी के रूप, गुण तथा कार्य का विस्तृत विवरण है।
- क्षेमेन्द्र ने कुट्टनी की तुलना अनेक हिंसक जंतुओं से की है—वह खून पीने तथा माँस खाने वाली व्याघ्री है, जिसके न रहने पर कामुक जन गीदड़ों के समान उछल-कूद मचाया करते हैं।

13. गद्य-पद्य मिश्रित काव्य को कहते हैं—

- (a) खण्डकाव्य (b) नाट्यकाव्य
(c) चम्पूकाव्य (d) मुक्तककाव्य

P.G.T. परीक्षा, 2005

उत्तर—(c)

'सहैव गमयति प्रयोजयति गद्यपद्ये इति चम्पूः' अर्थात् जिस रचना में गद्य और पद्य का समान भाव से तथा सहयोगपूर्वक प्रयोग किया जाता है, उसे चम्पू कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में चम्पू को इस प्रकार परिभाषित किया है—गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते अर्थात् गद्य और पद्य मिश्रित रचना को चम्पू कहते हैं। अग्नि पुराण में भी चम्पू का प्रयोग मिलता है। चम्पू परम्परा का आरम्भ हमें 'अथर्ववेद' में प्राप्त होता है। उसमें गद्य और पद्य का मिश्रित रूप से प्रयोग मिलता है। चम्पू का सर्वप्रथम पारिभाषिक विश्लेषण दण्डी के काव्यादर्श में प्राप्त होता है। अब तक उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नलचम्पू के रचयिता त्रिविक्रम भट्ट ही सर्वप्रथम काव्य में इस पद्धति के प्रवर्तक हैं।

14. निम्नलिखित में कौन-सा अर्थ-प्रकृतियों के अन्तर्गत नहीं आता?

- (a) कार्य (b) पताका
(c) प्रकरी (d) विषादांत

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

कथानक की एक अवस्था से दूसरी अवस्था के विकास का पता उसकी कुछ प्रमुख घटनाओं से चलता है, जिन्हें 'अर्थ-प्रकृति' कहते हैं। कथा-वस्तु की अवस्थाओं के अनुसार, इसकी संख्या पाँच मानी जाती है—बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य। प्रत्येक अवस्था और अर्थ-प्रकृति में मेल कराने का कार्य सन्धियों द्वारा सम्पन्न होता है, जिनकी संख्या भी 5 मानी गई है—1. मुख, 2. प्रतिमुख, 3. गर्भ, 4. अवमर्श और 5. निर्वहण या उपसंहार। निम्नलिखित तालिका द्वारा अर्थ-प्रकृति, अवस्था एवं संधियों के पारस्परिक सम्बन्ध को अधिक स्पष्टतापूर्वक ग्रहण किया जा सकता है—

अर्थ-प्रकृति	अवस्था	सन्धि
1. बीज	प्रारम्भ	मुख
2. बिन्दु	प्रयत्न	प्रतिमुख
3. पताका	प्रत्याशा	गर्भ
4. प्रकरी	नियताप्ति	विमर्श (अवमर्श)
5. कार्य	फलागम	निर्वहण या उपसंहार

15. नाटक में अर्थ प्रकृतियाँ कितनी मानी गई हैं?

- (a) सात (b) दस
(c) पाँच (d) तीन

डायट (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

16. निम्नलिखित में कौन-सा अर्थोपक्षेपक नहीं है—

- (a) प्रवेशक (b) चूलिका
(c) नियताप्ति (d) विष्कम्भक

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(c)

नियताप्ति अर्थोपक्षेपक नहीं, बल्कि नाटक की पाँच अवस्थाओं में से एक है। नाटक में सारी कथावस्तु को प्रत्यक्ष रूप से रंगमंच पर प्रस्तुत करना कठिन होता है। अतः उसके कुछ अंश की केवल सूचना ही किसी प्रकार दे दी जाती है। इस सूच्य वस्तु की सूचना देने वाले साधनों को 'अर्थोपक्षेपक' कहते हैं। ये पाँच प्रकार के होते हैं।

1. **विष्कम्भक**- नाटक के आरम्भ में या दो अंकों के बीच में दो गौण पात्रों के वार्तालाप द्वारा जब सूचना दी जाती है, तो उसे विष्कम्भक कहते हैं।
2. **चूलिका**- पर्दे के पीछे से दी जाने वाली सूचना को चूलिका कहा जाता है।
3. **अंकास्य**- अंक के अन्त में जहाँ बाहर जाने वाले पात्रों द्वारा अगले अंक की कथा की सूचना दिलाई जाती है, उसे अंकास्य कहते हैं।
4. **अंकावतार**- अंक की समाप्ति के पहले ही अगले अंक की कथा वस्तु को प्रारम्भ करना अंकावतार कहलाता है।
5. **प्रवेशक**- नवागन्तुक निम्नकोटि के पात्र द्वारा दी जाने वाली सूचना को प्रवेशक कहते हैं।

17. सूच्य कथानक को प्रस्तुत करने वाले अर्थोपक्षेपकों की संख्या कितनी होती है?

- (a) तीन (b) चार
(c) पाँच (d) छः

नवोदय विद्यालय (प्रवक्ता) परीक्षा, 2014

उत्तर—(c)

उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

18. निम्नलिखित में कौन कार्यवस्था के अन्तर्गत नहीं है?

- (a) प्रयत्न (b) प्राप्त्याशा
(c) फलागम (d) उत्पाद्य

P.G.T. परीक्षा, 2013

उत्तर—(d)

'उत्पाद्य' कार्यवस्था के अन्तर्गत नहीं आता है। नाटक में जो कार्य प्रारम्भ किया जाता है, उसकी प्रगति के विभिन्न विश्रामों को कार्यवस्थाएँ कहते हैं। ये अवस्थाएँ उसकी गतिविधि को सूचित करती हैं। ये पाँच अवस्थाएँ हैं—आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति तथा फलागम। उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड ने अपने प्रारम्भिक उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (c) दिया था, किन्तु संशोधित उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर विकल्प (d) माना है।

19. 'हे प्रभो' में 'प्रभु' शब्द में कौन-सी विधि है?

- (a) वृद्धि (b) दीर्घ
(c) गुण (d) सम्प्रसारण

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(d)

वेद में 'ऋच' शब्द परे होने पर त्रिका सम्प्रसारण होता है और उत्तरपद के अदि का लोप हो जाता है। 'तिस्त्र ऋचो यस्मिन् तत तृचं सूक्तम्'। जिसमें तीन ऋचाएँ हों, उस सूक्त का नाम 'तृच' है। त्रि + ऋच इस अवस्था में 'वि' का सम्प्रसारण होने पर 'तृ' बना और ऋच् के ऋ का लोप हो गया, तो 'तृचम्' सिद्ध हो गया। अतः प्रभु शब्द में सम्प्रसारण विधि है।

20. वेणीसंहार नाटक का अंगी रस है—

- (a) वीर (b) शृंगार
(c) रौद्र (d) शान्त

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(a)

नाट्यशास्त्र की नियमावली का विधिवत पालन करने के कारण नाट्यशास्त्र के आचार्यों ने भट्ट नारायण को बहुत महत्व दिया है। नाटककार निस्सन्देह घटना-संयोजन में अत्यन्त दक्ष हैं। उनके वर्णन सार्थक और स्वाभाविक हैं। नाटक का प्रधान रस वीर है। गौड़ी रीति, ओज गुण और प्रभावी भाषा इनकी अन्य विशेषताएँ हैं। वेणीसंहार नाटक को नाट्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- वेणीसंहार में छः अंक हैं। इसके पात्र इतिहास प्रसिद्ध हैं।
- नाटक का नायक दुर्योधन है, क्योंकि उसको लक्ष्य में रखकर समस्त घटनाएँ चित्रित हैं। इसीलिए उसके दुःख पराभव और मृत्यु का वर्णन होने से यह एक दुःखान्त नाटक माना जाता है।
- वेणीसंहार की प्रस्तावना में विष्णु, कृष्ण और शिव की स्तुति है।
- शास्त्रीय दृष्टि से 'रत्नावली' के बाद इसी का अत्यधिक महत्व है।

21. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन-सा भाव वाच्य है?

- (a) सः गृहं गतवान्। (b) तेन गृहं गतम्।
(c) सः गृहः अगच्छत्। (d) तेन गृहं गतानि।

P.G.T. परीक्षा, 2000

उत्तर—(b)

जिन वाक्यों में कथ्य के तौर पर भाव अर्थात् अनुभवजन्य स्थिति को प्राधान्य दिया जाता है और उसे क्रिया द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, उन्हें भाव-वाच्य या भाव प्रधान वाक्य कहा जाता है। भाव का अर्थ है वे अनुभव जिन्हें आँख, नाक, कान इत्यादि ज्ञानेन्द्रियों, हाथ, पाँव आदि कर्मेन्द्रियों और मन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। भाषा के माध्यम से इनका सही-सही वर्णन नहीं किया जा सकता केवल इशारा किया जाता है। यथा—तेन गृहं गतम्।

हिन्दी

NET/JRF परीक्षा

चयनित विषय आधारित प्रश्न
जून, 2009 से जुलाई, 2018 तक
सम्पन्न

34 प्रश्न-पत्र

तथ्यात्मक प्रस्तुति

यहाँ जून, 2009 से जुलाई, 2018 के मध्य सम्पन्न NET/JRF के 34 प्रश्न-पत्रों का सार तथ्य रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी प्रश्नों के उत्तरों का मिलान UGC/CBSE द्वारा प्रस्तुत उत्तर-पत्रकों से कर लिया गया है। उत्तर-पत्रकों की त्रुटियों को यथा स्थान उल्लेख किया गया है। इन्हें परीक्षार्थी स्वयं ही जाँच कर देख सकते हैं।

जुलाई - 2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(8 जुलाई, 2018 को सम्पन्न)

- ❧ ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेली एवं मगही में से पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है — मगही
- ❧ सिद्ध-साहित्य के अंतर्गत चौरासी सिद्धों की वे साहित्यिक रचनाएं आती हैं जो — तत्कालीन लोक-भाषा हिन्दी में लिखी गई हैं
- ❧ कबीर के 'निर्गुण पंथ' का आधार भारतीय वेदांत और 'सूफियों का प्रेम तत्व' है। यह विचार है — रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ 'केवल 'प्रेम लक्षणा भक्ति' का आधार ग्रहण करने के कारण कृष्ण भक्ति शाखा में अश्लील विलासिता की प्रवृत्ति जाग्रत हुई। यह विचार है — रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ प्राणचंद चौहान का संबंध है — राम भक्ति शाखा से
- ❧ 'भंवर गीत' रचना है — नंददास की
- ❧ राजनीतिक रूप से रीतिकाल है — मुगल काल के वैभव के चरमोत्कर्ष के बाद उत्तरोत्तर हास और पतन का युग
- ❧ प्रेम संपत्तिलता, श्यामालता, श्यामा सरोजिनी एवं प्रेम प्रलाप में से ठाकुर जगन्मोहन सिंह की रचना नहीं है — प्रेम प्रलाप
- ❧ नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में 'प्रेम संपत्तिलता' दिया गया है, जो गलत है। वास्तव में यह 'प्रेम संपत्तिलता' है। 'प्रेम प्रलाप' भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की कृति है। यही कारण है कि सीबीएसई ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किया है।
- ❧ 'बगियान बसंत बसेरो कियो, बसिए, तेहि त्यागि तपाइए ना। दिन काम-कुतूहल के जो बने, तिन बीच बियोग बुलाइए ना।।' पंक्तियों के रचनाकार हैं — बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
- ❧ 'आज रात इससे परदेशी चल कीजे विश्राम यहीं। जो कुछ वस्तु कुटी में मेरे करो ग्रहण, संकोच नहीं।।' पंक्तियों के रचनाकार हैं — श्रीधर पाठक
- ❧ 'आवारा मसीहा आधारित है — शरत्चन्द्र के जीवन पर
- ❧ 'बर्बरता की पहली सीढ़ी से सभ्यता की अंतिम सीढ़ी तक युद्ध मनुष्य जाति का साथ देता आया है।' यह कथन उद्धृत है — युद्ध और नारी निबंध से
- ❧ ग्रामोफोन का रिकॉर्ड, नीलम देश की राजकन्या, बाहुबली एवं दृष्टिपात कहानी में अति व्यस्त कामकाजी आदमी की असंतुष्ट पत्नी को विषयवस्तु बनाया गया है — ग्रामोफोन का रिकॉर्ड कहानी में
- ❧ नूतन ब्रह्मचारी, परीक्षा गुरु, आदर्श दम्पती एवं प्रणयिनी परिणय उपन्यास में "रईस साहूकार मदनमोहन के अंग्रेजी सभ्यता की नकल और अपव्यय की कथा" है — परीक्षा गुरु में
- ❧ कल्याणी परिणय, राज्यश्री, स्कन्दगुप्त एवं अजातशत्रु में से पर्णदत्त पात्र है, जयशंकर प्रसाद के नाटक — स्कन्दगुप्त का
- ❧ 'हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी'-आलोचना ग्रंथ के लेखक हैं — नंददुलारे बाजपेयी
- ❧ आचार्य भरत के रससूत्र के व्याख्याता शंकुक के सिद्धांत का नाम है — अनुमितिवाद
- ❧ प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म, नोट्स टुवर्ड्स द डेफिनिशन् ऑफ कल्चर, प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म एवं कॉलरिज आन इमैजिनेशन में से आई.ए. रिचर्ड्स द्वारा लिखित नहीं है — नोट्स टुवर्ड्स द डेफिनिशन् ऑफ कल्चर
- ❧ रीतिमुक्त कविता की विशेषताएं हैं — यह आंतरिक अनुभूतियों का काव्य है, यह मूलतः आत्मप्रधान और व्यक्तिगत है तथा यह सभी प्रकार की रुढ़ियों से मुक्त है।
- ❧ मीराबाई के पदों में मुख्य है— अपूर्व भाव विह्वलता, आत्म समर्पण एवं भगवद्विरह की पीड़ा की उत्कट अभिव्यक्ति
- ❧ 'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग — साहित्यिक हिन्दी के अर्थ में होता है, दिल्ली-मेरठ के आस-पास की लोक-बोली के अर्थ में होता है तथा खड़ी बोली का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है।
- ❧ रामधारी सिंह 'दिनकर' का संबंध है — कामाध्यात्म की समस्या, पौराणिक प्रसंग में भारत-चीन युद्ध का युगीन संदर्भ एवं युद्धदर्शन
- ❧ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' से संबंध है — आत्मचेतस बावरा अहेरी एवं जापानी लोक कथा के रचनात्मक उपयोग
- ❧ लहना सिंह, पंडित बुद्धिराम, अमीना एवं सुनन्दा में से प्रेमचन्द्र की कहानियों के पात्र हैं — पंडित बुद्धिराम एवं अमीना
- ❧ कृष्णचन्द्र, सोफिया, हरिप्रसन्न एवं गजाधर में से प्रेमचन्द्र के उपन्यासों के पात्र हैं — कृष्णचन्द्र (सेवा सदन), सोफिया (रंगभूमि), गजाधर (सेवा सदन)
- ❧ आलोक पर्व, माटी हो गई सोना, विचार और वितर्क एवं कुछ उथले कुछ गहरे में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध-संग्रह हैं — आलोक पर्व एवं विचार और वितर्क
- ❧ अपने-अपने पिंजरे, मुड़-मुड़ कर देखता हूं, मेरी पत्नी और भेड़िया एवं गर्दिश के दिन में से दलित आत्मकथाएं हैं — अपने अपने पिंजरे एवं मेरी पत्नी और भेड़िया
- ❧ मादाम बावेरी, जॉन लॉक, सैमुअल पी. हटिंगटन एवं ब्लाड लेवी-स्ट्रॉस में से यथार्थवाद से सम्बद्ध हैं— मादाम बावेरी एवं जॉन लॉक
- ❧ डिक्टेटर, संग्राम, बड़े खिलाड़ी एवं प्रेम की वेदी में से प्रेमचन्द्र द्वारा रचित नाटक हैं — संग्राम एवं प्रेम की वेदी
- ❧ साधारणीकरण के विषय में सही कथन है — साधारणीकरण आत्मन्वत्त्व धर्म का होता है, साधारणीकरण के लिए भोजकत्व व्यापार अनिवार्य है
- ❧ रचनाकाल की दृष्टि से सूफी रचनाओं का सही अनुक्रम है — चांदायन, मृगावती, चित्रावली, अनुराग बाँसुरी
- ❧ जन्मकाल के आधार पर संत कवियों का सही अनुक्रम है — गुरुनानक (1469 ई.), दादू (1544 ई.), मलूकदास (1574 ई.), सुन्दरदास (1596 ई.)

- जन्मकाल के आधार पर रीतिग्रन्थकारों का सही अनुक्रम है
— भूषण, जसवंत सिंह, देव, सूरति मिश्र
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
— श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' एवं रामनरेश त्रिपाठी
- प्रकाशन काल के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
— यशोधरा, कामायनी, कनुप्रिया, उर्वशी
- प्रकाशन काल की दृष्टि से हरिवंशराय बच्चन की रचनाओं का सही अनुक्रम है— निशा निमंत्रण, म्लिन यमिनी, प्रणय पत्रिका, जाल सभेटा
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार कविताओं का सही अनुक्रम है
— प्रलय की छाया, मधुबाला, असाध्य वीणा, पटकथा
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— दिव्या, जहाज का पंछी, अमृत और विष, पहला पड़ाव
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
— एक टोकरी भर मिट्टी, उसने कहा था, राजा निरबंसिया, परिंदे
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध-संग्रहों का सही अनुक्रम है
— शृंखला की कड़ियां, अशोक के फूल, आस्था और सौन्दर्य, कला का जोखिम
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार जीवनीपरक ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
— कलम का सिपाही, कलम का मजदूर, आवारा मसीहा, व्योमकेश दरवेश
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है
— सेतुबंध, आठवाँ सर्ग, एक दूनी एक, रति का कंगन
- प्रकाशन वर्ष के आधार पर आलोचनात्मक कृतियों का सही अनुक्रम है
— हिन्दी साहित्य का आदिकाल, कवि सुमित्रानंदन पंत, मिथक और साहित्य, भारतीय सौन्दर्यबोध और तुलसीदास
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की आलोचनात्मक कृतियों का सही अनुक्रम है
— जयशंकर प्रसाद, आधुनिक साहित्य, कवि निराला, नई कविता
- कालक्रम की दृष्टि से आचार्यों का सही अनुक्रम है
— वामन, कुन्तक, मम्मट, विश्वनाथ
- स्थापना (A) : जिस प्रकार हमारी आँखों के सामने आए हुए कुछ रूप व्यापार हमें रसात्मक भावों में मग्न करते हैं उसी प्रकार भूतकाल में प्रत्यक्ष की हुई कुछ परोक्ष वस्तुओं का वास्तविक स्मरण भी कभी-कभी रसात्मक होता है।
तर्क (R) : क्योंकि तब हमारी मनोवृत्ति स्वार्थ या शरीर यात्रा के रूखे विधानों से हटकर शुद्ध भावक्षेत्र में स्थित हो जाती है।
— (A) सही (R) सही
- स्थापना (A) : साहित्य का इतिहास वस्तुतः मनुष्य-जीवन के अखंड प्रवाह का इतिहास है।
तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य ही साहित्य का अन्तिम लक्ष्य है।
— (A) सही (R) सही
- स्थापना (A) : भूमंडलीकरण विश्व की पूँजीवादी व्यवस्था है।
तर्क (R) : क्योंकि इसमें पूरा विश्व एक बाज़ार है और व्यक्ति उपभोक्ता।
— (A) सही (R) सही

- स्थापना (A) : दलित साहित्य का वैचारिक आधार मार्क्सवाद है।
तर्क (R) : क्योंकि इसमें वर्ग-संघर्ष की हिमायत की गई है।
— (A) गलत (R) गलत
- स्थापना (A) : अस्तित्ववाद सामाजिक कल्याण और सह अस्तित्व का दर्शन है।
तर्क (R) : क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतन्त्रता और चयन की आजादी का पक्षधर है।
— (A) गलत (R) सही
- स्थापना (A) : वासना या संस्कार वंशानुक्रम से चली आती हुई दीर्घ भाव परम्परा का मनुष्य जाति की अन्तः प्रकृति में निहित संवय नहीं है।
तर्क (R) : इसी कारण भारतीय आचार्यों की यह मान्यता पश्चिम की मनोविश्लेषणवादी सामूहिक अवचेतन की अवधारणा से पुष्ट है।
— (A) गलत (R) गलत
- स्थापना (A) : किसी काव्य का श्रोता या पाठक जिन विषयों को मन में लाकर रति, करुणा, क्रोध, उत्साह इत्यादि भावों तथा सौन्दर्य, रहस्य, गांभीर्य आदि भावनाओं का अनुभव करता है, वे अकेले उसी के हृदय से संबंध रखने वाले होते हैं।
तर्क (R) : क्योंकि उपर्युक्त सभी विषय और भाव मनुष्य मात्र की भावात्मक सत्ता पर प्रभाव डालने वाले होते हैं।— (A) गलत (R) सही
- स्थापना (A) : यह दृष्टिकोण पूर्णतः स्थापित है कि 'एकांकी' नाटक का लघु संस्करण है।
तर्क (R) : क्योंकि पूर्णकालिक नाटक को काट छँट कर नाट्यकार्य अथवा नाटकीय संघर्ष का पूर्ण विकास प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है।
— (A) गलत (R) गलत
- स्थापना (A) : वस्तु में सौन्दर्य एक ऐसी शक्ति या ऐसा धर्म है जो द्रष्टा को आन्दोलित और हिल्लोलित कर सकता है और द्रष्टा में भी ऐसी शक्ति है, एक ऐसा संवेदन है, जो द्रष्टव्य के सौन्दर्य से चालित और हिल्लोलित होने की योग्यता देता है।
तर्क (R) : क्योंकि द्रष्टा और द्रष्टव्य में एक ही समानधर्मी तत्त्व अंतर्निहित है।
— (A) सही (R) सही
- स्थापना (A) : नाटक जड़ या रूढ़ नहीं, एक गतिशील पाठ है।
तर्क (R) : क्योंकि वह लिखा कभी जाए, खेला वर्तमान में जाता है।
— (A) सही (R) सही
- स्थापना (A) : कविता में चित्रित प्रेम निजी होता है।
तर्क (R) : क्योंकि प्रेम सामाजिक भाव नहीं है।
— (A) गलत (R) गलत
- स्थापना (A) : चेत्ना अनुभूति की स्रघनता और चिन्तन की पराकाष्ठ है।
तर्क (R) : क्योंकि अनुभूति और चिन्तन का संबंध शुद्ध हृदय के संवेदन से है।
— (A) सही (R) गलत
- स्थापना (A) : श्रद्धा में कारण अनिर्दिष्ट और आलम्बन अज्ञात होता है।
तर्क (R) : क्योंकि श्रद्धा में दृष्टि व्यक्ति के कर्मों से होती हुई श्रद्धेय तक पहुंचती है।
— (A) गलत (R) सही
- स्थापना (A) : छायावाद शुद्ध लौकिक प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है।
तर्क (R) : इसीलिए उसमें राष्ट्रबोध और आध्यात्मिक चेतना न के बराबर है।
— (A) गलत (R) गलत
- स्थापना (A) : भक्ति को 'सा परानुरक्तिरीश्वरो' कहा गया है।
तर्क (R) : इसीलिए भक्ति को साध्यस्वरूपा माना गया है।
— (A) सही (R) सही

स्थापना (A) : मानव और प्रकृति के बीच समानता, पूर्व सम्पर्क, पूरकता या विरोध भाव में मिथक सृजन के सूत्र विद्यमान होते हैं।
 तर्क (R) : क्योंकि प्रकृति में अलौकिकता और दिव्यशक्ति है और मानव कल्पना तथा प्रकृति के मध्य सीधा और अनिवार्य संबंध है।

— (A) सही (R) सही

स्थापना (A) : स्वच्छन्दतावाद छायावाद और रहस्यवाद का पर्याय ही है।
 तर्क (R) : क्योंकि यह द्विवेदी युगीन शास्त्रीयता की प्रतिक्रिया स्वरूप वैयक्तिक कल्पनातिरेक और निजी रहस्यानुभूति का प्रतिफलन है।

— (A) गलत (R) सही

स्थापना (A) : अद्वैतवाद आत्मतत्त्व का विस्तार है।
 तर्क (R) : क्योंकि वह जीव और जगत की पृथक् सत्ता को स्वीकार करता है।

— (A) सही (R) गलत

स्थापना (A) : आधुनिकता कोई शाश्वत मूल्य नहीं, वह मूल्यों के परिवर्तन का पर्याय है।

तर्क (R) : क्योंकि बदलाव की प्रक्रिया में हर युग आधुनिक होता है।

— (A) सही (R) सही

स्थापना (A) : देश भक्ति, संस्कृति-राग, चरित्रों की उदात्तता, भाषिक गरिमा और लम्बी कालावधि के विस्तृत कथानक के कारण जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त' महाकाव्योचित औदात्य से परिपूर्ण नाटक है।

तर्क (R) : साथ ही उसमें ब्रेख्त के महानाट्य (एपिक थियेटर) की सम्पूर्ण विशेषताएँ भी मिलती हैं।

— (A) सही (R) गलत

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

खड़ीबोली —
 ब्रजभाषा —
 बांगड़ू —
 अवधी —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

अवहट्ट —
 ब्रजभाषा —
 अवधी —
 खड़ीबोली —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

नगर बाहिरे डोंबी तोहरि कुड़िया छाड़ —
 काआ तरुवर पंच बिड़ाल —
 कडुवा बोल न बोलिस नारि —
 मोरा जोबना नवेलरा भयो है गुलाल —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

ओनई घटा, परी जग छाहाँ—
 आवत जात पनहियाँ टूटी —
 अति मलीन वृषभानु कुमारी—
 कीरति भनिति भूतिभल सोई —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

अद्वैतवाद —
 विशिष्टद्वैतवाद —

सूची-II

बिजनौर —
 आगरा —
 करनाल —
 सुल्तानपुर —

सूची-II

कीर्तिलता —
 भंवर गीत —
 मधुमालती —
 प्रिय प्रवास —

सूची-II

कण्हापा —
 लूहिपा —
 नरपति नाल्ह —
 खुसरो —

सूची-II

जायसी —
 कुंभनदास —
 सूर दास —
 तुलसीदास —

सूची-II

रैदास —
 तुलसीदास —

शुद्धद्वैतवाद —

सखी संप्रदाय —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

जपुजी —
 रसमंजरी —
 बरवै नायिका भेद —
 वैराग्य संदीपनी —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

शिवराज भूषण —
 छत्र प्रकाश —
 बिरहवारीश —
 काव्य निर्णय —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

रस सागर —
 रस चंद्रोदय —
 रसराज —
 रसपीयूष निधि —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

दुःख ही जीवन की कथा रही —
 क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं। —
 मैं दिन को ढूँढ रही हूँ —
 जुगनु की उजियाली में; —
 मन माँग रहा है मेरा —
 सिकता हीरक-प्याली में! —
 रोज-सबरे मैं थोड़ा-सा अतीत में जी लेता हूँ —
 क्योंकि रोज शाम को मैं थोड़ा-सा भविष्य में मर जाता हूँ। —
 बिखरी अलकें ज्यों तर्क-जाल —

वह विश्व मुकुट-सा उज्ज्वलतम शशिखंड

सदृश्य था स्पष्ट भाल।

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

कर्ण —
 कमला —
 औशीनरी —
 राहुल —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

अज्ञेय —
 बच्चन —
 रघुवीर सहाय —
 सुमित्रानंदन पंत —

कुंभनदास

हरिदास

सूची-II

नानक —
 नंददास —
 रहीम —
 तुलसीदास —

सूची-II

अलंकार निरूपण —
 जीवन चरित —
 रीति स्वच्छंदवृत्ति —
 सर्वांग निरूपण —

सूची-II

श्रीपति —
 कवीन्द्र —
 मतिराम —
 सोमनाथ —

सूची-II

निराला —
 महादेवी वर्मा —

अज्ञेय

प्रसाद

सूची-II

रश्मिरथी —
 प्रलय की छाया —
 उर्वशी —
 यशोधरा —

सूची-II

पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ —
 सतरंगिनी —
 सीढ़ियों पर धूप में —
 कला और बूढ़ा चाँद —

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

लक्ष्मीकांत वर्मा
नरेश
शंभुनाथ सिंह
केदारनाथ अग्रवाल

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

आकाशदीप
दिल्ली में एक मौत
उसने कहा था
गैंग्रीन

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

अजय की डायरी — विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि
अन्तराल — रन्नी-पुरुष संबंधों में जटिलता
बसन्ती — महानगरों में बसी गंदी बस्तियों का चित्रण
महाभोज — समकालीन राजनीतिक परिवेश

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

कहनी-अनकहनी — धर्मवीर भारती
गंधमादन — कुबेर नाथ राय
जीप पर सवार इल्लियां — शरद जोशी
मिट्टी की ओर — रामधारी सिंह दिनकर

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

उर्वी — पहला राजा
सुन्दरी — लहरों के राजहंस
वेनुरती — सूर्यमुख
देवसेना — स्कंदगुप्त

सूची-II

अकविता
नकेनवाद
नवगीत
प्रगतिवाद

सूची-II

बुद्धगुप्त
अतुल
बोधसिंह
मालती

सूची-II

अजय की डायरी — विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि
अन्तराल — रन्नी-पुरुष संबंधों में जटिलता
बसन्ती — महानगरों में बसी गंदी बस्तियों का चित्रण
महाभोज — समकालीन राजनीतिक परिवेश

सूची-II

धर्मवीर भारती
कुबेर नाथ राय
शरद जोशी
रामधारी सिंह दिनकर

सूची-II

पहला राजा
लहरों के राजहंस
सूर्यमुख
स्कंदगुप्त

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

(उपन्यास)

सूरज का सातवाँ घोड़ा
मैला आंचल
एक इंच मुस्कान
तमस

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

हम-हशमत
बच्चन निकट से
माटी की मूरतें
चीड़ों पर चौदनी

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

(काव्यांश)

“रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चूना”
“बंसी धुन सुनि बृज वधू चली बिसार विचार
भुज भूषन पहिरे पगनि भुजन लपेटे हार।
“जिन दिन देखे वे कुसुम गई सु बीति बहार
अब अति रही गुलाब की अपत कँटीली डार।”
“उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग,
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।”

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

उत्तर-संरचनावाद
यथार्थवाद
स्वच्छंदतावाद
उत्तर-आधुनिकतावाद

सूची-II

(पत्र)

माणिक मुल्ला
विश्वनाथ प्रसाद
रंजना
इला

सूची-II

कृष्णा सोबती
अजित कुमार
रामकृष्ण बेनीपुरी
निर्मल वर्मा

सूची-II

(अलंकार)

— श्लेष
— असंगति
— अन्योक्ति
— रूपक

सूची-II

लुई अल्थ्युसर
जार्ज लुकाच
राबर्ट बर्न्स
फ्रेडरिक जेमसन

जुलाई - 2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(22 जुलाई, 2018 को सम्पन्न)

संस्कृत, प्राकृत, फ़ारसी एवं अरबी में से आर्यभाषा-परिवार की भाषा नहीं है — अरबी

विद्यापति के अनुसार पुरानी हिन्दी, देशी भाषा, प्राकृताभास हिन्दी एवं राजस्थानी में से अपभ्रंश से भिन्न, प्रचलित बोलचाल की भाषा है — देशी भाषा

‘पद्मावती समय’ एक अंश है — पृथ्वीराज रासो काव्यग्रंथ का

‘कवित्त सवैया’ के विषय में हजारी प्रसाद द्विवेदी की मान्यता है कि मूलतः ये छंद — गंदीजन के हैं

सखी-संप्रदाय का उपास्य तत्त्व है — रूप और प्रेम

‘पुष्टि मार्ग’ है — भगवान के अनुग्रह का मार्ग

श्रीसंप्रदाय, सखी संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय एवं गौड़ीय संप्रदाय में से ‘रसखान’ का संबंध है — किसी भी संप्रदाय से नहीं

नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न का उत्तर परीक्षा संस्था ने निम्बार्क संप्रदाय दिया है, जबकि डॉ. नगेन्द्र की पुस्तक ‘हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं बच्चन सिंह की पुस्तक ‘हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास’ में रसखान को संप्रदाय निरपेक्ष कवि बताया गया है।

‘रामायण’ काव्य के रचयिता हैं — विश्वनाथ सिंह

वृन्द द्वारा रचित सतसई का नाम है — यमक सतसई

‘गीतिका’ का रचनाकाल है — 1936 ई.

‘उद्धव-शतक’ के रचनाकार हैं — जगन्नाथ दास ‘रत्नाकार’

‘और अब छीनने आए हैं वे,

हमसे हमारी भाषा

यानी हमसे हमारा रूप,

जिसे हमारी भाषा ने गढ़ा है।

- ‘प्रस्तुत काव्य-पंक्तियों के रचयिता हैं — सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
- ‘घर की बात’ आत्मकथा है — रामविलास शर्मा की
- “अनुभूति के द्वन्द्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है। उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है।” उक्त कथन है — भाव या मनोविकार निबंध से
- जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित पहली कहानी है — ग्राम
- लाला भगवानदास और उनके परिवार की कथा वर्णित है — वामशिक्षक उपन्यास में
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी रचना को नाट्यरासक कहा है — भारत दुर्दशा को
- रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा रचित आलोचना ग्रंथ नहीं है — साहित्य क्यों?
- हिन्दी जाति का साहित्य, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, यथार्थवाद एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण में से रामविलास शर्मा द्वारा लिखित नहीं है — यथार्थवाद
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्यावहारिक आलोचना का आदर्श रूप मिलता है — उनकी पुस्तक गोस्वामी तुलसीदास में
- हठयोग में प्रयुक्त ‘सहस्रार चक्र’ के लिए इस्तेमाल होने वाले अन्य शब्द हैं — शून्य चक्र, गगन मंडल एवं कैलास
- कवि सुमित्रानन्दन पंत से सम्बन्ध है— प्रकृति प्रेम, छायावाद, अरविन्द दर्शन
- जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में चित्रित किया है कि— श्रद्धा प्रेम और करुणा का प्रवर्तन करने वाली है, इड़ा या बुद्धि कभी में उलझाने वाली है।
- हरिवंशराय बच्चन से संबंधित हैं — विषादकाव्य एवं मधुकाव्य
- जनवादी कवि हैं — धूमिल (अन्य कवि- वेणु गोपाल, विजेन्द्र, ज्ञानेन्द्र एवं कुमार विकल)
- पिसनहारी का कुआँ, परदा, मनोवृत्ति एवं प्रतिध्वनि में से प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी नहीं है — परदा एवं प्रतिध्वनि
- सत्यधन, श्रीकान्त, रामेश्वर एवं जितेन में से जैनेन्द्र द्वारा रचित उपन्यासों के पात्र हैं — सत्यधन, श्रीकान्त एवं जितेन
- हरिशंकर परसाई द्वारा रचित निबन्ध-संग्रह है— अपनी-अपनी बीमारी
- नोट- यूजीसी/सीबीएसई ने इस प्रश्न का उत्तर निबंध-संग्रह के रूप में ‘अपनी-अपनी बीमारी’ तथा ‘हँसते हैं रोते हैं’ माना है, ‘जबकि हँसते हैं रोते हैं, कहानी संग्रह है।
- आचार्य दण्डी द्वारा रचित पुस्तकें हैं — अवन्तिसुन्दरी-कथा एवं काव्यादर्श
- अन्या से अनन्या, वट वृक्ष की छाया में, गालिब छुटी शराब एवं अपनी खबर में से आत्मकथाएँ हैं — अन्या से अनन्या, गालिब छुटी शराब एवं अपनी खबर
- काव्यात्मक शैली में लिखे गए नाटक हैं — अंधा युग, सूखा सरोवर एवं एक कंठ विषपायी
- लक्षणा शक्ति के लिए आवश्यक कथन हैं— मुख्यार्थ या वाच्यार्थ की बाधा, लक्ष्यार्थ का मुख्यार्थ से संबंधित होना
- टी.एस. इलियट, फ्रैंक करमोड, सी.डी. लेविस, कलोन्य ब्रुक्स में से मुख्यतः बिम्ब से संबंधित ग्रंथों के लेखन से संबंधित हैं — फ्रैंक करमोड, सी.डी. लेविस

- रचनाकाल की दृष्टि से काव्य-कृतियों का सही अनुक्रम है — माधवानल कामकंदला, हित तरंगिणी, प्रेम वाटिका एवं वृंद सतसई
- रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है — गीजक, साहित्य-लहरी, रामचरित मानस, रसिक प्रिया
- प्रकाशन-काल की दृष्टि से सुमित्रानंदन पंत के काव्य-संग्रहों का सही अनुक्रम है — उत्तरा, अतिमा, लोकायतन, सत्यकाम
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कविता-संग्रहों का सही अनुक्रम है — आँगन के पार द्वार, चाँद का मुँह टेढ़ा है, आत्महत्या के विरुद्ध, चुका भी हूँ नहीं मैं
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कविताओं का सही अनुक्रम है — परिवर्तन, सरोज स्मृति, ब्रह्म राक्षस, बाघ
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार, उपन्यासों का सही अनुक्रम है — आधा गाँव, लाल टीन की छत, मय्यादास की माड़ी, समय-सरगम
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है — फाँसी, शरणार्थी, एक और जिन्दगी, मांस का दरिया
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है — पश्यन्ती, तमाल के झरोखे से, वाद विवाद-संवाद, शब्दिता
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार, संस्मरण-ग्रंथों का सही अनुक्रम है — सृजन के हेतु, सप्तपर्णी, वे देवता नहीं हैं, चिड़िया रैन बसेरा
- प्रकाशन-वर्ष के अनुसार भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है — हानूश, माधवी, मुआवजे, आलमगीर
- रामविलास शर्मा की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियों का प्रथम प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से सही अनुक्रम है — आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, भाषा और समाज, नई कविता और अस्तित्ववाद, भारत में अंग्रेजीराज और मार्क्सवाद
- कालक्रम की दृष्टि से अवधारणाओं का सही अनुक्रम है — विलियम ब्लेक, फर्डिनांड द सास्युर, माइकेल फूको, जॉक देरिदा
- सही सुमेलित हैं—
- | | | |
|------------------|---|----------------|
| सूची-I | | सूची-II |
| पूर्वी हिन्दी | — | बघेली |
| बिहारी हिन्दी | — | मगही |
| पश्चिमी हिन्दी | — | कन्नौजी |
| राजस्थानी हिन्दी | — | मेवाती |
- सही सुमेलित हैं—
- | | | |
|-------------------------------------|---|--------------------|
| सूची-I | | सूची-II |
| हिन्दी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास | — | रामकुमार वर्मा |
| हिन्दी-साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास | — | गणपति चन्द्र गुप्त |
| हिन्दी-साहित्य का आधा इतिहास | — | सुमन राजे |
| हिन्दी-साहित्य का दूसरा इतिहास | — | बच्चन सिंह |
- नोट- यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में ‘रामकुमार वर्मा’ के स्थान पर ‘राजकुमार वर्मा’ दिया गया है, जो गलत है। हालांकि परीक्षा संस्था ने इसी को आधार मानते हुए उत्तर विकल्प का चयन किया है।

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

चर्यपद	—
श्रावकाचार	—
योगचर्या	—
दोहाकोष	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

बिगसा कुमुद देखि सति रेखा	—
मेरे नयना विरह की बेल बई	—
कवित बिबेक एक नहिं मोरें	—
कायानगरी बनी अति सुंदर	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

गौड़ीय सम्प्रदाय	—
राधावल्लभ सम्प्रदाय	—
सखी सम्प्रदाय	—
मध्व सम्प्रदाय	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

रणमल्ल छंद	—
विजयपाल रासो	—
राणा रासो	—
रतन रासो	—

नोट : यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में विकल्प में दयाराम दिया है, जो गलत है।

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

जगद्धिनोद	—
भाषा भूषण	—
भाव विलास	—
अलंकार माला	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

आरस सो आरत, संभारत न शीश पर....	—
अलि हों तो गई जमुना जल को....	—
जा थल कीने बिहार अनेकन...	—
वा निरमोहिनि रूप की रासि...	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

नचिकेता	—
जाम्बवंत	—
मानव	—
वज्रकीर्ति	—

सूची-II

शबरपा	—
देवसेन	—
डोंबिपा	—
सरहपा	—

सूची-II

जायसी	—
सूर दास	—
तुलसीदास	—
कबीर	—

सूची-II

चैतन्य महाप्रभु	—
हित हरिवंश गोस्वामी	—
स्वामी हरिदास	—
मध्वाचार्य	—

सूची-II

श्रीधर	—
नल्हसिंह	—
दयालदास	—
कुंभकर्ण	—

सूची-II

पद्माकर	—
जसवंत सिंह	—
देव	—
सुरति मिश्र	—

सूची-II

पद्माकर	—
मंडन	—
आलम	—
ठाकुर	—

सूची-II

आत्मजयी	—
राम की शक्ति पूजा	—
कामायनी	—
असाध्य वीणा	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

विष्णुप्रिया	—
आराधना	—
दीपशिखा	—
लोग भूल गए हैं	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

दिनकर	—
निराला	—
पंत	—
महादेवी	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

ओ चिंता की पहली रेखा,	—
अरी विश्व वन की व्याली	—
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण	—
कर, करता मैं तेरा तर्पण	—
रूप की आराधना का मार्ग	—
आलिंगन नहीं तो और क्या है?	—
पिस गया वह भीतर	—
औ, बाहरी दो कठिन पाटों बीच,	—
ऐसी ट्रेजडी है नीच !!	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

गजाधर बाबू	—
सिद्धेश्वरी	—
बिरजू	—
जोखू	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

(वर्ण्य विषय)	—
मृत्यु से साक्षात्कार	—
करनट जाति का जीवन-यथार्थ	—
जमींदारों द्वारा किसानों की बेदखली	—
दलित जीवन की नाटकीय	—
वास्तविकताओं का चित्रण	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

नन्द दुलारे वाजपेयी	—
विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	—
इन्द्रनाथ मदान	—
भगीरथ मिश्र	—

सूची-II

मैथिलीशरण गुप्त	—
निराला	—
महादेवी वर्मा	—
रघुवीर सहाय	—

सूची-II

परशुराम की प्रतीक्षा	—
सांध्य-का कली	—
लोकायतन	—
नीरजा	—

सूची-II

कामायनी	—
सरोज-स्मृति	—

सूची-II

उर्वशी	—
ब्रह्मराक्षस	—

सूची-II

वापसी	—
दोपहर का भोजन	—
लाल पान की बेगम	—
ठाकुर का कुआँ	—

सूची-II

(उपन्यास)

अपने-अपने अजनबी	—
कब तक पुकारूँ	—
रतिनाथ की चाची	—
नाच्यो बहुत गोपाल	—

सूची-II

राष्ट्रभाषा की कुछ समस्याएँ	—
हिन्दी का सामयिक साहित्य	—
कुछ उथले कुछ गहरे	—
कला साहित्य और समीक्षा	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

कोर्ट मार्शल	—
कामना	—
आठवाँ सर्ग	—
माधवी	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

रिशि	—
मोतीराम	—
भवेशनाथ	—
कुन्तल	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

अरे यायावर रहेगा याद	—
देहरि भई विदेस	—
वसन्त से पतझर तक	—
मेरी तिब्बत यात्रा	—

सूची-II

जातिवाद	—
भोगवाद	—
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	—
स्त्री-विडम्बना	—

सूची-II

रात का रिपोर्टर	—
राग दरबारी	—
परती परिकथा	—
अर्धनारीश्वर	—

सूची-II

अज्ञेय	—
राजेन्द्र यादव	—
रवीन्द्रनाथ त्यागी	—
राहुल सांकृत्यायन	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

उद्भट	—
वामन	—
रुद्रट	—
मम्मट	—

सूची-II

काव्यालंकार सार संग्रह	—
काव्यालंकार सूत्रवृत्ति	—
काव्यालंकार	—
काव्यप्रकाश	—

सही सुमेलित हैं—

सूची-I

“धर्मार्थ काममोक्षेषु वैचक्षण्य कलासु चे करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्।”	—
“धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्द्धनम्। लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति।”	—
“धर्मादिसाधनोपायः सुकुमारक्रमोदितः। काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः।”	—
“काव्यं यशसेऽर्यकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे।”	—

सूची-II

भामह	—
भरत	—
कुन्तक	—
मम्मट	—

नवम्बर - 2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

गुजराती, पंजाबी, मराठी एवं सिन्धी भाषा में से विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ — **गुजराती भाषा का**

शिवसिंह-सरोज का प्रकाशन हुआ — **1883 ई. में**
नोट-शिवसिंह सरोज का सर्वप्रथम प्रकाशन 1878 ई. में हुआ। 1883 ई. में इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हुआ।

आदिकालीन काव्यग्रन्थों में कथा कहने की परम्परा को लक्ष्य करके ‘पृथ्वीराज रासो’ के सन्दर्भ में आलोचक ने लिखा है—“कथा की परीक्षा इतिहास की दृष्टि से नहीं, काव्य की दृष्टि से होनी चाहिए। पुरानी कथाएँ काव्य ही अधिक हैं, इतिहास वे एकदम नहीं हैं।”

— **हजारी प्रसाद द्विवेदी**

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी के हिन्दुओं-मुसलमानों, सामंतों, शहरों, सेना के सिपाहियों और लड़ाइयों का जीवंत और यथार्थ वर्णन हुआ है — **कीर्तिलता**

‘सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा’—इस तथ्य को तुलसीदास ने कहलवाया है — **शिव के द्वारा**

वल्लभाचार्य की मृत्यु के बाद कहा था—‘पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना हो सो लेज।’ — **विट्ठलनाथ**

“सूरसागर” में जगह-जगह दृष्टिकूट वाले पद मिलते हैं। यह भी विद्यापति का अनुकरण है।” सूरदास से संबंधित उक्त विचार है।

— **रामचन्द्र शुक्ल का**

“हय रथ पालकी गयंद गृह ग्राम चारु
आखर लगाय लेत लाखन के सामा हैं।”

यह उक्ति कवि की है

— **पद्माकर**

“सावन आवन हेरि सखी, मनभावन-आवन-चोप बिसेखी।

छाए कहुँ घन आनन्द जान सम्हारि की ठौर लै भूलनि लेखी।

बूँदें लगैं सब अंग दगैं उलटी गति आपने पापनि पेखी।

पौन सों जागति आगि सुनी ही पै पानि तें लागति आँखिन देखी।”

इस संवेद्या में विरहिणी नायिका की मनः स्थिति का चित्रण किया गया है — **मार्मिक स्थिति**

“प्रिय की सुधि-सी ये सरिताएँ, ये कानन कांतार सुसज्जिता

में तो नहीं, किन्तु है मेरा हृदय किसी प्रियतम से परिचिता

जिसके प्रेमपत्र आते हैं प्रायः सुख-संवाद-सन्निहिता”

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ हैं।

— **रामनरेश त्रिपाठी की**

‘नाटक जारी है’ काव्य-संग्रह के रचयिता हैं — **लीलाधर जगूड़ी**

दिनकर, निराला, पंत एवं प्रसाद में से ‘आग और राग’ का कवि कहा जाता है — **रामधारी सिंह दिनकर को**

दीर्घतपा, कितने चौराहे, मैला आँचल एवं परती परिकथा उपन्यास में से ‘विश्वनाथ प्रसाद’ पात्र हैं — **मैला आँचल के**

बाल, वयः सन्धि और किशोर मन का मनोवैज्ञानिक अंकन हुआ है

— **शेखर : एक जीवनी उपन्यास में**

‘अकहानी’ के प्रमुख प्रवक्ता हैं — **गंगाप्रसाद विमल**

जय पराजय, रुपया तुम्हें खा गया, कृष्णार्जुन युद्ध एवं कर्बला में से प्रेमचन्द का नाटक है — **कर्बला**

नाथ सम्प्रदाय, प्रबन्ध प्रभाकर, साहित्य का मर्म एवं लालित्य मीमांसा में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबन्ध संग्रह नहीं है

— **प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाब राय द्वारा रचित)**

‘प्रगतिवाद’ शीर्षक पुस्तक के लेखक हैं

— **शिवकुमार मिश्र एवं शिवदान सिंह चौहान**

नोट-सीबीएससी/नेट ने अपनी प्रारम्भिक उत्तर कुंजी में शिवकुमार मिश्र मान था, परंतु संशोधित उत्तर कुंजी में शिवदान सिंह चौहान को भी मान लिया है।

☞ “त्रितयमिदं व्याप्रियते शक्तिर्व्युत्पत्तिरभ्यासः” यह कथन है

— आचार्य रुद्रट का

☞ वक्रोक्ति का भेद नहीं है — उक्ति विन्यास वक्रता

☞ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है

— कबीर, नानक, दादू, सुन्दरदास

☞ रचनाकाल की दृष्टि से रचनाओं का सही अनुक्रम है— ललितललाम (1716-45 सं. के मध्य), शिवराज भूषण (सं.1730), पद्मभरण (1867 सं. के आस-पास), नवरस तरंग (सं. 1874)

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है — श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.), सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ (1897-1962 ई.)

☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है — बच्चन (1907-2003 ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), मुक्तिबोध (1917-1964 ई.), रघुवीर सहाय (1929-1990 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है — अपनी खबर (1960 ई.), नीड़ का निर्माण फिर (1970 ई.), जूठन (1999 ई.), शिकंजे का दर्द (2012 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है — शरणार्थी (1948 ई.), परिन्दे (1959 ई.), कामरेड का कोट (1993 ई.), डायन (1998 ई.)

☞ कुबेरनाथ राय के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — गंधमादन (1972 ई.), कामधेनु (1990 ई.), मराल (1993 ई.), आगम की नाव (2008 ई.)

☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है — सज्जन (1910-11 ई.), विशाख (1921 ई.), जनमेजय का नागयज्ञ (1926 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)

☞ रससूत्र के व्याख्याकारों का सही अनुक्रम है — भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त

☞ ग्रंथों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है — रसमीमांसा (1949 ई.), आलोचना के मान (1958 ई.), नयी कविता (1976 ई.) नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं—

लेखक

- | | | |
|-------------------|---|----------------------|
| (a) विजयसेन सूरि | — | रेवन्तगिरि रास |
| (b) नरपति नाल्ह | — | बीसलदेव रासो |
| (c) शालिभद्र सूरि | — | भरतेश्वर बाहुबली रास |
| (d) आसगु | — | चन्दनबाला रास |

☞ सही सुमेलित हैं—

सम्प्रदाय

- | | | |
|-----------------------|---|-----------------|
| (a) श्रीसम्प्रदाय | — | रामानुजाचार्य |
| (b) ब्राह्म सम्प्रदाय | — | मध्वाचार्य |
| (c) रुद्रसम्प्रदाय | — | विष्णुस्वामी |
| (d) सनकादि सम्प्रदाय | — | निम्बार्काचार्य |

प्रवर्तक

☞ सही सुमेलित हैं—

प्रबन्धकाव्य

- | | | |
|-----------------------------|---|--|
| (a) चंडीचरित्र | — | |
| (b) द्रोणपर्व (संग्राम सार) | — | |
| (c) सुजान चरित | — | |
| (d) हिम्मतबहादुर विरुदावली | — | |

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- | | | |
|-----------------|---|-----------|
| (a) प्रेमवाटिका | — | रसखान |
| (b) कवितरत्नाकर | — | सेनापति |
| (c) रसरतन | — | पुहकर कवि |
| (d) तिलशतक | — | मुबारक |

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- | | | |
|---------------|---|---------------------|
| (a) बेला | — | सूर्यकान्त त्रिपाठी |
| (b) उत्तरा | — | सुमित्रानन्दन पंत |
| (c) परिक्रमा | — | महादेवी वर्मा |
| (d) चित्राधार | — | जयशंकर प्रसाद |

☞ सही सुमेलित हैं—

काव्य पंक्तियाँ

- | | | |
|---|---|------------------------------|
| (a) प्रिय स्वतंत्र रव
अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे। | — | सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ |
| (b) इस पार प्रिये मधु है तुम हो
उस पार न जाने क्या होगा। | — | हरिवंशराय बच्चन |
| (c) अरे कहीं देखा है तुमने
मुझे प्यार करने वाले को | — | जयशंकर प्रसाद |
| (d) यह मंदिर का दीप
इसे नीरव जलने दो | — | महादेवी वर्मा |

☞ सही सुमेलित हैं—

पात्र

- | | | |
|----------------|---|-------------------|
| (a) जयदेव पुरी | — | झूठा-सच |
| (b) चन्द्रमधव | — | नदी के द्वीप |
| (c) फूल बाबू | — | बलच नमा |
| (d) निर्गुनिया | — | नाच्यो बहुत गोपाल |

☞ सही सुमेलित हैं—

पात्र

- | | | |
|---------------|---|-----------------|
| (a) आनन्दी | — | बड़े घर की बेटी |
| (b) दीनदयाल | — | जुलूस |
| (c) डॉ. जयपाल | — | मूठ |
| (d) शंकर | — | सवासेर गेहूँ |

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- | | | |
|----------------------|---|-----------|
| (a) चन्द्रावली | — | नाटिका |
| (b) विषस्य विषमौषधम् | — | भाण |
| (c) एक घूँट | — | एकांकी |
| (d) करुणालय | — | गीतिनाट्य |

सही सुमेलित हैं—

आचार्य	ग्रन्थ
(a) अभिनव गुप्त	— ध्वन्यालोकलोचन
(b) राजशेखर	— काव्यमीमांसा
(c) महिम भट्ट	— व्यक्तिविवेक
(d) भोजराज	— सरस्वतीकण्ठाभरण

स्थापना (A) : कविता आत्म प्रकाशन है, जो केवल कवि के हृदय को आनन्द प्रदान करती है।

तर्क (R) : इसीलिए कविता को कवि की आत्मा का आलोक माना गया जो समस्त लोक को प्रकाशित करता है। — (A) गलत, (R) सही है

स्थापना (A) : साहित्य समाज के सामूहिक हृदय का विकास है।

तर्क (R) : इसीलिए समाज में रहने वाले विभिन्न धर्मावलम्बियों की चित्तवृत्ति का इसमें अलग-अलग विकास होता है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : मिथक सार्वकालिक और सर्वदेशिक होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि सभी देशों की जातीय अस्मिता और विश्वास एक जैसे हैं।

— (A) गलत, (R) गलत है

स्थापना (A) : रहस्यभावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी।

तर्क (R) : क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असम्भव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है।

— (A) सही, (R) सही है

स्थापना (A) : भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन साहित्य में पश्चिमी संस्कृति के संघात से शुद्ध भारतीयता का उदय हुआ।

— (A) सही, (R) गलत है

नवम्बर - 2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र

सिद्धों में प्रचलित 'महामुद्रा' शब्द का अभिप्राय है

— सिद्धि प्राप्त हेतु स्त्री संसर्ग

'जायसी के शृंगार में मानसिक पक्ष प्रधान है, शारीरिक गौण है।' यह कथन है

— आलोचक रामचन्द्र शुक्ल का

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि कबीर को 'राम-नाम' रामानन्द जी से ही प्राप्त हुआ। पर आगे चल कर कबीर के 'राम' रामानन्द के 'राम' से भिन्न हो गए।" यह कथन है

— रामचन्द्र शुक्ल का

विट्ठलनाथ ने वल्लभ सम्प्रदाय में पूजा-पद्धति का समावेश किया

— युगलोपासना

"सचिव बैद गुरु तीनि ज्यों प्रिय बोलहिं भय आसा।

राज, धर्म तन तीनि कर होहिं बेगिहीं नासा।"

यह दोहा है

— 'रामचरितमानस' के सुन्दरकाण्ड में

डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थवाल के अनुसार 'रामचन्द्रिका' है

— फुटकर कवित्तों का संग्रह

रीतिमुक्त कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है

— स्वानुभूति और स्वच्छंदता

"सीख सिखाई न मानति है, बर ही बस संग सखीन के आवै।

खेलत खेल नए जल में, बिना काम बृथा कत जाम बितावै।।

छोड़ि के साथ सहेलिन को, रहि के कहि कौन सवा दहि पावै।

कौन परी यह बानि, अरी! नित नीर भरी गगरी ढरकावै।।"

इस सवैया में नायिका की सखी का भाव व्यक्त हुआ है

— उपालंभ

"घुसती है लाल-लाल मशाल अजीब सी,

अन्तराल-विवर के तम में

लाल-लाल कुहरा,

कुहरे में, सामने, रक्तालोक-स्नात पुरुष एक

रहस्य साक्षात् !!"

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता से हैं

— अंधेरे में

'प्रियंवद' कविता से संबंधित पात्र है

— असाध्यवीणा

'मधुशाला' का प्रकाशन वर्ष है

— 1935

'भारतेन्दु ने जिस प्रकार हिन्दी गद्य की भाषा का परिष्कार किया, उसी प्रकार काव्य की ब्रजभाषा की भी।'

— रामचन्द्र शुक्ल

खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है

— प्रियप्रवास

कामाध्यात्म की समस्या उठाई गई है

— उर्वशी रचना में

"क्षत्रिय! उठो अब तो कुयश की कलिमा को मेट दो।

निज देश को जीवन सहित तन मन तथा धन भेंट दो।

वैश्यो सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का।

सब धन विदेशी हर रहे हैं, पार है क्या क्लेश का"।।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं

— मैथिलीशरण गुप्त

"हमें प्रयोगवादी कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें कवितावादी कहना।"

उक्त कथन है

— सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का

"आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह-सम्पदा और वास्तविक सम्मान के साथ आई है। औरतें अब औरतें हैं, वे झूठी सती या वेश्याएं नहीं हैं, इसलिए नयी कहानी खलनायिकाओं में शून्य है।" नयी कहानी के सम्बन्ध में उपर्युक्त कथन किसका है? — कमलेश्वर का

- “सिख अमलदारी को उखाड़ती हुई ब्रिटिश साम्राज्यशाही” का चित्रण हुआ है — मय्यादास की माड़ी उपन्यास में
- ‘भारतीय काव्य-शास्त्र का नवनिर्माण’-शीर्षक निबन्ध के लेखक हैं — नन्ददुलारे वाजपेयी
- “साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध” ग्रन्थ के रचनाकार हैं — महादेवी वर्मा
- कलम का मजदूर, कलम का सिपाही, मेरी पत्नी और भेड़िया ‘प्रेमचन्द’ घर में इनमें से जीवनी नहीं है — मेरी पत्नी और भेड़िया
- पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित होकर बिहार के पूर्णिया जिले में आए हिन्दू शरणार्थियों की दारुण कथा का चित्रण है — फणीश्वरनाथ रेणु के जुलूस उपन्यास में
- “अतएव, दो बालुकापूर्ण कगारों के बीच में एक निर्मल-स्रोतस्विनी का रहना आवश्यक है।” यह संवाद है — चन्द्रगुप्त नाटक के पात्र चाणक्य का
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रश्न सुरेन्द्र वर्मा के नाटक में आया है — आठवाँ सर्ग में
- रससूत्र ‘विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः’ ग्रन्थ में आया है — नाट्यशास्त्र में
- जहाँ बिना कारण के ही कार्य की सम्भावना व्यक्त की गई हो, वहाँ अलंकार होता है — विभावना
- भाव, विभाव, अनुभाव एवं संचारीभाव में से रस का अवयव नहीं है — भाव
- श्लेष, माधुर्य, शक्ति एवं समाधि में से काव्य गुण नहीं है — शक्ति
- “काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है।” उक्त कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- अरस्तू द्वारा रचित ‘पोएटिक्स (On Poetics) नामक ग्रन्थ में अध्याय हैं — 26
- मॉर्क्सवादी सिद्धान्त के अनुकूल नहीं है — साम्यवादी व्यवस्था में भी राज्य तथा समस्त राजनीतिक और कानूनी ढांचे बने रहेंगे।
- जॉक देरिदा, डेनियल बेल, रोलां बार्थ एवं रेमण्ड विलियम्स में से उत्तर-आधुनिकता का सम्बन्ध नहीं है — रेमण्ड विलियम्स का
- “पीर भरो जिय धीर धरै नहि कैसे रहे जल जाल के बाँधे?” उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में स्त्री की मनःस्थिति का संकेत किया गया है — दुःखातिरेक
- तुलसीदास ने ‘रामचरितमानस’ में कलियुग का वर्णन किया है — उत्तरकाण्ड में
- “स्नेह-निर्झर बह गया है। रेत ज्यों तन रह गया है।” उपरोक्त गीत है — सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ का
- ‘आत्मजयी’ की कथावस्तु आधारित है — कटोपनिषद् से
- ‘सूनी घाटी का सूरज’ उपन्यास के लेखक हैं — श्रीलाल शुक्ल
- ‘काम और राम’ का द्वन्द्व चित्रित है — मानस का हंस उपन्यास में
- “कि मैं इस घर से ही अपने अन्दर कुछ ऐसी चीज लेकर गयी हूँ जो किसी भी स्थिति में मुझे स्वाभाविक नहीं रहने देती।” ‘आधे-अधूरे’ नाटक के प्रस्तुत संवाद का सम्बन्ध है — बड़ी लड़की पात्र से
- ‘कारवाँ’ एकांकी संग्रह है — भुवनेश्वर प्रसाद का
- रचनाकाल के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है — कुवलयमाला कथा (9वीं शताब्दी), राउलवेल (10वीं शताब्दी), उक्ति व्यक्तिप्रकरण (12वीं शताब्दी), वर्णरत्नाकर (14वीं शताब्दी)
- रचनाकाल की दृष्टि से काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है — पुद्गुपावती (1725 ई.), हंस जवाहिर (1726 ई.), अनुराग बाँसुरी (1744 ई.), यूसुफ जुलेखा (1790 ई.)
- रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है — कीर्तिलता (1331 ई.), छिताईवार्ता (1590 ई.) भक्तमाल (1600 ई.), चित्रावली (1613 ई.)
- नोट- विकल्प में कोई उत्तर सही नहीं है। सीबीएससी/यूजीसी ने इसका क्रम माना है-कीर्तिलता, भक्तमाल, छिताईवार्ता, चित्रावली
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार अज्ञेय की रचनाओं का सही अनुक्रम है — इत्यलम (1946 ई.), हरी घास पर क्षण भर (1949 ई.), ऑगन के पार द्वार (1961 ई.), कितनी नावों में कितनी बार (1967 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है — प्रेम-माधुरी (1875 ई.), श्रान्तपथिक (1902 ई.), प्रियप्रवास (1914 ई.), मिलन (1917 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार महादेवी वर्मा की रचनाओं का सही अनुक्रम है — नीहार (1930 ई.), रश्मि (1932 ई.), नीरजा (1935 ई.), दीपशिखा (1942 ई.)
- जन्मकाल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है — शमशेर बहादुर सिंह (1911 ई.), भवानी प्रसाद मिश्र (1913 ई.), गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’ (1917 ई.), भारत भूषण अग्रवाल (1919 ई.)

- प्रकाशन के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
- आपका बंटी (1971 ई.), चित्तकोबरा (1979 ई.), शाल्मली (1987 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
- दो बैलों की कथा (1931 ई.), बड़े भाई साहब (1934 ई.), कफन (1936 ई.), क्रिकेट मैच (1937 ई.)
- रचनाकाल के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है
- मादा कैबटस (1959 ई.) द्रौपदी (1972 ई.), सिंहासन खाली है (1974 ई.), एक और द्रोणाचार्य (1977 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
- प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1973 ई.), साहित्य और इतिहास दृष्टि (1981 ई.), वाद विवाद संवाद (1989 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है
- कस्तूरी कुंडल बसे (2002 ई.), हादसे (2005 ई.), एक कहानी यह भी (2008 ई.), और-और औरत (2010 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है
- भारत जननी (1877 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.) अन्धायुग (1955 ई.), आधे-अधूरे (1969 ई.)
- निम्नलिखित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है
- ध्वन्यालोक, वक्रोक्तिजीवितम्, कविकण्ठाभरण, साहित्यदर्पण
- मार्क्सवादी चिन्तकों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है
- कार्ल मार्क्स (1818-1883 ई.), फ्रेडरिक एंगेल्स (1820-1895 ई.) व्लादीमीर इलिच लेनिन (1870-1924 ई.), माओ-त्से-तुंग (1893-1976 ई.)
- स्थापना (A) :** काव्य हृदय का परम उत्थान है और विज्ञान मस्तिष्क का चरम उत्कर्ष है।
- तर्क (R) :** क्योंकि विज्ञान हृदय को शान्ति तो नहीं दे पाता लेकिन काव्य का उत्कर्ष जीवन की सभी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- (A) सही, (R) गलत है
- स्थापना (A) :** लोक आख्यान की निर्मिति सामूहिक अचेतन की प्रक्रिया है।
- तर्क (R) :** क्योंकि लोक में इसके निर्माण की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है।
- (A) सही, (R) सही है।
- स्थापना (A) :** जयशंकर प्रसाद के नाटकों में रस और द्वन्द्व का समन्वय है।

- तर्क (R) :** क्योंकि उनके नाटकों की संरचना पश्चिमी और आत्मा भारतीय है।
- (A) सही (R) सही है
- स्थापना (A) :** कलाकार सत्य को सुन्दर बनाकर शिवत्व की उपलब्धि करता है।
- तर्क (R) :** इसीलिए सृजन व्यापार कलाकार का आत्मकल्याण है, लोकमंगल नहीं।
- (A) सही (R) गलत है
- स्थापना (A) :** भूमण्डलीय विश्व की पूँजीवादी सांस्कृतिक व्यवस्था है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नहीं।
- तर्क (R) :** क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था ने स्थानीय संस्कृति को सम्पूर्णतः नष्ट कर दिया है और अब पूरा विश्व ही एक परिवार है।
- (A) सही (R) गलत है
- स्थापना (A) :** पश्चिम के नये ज्ञानोदय ने बहुस्तरीय वर्चस्ववाद का निषेध किया।
- तर्क (R) :** इसी कारण साहित्यिक चेतना में न केवल विखण्डन समाप्त हुआ, बल्कि एकात्मकता को बढ़ावा मिला।
- (A) गलत (R) गलत है
- स्थापना (A) :** सांस्कृतिक एकरूपता साहित्य के लोकतंत्र में अनिवार्य है।
- तर्क (R) :** क्योंकि बहुलतावाद साहित्यिक संवेदना को खण्डित करता है।
- (A) गलत (R) गलत है
- स्थापना (A) :** हिन्दी अभिव्यक्ति की एक सम्पूर्ण और सशक्त सर्वसमावेशी बहुलतावादी सांस्कृतिक इकाई है।
- तर्क (R) :** क्योंकि भारत के एक बड़े भू-भाग की बोलियों का समूह इसकी शक्ति को बढ़ाता है।
- (A) सही (R) सही है
- स्थापना (A) :** जैसे वीरकर्म से पृथक कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं।
- तर्क (R) :** क्योंकि सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है। जो भीतर है वही बाहर है।
- (A) सही (R) सही है
- स्थापना (A) :** मनुष्य की श्रेष्ठसाधनाएँ ही संस्कृति है।
- तर्क (R) :** क्योंकि इन्हीं साधनाओं के माध्यम से मनुष्य अविरোধी सत्य तक पहुंच सका है। संस्कृति इसी अविरোধी सत्य का पर्याय है।
- (A) सही (R) सही है

सही सुमेलित हैं—

पात्र	संबद्ध ग्रन्थ
(a) राघवचेतन	— पद्मावत
(b) श्रीदामा	— सूरसागर
(c) शबरी	— रामचरितमानस
(d) चन्दा	— चंदायन

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) वैराग्य संदीपनी	— तुलसीदास
(b) विरह मंजरी	— नंददास
(c) इंद्रावती	— नूर मुहम्मद
(d) वीरसिंह देवचरित	— केशवदास

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	रचनाकार
(a) मधुमावती	— मंझन
(b) रासपंचाध्यायी	— नन्ददास
(c) भक्ति प्रताप	— चतुर्भुजदास
(d) प्रेमवाटिका	— रसखान

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) मिलन यामिनी	— हरिवंशराय 'बच्चन'
(b) दिल्ली	— रामधारी सिंह 'दिनकर'
(c) सागर मुद्रा	— स.ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(d) इतने पास अपने	— शमशेर बहादुर सिंह

सही सुमेलित हैं—

पात्र	उपन्यास
(a) लाला मद नमोहन	— परीक्षागुरु
(b) नाहर सिंह	— नूतन ब्रह्मचारी
(c) लाला भगवानदास	— वामा शिक्षक
(d) वासुदेव शास्त्री	— भाग्यवती

सही सुमेलित हैं—

नाटककार	नाटक
(a) विष्णु प्रभाकर	— युगे-युगे क्रान्ति
(b) जगदीशचन्द्र माधुर	— दशरथ नन्दन
(c) लक्ष्मीनारायण लाल	— सूर्यमुख
(d) भीष्म साहनी	— रंग दे बसंती

सही सुमेलित हैं—

आचार्य	ग्रन्थ
(a) दण्डी	— काव्यादर्श

(b) उद्भट — काव्यालंकार सारसंग्रह

(c) मम्मट — काव्यप्रकाश

(d) पण्डितराज जगन्नाथ — रसगंगाधर

सही सुमेलित हैं—

सिद्धान्तकार

कृति

(a) सास्युर दे फर्डिनाड	—	कोर्स इन जनरल लिंग्विस्टिक्स
(b) जॉर्ज लूकाच	—	स्टडीज इन यूरोपियन रियलिज्म
(c) एलेन टेट	—	टेंशन इन पोयट्री
(d) हार्ड फास्ट	—	लिटरेचर एण्ड रियलिटी

सही सुमेलित हैं—

पंक्ति

कवि

(a) तू है गगन विस्तीर्ण तो मैं एक तारा क्षुद्र हूँ।	—	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(b) निकल रही है उर से आह, ताक रहे सब तेरी राह।	—	मैथिलीशरण गुप्त
(c) जल उठा स्नेह दीपक-सा, नवनीत हृदय था मेरा।	—	जयशंकर प्रसाद
(d) अरुण अधरों की पल्लव प्रातः, मोतियों सा हिलता हिम हास।	—	सुमित्रानन्दन पंत

सही सुमेलित हैं—

नाटक

पात्र

(a) चन्द्रगुप्त	—	संसार-भर की नीति और शिक्षा का अर्थ मैंने यही समझा है कि आत्मसम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है।
(b) दाण्ड्यायन	—	भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते। मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है।
(c) कार्नेलिया	—	भाषा ठीक करने से पहले मैं मनुष्यों को ठीक करना चाहता हूँ।
(d) चाणक्य	—	

जनवरी - 2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- अपभ्रंश का व्यवहार लोकभाषा के अर्थ में होने लगा था — ग्यारहवीं शताब्दी में
- ‘पुरुष परीक्षा’ रचना है — विद्यापति की
- रामचन्द्र शुक्ल, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, गौरी शंकर हीरानन्द ओझा एवं डॉ. बूलर में से ‘पृथ्वीराज रासो’ को सर्वथा अप्रमाणिक मानने वालों में शामिल नहीं हैं — मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
- “मोरा जोबना नवेल रा भयो है गुलाल कैसे घर दीनी बकस मोरी माला” पंक्तियों के रचयिता हैं — अमीर खुसरो
- मीराबाई की उपासना थी — माधुर्य भाव की
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, कबीर ने अपनी साखियों में ‘सधुक्कड़ी’ भाषा का प्रयोग किया है। ‘सधुक्कड़ी’ से उनका अभिप्राय है — राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली से
- ‘सुजान कुमार’ नायक है — सूफी प्रेमालख्यान चित्रावली का
- ‘सखी हैं स्याम रंग रँगी। देखि बिकाय गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी।” काव्य पंक्तियां हैं — गदाधर भट्ट की
- “तिय सैसव जोबन मिले, भेद न जान्यो जात। प्रात समय निसि द्योस के दुवौ भाव दरसात।” दोहे में नायिका की अवस्था का वर्णन किया गया है — नवोढ़ा अवस्था का
- “जगत जनायो जिहि सकल, सो हरि जान्यो नाहिं। ज्यों आँखिन सब देखियै, आँखि न देखी जाहि।” उक्त दोहे में है — उदाहरण अलंकार
- मैथिलीशरण गुप्त की प्रतिभा का विकास सर्वाधिक देखने को मिलता है — प्रबन्धकार रूप में
- ‘.....रचना न तो दर्शन है और न किसी ज्ञानी के प्रौढ़ मस्तिष्क का चमत्कार। यह तो अन्ततः, एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय ही है, जो मस्तिष्क के स्तर पर चढ़कर बोल रहा है।’ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा कहा गया कथन काव्य के संबंध में है — कुरुक्षेत्र के
- “उड़ गया गरजता यंत्र-गरुड़ बन बिन्दु, शून्य में पिघल गया पर साँप” ये पंक्तियां ‘अज्ञेय’ की कविता से हैं — ‘हवाई अड्डे पर विदा’ से
- ‘ठंडा लोहा’ कविता संग्रह के रचनाकार हैं — धर्मवीर भारती
- उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्गीय बनिया समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है — देवरानी जेठानी की कहानी उपन्यास में
- कामकुंठा की शिकार स्त्री के चरित्र का चित्रण किया गया है — सूरजमुखी अंधेरे के उपन्यास में
- हिन्दू-मुस्लिम एकता को प्रतिपादित करने वाला नाटक है — रक्षाबन्धन
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक क्षेमीश्वर कृत ‘चंडकौशिक’ के आधार पर लिखा गया है — सत्य हरिश्चन्द्र
- अर्थोपक्षेपक होते हैं पाँच प्रकार के
- कल्चर एण्ड अनाकी, लिटरेचर एण्ड ड्रामा, एसेस ऑन चर्च एण्ड स्टेट तथा द कॉकलेट पार्टी में से मैथ्यू ऑर्नाल्ड की रचना नहीं है — द कॉकलेट पार्टी
- रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार लेखन-काल की दृष्टि से विद्यापति की रचनाओं का सही अनुक्रम है — कीर्तिलता, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा, कीर्तिपताक
- रचनाकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है — चिन्तामणि (1609 ई.), महाराज जसवन्त सिंह (1626 ई.), देव (1673 ई.), भिखारीदास (1721 ई.)
- रचनाकाल के अनुसार श्रीधर पाठक की रचनाओं का सही अनुक्रम है — एकांतवासी योगी, ऊजड़ ग्राम, श्रांत पथिक, सांध्य अटन
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की रचनाओं का सही अनुक्रम है — गीतिका (1936 ई.), अणिमा (1943 ई.), अर्चना (1950 ई.), आराधना (1953 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार हिन्दी नाटकों का सही अनुक्रम है — अन्धा कुआँ, बकरी, इक तारे की आँख, कोर्ट मार्शल
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है — रानी केतकी की कहानी (1803 ई.), वामा शिक्षक (1872 ई.), भाग्यवती (1877 ई.), परीक्षा गुरु (1885 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है — हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष (1961 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1961 ई.), अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), वाद विवाद संवाद (1989 ई.)
- ऐतिहासिक दृष्टि से पाश्चात्य साहित्य चिन्तकों का पूर्वापर अनुक्रम है — अरस्तू-कॉलरिज-मैथ्यू ऑर्नाल्ड-टी.एस. इलियट

- भरतमुनि के अनुसार नाट्य वृत्तियों का सही क्रम है
— भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी
- जन्मकाल के अनुसार हिन्दी आलोचकों का सही क्रम है
— रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.), नन्ददुलारे वाजपेयी (1906-1967 ई.), रामविलास शर्मा (1912-2000 ई.)

सही सुमेलित हैं-

पंक्ति	कवि
(a) हों सब कबिन्ह केर पछिलगा	— जायसी
(b) कबित बिवेक एक नहि मोरे	— तुलसी
(c) प्रभुजी, हों पतितन कौ टीको	— सूरदास
(d) अब तो अजपा जपु मन मेरे	— मल्लूकदास
सुर नर असुर टहलुआ जाके	
मुनि गंधब हैं जाके चेरे	

सही सुमेलित हैं-

रचना	रचनाकार
(a) राउतवेल	— रोड कवि
(b) खुमाण रासो	— दलपति विजय
(c) चंदनबाला रास	— आसगु
(d) योगचर्या	— डोम्बिबा
सही सुमेलित हैं-	
कवि	काव्यकृति
(a) सियारामशरण गुप्त	— मौर्य विजय
(b) बालकृष्ण शर्मा नवीन	— विप्लव गायन
(c) सुभद्रा कुमारी चौहान	— राखी की चुनौती
(d) गया प्रसाद शुक्ल सनेही	— राष्ट्रीय मंत्र

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में काव्यकृति 'राष्ट्रीय तरंग' दिया गया है, जबकि वास्तव में 'राष्ट्रीय मंत्र' है, जो गया प्रसाद शुक्ल सनेही की रचना है।

सही सुमेलित हैं-

पंक्ति	कवि
(a) श्रेय नहीं कुछ मेरा/मैं तो डूब गया	— अज्ञेय
था स्वयं शून्य में	
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने/	
सब कुछ को सौंप दिया था।	
(b) परम अभिव्यक्ति/लगातार घूमती है	— मुक्तिबोध
जग में/पता नहीं जाने कहाँ,	
जाने कहाँ/वह है।	

- (c) पर एक तत्व है बीज रूप स्थित — धर्मवीर भारती
मन में साहस में, स्वतंत्रता में,
नूतन सर्जन में

- (d) मैं उनका आदर्श जो व्यथा न — दिनकर
खोल सकेंगे
पूछेगा जग किन्तु पिता का
नाम न बोल सकेंगे।

सही सुमेलित हैं-

रचना	रचनाकार
(a) मधूलिका	— रामेश्वर शुक्ल अंचल
(b) प्रभातफेरी	— नरेन्द्र शर्मा
(c) प्रण-भंग	— रामधारीसिंह दिनकर
(d) काठमांडू की पहली सांझ	— शिवमंगल सिंह सुमन

सही सुमेलित हैं-

उपन्यास	विषय-वस्तु
(a) अपना मोर्चा	— छात्र आन्दोलन
(b) मुझे चाँद चाहिए	— रंगमंच और सिनेमा संसार
(c) दिलो दानिश	— मुस्लिम संस्कृति
(d) अनामदास का पोथा	— औपनिषदिक आख्यान

सही सुमेलित हैं-

पात्र	नाटक
(a) मालविका	— चन्द्रगुप्त
(b) मल्लिका	— आषाढ़ का एक दिन
(c) वेनुरति	— सूर्यमुख
(d) देवयानी	— देहान्तर

सही सुमेलित हैं-

आलोचना ग्रन्थ	आलोचक
(a) साहित्य क्यों	— विजयदेव नारायण साही
(b) भाषा और संवेदना	— रामस्वरूप चतुर्वेदी
(c) लोकवादी तुलसीदास	— विश्वनाथ त्रिपाठी
(d) कविता की तीसरी आँख	— प्रभाकर श्रोत्रिय

सही सुमेलित हैं-

ग्रन्थ	रचनाकार
(a) रस मीमांसा	— रामचन्द्र शुक्ल
(b) हिन्दी साहित्य का आदिकाल	— हजारी प्रसाद द्विवेदी
(c) निराला की साहित्य साधना	— राम विलास शर्मा
(d) आधुनिक साहित्य :	— नन्ददुलारे वाजपेयी
सृजन और समीक्षा	

☞ सही सुमेलित हैं-

उक्ति

आचार्य

- (a) शब्दार्थो सहितौ काव्यम् — भामह
 (b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम् — विश्वनाथ
 (c) रमणीयार्थं प्रतिपादकः शब्दः — पण्डितराज जगन्नाथ काव्यम्
 (d) तद्तोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति — मम्मट पुनः क्वापि

☞ **स्थापना (A) :** रीतिकाल में जन-साधारण का जीवन सामन्ती विलासपूर्ण आकांक्षाओं और भोगपूर्ण शृंगार से ओत-प्रोत था।

तर्क (R) : इसीलिए नैतिकता की दृष्टि से जन-साधारण का आचरण और चरित्र दरबारी संस्कृति से अलग नहीं हो पाया था।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** साहित्य एवं कलाएँ वर्ग-हितों का ही प्रतिबिम्बन और प्रतिनिधित्व करती हैं।

तर्क (R) : चूँकि साहित्य की चेतना शासन और सत्ता की विचारधारा से प्रतिबद्ध होती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** बिम्ब अतीन्द्रिय होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि उनमें ऐन्द्रिकता का होना अनिवार्य है।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** हृदय सहित समाज में उत्पन्न होने वाला हर व्यक्ति 'सहृदय' और 'सामाजिक' होता है।

तर्क (R) : इसीलिए साहित्यशास्त्र में उनके लिए किसी गुण अथवा लक्षणों का उल्लेख नहीं किया गया।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A) :** रस कार्य (कारणजन्य) रूप वस्तु नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि वह तो विभावादि समूहालम्बनात्मक अनुभव है, न कि विभावादि द्वारा उत्पन्न की गई वस्तु। कारण-ज्ञान और कार्य ज्ञान का एक समय में होना कदापि सम्भव नहीं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जनवरी - 2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ हुज्वेरी के अनुसार 'फना' का अर्थ है — किसी वस्तु की अपूर्णता का ज्ञान और उसे पाने की इच्छा से विरत होना।

☞ 'रास पंचाध्यायी' लिखी गई है — रोला छन्द में

☞ 'मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
 राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि-पाहि सरनहि आई।।
 'रामचरितमानस' की उक्त चौपाई में व्यक्त विचार हैं

— अहल्या पात्र के

☞ राम और सीता के विवाह के अवसर पर कवि ने मिथिला की स्त्रियों से 'गारी गीत' गवाया है — केशवदास ने

☞ "अच्युत-चरन तरंगिनी, शिव-सिर मालति-माल।
 हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव भाल।।"
 इस दोहे के रचनाकार का नाम है — रहीम

☞ चंडीचरित्र, रामचरित, सुजानचरित एवं सुजानहितप्रबन्ध में से प्रबन्ध काव्य कृति नहीं है — सुजानहितप्रबन्ध

☞ "लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरुर।।
 भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।"
 इस दोहे में 'सबी' शब्द का अर्थ है — चित्र (नायिका के समान)

☞ 'गीति संग्रह' के रचनाकार हैं — रसनिधि

☞ 'शकुन्तला नाटक' रचना है — नेवाज की

☞ 'सूरसागर' के पदों का भावानुसरण करते हुए कृष्ण के जीवन का चित्रण किया है — कवि ब्रजवासीदास ने

☞ हिंडोला, गंगावतरण, भ्रमरदूत एवं उद्धवशतक में से जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की रचना नहीं है — भ्रमरदूत

☞ कुछ कविताएँ, कुछ और कविताएँ, आज अभी आँखों से एवं काल तुमसे होड़ है मेरी, मैं से काव्य-संग्रह शमशेर बहादुर सिंह का नहीं है — आज अभी आँखों से

☞ "कहाँ हो ऐ हमारे प्राण प्यारे।
 किधर तुम छोड़कर हमको पधारे।।
 बुढ़ापे में यह दुख भी देखना था।
 इसी को देखने को मैं बचा था।।"
 ये काव्य पंक्तियाँ हैं — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की

☞ "फिर परियों के बच्चे से हम सुभग सीप के पंख पसार।
 समुद्र पैरते शुचि ज्योत्स्ना में पकड़ इन्द्र के कर सुकुमार।।"
 इन काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं

— सुमित्रानन्दन पन्त

“सब का निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन-सा
आँसू इस विश्व-सदन में”

उक्त काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं

— जयशंकर प्रसाद

युगपथ, अतिमा, उत्तरा एवं गीतगुंज में से सुमित्रानन्दन पन्त की रचना नहीं है

— गीतगुंज

वीणा, गीतिका, निशा एवं नीरजा में से महादेवी वर्मा की रचना है

— नीरजा

“कहाँ जाऊँ/हर दिशा में/मृत्यु से भी बहुत आगे की/अपरिमित दूरियाँ हैं।” कविता की ये पंक्तियाँ कुँवर नारायण की हैं

— आत्मजयी रचना से

‘चौपट चपेट’ और ‘मयंक मंजरी’ नाटकों के लेखक हैं

— किशोरीलाल गोस्वामी

डॉ. गोपाल राय के अनुसार, हिन्दी में ‘नॉवेल’ के अर्थ में उपन्यास पद का प्रथम प्रयोग किया

— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने

चन्द हसीनों के खतूत, दिल्ली का कलंक, बुधुआ की बेटी एवं दिल्ली का दलाल में से पाण्डेय बेचन शर्मा ‘उग्र’ द्वारा रचित उपन्यास नहीं है

— दिल्ली का कलंक

करनट कबीलों के जीवन यथार्थ के विविध पक्षों पर आधारित उपन्यास है

— कब तक पुकारूँ

‘अरुण’ और ‘मधूलिका’ पात्र हैं

— पुरस्कार कहानी के

भाग्यरेखा, काठ का सपना, वाङ्मय एवं निशाचर में से भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी-संग्रह नहीं है

— काठ का सपना

आधुनिक ईरान की पृष्ठभूमि पर रक्त रंजित इस्लामी क्रांति का चित्रण किया गया है

— सात नदियाँ एक समुन्दर उपन्यास में

इन्सान के खण्डहर, पाजेब, नीलम देश की राजकन्या एवं वातायन में से जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी-संग्रह नहीं है

— इन्सान के खण्डहर

“वैदिक सूक्तों के गरिमामय उद्गम से लेकर लोकगीतों के महासागर तक जिस अविच्छिन्न प्रवाह की उपलब्धि होती है, उस भारतीय भाव धारा का मैं स्नातक हूँ।”

उपर्युक्त विचार विद्यानिवास मिश्र ने अपने निबन्ध संग्रह की भूमिका में लिखे हैं

— छितवन की छाँह में

अज्ञेय ने ‘शेखर’ के संदर्भ में अपने निबन्ध में स्वीकार किया कि ‘ज्यों’ क्रिस्तोफ के अनवरत आत्मशोध और आत्म-साक्षात्कार का जो चित्र ‘रोलॉ’ ने प्रस्तुत किया है, उससे कुछ अवश्य प्रेरणा मिली

— आत्मनेपद में

“आज इस पराजय की बेला में

सिद्ध हुआ

झूठी थी सारी अनिवार्यता भविष्य की

केवल कर्म सत्य है

मानव जो करता है, इसी समय

उसी में निहित है भविष्य

युग-युग तक का।”

‘अन्धा युग’ नाटक का उक्त संवाद अंक से उद्धृत है

— पशु का उदय से

“समझदारी आने पर यौवन चला जाता है, जब तक माला गूँथी जाती है फूल कुम्हला जाते हैं।” जयशंकर प्रसाद कृत ‘चन्द्रगुप्त’ नाटक का उक्त संवाद पात्र द्वारा बोला गया है

— चाणक्य द्वारा

‘काव्यशोभायाः कर्तारो धर्मः गुणाः।’ यह उक्ति है

— आचार्य वामन की

जहाँ समानार्थक विशेषणों से प्रस्तुत के वर्णन द्वारा अप्रस्तुत का बोध कराया जाय, वहाँ होता है

— समासोक्ति अलंकार

‘मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।’ यह उक्ति है

— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की

अलंकार को काव्य की आत्मा मानकर रस का महत्व गौण कर दिया

— भामह ने

जब वक्रोक्ति वक्ता की कंठ ध्वनि पर आश्रित होती है, तब उसे कहा जाता है

— काकुवक्रोक्ति

काव्यालंकार, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक एवं साहित्य दर्पण में से आचार्य भामह का है

— काव्यालंकार

स्वाधीनता-प्राप्ति के अवसर पर लिखी गई निम्नलिखित कविता है

“मुक्त गगन है, मुक्त पवन है, मुक्त साँस गरबीली

लौंघ सात लौंघी सदियों को हुई शृंखला ढीली।

टूटी नहीं कि लगा अभी तक, उपनिवेश का दाग?

बोल तिरंगें, ‘तुझे उड़ाऊँ या कि जगाऊँ आग?’”

— माखनलाल चतुर्वेदी

नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, नरेश एवं गिरिजा कुमार माथुर में से प्रपद्यवादी कवि नहीं हैं

— गिरिजा कुमार माथुर

“कविता तो कवि की आत्मा का आलोक है, उसके हृदय का रस है, जो बाहर की वस्तु का अवलम्ब लेकर फूट पड़ती है” यह कथन है

— रामधारी सिंह दिनकर का

प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित नाटक है

— सूरदास

‘भक्तमाल’ में रामानन्द के प्रथम चार शिष्यों का सही अनुक्रम है

— अन्नतानन्द, सुखानन्द, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द

- ☞ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार सम्प्रदायों का सही अनुक्रम है— श्री सम्प्रदाय, ब्राह्म सम्प्रदाय, रुद्र सम्प्रदाय, सनकादि सम्प्रदाय
- ☞ कालक्रम की दृष्टि से काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है
- अंगदर्पण, विरहवारिश, व्यंग्यार्थकौमुदी, मधुरप्रिया
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
- रश्मिरथी, कनुप्रिया, संशय की एक रात, द्रौपदी
- ☞ रचनाकाल के अनुसार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं का सही अनुक्रम है
- भक्त सर्वस्व, प्रेमतारंग, सतसई सिंगार, मधु मुकुल
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रबन्धकाव्यों का सही अनुक्रम है
- विष्णुप्रिया, उर्वशी, लोकायतन, आत्मजयी
- ☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
- राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, केदारनाथ सिंह, धूमिल
- ☞ जन्मकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है
- बातमुकुन्द गुप्त, श्यामसुन्दर दास, सरदार पूर्ण सिंह, गुलाबराय
- ☞ जन्मकाल के अनुसार उपन्यासकारों का सही अनुक्रम है
- यशपाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, रांगेय राघव
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है
- शरणाथी, तुमरी, सतह से उठता आदमी, शोभायात्रा
- ☞ जन्मकाल के अनुसार नाटककारों का सही अनुक्रम है
- हरिकृष्ण प्रेमी, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, शंकर शेष
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध-संग्रहों का सही अनुक्रम है
- अंगद का पांव (1958 ई.), अद्यतन (1977 ई.), विकलांग श्रद्धा का दौर (1980 ई.), मराल (1993 ई.)
- ☞ नाटक के कथानक में कुछ दृश्य सूच्य होते हैं। पाँच प्रकार के इन सूच्य कथानकों का सही अनुक्रम है
- विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अकांस्य, अंकावतार
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार हजारी प्रसाद द्विवेदी के आलोचना ग्रन्थों का सही क्रम है
- हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, लालित्य मीमांसा, मध्यकालीन बोध का स्वरूप
- ☞ सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है
- द्रौपदी (1972 ई.), आठवाँ सर्ग (1976 ई.), एक दूनी एक (1987 ई.), रति का कंगन (2011 ई.)
- ☞ स्थापना (A) : जहाँ व्यक्ति जीवन का लोक जीवन में लय हो जाता है, वही भाव की पवित्र भूमि है।
- तर्क (R) : इसीलिए कविता में विश्व हृदय का यह आभास कविता की यथार्थवादी अवस्था है।

— (A) सही, (R) गलत है

- ☞ स्थापना (A) : काव्य का आनन्द लोकोत्तर और अनिर्वचनीय होता है।
- तर्क (R) : क्योंकि रस को ब्रह्मानन्द का समानार्थी कहा गया है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- ☞ स्थापना (A) : रस ज्ञान द्वारा ग्राह्य होता है।
- तर्क (R) : क्योंकि हृदय की अनुभूति के साथ उसकी बौद्धिक सत्ता भी होती है।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं
- ☞ स्थापना (A) : छायावादोत्तर कविता विचार-प्रधान काव्य है।
- तर्क (R) : क्योंकि उसमें कवि के निजी संवेदनाभुवों को अभिव्यक्त होने का अवसर नहीं मिला।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं
- ☞ स्थापना (A) : कला माध्यम के द्वारा कलाकार सत्य को सुन्दर बनाकर निजत्व की उपलब्धि करता है।
- तर्क (R) : क्योंकि सत्य कलाकार की संचित पूँजी होती है, सौन्दर्य-सृजन उसका व्यापार और लोकमंगल का प्रसार उसकी उपलब्धि।
- (A) गलत, (R) सही है
- ☞ स्थापना (A) : काव्य सौन्दर्य भाव और कला की एकान्विति में है।
- तर्क (R) : क्योंकि काव्य में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों असम्बद्ध होते हैं।
- (A) सही, (R) गलत है
- ☞ स्थापना (A) : मिथक मनुष्य के आदिम मस्तिष्क की सृजनशील शक्तियों का मूल्यवान् सांस्कृतिक उपहार है।
- तर्क (R) : क्योंकि आदिम मन और मस्तिष्क द्वारा प्रकृति के तत्वों और घटनाओं के मानवीकरण की अचेतन प्रक्रिया ही मिथक रचना का मूल बनी।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- ☞ स्थापना (A) : कविता में शृंगार-चित्रण अनिवार्य है।
- तर्क (R) : क्योंकि शृंगार की सरस वाग्धारा ही पाठक को आनन्दित कर सकती है, अन्य भावधारा नहीं।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं
- ☞ स्थापना (A) : कविता एक अलौकिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है।
- तर्क (R) : इसीलिए जीवन का लौकिक-पक्ष उसमें नहीं आ सकता।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं
- ☞ स्थापना (A) : छायावादी काव्य आत्मनिष्ठता के कारण अहंवादी बन गया।
- तर्क (R) : इसी कारण छायावादी कवियों ने सामाजिक नैतिकताओं की उपेक्षा की।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(काव्य पंक्तियाँ)

- (a) जेहि पंखी के नियर होइ, करै बिरह के बात। — जायसी
सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात।।
- (b) हमको सपनेहू में सोच। — सूरदास
जा दिन में बिछुरे नंदनंदन ता दिन ते यह पोच।
- (c) अब जीवन की है कपि आस न कोय। — तुलसीदास
कनगुरिया की मुदरी कंगना होया।
- (d) जिभिया ऐसी बावरी कहि गई सरग-पताल। — रहीम
आपुहिं कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(पात्र)

- (a) मैना — चांदायन
- (b) ऋतुवर्ण — सत्यवती कथा
- (c) रुक्मिणी — मृगावती
- (d) राघवचेतन — पद्मावत

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(कविता)

- (a) इशारे जिन्दगी के — अज्ञेय
- (b) बूंद टपकी एक नभ से — भवानी प्रसाद मिश्र
- (c) चार ईमानदार — कुँवर नारायण
- (d) मेरा प्रतिनिधि — रघुवीर सहाय

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(रचना)

- (a) प्रेमपथिक — जयशंकर प्रसाद
- (b) गीतिका — सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- (c) सांध्यगीत — महादेवी वर्मा
- (d) गुंजन — सुमित्रानन्दन पन्त

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(कहानी)

- (a) पूस की रात — ऋण की समस्या
- (b) शतरंज के खिलाड़ी — राष्ट्रीय चेतना

सूची-II

(रचनाकार)

(c) ठाकुर का कुआँ

(d) पंच परमेश्वर

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(पात्र)

- (a) सेल्मा — अपने अपने अजनबी
- (b) निर्गुनिया — नाच्यौ बहुत गोपाल
- (c) माणिक मुल्ला — सूरज का सातवाँ घोड़ा
- (d) सरस्वती — यह पथ बन्धु था

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(नाटक)

- (a) रेशमी टाई — रामकुमार वर्मा
- (b) लाटरी — भुवनेश्वर प्रसाद
- (c) पर्दे के पीछे — उदयशंकर भट्ट
- (d) रीढ़ की हड्डी — जगदीश चन्द्र माथुर

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(पात्र)

- (a) चम्पा-बुद्धगुप्त — आकाश दीप
- (b) अलोपीदीन-वंशीधर — नमक का दारोगा
- (c) सिरचन-मानू — ठेस
- (d) बाबा भारती-खडगसिंह — हार की जीत

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(सिद्धान्त)

- (a) वक्रोक्ति सिद्धांत — कुन्तक
- (b) रीति सिद्धांत — वामन
- (c) औचित्य सिद्धांत — क्षेमेन्द्र
- (d) ध्वनि सिद्धांत — आनन्दवर्द्धन

सही सुमेलित हैं-

सूची-I

(नाट्यगीत)

- (a) "अरुण यह मधुमय देश हमारा..." — कार्नेलिया
- (b) "हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती..." — अलका
- (c) "तुम कनक किरण के अन्तराल में लुप-छिपकर — राक्षस
चलते हो क्यों...."
- (d) "आह वेदना मिली विदाई..." — देवसेना

सूची-II

(उपन्यास)

सूची-II

(नाटककार)

सूची-II

(कहानी)

सूची-II

(सिद्धान्तकार)

सूची-II

(पात्र)

जुलाई - 2016 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

(28 अगस्त, 2016 को सम्पन्न)

- ❧ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, अपभ्रंश को लोकभाषा न कहकर देश भाषा कहा है — भरतमुनि ने
- ❧ वज्रयान में 'महासुख' दशा की प्राप्ति मानी गई — पद्मा और उपाय के योग से
- ❧ 'हिन्दू पूजै देहरा, मुसलमान मसीद' पंक्ति है — नामदेव की
- ❧ 'ज्ञानदीप' के रचयिता हैं — शेखनवी
- ❧ 'गोस्वामी के प्रादुर्भाव को हिन्दी काव्य क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए।' यह कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ 'रामध्यान मंजरी' के रचयिता हैं — स्वामी अग्रदास
- ❧ अपना परिचय देते हुए स्वीकार किया है कि 'हय, रथ, पालकी, गयंद, गृह, ग्राम, चारु आखर लगाय लेत लाखन की सामा हौं।' — पद्माकर ने
- ❧ 'तिय सैसव जोबन मिले, भेद न जान्यो जात। प्रात समय निसि द्यौस के दुवौ भाव दरसात।' उक्त दोहे में नायिका की अवस्था का वर्णन हुआ है — वयः सन्धि की (रसलीन)
- ❧ मिलन, पथिक, स्वप्न एवं नहुष में से रामनरेश त्रिपाठी का खण्डकाव्य नहीं है — नहुष (मैथिलीशरण गुप्त)
- ❧ 'समरस थे जड़ या चेतन सुन्दर साकार बना था चेतनता एक विलसती आनन्द अखण्ड घना था।' जयशंकर प्रसाद की उपर्युक्त काव्य-पंक्तियाँ 'कामायनी' की हैं — आनन्द सर्ग की
- ❧ बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित उपन्यास है — सौ अजान एक सुजान
- ❧ 'सूखा बरगद' उपन्यास के लेखक हैं — मंजूर एहतेशाम
- ❧ भारतेन्दु ने अपने नाटक को 'नाट्य रासक वा लास्य रूपक' की संज्ञा दी — भारत दुर्दशा को
- ❧ सज्जन, कामना, करुणालय एवं प्रायश्चित में से जयशंकर प्रसाद का नाटक कृष्ण मिश्र के संस्कृत नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' की अन्यापदेशिक शैली पर आधारित है — कामना
- ❧ 'अपनी खबर' लेखक की आत्मकथा है — पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की
- ❧ डिप्टी कलक्टर, जिन्दगी और जोंक, एक और जिन्दगी एवं मौत का नगर में से अमरकान्त द्वारा रचित कहानी नहीं है — एक और जिन्दगी (मोहन राकेश)
- ❧ 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' उक्ति है — विश्वनाथ की
- ❧ 'ध्वन्यालोक' के रचयिता हैं — आनन्दवर्द्धन
- ❧ 'विरेचन' सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य हैं — अरस्तू
- ❧ 'लघुमानव' की अवधारणा रचना है — विजयदेव नारायण साही की
- ❧ रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है—
- अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), कबीर (1398-1518 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.), सुन्दरदास (1596-1689 ई.)
- ❧ रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है—
- आलम, घनानन्द, ठाकुर, द्विजदेव
- ❧ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है — राष्ट्रीय मंत्र, स्वदेश संगीत, रेणुका, कुंकुम
- ❧ जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है — जगन्नाथदास रत्नाकर, (1866-1932 ई.), सत्यनारायण 'कविरत्न' (1880-1918 ई.), गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', (1883-1972 ई.), मुकुटधर पाण्डेय (1895-1988 ई.)
- ❧ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्यग्रन्थों का सही अनुक्रम है — कश्मीर सुषमा (1904 ई.), भारत भारती (1912 ई.) प्रिय प्रवास (1914 ई.), मिलन (1918 ई.)
- ❧ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है — श्रुतमूर्ग (1968 ई.), रसगन्धर्व (1975 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.), विषवंश (1999 ई.)
- ❧ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है — रंगभूमि (1925 ई.), प्रतिज्ञा, (1929 ई.), गबन (1931 ई.), कर्मभूमि (1932 ई.)
- ❧ प्रकाशन वर्ष के अनुसार मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों का सही अनुक्रम है — चाक (1997 ई.), अल्मा कवूतरी (2000 ई.), कही ईसुरी फाग (2008 ई.), गुनाह-वेगुनाह (2011 ई.)
- ❧ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है — इंदुमती (1900 ई.), प्लेग की चुड़ैल (1903 ई.), ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई.), दुलाईवाली (1907 ई.)
- ❧ जीवनकाल की दृष्टि से पाश्चात्य आलोचकों का सही अनुक्रम है — कॉलरिज (1772-1834 ई.), मैथ्यू ऑर्नल्ड (1822-1888 ई.), क्रोचे (1866-1952 ई.) आई.ए. रिचर्ड्स (1893-1979 ई.)

सही सुमेलित हैं-

कवि

आश्रयदाता राजा

- | | | |
|-------------|---|--------------------|
| (a) घनानंद | — | मोहम्मद शाह रंगीला |
| (b) पद्माकर | — | जगतसिंह |
| (c) केशवदास | — | ओरछा नरेश |
| (d) देव | — | आजमशाह |

सही सुमेलित हैं-

पात्र

काव्य

- | | | |
|------------------|---|----------------|
| (a) कैमास | — | पृथ्वीराज रासो |
| (b) परमाल | — | आल्ह खण्ड |
| (c) राघव चेतन | — | पद्मावत |
| (d) इब्राहिम शाह | — | कीर्तिलता |

सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति

कवि

- | | | |
|--|---|-------------------|
| (a) हे मेरी तुम! आओ बैठें पास-पास
हम हास और परिहास करें | — | केदारनाथ अग्रवाल |
| (b) और वह सुरक्षित नहीं है
जिसका नाम हत्यारों की सूची में नहीं है | — | धूमिल |
| (c) साम्यवाद के पथ में लीद किया करते हैं
मानवता का पोस्टर देखा लगे रेंकने | — | त्रिलोचन शास्त्री |
| (d) कर गई चाक/तिमिर का सीना
जोत की फाँक/यह तुम थीं | — | नागार्जुन |

सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति

कवि

- | | | |
|---|---|--------------------|
| (a) जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त
नील घन माला में
सौदामिनी संधि-सा सुन्दर क्षणभर
रहा उजाला में | — | जयशंकर प्रसाद |
| (b) जो सोए स्वप्नों के तम में वे जागेंगे
यह सत्य बात
जो देख चुके जीवन निशीथ
वे देखेंगे जीवन प्रभात | — | सुमित्रानन्दन पन्त |
| (c) बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु
पूछेगा सारा गाँव बन्धु | — | निराला |

(d) पंथ होने दो अपरिचित

— महादेवी वर्मा

प्राण रहने दो अकेला।

सही सुमेलित हैं-

काव्य ग्रन्थ

कवि

- | | | |
|----------------|---|--------------------|
| (a) अमोला | — | त्रिलोचन शास्त्री |
| (b) पलाशवन | — | नरेन्द्र शर्मा |
| (c) दीपशिखा | — | महादेवी वर्मा |
| (d) धूप के धान | — | गिरिजा कुमार माथुर |

सही सुमेलित हैं-

नाट्य-उक्ति

नाटक

- | | | |
|---|---|------------------|
| (a) प्यारी! वे अधर्म से लड़े हम
तो अधर्म नहीं न कर सकते
हम आर्यवंशी लोग धर्म छोड़कर
लड़ना क्या जानें? | — | नीलदेवी |
| (b) कोऊ नहि पकरत मेरो हाथ
बीस कोटि सुत होत फिरत मैं
हा हा होय अनाथा | — | भारत दुर्दर्शा |
| (c) चना हाकिम सब जो खाते।
सब पर दूना टिकस लगाते। | — | अन्धेर नगरी |
| (d) हमने माना कि उसको स्वर्ग लेने
की इच्छा न हो तथापि
अपने कर्मों से वह स्वर्ग का
अधिकारी तो हो जाएगा। | — | सत्य हरिश्चन्द्र |

सही सुमेलित हैं-

पात्र

उपन्यास

- | | | |
|-------------|---|-----------------|
| (a) भुवन | — | नदी के द्वीप |
| (b) जोहरा | — | गबन |
| (c) कालीचरन | — | मैला आँचल |
| (d) रैव | — | अनामदास का पोथा |

सही सुमेलित हैं-

कहानी

रचनाकार

- | | | |
|------------------------|---|--------------|
| (a) कसाई बाड़ा | — | शिवमूर्ति |
| (b) तिरिछ | — | उदय प्रकाश |
| (c) एक प्लेट सैलाब | — | मन्नू भंडारी |
| (d) डेफोडिल जल रहे हैं | — | मृदुला गर्ग |

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना	रचनाकार
(a) शृंगार प्रकाश	— भोज
(b) व्यक्ति विवेक	— महिमभट्ट
(c) दशरूपक	— धनंजय
(d) शृंगार तिलक	— रुद्रभट्ट

☞ सही सुमेलित हैं-

रचना	रचनाकार
(a) सेक्रेड वुड	— टी.एस. इलियट
(b) रिवैल्यूएशन	— एफ.आर. लीविस
(c) लैंग्वेज एज जैस्वर	— आर.पी. ब्लैकमर
(d) ए ग्रामर ऑफ मोटिव्ज़	— केनेथ बर्क

☞ **स्थापना (A) :** कविता बाह्य प्रकृति से निरपेक्ष मनुष्य की अन्तः प्रकृति का प्रकाशन है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मनुष्य की भावात्मक सत्ता का सृष्टि में विस्तार करती है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** मिथक जातीय जीवन की संयुक्त धरोहर है।

तर्क (R) : इसीलिए उसका रचनात्मक उपयोग सामाजिक जिम्मेदारी है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** वैचारिक प्रतिबद्धता रचनात्मक व्यक्तित्व की प्राथमिक अनिवार्यता है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्यकार का रचनात्मक विचार सामाजिक परिवर्तन का बीजवपन करता है।

— (A) गलत और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** चमत्कार वह प्रक्रिया है, जिससे चित्त का विस्तार होता है, रसास्वाद और चमत्कार की प्रवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

तर्क (R) : इसीलिए भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य में कई चमत्कार बिन्दुओं का उल्लेख हुआ है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' अर्थात् अवस्था की अनुकृति को नाटक कहते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि नाटक में लोक के सुख-दुःख का अनुकरण आंगिक अभिनय द्वारा किया जाता है।

— (A) सही और (R) गलत है

जुलाई - 2016 : तृतीय प्रश्न-पत्र

(28 अगस्त, 2016 को सम्पन्न)

☞ 'संधा भाषा' से अभिप्राय है— ऊपर से लोक विरोधी अर्थ देने वाली,

किन्तु साधना के विशुद्ध अर्थ को स्पष्ट करने वाली भाषा

☞ नीरसता, गृहस्थ के प्रति अनादर का भाव, रागात्मकता का विरोध एवं इन्द्रियनिग्रह में से नाथ साहित्य की कमजोरी नहीं है— इन्द्रियनिग्रह

☞ रामकथा में व्याप्त अतिप्राकृत तत्वों के प्रति संशयग्रस्त होकर ब्राह्मणी रामकथा की प्रतिक्रिया में नई रामकथा गढ़ ली — पुष्पदंत ने

☞ गीतावली, रामचन्द्रिका, विनयपत्रिका तथा दोहावली में से तुलसीदास का ग्रन्थ नहीं है — रामचन्द्रिका

☞ "रैण गँवाई सोई कै, दिवसु गँवैया खाई।

हीरे जैसे जनमु है, कउड़ी बदले जाई।।" ये काव्य पंक्तियाँ हैं

— गुरु नानक की

☞ ध्रुवदास ने 'भक्त नामावली' में प्रशंसा की है — गोसाईं विठ्ठलनाथ की

☞ मधुमालती के रचयिता हैं

— मंझन

☞ 'रतनखान' और 'ज्ञानबोध' रचनाएँ हैं

— मलूकदास की

☞ "गुन निर्गुन कहियत नहि जाके" पंक्ति है

— रैदास की

☞ 'कालदर्शी भक्त कवि जनता के हृदय को संभालने और लीन रखने के लिए दबी हुई भक्ति को जगाने लगे। क्रमशः भक्ति का प्रवाह ऐसा विकसित और प्रबल होता गया कि उसकी लपेट में केवल हिन्दू जनता ही नहीं, देश में बसने वाले सहृदय मुसलमानों में से भी न जाने कितने आ गए।' यह कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का

☞ 'सोहैं घनस्याम मग हेरति हथेरी ओट

ऊँचे धाम बाम चढ़ि आवत उतरि जात।'

इन पंक्तियों में नायिका की मनोदशा का वर्णन हुआ है

— उत्कंठा का

- ‘रीतिकाल में ‘लला’ के लिलाट पर महावर दिखाई पड़ने लगी। ‘बीर’ सखी हो गया। रणनात्मक ध्वनियों की बहार आ गई। ‘नाद योजना’ से मादकता को बढ़ावा मिला।’ यह कथन है — **बच्चन सिंह का**
- ‘बानी को सार बखान्यो सिंगार
सिंगार को सार किसोर-किसोरी।’ उक्त पंक्तियाँ हैं — **देव की**
- “नायिका-भेद की संकीर्ण सीमा में जितना लोकचित्त आ सकता था, इस काल (रीति) का उतना चित्र निश्चय ही विश्वसनीय और मनोरम है।” यह कथन है — **हजारी प्रसाद द्विवेदी का**
- मतिराम के ‘ललितलताम’ का मुख्य वर्ण्य विषय है — **अलंकार निरूपण**
- बरवै छन्द में नायिका-भेद का निरूपण किया है — **रहीम ने**
- “मैंने श्रीकृष्णचन्द्र को इस ग्रन्थ में एक महापुरुष की भाँति अंकित किया है, ब्रह्म करके नहीं।” यह आख्यान है — **अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ का**
- ‘दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।’ यह कथन है — **निराला का**
- नीरजा, नीहार, गीतिका तथा दीपशिखा में से महादेवी वर्मा का काव्यसंग्रह नहीं है — **गीतिका (सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’)**
- ‘कलगी बाजरे की’ कविता है — **अज्ञेय की**
- ‘भूलकर जब राह-जब जब राह....भटका मैं
तुम्हीं झलके, हे महाकवि,
सघन तम की आँख बन मेरे लिए।’
महाकवि निराला का उपर्युक्त स्तवन किया है — **शमशेर बहादुर सिंह ने**
- अनन्तदेवी पात्र है — **जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कन्दगुप्त की**
- छठां बेटा, सिन्दूर की होली, अंजो दीदी तथा अलग-अलग रास्ते नाटकों में से उपेन्द्रनाथ अशक का नहीं है — **सिन्दूर की होली (लक्ष्मीनारायण मिश्र)**
- नायक खलनायक विदूषक, शकुन्तला की अंगूठी, द्रौपदी एवं आठवाँ सर्ग में से सुरेन्द्र वर्मा के अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रश्न उठाया गया है — **‘आठवाँ सर्ग’ नाटक में**
- फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित कहानी ‘ठेस’ का नायक है— **सिरचन**
- ‘राग दरबारी’ उपन्यास में वर्णित गाँव है — **शिवपालगंज**
- पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा एवं चारु चंद्रलेख में से हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पहला उपन्यास है — **बाणभट्ट की आत्मकथा**
- पहला गिरमिटिया, तोड़ो कारा तोड़ो, अभिज्ञान एवं मृत्युंजय में से महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित उपन्यास है— **पहला गिरमिटिया**
- ‘पीली आंधी’ उपन्यास की लेखिका हैं — **प्रभा खेतान**
- ‘घुमकड़शास्त्र’ यात्रावृत्त के लेखक हैं — **राहुल सांकृत्यायन**
- ‘ऋणजल धनजल’ रिपोर्टाज के लेखक हैं — **फणीश्वरनाथ रेणु**
- ‘प्रवास की डायरी’ के लेखक हैं — **हरिवंशराय बच्चन**
- वृन्दावनलाल वर्मा की आत्मकथा है — **अपनी कहानी**
- अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी एवं माटी की मूरतें में से महादेवी वर्मा द्वारा रचित रेखाचित्र नहीं है — **माटी की मूरतें (रामवृक्ष बेनीपुरी)**
- ‘काव्यालंकार सार संग्रह’ रचना है — **उद्भट की**
- भामह, दण्डी, उद्भट एवं कुन्तक में से अलंकारवादी नहीं हैं — **कुन्तक**
- काव्य को प्रकृति की अनुकृति कहा है — **अरस्तू ने**
- रसनिष्पत्ति के संदर्भ में उत्पत्तिवाद का सिद्धान्त हैं— **भट्टलोल्लट का**
- ‘हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष’ के लेखक हैं— **शिवदानसिंह चौहान**
- ‘प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म’ के लेखक हैं — **आई.ए. रिचर्ड्स**
- जन्मकाल की दृष्टि से सूफी संतों का सही अनुक्रम है — **मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, शेख चिश्ती, शेख सलीम चिश्ती**
- जन्मकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है — **रैदास, मीराबाई, रज्जब, मलूकदास**
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है — **ठण्डा लोहा (1952 ई.), आत्महत्या के विरुद्ध (1967 ई.), संसद से सड़क तक (1972 ई.), उदिता (1980 ई.)**
- रचनाकाल की दृष्टि से भिखारीदास की रचनाओं का सही अनुक्रम है — **रस सारांश (1742 ई.), छन्दार्णव पिंगल (1742 ई.), काव्य निर्णय (1746 ई.), शृंगार निर्णय (1750 ई.)**
- जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है — **माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.), सियारामशरण गुप्त (1895-1963 ई.), बालकृष्ण शर्मा नवीन (1897-1960 ई.), भगवती चरण वर्मा (1903-1981 ई.)**
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है — **ग्रन्थि (1920 ई.), अनामिका (1923 ई.), आँसू (1925 ई.), नीहार (1930 ई.)**

प्रकाशन वर्ष के अनुसार लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का सही अनुक्रम है — मादा कैक्टस (1959 ई.), दर्पण (1962 ई.), मिस्टर अभिमन्यु (1971 ई.), एक सत्य हरिश्चन्द्र (1976 ई.)

रूपक के कार्य की पाँच अवस्थाएँ होती हैं तथा इनके द्वारा नाटकीय इतिवृत्त की गति प्रकट होती है। इन कार्यावस्थाओं का सही अनुक्रम है — प्रारम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, निर्यापति, फलागम

प्रकाशन काल के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है — मिट्टी की ओर (1946 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1952 ई.), वेणुवन (1958 ई.), वटपीपल (1961 ई.)

प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है — मैला आँचल (1954 ई.), आधा गाँव (1966 ई.), रागदरबारी (1968 ई.), लोकत्रण (1977 ई.)

प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है — रुकोगी नहीं राधिका (1966 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), शात्मली (1987 ई.), छिन्नमस्ता (1993 ई.)

प्रकाशन काल के अनुसार प्रेमचन्द की कहानियों का सही अनुक्रम है — नमक का दारोगा (1913 ई.), शतरंज के खिलाड़ी (1925 ई.), पूस की रात (1930 ई.), कफ़न (1936 ई.)

प्रकाशन वर्ष के अनुसार आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है — प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), कामायनी : एक पुनर्विचार (1961 ई.), अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), दूसरी परम्परा की खोज (1982 ई.)

जीवनकाल के अनुसार काव्यचिंतकों का सही अनुक्रम है — आनन्दवर्धन (9वीं शताब्दी), अभिनव गुप्त (10वीं शताब्दी), विश्वनाथ (14वीं शताब्दी), पण्डितराज जगन्नाथ (16वीं शताब्दी)

जन्मकाल के अनुसार साहित्यकारों का सही अनुक्रम है — प्रकाशचन्द्र गुप्त (1908-1970 ई.), रामविलास शर्मा (1912-2000 ई.), शिवदानसिंह चौहान (1918-2000 ई.), रांगेय राघव (1923-1962 ई.)

स्थापना (A) : पश्चिमी दृष्टि से सभी कलाओं में गुणों का अनुसंधान ही तो सौन्दर्यशास्त्र है।

तर्क (R) : इसीलिए सौन्दर्यानुभव हेतु भारतवर्ष में काव्य को ललितकलाओं के अन्तर्गत रखा गया।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : काव्य का न्याय, शास्त्र के न्याय (तर्क) से अलग नहीं होता।

तर्क (R) : काव्यार्थ की प्रतीति केवल शास्त्रगत वाच्यार्थ से ही संभव नहीं। इसके लिए काव्य के अपने न्याय का सहारा लेना होगा, क्योंकि काव्य न्याय का मूल आधार वक्रोक्ति है।

— (A) गलत और (R) सही है

स्थापना (A) : कवि का दर्शन जीवन के प्रति उसकी आस्था का दूसरा नाम है, जो उसकी सर्जनात्मकता को प्रेरित करता है।

तर्क (R) : क्योंकि कवि-कर्म को प्रभावित करने वाला केंद्रीय बिन्दु यही आस्था है और आस्था वस्तुतः निर्दिष्ट सत्य की रागात्मक स्वीकृति है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : कविता दो शब्दों के बीच की नीरवता में रहती है।

तर्क (R) : इसीलिए मौन भी अभिव्यंजना है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में किसी न किसी रूप में पाई जाती है।

तर्क (R) : क्योंकि मनुष्यता को समय-समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य के लिए आवश्यक है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : भारतेन्दु युग और उसका साहित्य आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : इसीलिए उसके केन्द्र में मनुष्य है, ईश्वरीय आस्था लेशमात्र भी नहीं।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : पश्चिम के ज्ञानोदय से ही भारतीय साहित्य में अस्मिताओं का उदय हुआ।

तर्क (R) : कारण कि भारतीय समाज से कोई विचार प्रेरणा उन्हें नहीं मिली।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

स्थापना (A) : युद्ध और प्रेम पारसी थियेटर के दो मूल भाव थे।

तर्क (R) : क्योंकि राष्ट्रप्रेम और जनता में संघर्ष चेतना जागृत करने में पारसी नाटककार आगे थे।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : परिवर्तन सृष्टि का अटूट नियम है।

तर्क (R) : लेकिन यह नियम साहित्य पर लागू नहीं होता, क्योंकि मनुष्य की संवेदना अपरिवर्तित है।

— (A) सही और (R) गलत है